(7)

अनठिया कुकुर

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

प्रकाशक : गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच
उफरदाहा, दरभंगा

© प्रकाशकाधीन

सहयोग राशि – एक सय पचास टाका मात्र

दू शब्द

वर्त्तमान परिपेक्ष्य में गाम आ शहर में रहनिहार लोकक बीच बहुत मतान्तर रहैत अछि। शहर में रहनिहार अपना के बड़ होशियार बुझैत अछि तँ गाम मे रहनिहार अपना के ओहि सँ एको पाई कम नहि बुझैत अछि। खास क एक शहरी जखन अवकाश ग्रहण करैत अछि तँ ओ गाम मे रह' चाहैत अछि। अपना कार्यकालक अनुभव सँ गामक लोकक बीच जागृत उत्पन्न कर चाहैत अछि मुदा गामक लोक कँ इ पसिन्न नहि पड़ैत अछि जे एकटा बहरियाक पाछाँ समूचा गामक लोक घुरैत रहए। ओकरा वर्चस्व पर आँच आबैत छैक। ओ सब मिलिक ओहि शहरी के सब किछु लुटि लैत अछि यानि ओकर सबटा टाका-पाई खर्च करा दैत अछि आ ओकरा अनठिया कुकुर जकाँ अपना जेड़ सँ हटा दैत अछि। ओही विषय-वस्तु पर आधारित ई उपन्यास अछि '' अनठिया कुकुर ''। एकर मुख्य पात्र छथि प्रेम चन्द्र चौधरी जे ग्राम-सुधारक योजना विरासत मे अपना पिताजी श्रीमंत चौधरी सँ पाओने छलाह आ विदुर जे स्वाभिमानीक संग समाजक शुभ चिंतक छलाह संगहि स्वभावक जिद्दी से हो। जाहि कारणें हुँनका सँ सब डेराइत रहैत छल।ओना तँ ओ सभक उपकारे करैत छलाह मुदा ककरहुँ अनटेटल बर्दास्त नहि करैत छलाह। मणिबाबू जे मनोविज्ञानक ज्ञाता छथि, हास्य-व्यंगक विधाता छथि, कोनो कानल लोक के हँसा दैत छथि आ हुँनकहि प्रेरणा सँ प्रेम नव जीवन पाओलनि। श्रीधर ठाकुर सनक लोक जे समाज कँ तोरैत अछि आ ओकर मर्म केओ नहि बुझैत अछि। सब केओ ओकरहि पाछाँ दौड़ैत अछि। प्रस्तुत उपन्यास कोनहुँ खास घटना पर आधारित नहि अछि आ ने कोनहुँ व्यक्ति वा स्थान सँ सम्बन्धित अछि। सब किछु काल्पनिक अछि मुदा एहि तरहक घटना हमरा समाज में नित्य घटैत अछि। हमरा समाज में हजारों श्रीधर ठाकुर छथि जे समाज के तोड़बाक काज करैत छथि। ओहि में जातिवाद, सम्प्रदायवादक बीया रोपैत छथि। हमरा सब कँ ओहि व्यक्ति सँ दूर रहैक चाही। प्रेम आ विदुरक संग समाजक निर्माण करैक चाही, जे सपना मास्टर श्रीमंत चौधरी देखलनि। ओकरहि पूर्ण कयला सँ सामाजिक विद्वेष दूर होयत। हमरा समाज मे एखनहुँ हजारों लाल काकी छथि जे नित्य रामनारायण आ श्याम नारायण के भिन्न कराबैत छथि।

एहि पोथी प्रकाशन केर लेल धन्यवादक पात्र छथि डा0 योगा नन्द झा, वरीय अंकेक्षक, वि0 रा0 वि0 वोर्ड, पटना, डा0 अमरनाथ, प्राध्यापक दर्शनशास्त्र, ललित नारायण मिथिला विश्व विद्यालय, दरभंगा आ हमर समस्त परिवार (बेटी-जमाय सहित) जिनकर प्रेरणा हमरा सतत आगू बढ़ाबैत रहल। एहि अवसर पर हम अनुजवत् डा0 भुवन भूषण जी कँ सेहो विसरि नहि सकैत छी।

नन्द कुमार मिश्र
दहौड़ा, सकरी
रेलवे स्टेशन केर बगल मे (दक्षिण)
मो0 : 8986261756,9334233961

मकर संक्रांति,
14. 01. 2011

अनठिया कुकुर

१

रातिक दू बाजि रहल छलैक,आ उपर सँ अन्हार घुप सेहो। हाथ के हाथ नहि सुझैत छलैक। सब केओ निभेड़ सुतल छलैक। कौखन कुकुर कँ भुकबाक आवाज सँ वातावरण आर भयावह लागैत छलैक। तथापि प्रेम बाबू आ हुँनकर कनियाँ मालती जागल छलीह। हुँनका आँखि में निंन कतए। ओ जल्दी–जल्दी अपन बेडींग कपड़ा–लत्ता आ आवश्यक सामाग्री सरिया रहल छलीह। करीब तीन बजे जयनगर–नई दिल्ली एक्सप्रेस ट्रेन राजनगर स्टेशन सँ खुजैत छलैक। दुनू गोटे सब सामान ल' क' बाहर भेलाह। चारूकात तकलनि, बाट एकदम सुनसान छलैक। दुनू गोटे किछु कानाफूसी केलनि आ विदा भेलाह। प्रेम बाबूक हाथ में सुटकेश आ मालतीक हाथ मे एकटा झोड़ा छलनि। ओ लोकनि पायरे विदा भेलाह। कनेक सशंकित सेहो छलाह। एहि लेल जे केओ बुझि नहि जाय। कतहुँ खढ़ो खड़खड़ाइत छलैक तँ हिनका सभक कान ठाढ़ भ' जाइत छलनि। सूटकेश भारी छलैक आ बाटो करीब दू किलोमीटर। कहुँना क' दुनू गोटे स्टेशन पहुँचलाह। मालतीक हाथ में झोड़ा छलनि, ओहि मे सम्भवतः खयवा–पीबाक सामाग्री आ लोटा–ग्लास छलनि। ठीक तीन बजे गाड़ी राजनगर स्टेशन पर आयल। दुनू गोटे अपना सीट पर बैसि गेलाह। प्रेमबाबू दू दिन पहिने आरक्षण करा नेने छलाह। गाडी में ओएह व्यक्ति जागल छलाह, जे राजनगर में चढ़ल छलाह। गाड़ी सीटी देलक आ धिरे–धिरे आगू बढ़ल। गाड़ी प्लेटफार्म छोड़नहि होयत की एकाएक रूकि गेल। जेना लागल ओकर सबटा भेक्यूम एकहि बेर में बहरा गेलैक। इहो सब अकचका उठलाह आ चारूकात से शोर भ' गेल, जे गाड़ी सँ केओ कटि गेल अछि। सब रेलक यात्री सेहो अचंभित भ' गेल। सबके मन में इ बुझबाक जिज्ञासा भेलैक जे आखिर के आर किएक कटि गेल अछि।

गाड़ी करीब एक घंटा रूकि गेल। लाश के उठाक स्टेशन आनल गेल। ओ एकटा नवयुवतीक लाश छलैक। वयस करीब पच्चीस वर्षक, आँखि टक–टक ताकैत छलै। मुँह पर मुइलाक बादो एकटा मुस्कान बुझा रहल छलैक। जाहि सँ इ परिलक्षित होइत छलैक जे अहूँ में ओकरहि जीत छैक। ओकरा सब केओ देखलक आ चिन्हबाक कोशिश केलक। प्रेम सेहो अपन दुःख विसरि ओकरहि विषय में सोचि रहल छलाह, की कारण भ' सकैत अछि, एहि आत्महत्याक। पति सँ झंझट वा दहेजक प्रतारण। एहि संसार में केहेन–केहेन लोक रहैत अछि। ई दहेजक लोभी कोना क' दोसराक बेटी के तड़पाबैत अछि, झरकाबैत अछि आ अंततः ओकर प्राण ल' लैत अछि। आखिर ओकरहुँ तँ अपना बेटी हेतैक। जँ ओकरा बेटीक संग एहेन हादसा हेतैक तँ ओकरा केहेन लगतैक। ई समाज अपना मतलबक समाज अछि। सब अपनहि स्वार्थक पाछाँ बेहाल रहैत अछि। लोक ककरा पर विश्वास करओ, ककरा पर नहि। प्रेमक सोचक रफ्तार आ गाड़ीक रफ्तार दुनू बराबर छल। गाड़ी धड़ाधड़ छोट– छोट स्टेशन कँ पार करैत पैघ–पैघ स्टेशन पर ठाढ़ होइत छलैक। जाहिठाम यात्री लोकनि उतरैत आ चढैत छलाह। जाहि डिब्बा मे प्रेम बैसल छलाह ओहि मे बेसी भीड़–भाड़ नहि छलैक। ओहि मे गिनले –चुनले लोक छलाह। किएक तँ ओ आरक्षित डिब्बा छलैक। मालती सेहो जगले छलीह आ ओहि घटनाक सम्बन्धमें सोचैत छलीह।

प्रेमबाबू, "की मालती! निंन नहि आबैत अछि की"?

मालती, "कोना निंन होयत। जखन सँ स्टेशन बला दृश्य देखल अछि, आँखिक निंन उड़ि गेल अछि। कनेक झक लागैत अछि कि ओएह दृश्य आँखिक सोझां नाचि उठैत अछि। केहेन सोरहो सिगांर कयने घर सँ बहरायल होयत। कतेक कठोर संकल्प नेने होयत। हमरा तँ बुझाइत अछि जे अवश्य घरबला से झगड़ा भेल हेतैक।

प्रेम, "से अहाँ कोना कहि सकैत छी"।

मालती, " अदांज करैत छी"।

प्रेम, " अंदाजक किछु तँ आधार हेतैक।

मालती, "अंदाजक आधार अछि, ओकरा मुँह परहक मुस्कान, जे मरलाक

बादो देखबा में आबि रहल छलैक।

प्रेम, "देहेजो तँ भ' सकैत अछि।

मालती, "भ' सकैत अछि, मुदा हमरा एहिमें दहेजक कारण नहि बुझना जाइत अछि।

प्रेम, "से किएक"?

मालती, "हमहूँ एकटा स्त्री छी आ स्त्रीक दर्द नीक जकाँ बुझि सकैत छी। दहेजक प्रतारण मे पुत्रबधु कँ बहुत तड़पाओल जाइत छैक। ओकरा अनेक तरहक यातना देल जाइत छैक। तकर कोनहुँ लक्षण हमरा देखबा में नहि आयल"।

प्रेम, "की ओकरा कपार मे लिखा जाइत छैक, जे इ दहेजक कारण आत्महत्या कयलक अछि"।

मालती, "नहि, लिखा नहि जाइत छैक, मुदा ओकर मुँह मलीन रहैत छैक। एकर सिंगार–पेटार आ मुइलाक बादो मुँह पर जे मुस्कान छलैक, ओ स्पष्ट क' रहल छलैक जे ओकरा मरला सँ कनेको दुःख नहि भेलैक। ओ हँसी–खुशी अपन प्राण त्यागि देलक"।

प्रेम, "वाह अहाँ तँ मुइलो लोकक मुँहक भाव पढ़ि लैत छी। अहाँकँ तँ मनोवैज्ञानिक होयबाक चाही। ठीक छै, मानि लेलहुँ अहींक गप्प। आब इ कहु जें पति–पत्निक बीच झगड़ाक की कारण भ' सकैत छैक"?

मालती, "ओना तँ झगड़ाक बहुत कारण भ' सकैत छैक। मुदा हमरा लागैत अछि जे ओकर पुरूष कतौ एम्हर–ओम्हर गलत काज करैत हेतैक। शराब पिबैत हेतैक वा दोसराक संग रहैत हेतैक। ताहि सँ तंग आबि क आत्महत्या क' नेने होयत"।

प्रेम, "की इ नहि भ' सकैत अछि जे ओ स्त्री कोनो गलत काज कयने हो, आ पकड़ा गेला पर लाज सँ बचबाक लेल एहेन काज कयने हो"।

मालती, "इ कथमपि नहि भ' सकैत अछि"।

प्रेम, "किएक नहि भ' सकैत अछि।

मालती, "एहिलेल जे, जखन ओ सब चौकठि के नाँघि देलक, तखन ओकरा लाजे कथीक हेतैक। ओ तँ पहिनहि लाज के घोरि क' पिबि गेल। तखनहि ने एहेन काज कयलक। तँ अहाँक इ अनुमान सही नहि

लागि रहल अछि।

प्रेम, "छोड़ु एहि गप्प कँ जतेक तीरब, ओतेक तिरायत। तावत भोर सेहो भ गलैक। रेलवे लाइनक दुनू कात लगाओल गाछक बीच एहेन लागि रहल छलैक, जे गाड़ी ठाढ़ अछि आ दुनू कातक गाछ, गाम आ शहर द्रुत गतियेँ पाछाँ भागि रहल छैक। इ अनुपम प्राकृतिक छटा देखबा में अपूर्व मनोरम आ मनोरंजित लागि रहल छलैक। ओही गति मे ताल सँ ताल मिलाक प्रेम बाबूक सोच सेहो आगू बढ़ि रहल छलनि। की सोचिक ओ गाम आयल छलाह आ की भ' गेलनि। मनमे कतेक राश उत्साह छलनि, गाँम सुधारबाक, गाँमक नवनिर्माण करबाक, गामकँ आर्दश गामक रूप मे प्रतिष्ठित करबाक मुदा सब खतम भ' गेल। पानिक बुलबुला जकाँ विलिन भ गेल। जेना जेना गाड़ी द्रुत गतिमें आगु बढ़ि रहल छलैक, तेना–तेना प्रेम बाबुक सोचक तरंग मन में आबैत जाइत छलैक, आ विलिन होइत जाइत छलैक। प्रेम अपन विचार धारा में एतेक मग्न छलाह, हुँनका एतेक सुधि नहि छलनि जे रेलगाड़ी मे यात्रा क रहल छी। हुँनका आँखि सँ दहो–बहो नोर बहि रहल छलनि। से देखि मालती कँ नहि रहल गेलनि। ओ प्रेमक ध्यान के भंग करैत बजलीह, किएक बीतल बात पर एतेक सोचैत छी। जे बीत गेलैक से बीति गेलैक। भगवान पर भरोष राखू। हुँनकर जँ इएह इच्छा छलनि तँ इएह सही। अब जत' जा रहल छी ओकरा विषय मे सोचू।

प्रेम, "की सोचू आ किएक सोचू। जखन सबटा भगवाने करैत छथि, तखन हम किएक सोचू।

मालती, "इ गप्प तँ बिलकुल सच अछि, मुदा लोक बैसल की करत, तँ सोचैत अछि। सपना देखबा मे की हर्ज छैक। ओकरा पूरा करबा मे भगवानक कृपा चाही। जँ कृपा भेल तँ पूर्ण अन्यथा जहिनाक तहिना।

प्रेम, "जखन सब किछु भगवानेक कयने होइत अछि, तखन बेकार लोक सपना किएक देखत। जँ मनुष्य मे सपना कँ साकार बनयबाक क्षमता नहि छैक तँ एहेन सपना देखला सँ कि लाभ।

मालती, "सपना देखला सँ लोक आशावादी रहैत अछि। ओकरा इ आशा रहैत छैक, जे भगवान एकदिन अवश्य ओकर सपना पूर्ण करताह। अही

आशा पर ओकर जीवन अटकल रहैत छैक। अपना कुटुम्बक बीच आशक्ति बनल रहैत छैक। बिना सपना कँ वैराग्यक उत्पत्ति होइत छैक। व्यक्ति अपना जीवन सँ पूर्ण रूपेण निराश भ' जाइत अछि। ओकरा जीवन जिवाक कोनो मतलब शेष नहि बचैत छैक"।

प्रेम, "आई हम महसूस क रहल छी, जे हमरा जीवनक कोनो मतलब नहि बाँचि गेल अछि। हम हारि गेल छी। आब हमरा सँ किछु नहि भ' सकैत अछि। हमर अपनहु जीवन बोझ बूझा रहल अछि।

मालती, "हारे मे जीत छिपल अछि। जे हारल अछि ओ कहिओ ने कहिओ अवश्य जीतबे करत। जँ ओकरा मन मे एकरा लेल ललक रहतैक तखन। निराशा सँ आशाक किरणक संचार होइत अछि। इएह तँ जीवन थीक। आइ जे व्यक्ति अहाँकँ एतेक निचां देखौलक, काल्हि ओ अहाँक पायर पकड़ि क कानत।

प्रेम, "छोड़ू आब ओहि सभक चर्चा नहि करू। हम ओकरा बिसरबाक प्रयास क रहल छी। हम पुनः नया सिरा सँ जीवन–यापन शुरू कर' चाहैत छी।

मालती, "बहुत नीक गप्प अछि। अहाँ जे कर' चाहैत छी अवश्य करू। यावत अहाँ ककरहुँ बिसरबाक चेष्टा करबैक, ओ ओतबहि जेहन मे नाचैत रहत। दोसर गप्प इ जे लोक बीतल घटना सँ शिक्षा लैत अछि। ओहि सँ प्रेरणा भेटैत छैक। ओहि पर सोचिऔ, ओकर मंथन करिऔक। कत' गलती भेलैक, भविष्य मे ओकर सुधार कोना हेतैक। जकरा जीवन मे कोनहुँ घटना नहि घटल छैक, जे संर्घष नहि कयने अछि, ओकर जीवन कोनो जीवन थीक ? आई गाँधी जी जेल गेलाह, लाठी खयलनि, तखन ने राष्ट्रपिता भेलाह"।

प्रेम, "मुदा गाँधीओ जी कँ तँ लोक आलोचना करैत अछि। हुँनकर गलती बहार करैत अछि"।

मालती, "जतेक पोन पर ताली बाजैत छैक, ओतेक ढोलक पर नहि। जहाँ धरि आलोचनाक प्रश्न छैक तँ ककरहुँ आलोचना आई–काल्हि दू कारण सँ कयल जाइत अछि। प्रथम कारण ईर्ष्या, ईर्ष्याक कारण सेहो लोक आलोचना करैत अछि आ दोसर कारण छैक अपना कँ ओकरा सँ पैघ बना

क' प्रतिष्ठापित करबाक। तँ ओहूँ कारण सँ ओकरा मे छेद निकालबाक प्रयास करैत अछि। हमर समाज जखन भगवान रामक आ जगत् जननी माता सीताक आलोचना क' सकैत अछि, तँ ओकरा सोझां मे गाँधी जी की छथि ? तखन एकटा गप्प अवश्य छैक। आलोचनाके दोसर रूप के देखिऔक। ओकरा सँ व्यक्तिक गुण–अवगुण केर मंथन होइत अछि। मंथन सँ बहुत फायदा होइत अछि। जँ विष मेटैत छैक तँ अमृत सेहो। अमृत सँ जीवनक निर्माण होइत अछि तँ विषपान करबाक लेल कोनो ने कोनो शंकरक सेहो प्रादुर्भाव होइत अछि आ ओहूँ सँ दुनियाँक कल्याणे होइत अछि।

प्रेम पुनः सोचि रहल छथि जे दुनियाँ मे केहेन–केहेन लोक होइत अछि। ओ सोचि क' गाम आयल छलाह जे सेवाकाल मे समयाभावक कारण गामक लोकक कोनहुँ उपकार नहि क' सकलाह। ई तँ बुझितहि छी जे सेवाकाल लोक कँ छुट्टी कम भैटैत छैक। कोनो तरहें अपन काज चला लैत अछि। सामाजिक काज मे ध्यान देबाक पलखति नहि होइत छैक। प्रेम बाबूक संग सेहो किछु एहने भेलनि। तँ ओ सेवा निवृत्तिक बाद अपन पूर्ण समय आ ध्यान समाजक कार्य मे लगेबाक योजना बनौने छलाह। एहि सम्बन्ध मे शहर मे रहि ओ जतेक अनुभव अर्जित कयने छलाह, ओकर पूर्ण लाभ अपना ग्रामीण कँ देमए चाहैत छलाह। हुँनकर सोच छलनि, जाहि गाम मे हम एतेकटा भेलहुँ। जाहि समाज सँ हम एतेक विद्या, ख्याति अर्जित कयलहुँ। ओकरा प्रति हमरहुँ तँ किछु कर्त्तव्य अछि। ओ ओहि कर्त्तव्यक पालन करैत अपना उपर पड़ल सामाजिक ऋण सँ मुक्त होअए चाहैत छलाह मुदा एकहि झटका मे हुँनकर सब सपना सब योजना चूर–चूर भ' गेलनि। एकटा कहाबत छैक 'नालीक कीड़ा के गंगाजल मे रहब नीक नहि लागैत छैक'। प्रेमबाबू की, प्रेमबाबू सनक हजारो लोग आबिक' गामक परिवेश मे बदलाव नहि आनि सकैत छथि। जखन प्रेमबाबु अपन योजनाक स्वरूप दू–चारि गोटेक बीच मे रखलनि। तँ एकर भनक बिदुर कँ सेहो लागल। ओ अपन पुरना कुन्नह सधेबाक लेल चमोकनि जंकाँ प्रेमबाबूक संग सटि गेल आ हुँनका हँ मे हँ मिलाबए लागल। प्रेम बाबु ओकर कूट नीति नहि बुझि पाओलनि। ओ तँ बुझलनि जे बिदुर जी सेहो हमर प्रगतिवादी सिद्धान्तक समर्थक छथि आ मित्र तँ

छलाहे। गामक किछु सम्भ्रांत लोक के हिनका दुनूक बीच एतेक प्रगाढ़ स्नेह देखि चिन्ता सेहो भेलैक। ओना विदुर कोनो खराब लोक नहि छल। गामक लोकक खूब मदति करैत छलैक। गामक लोक ओकरा बड़ चाहैत छलैक। मुदा विदुर मे एकटा जबरदस्त अवगुण छलैक, जकरा सँ ओकरा बनाव नहि होइत छल, ओकरा ओ जड़ि–मूड़ि सँ उखारि दैत छलैक। आ ओहि व्यक्ति कँ एकर भनक तक नहि लागैत छलैक, जे एहि मँ विदुरक हाथ भ' सकैत अछि। जिनका विदुरक इ गुण बुझल छलनि ओ प्रेम बाबु के अगाह सेहो कयलनि मुदा 'विनाश काले च विपरीत बुद्धि..... विदुर एतेक व्यवहार कुशल छल जे गामक लोक चाहिओक' ओकरा प्रेम सँ अलग नहि क' सकल। प्रेम आ विदुर मे प्रगाढ़ स्नेह छल आ इ स्नेह मात्र उपरे–उपर छल, जकरा प्रेम बुझि नहि सकल। जखन लोक सब ओकरा विदुर सँ बचबाक सुझाव दैत छलैक, तँ प्रेम कँ लागैत छलैक जे लोक ओकरा दुनूक प्रेम सँ जड़ैत अछि, इर्ष्या करैत अछि। ओ कहिओ लोकक कहला पर ध्यान नहि देलनि। तकरहि इ फल भेटलनि जे आइ कतहुँ कँ नहि रहलाह। ओ एकदम ध्यान मग्न छलाह। हुँनकर ध्यान तखन टुटल, जखन गाड़ी छपरा स्टेशन पर ठाढ़ भेल। गाड़ी सँ किछु गोटे उतरलाह तँ किछु गोटे चढ़लाह। एक गोटे प्रेमबाबू लग ठाढ़ भ' गेलाह। बयस करीब अस्सीक, माँथक केश उज्जर धव–धव गौर वर्ण, आँखि पर मोटका फ्रेम बला चश्मा आ मुँह पर विशेष चमक। जाहि सँ हुँनकर सही वयसक अंदाज लगायब कठिन छलनि। ओ व्यक्ति प्रेम बाबु सँ पूछलनि "कि हम एत' बैसि सकैत छी ? प्रेम बाबु हाथक इसारा सँ बैसबाक लेल कहलनि। आ सोचलनि एहि धरती पर एखनहुँ एतेक वियापक लोक छथि, जे अपना सँ छोटहुँ कँ आदर–सम्मान दैत छथि। ओकरहि बल पर तँ इ धरती टिकल अछि। ट्रेन मे के केकरा सँ पूछैत अछि, इ त खाली जगह छलैक। इ व्यक्ति हमरा सँ पूछिँक अपन महानताक परिचय देलनि अछि। ओ व्यकित प्रेम सँ पूछलनि अपने कत' धरि जायब ?

प्रेम बजलाह, "काशी"।

ओ व्यक्ति बजलाह, "अरे वाह! हमहुँ तँ काशीये जा रहल छी। बुझाइत अछि कि दुनू गोटाक यात्रा एकहि ठाम समाप्त होयत। काशी तँ बड़ पैघ

स्थान छैक। अपने काशी मे कत' जायब ?

प्रेम, "हम पहिल बेर काशी जा रहल छी। हमरा ओहि ठामक किछु ज्ञान नहि अछि। सम्भवत कोनो होटल वा धर्मशाला मे ठहरि जायब। दू – तीन दिन बाद देखल जयतैक।

ओ व्यक्ति पुनः पूछलनि, "कत' सँ आबि रहल छी ? प्रेमक मन दुखायल छलनि। हुँनका ककरहु सँ गप्प करब नीक नहि लागैत छलनि। ओ ओहि व्यक्तिक गप्प मे अभिरूचि नहि लैत छलाह। ओ बेरूखि भ क बजलाह, "अपने के स्थान भेटि ने गेल, चुपचाप बैसु। हम कत सँ अयलहुँ आ कत् जायब, ताहि सँ अपने के कोन प्रयोजन ? ओ व्यक्ति किछु बजितथि, ताहि सँ पूर्व मालती बाजि उठलीह, "एना किएक बाजैत छी। ओ बेचारे कतेक प्रेम सँ पूछि रहल छथि आ अहाँ हुँनका झझकारि रहल छियनि। इ उचित नहि क' रहल छी। पुनः ओहि व्यक्ति दिश देखैत "बाबा! हम सब राजनगर स्टेशन सँ आबि रहल छी। हिनकर मन ठीक नहि छनि, ते ओना बजलाह। एकरा अन्यथा जुनि लेब"। ओ ब्यक्ति बजलाह, "हँ–हँ से तँ हमरा एहि डिब्बा मे घुसितहि बुझा गेल। आ तैं तँ हम एहि ठाम बैसबाक प्रयास कयलहुँ। हम मनोविज्ञानक प्रोफेसर रहि चुकल छी आ हमर नाम अछि मणिकान्त। हम देखितहि बुझि जाइत छी, जे ककरा कि कष्ट छैक। आव–भाव सँ हमरा बुझा गेल जे हिनका अपनहि लोक सँ पैघ धक्का लागल छनि"।

मालती बजलीह, "अपने कत केर रहनिहार थिकहुँ ?

मणिकान्त, "ओना तँ हमरहुँ घर राजेनगर लग अछि। गामक नाम भेलैक सुग्गाडीह। हमर बाबा आइ सँ सत्तरि वर्ष पूर्व, ओहि समय में हम करीब दस वर्षक छलहुँ आ गामक स्कूल में पढ़ैत छलहुँ। बाबा काली मंदिर में पुजारी छलाह। बाबा साधारण पुजारी मे सँ नहि छलाह। एकदम सिद्ध पुरूष छलाह। नित्य श्मशान मैं घंटो तंत्र साधना करैत छलाह। जकरा जे कहि दैत छलाह से भ' जाइत छलैक। ओ तंत्र–मंत्र के संग झाड़–फुक सेहो करैत छलाह। हुँनकर नामक सोरहा दूर–दूर धरि भ' गेल छल। काशीक पैघ सेठ धनीराम सब तरहँ परिपूर्ण छल। अपार धन छलैक। नौकर चाकर बंगला गाड़ी सब किछु छलैक। मुदा ओ निःसन्तान छल। ओ

कतेक ठाम गेल मुदा किछु नहि भेलैक। सब ठाम लोक एतबहि कहैत छलैक अहाँकँ पुत्र तँ लिखल अछि, मुदा अहाँक कनियाँक कोखि बाँन्हल अछि। केओ सिद्धे पुरूष ओकरा खोलि सकैत अछि। सभक बुते इ सम्भव नहि अछि। बाबाक सोरहा सुनि ओ दुनू प्राणी बाबाक शरण में आयल। बाबा सेहो ओकरा ओएह गप्प बजलाह, जे अन्यत्र ओकरा कहल गेल छलैक। ओ दुनू प्राणी बाबाक पायर पर खसि पड़ल। तखन बाबा ओकरा आश्वासन देलनि। ठीक छै हम किछु करैत छी, मुदा एहि में किछु समय लागत। काज बड़ कठिनाह अछि। ओ सब घर चल गेलाह मुदा नित्य माँ कालीक दर्शन करबाक लेल आ बाबाक आशीर्वाद प्राप्त करबाक लेल मंदिर आबि जाइत छलाह। एकदिन बाबा धनीराम कँ बैसबाक इशारा केलनि। आरती खतम भेलाक बाद मे प्रसाद ल' क' सब केओ चल गेल। तखन बाबा एकान्त मे धनीराम के पूछलनि, "की अहाँ सही मे पुत्र चाहैत छी?

धनीराम, "हँ बाबा! हम तँ ओकरहि लेल बेकल छी।

बाबा, "काज बड़ कठिनाह अछि, अहाँक एक पड़ोसी जे अहाँक कनियाँक कोखि बन्हने अछि। ओ प्रचण्ड डायन अछि। ओकरा संग कठिन संर्घष कर' पड़त। ओकरा लेल पूजा मे अहाँ कँ श्मशान जायब आवश्क अछि आ सेहो दुनू प्राणी कँ।

धनीराम, " हमरा जत कहब हम जायब। हमरा जे–जे कर' पड़त से करबं

बाबा, "देखू एहि मे आर किछु नहि छैक केवल हिम्मत राखब जरूरी छैक। जँ हिम्मत हारि जायब तँ सब गुड़ गोबर भ' जायत। ओहि ठाम अहाँकँ बहुत तरहँ डेराओल जायत। करत किछु नहि मुदा भयंकर स्थिति सँ गुजर' पड़त"।

धनीराम, "हम अवश्य जायब"।

बाबा, "जँ अहाँ सब बिघ्न बाधा के पार करैत हमरा लग पहुँचि जायब तँ बुझू काज भँ गेल मुदा एकेटा सावधानी राखव, जे कतबहुँ डेराओत तँ डरिक' आपस नहि होयब। जँ आपस होयब तँ अहूँ सब कोनो काजक नहि रहि जायब। हम अहिक लेल तैयार नहि होइत छलहुँ"।

धनीराम, "ठिक छै बाबा हम तैयार छी। कोन दिन जयबाक छैक आ पूजाक लेल की की सामग्री चाही"।

बाबा, (एकटा उज्जर पुर्जी हाथ मे दैत) एकरहि अनुसार सब सामग्री काल्हि दस बजे धरि पठबा दिअ आ एकरा अलावे दू टा परवा (कबूतर) आ चारि बोतल शराब सेहो चाही। काल्हि अमावस्या थिकैक। काल्हुँक पूजा उत्तम मानल गेल अछि। अहाँ दुनू प्राणी ठीक ग्यारह बजे गंगा किनारक श्मशान मे आबि जाउ। संग मे तेसर केओ नहि रहबाक चाही। निर्धारित समय पर धनीराम दुनू प्राणी श्मशानक लेल विदा भेलाह। संतान प्राप्त करबाक लेल लोक की की ने करैत अछि, मुदा पैघ भेला पर जखन ओ संतान बुढ़ा–बुढ़ी के नहि ताकैत अछि तँ सोचि सकैत छी, ओकरा कतेक कष्ट होइत हेतैक। रातिक ग्यारह बाजि रहल छलैक। ओना तँ दिनहुँ मे श्मशान भयावह लागैत अछि आ रातिक तँ गप्पे कोन। चारूकात लाश जरि रहल छलैक। ओहिठामक विचित्र आवाज ककरहुँ डेरा सकैत छल। कनेक दूर गेला पर आवाज आयल जल्दी भाग नहि तँ मारल जयबैं। रहि–रहिक कुकुरक कानब आर भयावह लागैत। राति एतेक अन्हार जे हाथ के हाथ नहि सूझैत छल। ओहुना अमावशक राति अन्हार होयबा मे नामी अछि। ओना तँ धनीराम लग एतेक साधन छलैक जे ओ रोशनीक प्रबंधक क' सकैत छल। कम सँ कम टार्चक प्रबंध तँ कए सकैत छल मुदा बाबा पहिनहि मना क' देने छलाह। कोनो तरहँ हिम्मत क' क' धनीराम आगाँ बढ़ि रहल छलाह। डरे तँ हालत खराब छलनि मुदा बाबा पर विश्वास छलनि। ओ कहने छलथिन्ह जे डेरायत अवश्य मुदा किछु करत नहि। अही भरोष पर बढ़ि रहल छलाह कि सोझा मे एकटा नर कंकाल आबिक' ठाढ़ भ' गेलनि आ बाजल, भाग नहि तँ मारिक खा जेबौं। चारूकात नर मुण्ड नाच' लागल। धनीराम दुनू प्राणीक हिम्मत जबाब द देलक। जाड़क मास रहितहुँ दुनू प्राणी पसेना सँ तर–बतर भ' गेलाह। हुँनका मन मे भेलनि जे आपस भागि जाइ मुदा बाबाक गप्प मन पड़ि गेलनि 'किछु भ' जाओ भगिहँ नहि, नहि तँ पागल सेहो भ' सकैत छें। ओ सब पुनः हिम्मत क' क' आगु बढ़ल आ बाबाक स्मरण केलक। तुरन्त आवाज आयल "सीधे चल आबह। आब तँ पहुँचि गेलह। ओ दुनू भय

मुक्त भ' गेलाह। सब डर खतम भ' गेलनि। जतेक नर–कंकाल नाचि रहल छल, सब अदृश्य भ' गेल। दुनू बाबा लग सकुशल पहुचि गेलाह आ शुरू भेल तंत्र पूजा। करीब दू घंटा धरि पूजा भेल। एकटा परवा काटल गेल आ शराबक आहुति देल गेल। ओकरा बाद शुरू भेल युद्ध। धनीरामक पड़ोसीन जे हुँनका कनियाँक कोखि बन्हने छलैक, ओकरा संग भयंकर युद्ध बाबा कँ भेलनि। दुनू दिशक वार्तालाप स्पष्ट रूपँ तँ नहि मुदा किछु किछु धनीराम सेहो सुनैत छलाह। ओ डायन प्रतिशोध मे हमरा पिताक प्राण लेमए चाहलक। हमर पिताजी बाबाक एकलौता बेटा छलाह। ओ इ कोना बर्दास्त क' सकैत छलाह। ओ चट द दोसर परवाक गरदनि पकड़िक मचोरि देलनि। ओ डायनक प्रणान्त भ' गेल आ तखन बाबा धनीरामक कनियाँक कोखि खोलि सकलाह। किछु दिन बाद धनीरामके दू टा पुत्र भेल। दुनू सुन्दर आ सुशील छल। ओहि दिन सँ धनीराम दुनू प्राणी बाबाक अनन्य भक्त बनि गेल। प्रतिदिन एक बेर अवश्य मंदिर आबि माँ कालीक दर्शन करैत छल आ बाबाक चरण छुबि घर जाइत छल। ओ बाबा कँ किछु देमए चाहैत छल मुदा बाबा ओकरा डाँटि क' भगा देलनि। तखन ओ मंदिर निमार्णक बहन्ने पहिने तँ भव्य काली मंदिरक निमार्ण करौलक। आ ओकराबाद ओकरहि बगल मे दस कट्ठा जमीन कीनि क' नौ कोठलीक मकान बनौलक, बाबाक रहबाक लेल मुदा बाबा ओहि मे कहिओ नहि रहलाह। पहिने तँ बाबा वर्ष मे दु बेर गाम आबैत–जाइत छलाह मुदा बाद मे पलखति नहि भेटला सँ वर्ष मे एक बेर अवश्य जाइत छलाह। हमर बाबूजी सोहो एहिठाम शिक्षक छलाह तँ बाबाक बिचार भेलनि जे धिया–पूताक शिक्षा–दीक्षा अहीठाम सँ देल जयबाक चाही। इएह सोचि क' बाबा गाम सँ सब कँ ल' क' अहीठाम चल एलाह। ओकर बाद हम एकबेर गाम गेल छलहुँ मुदा कहिआ गेल छलहुँ ई मोन नहि अछि।

मालती, "एहिठाम एखन अपने की क' रहल छियैक"।

मनिकान्त, "बीस वर्ष पूर्व सेवा निवृत भ' गेलहुँ। पेंशन भेटैत अछि। घरहि मे रहि क' पठन–पाठन करैत छी। पत्नि छथि, किछु समय हुँनका संग गप्प–शप्प मे बितैत अछि। बेटा–बेटी सब बाहर रहैत अछि। सभक विवाह दान भ' गेल अछि। सब परिवार आ बाल बच्चा अपनहि संगे राखैत अछि।

एहिठाम बस दू प्राणी आ एकटा नौकरानी।
मालती, "अपने एखन कत सँ आबि रहल छियैक ?
मणिकान्त, "एखन हम छपरा सँ आबि रहल छी। हमर जेठ बालक ओतहि रेलवे मे कार्यरत छथि। ओ बाल बच्चाक संग ओतहि रहैत छथि। हुँनकहि सँ भेट करबाक लेल आ पोता–पोती कँ देखबाक लेल बीच बीच में चल जाइत छी"।
मालती, "बच्चा सब कँ भेट करबाक लेल अहाँ एसकरहि जाइत छी ? अहाँक कनियाँ नहि जाइत छथि की" ?
मणिकान्त, "हँ–हँ..... कनियाँ सेहो जाइत छथि। एखन हुँनका पायर मे किछु कष्ट छलनि, तें ओ संगे नहि गेलीह"।
मालती कँ मणिकान्त बाबु सँ गप्प करबा मे बड़ नीक लागि रहल छलनि। ओ गप्प के आगु बढ़ाबैत बजलीह, अपने कँ कएटा बाल–बच्चा छथि ?
मणिकान्त, हमरा चारिटा बालक छथि। जेठ छपरा रेलवे मे, ओहि सँ छोट दिल्ली विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर, ओहि सँ छोट बेंगलोर मे इनजिनियर आ सब सँ छोट मुम्बई स्टेट बैंक मे मैनेजर छथि।
मालती, "आ बेटी नहि छथि की" ?
मणिकान्त, "बेटी नहि किएक रहतीह। दू–दू टा बेटी छथि। दुनू जमाय इन्जीनियर छथि। एकटा भोपाल में आ दोसर कलकत्ता मे।
मालती, "ओ सब आबैत–जाइत छथि कि नहि" ?
मणिकान्त, "हँ... हँ..... आबैत जाइत छथि। ओना तें परिवार मे जखन कोनो काज उपस्थित होइत अछि, तँ सब केओ आवैत छथि। अन्यथा वर्ष मे एक बेर मइ–जून मे जखन गर्मीक छुट्टी होइत अछि। बच्चा सभक स्कूल बन्द रहैत अछि। ओ एक मास तँ बुझू हमरा सभक लेल साओन सँ कम नहि लागैत अछि। सर्वत्र हरियरे–हरियर। ओ एक मास कोना कटि जाइत अछि, किछु बुझाइते नहि अछि। सब केओ बाबा विश्वनाथक पूजा मे मग्न रहैत अछि। ओहि सँ समय बाँचल तँ गप्प सड़ड़क्का, हँसी ठट्ठा मे बीतैत अछि। आँगनक दृश्य कोनो मेला सँ कम नहि लागैत अछि। कुल मिलाक उन्नचालिस गोटे सँ कम नहि रहैत अछि। केओ ओम्हर कँ. ....तें केओ एम्हर पँ..... करितहि रहैत अछि। ओकरा सभक गेलाक बाद

फेर इ घर बिरान भ' जाइत अछि आ एग्यारह मास धरि हम दुनू प्राणी एसकरूआ भ' एकरा जोगैत छी, अही आशा पर जे फेर गर्मीक छुट्टी कखन होयत।
मालती, "बेरा–बेरी, धिया–पूता, लग सेहो रहि क' समय बिता सकैत छी
मणिकान्त, "देखु बिता सकैत छी आ यदा कदा बिताइओ रहल छी मुदा जँ नियमित रूप सँ ककरहुँ लग रहब, तँ ओकरा बोझ बुझेतैक। दू चारि दिन तँ लोक अतिथि केर रूप मे लैत अछि मुदा वेशी दिन रहब उचित नहि।
मालती, "से किएक, बाल–बच्चा के तँ लोक अही लेल पोशैत पालैत अछि जे बुढ़ारी मे सहारा देत।
मणिकान्त, "से बात बिलकुल सही अछि मुदा खाली एक दिशाह सोचब कि उचित अछि। देह अशक भेलाक बाद तँ लोक के बाले–बच्चेक सहारा रहैत छैक, मुदा यावत पौरूख रहए, अपनहि पर आश्रित रही, से नीक। आई–काल्हि जीवनक परिभाषा बदलि गेल छैक। परिवारक परिभाषा बदलि गेल छैक। सभक अपन–अपन जीवक स्टाइल छैक। बेटा–बेटी लग रहला सँ ओकरा स्टाइल मे व्यवधान हेतैक। से ओकरा नीक नहि लगतैक आ तैखन शरू होयत कलह। मन मे भरल रहत एक दोसराक प्रति विषाद। प्रेम मे आबि जायत दरारि। एकटा पुरान कहावत छैक जे दूरक ढोल सुहावन आ बाड़ीक पटुआ तीत। तहिना प्रेम दूरहि रहला सँ नीक रहैत छैक। अपना बाल–बच्चा कुटुम्ब परिवार सँ जतैक दूर रहब, फराक रहब, प्रेम ओतबहि नीक रहत। वेशी सटल रहला पर प्रेम टुटि जाइत छैक। अपना पन जे रहैत छैक से बोझ बुझाइत छैक । तँ एहन विचार कखनहुँ नहि करबाक चाही। जखन असहाय भ' जायब तखन तँ बेटा पुतौह छैहे। तखन तँ ओएह सहारा हेतैक। ओकरहुँ लेल "गड़ा पड़ल ढोल तँ बजेनहि कुशल" आ हमरहुँ सभक लेल "जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।"
मालती, "गाम जयबाक इच्छा होइत अछि कि नहि" ?
मणिकान्त, "गाम जयबाक इच्छा होइतहुँ अछि आ नहिओ होइत अछि।"
मालती, "से किएक" ?

मणिकान्त, "गाम देखबाक लालसा मन मे रहैत अछि। के एहेन अभागल होयत, जकरा अपना जन्म भूमि सँ प्रेम नहि हेतैक। गामक ओ मनोहर दृश्य, इनार पर लागल सांझ–भोर पनिभरणिक भीड़ आ एक दोसराक बीच सुमधुर गप्प–शप्प। सब अपना आप मे प्रेस रिपोर्टर। जे कोनहुँ घटना दिनक होयत से साँझ मे आ जे रातिक होयत से भोर मे इनार पर अवश्य पहुँचि जायत। ककरा घर मे कि भोजन बनल, ककरा सासु के ककरा पुतोहुक संग झगड़ा भेल आदि आबि जाइत अछि आ ओहीठाम सँ शुरू होइत अछि ओकर प्रसारण। भोरे गाय, महिस केर गर्दनिक घंटीक टुन–टुन शब्द भोर होयबाक एहसास कराबैत अछि। खासक मिथिलाक सुग्गो वेदे पढ़ैत अछि। गाम मे दोसराक दुःख–सुख पूछनिहार बहुत लोक भेटत। तीमन–तरकारी, दूध–दही शुद्ध भेटत। धान रोपैत काल पावस, बारह मासा तँ धान काटैत काल झूमरक आनन्द गाम छोड़ि कत' पायब। पावनि–तिहारक सुखद क्षण तँ कोजागराक पचीसी, जाँत पीसैत काल वा ढेकी कुटैत कालक लगनी ककरहुँ मन मोहित क' लैत अछि। ई स्वाद शहर मे कत' भेटत। तैं गामक जीवन जीवाक उत्कट इच्छ होइत अछि जे सम्भवतः प्रेमबाबू कैं सेहो भेल छलनि"।

मालती, "अपने से कोना बुझल" ?

मणिकान्त, "हम तँ पहिनहि कहलहुँ जे हम मनोविज्ञानक प्रोफेसर रहि चुकल छी। हमरा सँ किछु चोरायल नहि रहि सकैत अछि। हम एहि सँ पूर्ण सहमत नहि छी। तैं सम्भवत केर प्रयोग कयल अछि। भ' सकैत अछि जे कारण कोनो दोसरो होमए मुदा एकटा कारण इहो भ' सकैत अछि"।

मालती, "आब इ कहुँ जे गाम जायबाक इच्छा किएक नहि होइत अछि"?

मणिकान्त, "देखू गाम मे सब रंगक लोक रहैत अछि। किछु निको तँ किछु अधलाहो, मुदा ओ निको लोक पर भारी पड़ैत अछि। गामक लोक के कोनो काज धन्धा तँ रहैत नहि छैक। खायत आ दोसराक खिद्यांश करत। भरि दिन बैसिक' ताश खेलायत आ लोक कैं झगरा लगाओत। ककरहुँ उन्नति देखि नहि सकैत अछि। दोसर कोना खाधि मे खसत, इएह सब सोचैत रहत। शहर मे ककरा पलखति छैक जे दोसरा दिश ताकत। सब अपनहि मे मग्न, बजबै तँ बाजत, नहि त अहाँ अपना घर ओ अपना

घर। की अहीं कहुँ ने हम किछु अनर्गल बाजल अछि की" ?

मालती, "अहाँ तँ गामक सद्यः चित्रण क' देल अछि। इएह सब त गाम मे होइत अछि। प्रेम बाबू रिटायर भ' क' गाम अयलाह। रिटायर भेलापर कुल मिलाक लगभग पच्चीस लाख टाका भेटल छलनि। सबटा ग्राम सुधार मे लागि गेलनि। आ गाम ठामक ठामहि। हमर आ बच्चा सभक विचार छलनि कि ओहि टाका सँ पटना मे चिक्कन घर बनाबथि, मुदा श्रीमानजी मानथि तखन ने। आब जखन सबटा टाका खतम भ' गेलनि तँ ग्राम सुधारक सब नशा उतरि गेलनि"। गप्प–शप्प मे मालती आ मणिकान्त दुनू गोटे एतेक ने रमि गेलाह, जे पते नहि चलल बनारस स्टेशन कखन आबि गेल। गाड़ी बनारस स्टेशन पर एक झटकाक संग ठाढ़ भेल आ यात्रीक भीर सँ एक विशेष प्रकारक शोर वातावरण मे गुंजि उठल। केओ चढ़बाक लेल तँ केओ उतरबाक लेल मारि क' रहल अछि। यात्री सँ वेशी अरियात' बलाक भीड़। पूरा स्टेशन परिसर भीड़ सँ खचाखच भरल। ओहि भीड़ मे कोनो तरहें प्रेम बाबू ,मालती आ मणिकान्त गाड़ी सँ उतरलाह। प्रेम बाबू सूटकेश प्लेटफार्म पर राखि एम्हर–ओम्हर ताकए लगलाह, जेना ककरहुँ प्रतीक्षा होनि। मणिकान्त हुँनकर भाव बुझि गेलाह आ बजलाह एम्हर–ओम्हर की ताकैत छी

प्रेम, कोनो कुली सँ पता करैत छी, होटल वा धर्मशाला...

मणिकान्त (बात काटैत) बजलाह, "औ जी जँ हमरा सँ भेट नहि होइत तखन तँ कोनो गप्पे नहि। मुदा जखन भेट भ' गेलहुँ तखन होटल आ धर्मशाला किएक ? हमर नौ कोठलीक मकान तँ ओहिना ठुनकैत रहैत अछि। हम बुढ़ी (कनियाँ) आ दाय (नौकरानी) मात्र तीन गोटे रहैत छी। एक दू दिन हमरा ओहिठाम रहि हमर अतिथ्य ग्रहण कयल जाउ। तखन जे जेना विचार हेतैक, से कयल जेतैक ।

प्रेम, "मणि बाबू, अहाँ हमरा सँ बहुत पैघ छी। पैघ भाय वा पिताक समतुल्य छी। एहि अवस्था मे हम सब अहाँ पर बोझ बनी इ उचित नहि बुझना जाइत अछि।

मणिकान्त छी,: छीः,.....एकरा अहाँ बोझ कहैत छी? इ त सौभाग्यक गप्प थीक। ऐं औ..... अहाँ तँ सद्य मिथिला सँ आयल छी आ मिथिला मे कहल

गेल छैक 'अतिथि देवो भवः'। अतिथि कतहुँ बोझ भेलैक अछि। दोसर गप्प अहाँ इलाकाक लोक छी आ एहि ठामक लेल अनभिज्ञ सेहो। तँ इ उचित होयत जे दू चारि दिन हमरा ओहि ठाम रहि क' घुमि फिरिक देखु–सुनु। ओकर बाद जेहन इच्छा होयत से करब।

प्रेम अपन सामान उठौने मालती क संग मणिकान्त जीक पाछाँ–पाछाँ विदा भ' गेलाह। बाटमे प्रेम पुनः सोचि रहल छथि जे जा तँ रहल छी। कहुँ एहेन ने हो जे बेल सँ खसलहुँ आ बबूर पर अटकलहुँ। इहो व्यक्ति हमरहि ग्रामीणक दोसर रूप ने होथि। एहन लोक बड़ चिक्कन–चिक्कन गप्प करैत अछि। मुदा एतेक आग्रहो के ठुकरायब उचित नहि। एहिठाम केओ अपन तँ अछिओ नहि। दोसर गप्प आब हमरा सभक लग बाँचलो कि अछि जे लेताह। तखन भगवान जे प्रारब्ध मे लिखने होयताह, से तँ होयबे ने करतैक। प्रारब्ध सँ भगि क' केओ नहि बाँचल अछि। मौन के तोड़ैत मणिकान्त बाबू बजलाह, "एहिठाम रहि क' बाबा विश्वनाथक खूब मन सँ पूजा अर्चना करैत छी। धिया–पूता सब अपना लग रखबाक बड़ आग्रह करैत अछि। मुदा इ सुख दोसर ठाम कत भेटत। धिया–पूताक संग रहबाक मतलब भेलैक, ओकरा अधीन रहब। ओ जे किछु करत से चुपचाप देखैत रहुँ। ओहि पर अपन प्रतिक्रया व्यक्त नहि क' सकैत छी। आ जँ कयलहुँ तँ ओकर विपरीत प्रतिक्रिया सेहो भ' सकैत अछि। ई तखन सम्भवत होयत, जखन हाथ–पायर काज करब बन्द क' देत। दोसर गप्प "जँ कबीर काशी मे मरिहें, रामक कोन निहोरा।" एहिठाम काशी मे मृत्यु भेने मोक्षक प्राप्ती होइत छैक। तँ अध्यात्मिक दृष्टि सँ सेहो इ स्थान उत्तम मानल गेल अछि। जीवनक अन्तिम क्षण मे लोक प्राण उत्सर्ग करबाक लेल काशी आबैत अछि। आ हम एहिठाम सँ अन्यत्र चल जाउ, सें कोना हेतैक। प्रेम, जी हँ अपनेक निर्णय एकदम उचित अछि। अपनेक विचार आ भावना सँ प्रेरित भ' हमरहुँ मन मे इ भावना जागि रहल अछि जे शेष जीवन अहीठाम व्यतीत करी आ बाबा विश्वनाथक सेवा करी।

मणिकान्त, तखन तँ हमरहुँ खूब मन लागत आ समय सेहो नीक जकाँ कटत।

प्रेम, डेरा जँ विशेष दूर होइ तँ रिक्शा ल' लितहुँ।

मणिकान्त, ओना तँ आब आबिए गेलहुँ मुदा हमर उर्जा अब इएह थीक। एहि अवस्था मे जतेक पायरे चलब, ओतेक देह मे फूर्ति रहत। हँ जँ अहाँक सुटकेश भारी हो तँ हमरा द' दीअ। हमरा तँ एतेक उठाबक आदत अछि।

प्रेम, नहि, नहि एहेन कोनो गप्प नहि छैक। हम तँ मात्र समय केर बचतक ख्याल सँ बाजल छलहुँ।

मणिकान्त, आब तँ ने हमरा औफीस जयबाक अछि आ ने अही के। तखन समय बचा क' की करब। इहो तँ एकटा काजे भ' रहल छैक। एकरहुँ कम नहि बुझिऔक। तावत् मणिकान्त बाबुक डेरा आबि गेल। मणिकान्त बाबूक आवाज पर हुँनकर दाई (नौकरानी) डेराक केवाड़क कुंडी खोललक। सब केओ भीतर गेलाह। मणिकान्त बाबूक कनियाँ सुलेखा के प्रेम आ मालती के संग देखि आश्चर्य भेलनि। ई तँ अपरिचित लोक छथि आ एहि विषय मे मणिकान्त बाबू किछु कहनहुँ नहि छलाह। ई के भ' सकैत छथि ? ओ प्रश्न भरल नजरि सँ मणि बाबू दिश देखलनि। मणिकान्त बाबू सेहो सुलेखाक आँखि देखि हुँनकर मनक भाव कँ पढ़लनि आ बजलाह ई दुनू गोटे हमरा गामक लोक छथि। एहिठाम काशी बाबा विश्वनाथक दर्शन करबाक लेल आयल छथि। ट्रेन मे भेट भेलाह आ गप्प–शप्प केर क्रम मे परिचय भेल। हम एहिठाम अयबाक लेल बड़ आग्रह केलियनि। इ सब तँ अयबाक लेल तैयार नहि होइत छलाह। बुझू जे हम हिनका लोकनि के संग जबरदस्ती कयल अछि।

सुलेखा बजलीह, "इ तँ बड़ नीक काज कयल अछि"।

मणिकान्त, "हम खराब काज कोन करैत छी"।

सुलेखा, " सबटा तँ काज खराबे करैत छी, कहिओ– कहिओ नीक काज क' लैत छी, जेना आई कयलहुँ अछि, आ सब केओ भभाक हँसि देलनि"। मालती के इ चौल बड़ नीक लगलनि आ हुँनका सभक संगे ओहो अपन हँसी कँ रोकि नहि सकलीह।

सुलेखा,"एकटा गप्प बाजु" ?

मणिकान्त, "बाजु..... बाजु..... अवश्य बाजु"।

सुलेखा, "अहाँ हिनका सबक कँ चिन्हलियनि कोना ? अहाँ तँ अपनहि

कतेक दिन सँ गाम नहि गेल छी'' ?

मणिकान्त, ''गाम तँ नहि गेल छी मुदा गामक नाम तँ जानैत छी। गामेक नाम सुनिक चिन्हलियनि। सुलेखा आग्रह पुर्वक प्रेम आ मालती कँ बैसौलनि। हुँनका हाथ–पायर धोबाक आग्रह केलनि। प्रेम आ मालती हाथ पायर धो क' चाय पीलनि। सुलेखा प्रेम आ मालती के एतेक स्वागत केलनि, जतेक सम्भवतः प्रेमक सासुरो मे नहि कहिओ भेल होयत। ओना तँ मैथिल वा मिथिलाक स्वागत–सत्कार जग जाहिर आछिये। दुनू परिवार दिन–राति गप्प–सड़क्का मे लागल रहैत छल। बीच–बीच मे मणिकान्त बाबू एकाध टा पुटका छोड़ि दैत छलाह। ताहि पर घंटो ठहाका चलैत छलैक। तीन दिन कोना बीत गेलैक, ककरहुँ भान नहि भेलैक। तीन दिनक बाद प्रेम मणिकान्त बाबूक सोझां हाथ जोरि क' ठाढ़ भेलाह आ बजलाह, भाई सेहेब, अहाँ हमरा पर बड़ कृपा कयल। अनजान लोक कँ अपना घर मे राखि जे भ्रातृवत स्नेह देल अछि ओकरा हम कहिओ नहि बिसरि सकैत छी। हम चाहैत छी जे कतहुँ डेरा ल' क' शेष अवधि बिताबी। तँ अपने सँ आज्ञा चाहैत छी। मणिकान्त बाबू हँसी चौल करबा मे माहिर लोक छलाह। ओ अवसर पर चूकैत नहि छलाह। ओ गम्भीर भ' क' बजलाह ''अहाँ झूठ बाजैत छी''।

सब केओ स्तब्ध भ' गेलाह, जे एहेन कोन बात भ' गेलैक। सब केओ मणिकान्त बाबूक मुँह ताकए लगलाह। प्रेम सेहो अकचकाइत बजलाह'', से कि हम की झूठ बजलहुँ अछि''।

मणिकान्त, ''अहाँ तँ एखनहि सब किछु बिसरि क' जा रहल छी आ कहैत छी जे कहिओ नहि बिसरि सकैत छी''।

प्रेम, ''इ तँ औपचारिकता थीक। एहिठाम कतेक दिन रहि सकैत छी। आतिथ्य कमहि दिनक नीक होइत छैक। कतौ ने कतौ तँ इन्तजाम करहि टा पड़त''।

मणिकान्त, ''कि अपने कोनहुँ इन्तजाम कयल अछि। एहिठाम सँ जायब तँ रहब कत'। कोनो ठाहर भेटल अछि की ?

प्रेम, ''जी नहि, एखन धरि तँ नहि भेटल अछि''।

मणिकान्त, ''पहिने ओ ने करू तखन ने जयबाक सुर–सार करब। अहाँ

डेरा ताकि लिअ, हम एकदम नहि रोकब।

प्रेम, ''ओहूँ मे तँ अहींक मदतिक आवश्यकता छैक। यावत् अपने नहि चाहबै, तावत् हमरा किराया पर मकान के देत। ओतेक पलखतिओ तँ नहि भेटैत अछि जे ताकब।

मणिकान्त, ''देखु एहिठाम स्थायी रूप सँ किराया केओ नहि लगाओत। अहाँ जतेक एक मासक किराया देबैक, ओकर पाँच गुना ओ सब कमा लैत अछि। तँ एहिठाम दू दिन, चारि दिनक लेल भेटि सकैत अछि, सेहो महँग भेटत। दोसर गप्प ने हम ककरहुँ कहबै आ ने हमरा कहला पर केओ देत। कारण हमहुँ ककरो कहला पर नहि देलियैक अछि।

प्रेम,''तखन कोना हेतैक''।

मणिकान्त, ''एहिठाम रहबा मे कोनो हर्ज बुझाइत अछि की ?आ कि कोनो कष्ट होइत अछि।

प्रेम, ''छि.... छि एहेन गप्प जुनि बाजू एहिठाम तँ लागैत अछि जेना स्वर्ग मे होइ। अपनेक व्यवहार देखि सच पूछी तँ कतहुँ जयबाक इच्छो नहि होइत अछि। मुदा पहुँनाइ कतेक दिन करबै। दू, चारि ....दस दिन, ओहि सँ बेसी नहि करक चाहीं''।

मणिकान्त, ''अपनेक सोच बिल्कुल दुरूस्त अछि मुदा ई सबठाम लागू नहि होइत छैक। पहुनाई अपना सम्बन्धीक ओहिठाम होइत छैक। ओहिठाम अहाँक गप्प सर्वथा लागू होइत अछि। हम अहाँक सम्बन्धी तँ नहि छी। समाजक लोक छी, मित्र छी तँ एहिठाम इ गप्प लागू नहि होइत छैक। मित्रक ओहिठाम कोनो गप्पक कटुता नहि देखल जाइत छैक। गाम– घर मे देखैत छियैक की नहि, जँ केओ ककरहुँ गारि पढ़ि देलक आ गारि पढ़निहार बलगर होइत अछि। तँ गारि सुननिहार चुपचाप चलि जाइत अछि मुदा जँ सहोदर भाय किछु कहि देलक, तखन तँ एक दोसराक शोणित पीबा पर उतारू भ' जाइत अछि। कदाचित भाय तँ कनेक काल बर्दास्तो क लेत मुदा ओकर कनियाँ एकरा प्रतिष्ठाक प्रश्न बना दैत अछि। ओकरा सँ इ सब सहन करब असम्भव भ' जाइत अछि। अपने एहिठाम बेहिचक रहूँ। सब गोटे एकठाम रहैत छी, तँ गप्प सप्प मे दिन कटि जाइत अछि। हमरहुँ सब के बड़ नीक लागैत अछि। ओना ककरा पलखति छैक

जे ककरहुँ लग' बैसत आ गप्प करत''।
प्रेम, ''गाम मे तँ एहेन कतेको लोक भेटि जायत, जे भरि दिन बैसल–बैसल दोसराक खिद्यांश करत। ओकरहि खायत आ पीठक पाछां निंदा करत मुदा शहर मे एहन लोक भेटब कठिन अछि। ओना तँ प्रेम के एहिठाम खूब मन लागि रहल छलनि मुदा ऐना कतेक दिन चलत। भ' सकैत अछि काल्हि, कोनो लफड़ा मे पड़ि जाथि। मोन तँ छनगले छलनि। तैं पड़ाय चाहैत छलाह। मणिकान्त आ सुलेखा के सेहो प्रेम आ मालती सँ बहुत स्नेह भ' गेल छलनि। तकर एकटा कारण इहो छलैक जे जतेक खुलिक आपस मे सब केओ हँसी–चौल करैत छलाह ओ बेटा–पुतौह, वा बेटी–जमाय लग सम्भवो नहि छलैक। दुनू परिवार के देखि केओ इ अनुमान नहि लगा सकैत छल जे आठ दस दिन पूर्व दुनूक परिचय आ सेहो ट्रेन मे भेल अछि। ओना तँ दू परिवारक कलहक कारण स्त्रीगण होइत छथि आ ओकर बहन्ना बच्चाक झगड़ा सँ उत्पन्न होइत अछि। एहिठाम दुनू गोटाक बच्चा छेटगर छलनि आ एहिठाम सँ दूर छलनि। जँ अहाँक कनियाँ दहिन भ' जाथि तँ अहाँक सामाजिक प्रतिष्ठा सब दिनक लेल बनल रहि सकैत अछि। दुनू गोटे मे स्नेहक एकटा आर कारण छलनि। दुनू गोटे के सासुर एके गाम मे छलनि। जखन प्रेम आ मणिकान्त कँ भेट भेलनि तँ मणिकान्त हुनका अपन ग्रामीण बना क' अनलनि। किएक तँ दुनू गोटे राजनगर स्टेशन उतरि क' अपना–अपना गाम जाइत छलाह। जखन पूरा बिकछाक' गप्प भेल तँ मालती आ सुलेखाक नैहर एके गाम मे कनेक हटि क भ' गेल। एके गामक होयबाक कारण दुनू बहिन जकां सम्बन्ध बना लेलनि। मालती आ सुलेखा एक दोसरक वर के ओझा जी कहि सम्बोधित कर' लगलीह। जँ सही पूछल जाय तँ एहि सम्बन्ध मे कहिओ दरारि नहि भ' सकैत अछि। तैं प्रेम के छटपटायलाक बादो मणिकान्त हुँनका घर सँ बहराय नहि देलनि। दुनू गोटेक बीच तस्फीया भेल जे प्रेम सब मास मे किरायाक रूप मे पाँच सय टाका देताह। आ भोजन मे जे खर्च होयत, ओहि मे आधा प्रेम आ आधा मणिकान्त देताह। एहि तरहें प्रेम बाबू मणिकान्त जीक आश्रम मे रहबाक लेल राजी भ' गेलाह। दुनू गोटे मे जतेक प्रेम भ' गेल छलनि ओकरा तोड़ब ककरहुँ वश केर गप्प नहि छल।

तैं इ निर्णय उपयुक्त भेल। एक मास बीतलाक बाद प्रेम पाँच सय टाका मणिकान्त जी के देवाक लेल गेलाह। ओ पूछलनि कि थिक ?
प्रेम, ''घरक किराया''।
मणिकान्त, (हँसैत)हमरा किएक दैत छी'' ?
प्रेम, ''तखन ककरा देबैक'' ?
मणिकान्त, ''घरक किराया घरक मालिक के ने देल जाइत छैक। घरक मालिक के ने दिऔक''।
प्रेम, ''जी! हम घरक मालिके कँ त' द' रहल छियनि।
मणिकान्त, ''मुदा हम तँ एहि घरक मालिक नहि छी। मालिकक अर्थ भेलैक जकर आदेश सब केओ मानैत हो। एहिठाम तँ हम अपनहि आदेश पाल छी''।
प्रेम, ''तखन एहि घरक मालिक के छथि, सुलेखा दीदी ?
मणिकान्त, ''आब एलहुँ ने अहाँ जगह पर। एहि घरक मालिक छथि श्रीमती सुलेखा जी आ मालती....।
प्रेम, ''मालती....कोन मालती।
मणिकान्त, एहि घर मे कएटा मालती छथि ? तावत् सुलेखा आबि गेलीह आ बजलीह, ठीके तँ कहैत छथि। एकर मालिक मालती अछि। हमरा आ मालती मे की फर्क अछि। अपने किराया मालतीक हाथ क' द' दिऔक, हमरा भेटि जायत।
प्रेम हिनका दुनू गोटेक बुझौअलि के बुझि नहि सकलाह आ तेजी सँ बजारक बहन्ना बना क' निकलि गेलाह। प्रेम गंगा किनार मे एकांत भ' क' सोचए लगलाह। हुँनका मन मे कतेक तरहक बात आबए लागल। कखनहुँ मणिकान्त जी आ मालतीक सम्बन्ध मे गलत विचारधारा आबैत छलनि। फेर सोचैत छलाह, जँ से रहितैक तँ सुलेखा दीदी एकरा कोना बर्दास्त करितथि। मणिकान्त बाबूक आब अवस्थो तँ ओहेन नहि छनि। तखन एतेक कृपा किएक। के ककरा पर एतेक कृपा करैत अछि आ ओहो अजनबीक संग। जँ ककरहुँ पर केओ एतेक कृपा करैत, तखन एतेक विषाक्त वातावरण किएक रहैत। किएक एक दोसराक शोणितक प्यासल रहैत अछि। किएक हम गाम छोड़ि एतेक दूर अयलहुँ। आखिर एहि मे की

रहस्य छैक। मणिबाबू आ सुलेखा दीदीक हमरा सँ की स्वार्थ भ' सकैत छनि। किएक हमरा एतेक मानैत छथि। हमरा हुँनका मे दूरोक कोनो सम्बन्ध नहि अछि। हमरा सँ ओ सब की चाहैत छथि। जँ हुँनकर इ स्वाभाव छनि तँ दोसरोक संग तँ एहेन क' सकैत छलाह। हमरहि संग किएक। प्रेम एकान्त मे बड़ी काल धरि गुन–धुन कयलनि। अपना प्रश्नक उत्तर ढुढ़बाक अथक प्रयास केलनि मुदा किछु निष्कर्ष हाथ नहि लगलनि। ओ जतेक एहि गुथ्थी के सोझरेबाक प्रयास करैत छलाह, ओतबहि ओझराय रहल छलैक। अन्ततः ओ हारि–थाकि क' डेरा दिश विदा भेलाह। रातिक ग्यारह बाजि रहल छलैक। प्रेम एतेक काल धरि डेरा सँ बाहर कहिओ नहि रहैत छलाह। सभक मन मे अंदेशा भ' रहल छलैक। सुलेखा आ मालती विशेष रूप सँ चिन्तित छलीह। मणिकान्तक मन मे कोनो आशंका नहि छलनि। ओ निश्चित भ' हुँनकर अयबाक प्रतीक्षा क' रहल छलाह। ओ सुलेखा आ मालती के चिन्तित देखि कहलनि, अरे! अहाँ सब किएक चिंता करैत छी। ओ आजुक प्रकरण पर कतहुँ दिमाग खपा रहल होयताह। ओ स्वयं आबि जयताह। केवाड़क कुण्डी खटखटायल। मालती दौड़िक गेलीह आ केवाड़ खोललनि। प्रेम घरक भीतर अयलाह। मालती चाह बना क' अनलनि आ चाहक कप प्रेमक हाथ मे दैत पूछलनि, "आई किएक एतेक बेर भ' गेल। एतेक काल तँ कहिओ बाहर नहि रहैत छलहुँ। आई घरक बाट–बिसरि गेल छलियैक की ?

प्रेम, "(गप्प बदलैत) नहि, नहि कनेक मंदिर मे देरी भ' गेल।

मालती, "से की कोनो विशेष प्रोग्राम छलैक की।

प्रेम, "नहि, नहि कोनो खास नहि।

मणिकान्त, मंदिर मे देरी भेल आ कि गंगाक किनार मे ? प्रेम स्तब्ध रहि गेलाह। हुँनकर चोरी पकड़ा गेलनि। ओ सोचि रहल छलाह जे इ कोना बुझैत छथि। की इहो ओम्हर गेल छलाह कि, मुदा जँ जइतथि तँ अवश्य हमरा टोकितथि। प्रेम किछु बजितथि, ताहि सँ पूर्व मणिकान्त जी बजलाह, "अहाँ के बुझल अछि ने, हम मनोविज्ञानक शिक्षक रहि चुकल छी। हमरा सँ किछु चोरायब सम्भव नहि अछि। अहाँ आजुक प्रकरण पर एकान्त मे बैसि सोचि रहल छलहुँ। की सोचलहुँ आ की निष्कर्ष भेटल से तँ हम नहि

कहब, मुदा अहाँ के एतेक दूर धरि नहि सोचबाक चाही। हम अपने सँ घरक किराया नहि लेल, एहि मे किछु कारण नहि छैक। हमरा पिताजी आ बाबाक स्पष्ट मनाही अछि जे घर किराया पर नहि लगायब। हम सब तँ अपनहि किरायादार छी। एक किरायादार दोसर सँ किराया वसूल करए, उचित नहि। तखन बेगरतित के बेगरता अवश्य शान्त करी, मुदा इ दुनियाँ केहेन छैक, हमरा सँ वेशी अपनहि बुझैत होयब। अहाँ के देखि हमरा मन मे अहाँक पीड़ा उतरि गेल आ मालतीक व्यवहार जे हम ट्रेन मे देखल, ओ हमरा बड़ प्रभावित कयलक। तँ हम अपने लोकनि कँ एहिठाम मात्र दू दिनक लेल अनने छलहुँ। दू दिन सँ वेशी अहाँ लोकनि कँ रखबाक सामर्थो हमरा नहि अछि। इ तँ मालती आ सुलेखाक स्नेह अछि, जे अहाँ कँ एहिठाम रहबाक लेल विवश क' रहल अछि। एकर एकटा इहो कारण भ' सकैत अछि। सुलेखा पाँच भाइ–बहिन छथि। हुँनका चारिटा भाय छनि मुदा बहिन मे ओ एकसरहि छथि। हुँनका एहि बातक बराबरि अफसोस होइत रहलनि जे काश हमरहुँ एकटा छोट बहिन रहैत। हमरा लागि रहल अछि जे ओ मालती के देखैत आ परिचय होइत अपन सबटा प्रेम उझलि देलनि, जे ओ छोट बहिन लेल सपना मे संयोगने छलीह। हमरा अपनहुँ आश्चर्य लागैत अछि। जीवन मे आई पहिल बेर सुलेखा हमरा निर्णय पर खुश छथि ? सुलेखा टपकि क' बाजि उठलीह, आ आन दिन कि अहाँ कँ हम मारैत छलहुँ ?

मणिकान्त, "मारैत तँ नहि छलहुँ, मुदा किछु बाँकीओ तँ नहि राखैत छलहुँ।

प्रेम चुपचाप सब किछु सुनि रहल छलाह। हुँनका अपना सोच पर पश्चाताप भ' रहल छलनि। ओ मालती आ मणिकान्तक सम्बनध मे की, की सोचि गेलाह। छी.. छी.... हुँनका एतेक दूर धरि नहि सोचक चाही। मालती हुँनकर जीवन संगिनि छथिन। मुदा आई धरि ओ मालती के नहि चिन्हलनि। हुँनका चरित्र पर शंका केलनि। ओ सोचि रहल छलाह आ मणिकान्त बाजि रहल छलाह, हम अपने सँ घरक किराया नहि लेल, इ अपने बुझैत छी। अपने कनेक मालती सँ पूछतियनि तँ सब शक दूर भ' जाइत। हम अपने कँ बाजल छलहुँ जे किराया सुलेखा के दिऔन, मालती

के दिऔन तँ अहाँ के खराब लागि गेल मुदा एहि घरक सबटा हिसाब किताब मालतीक हाथ छनि। अहाँ सुलेखा सँ पूछिऔन, की सुलेखा। सुलेखा, "जी।

मणिकान्त, "जहाँ धरि एहिठाम सँ जयबाक प्रश्न अछि, अपने कखनहुँ जा सकैत छी, मुदा एक शर्त पर....।

प्रेम, (चौकैत) कोन शर्त पर ?

मणिकान्त, "अपने हमरा इ स्पष्ट कहि दी, जे एहिठाम अहाँकेँ की कष्ट भेल ? हमरा जीवनक लक्ष्य रहल अछि, दोसराक दुःख बँटबाक। नहि की ककरहुँ दुःख देबाक। जँ कोनहुँ कष्ट भेल हो तँ ओकरा लेल हम क्षमा प्रार्थी छी।

प्रेम, "कष्ट तँ हमरा नहि अछि, बल्कि एतेक सुख हमरा जीवन मे कहिओ नहि भेल छल।

मणिकान्त, "तखन अपने किछु दिन आर अहीना रहूँ। जखन एहिठामक लोक केँ नीक जकाँ चिन्हि लेबैक, तखन इ डेरा छोड़ब। अहाँ नव लोक छी। इ शहर अन्य शहर सँ भिन्न छैक। एहिठाम मुइला सँ स्वर्ग होइत छैक मुदा एहिठाम जीअब बड़ कठिन छैक। एकटा कहबी छैक :–

"राँड़ साँढ़, सन्यासी, तीनू सँ बाँचि क' सेवी काशी"।

हम तँ एहिठाम रहैत छी। एहिठामक गुण–अवगुण की कहुँ। जँ एहिठाम सँ गंगा आ बाबा विश्वनाथ केँ हटा दिऔन तँ एहिठाम किछु नहि बचैत छैक। इएह दू एकर रक्षा क रहल छथि।

प्रेम, "मुदा दोनो गोटेक बीच जे तय भेल छल.....

मणिकान्त, ओहि सँ वेशी हम थोरहि माँगि रहल छी आ कम लेबाकलेल हम स्वतंत्र छी।

प्रेम, "किछु जँ ल' लितियैक तँ हमरहुँ संतोष भ' जाइत ।

मणिकांत, " की अहाँक संतोषक लेल हम अपना पूर्वजक प्रतिष्ठा केँ खतम क' दिअनि। इ अहाँकेँ उचित लागत"।

प्रेम, "नहि, नहि से तँ हम नहि चाहब जे अहाँक पूर्वज के प्रतिष्ठा पर आँच आबए। आखिर ओ हमरहुँ तँ पूज्ये छथि।

मणिकान्त, "देखू, प्रेम बाबू, जाहिठाम ककरहुँ सँ कोनहुँ अपेक्षा रहैत छैक,

ओकर पूर्ति नहि भेला सँ आपस मे वैमनस्यता बढ़ैत छैक मुदा एहिठाम हमरा अहाँ मे कोनो अपेक्षा बला गप्प नहि अछि। ने हम अहाँ सँ आ, ने अहाँ हमरा सँ किछु अपेक्षा करैत छी। एहिठाम बाप बेटा सँ बेटा–बाप सँ अपेक्षा करैत अछि। भाय–भाय सँ, घरबाली अपना पति सँ अपेक्षा करैत अछि। ओहि अपेक्षाक पूर्ति नहि भेला सँ मनक खटास बढ़ैत अछि, दूरी बढैत अछि। एकदिन आबिक दुनूक प्रेम टुटि जाइत अछि। हमरा अहाँक प्रेम मे कोनो स्वार्थ नहि अछि। हम सब तँ मुसाफिर छी। कखन छी आ कखन नहि, से के कहि सकैत अछि। तखन तँ मात्र समय कटबाक लेल हास्य–व्यंग एकटा साधन अछि। अहाँकेँ एहिठाम सँ चल गेला पर हमरहुँ इ आनन्द नहि भेटत, आ अपनहुँकेँ नहि भेटत। दुनू गोटे अलग–थलग रहिक' माँछी मारैत रहब। हम तँ कहुँना काटि लेब किएक तँ एहिठाम रहैत छी, सब चिन्हैत अछि मुदा अहाँ की करब, कतय जायब। खराब जगह मे पड़ि जायब तँ सब किछु काटि लेत। लेनी के देनी पड़ि जायत"।

प्रेम के आइ धरि एतेक बाबूओजी नहि बुझौने होयथिन्ह। मणिकान्त जीक एक–एक शब्द व्यवहारिक आ अकाट्य छल। हुँनका प्रश्नक उत्तर प्रेम लग नहि छलनि। ओ चुपचाप सब किछु सुनैत रहलाह।

प्रेम, "तखन हम की करू"।

मणिकान्त, "औ जी! की करब आ कोना करब इ तँ अहाँक काज अछि। हमर काज मात्र अहाँकेँ अगाह करब छल, से क' देलहुँ बाद बाकी अहाँकेँ सोचबाक अछि।

प्रेम, "एहिठाम एना कतेक दिन रहब। किछु ने किछु तँ जोगार करहिटा पड़त"।

मणिकान्त,"हँ से तँ करहिटा पड़त, मुदा धीरे–धीरे सब किछु करू। अघुताक' किछु जुनि करू।

प्रेम, "एकटा कहाबत छैक, जाहिठाम प्रेमक निर्वाह करबाक हो ओहिठाम कनेक दूरी बनाक रहबाक चाही। तँ.....

मणिकान्त, "बिल्कुल सच बात छैक जाहिठाम अपन लोक सब एकठाम रहैत छैक। ओत' एक दोसराक बिच किछु आदान–प्रदान होइत रहैत छैक, प्रेम बनल रहैत छैक। जखन ओहि मे किछु व्यवधान आवैत छैक, प्रेम

टुटि जाइत छैक'।
प्रेम, "इएह डर तँ हमरा होइत अछि जे कतहुँ.....
मणिकान्त, "हम अहाँ कोनो सम्बन्धी नहि छी। मित्रवत छी आ मित्र संग इ गप्प लागू नहि होइत छैक। हमरा अहाँक सम्बन्ध तँ भावनात्मक अछिं ओहि सम्बन्ध मे कोनो अपेक्षा नहि होइत अछि। की अहाँ हमरा सँ किछु अपेक्षा करैत छी"?
प्रेम, "जी नहि, एखन तँ एहेन कोनो गप्प नहि छैक। मुदा आगाँ चलिक नहि होमए, ई के कहि सकैत अछि।
मणिकान्त, "इ गप्प हम कहि सकैत छी। टाका के उनटा–पुनटा क' देखल जाइत छैक, मुदा लोक कँ देखितहि ओकर चरित्र, चालि–चलन, स्वभाव सब किछु परिलक्षित भ' जाइत छैक। हँ, ओकरा लेल केवल परखनिहार चाही। सभक बुते इ सम्भवो नहि छैक, आर अहाँ बुते तँ इ कहिओ सम्भव नहि होयत।
इ गप्प मालती आ सुलेखा सेहो सुनि रहल छलीह। मालती बाजि उठलीह, से किएक ?
मणिकान्त, "से अहाँ नहि बुझैत छियैक की? ई गप्प अहुँ नीक जकाँ बुझैत छी मुदा अहाँ अपने मुँह सँ नहि बाज' चाहैत छी। पुरूष मे एकटा गुणक संग एकटा बड़ पैघ दुर्गुण होइत छैक। ओ अपना बुद्धिक सोझाँ ककरहुँ मोजर नहि करैत अछि, खासक' अपना स्त्रीक तँ नहिए। ओकरा लागैत छै जँ स्त्रीक गप्प मानि लेब तँ हम ओकरा सँ निचा भ' जायब। इ गलत सोच अछि। विचार ककरहुँ सँ लेबाक चाही। विचार ककरहुँ नीक भ' सकैत छैक। ओकरा लेल कोनो विद्वानक आवश्कता नहि होइत छैक। विचारक परिपक्वता तँ अनुभव के अधार पर होइत छैक। विद्वानकँ ककरहुँ विचार पर मंथन करबाक चाही। ओकर गुण–अवगुण दुनू पक्ष पर सोचक चाही, मंथन करक' चाही, आ तखन काज करबाक चाही।
सुलेखा, मणि, "अहाँके बीस वर्ष भ' गेल सेवा निवृत भेना मुदा लेक्चर देबाक आदत नहि गेल अछि। अहाँक लेक्चर सँ ओझा जी बोर भ' रहल छथि।
मणिकान्त, "एहि मे बोर होयबाक कोनो बात नहि छैक। ई तँ ओ सत्य

अछि जे हिनका संगे घटित भेल अछि। जकरा कारण इ अशांत भेल छथि'। जकरा कारण ई घर–द्वारि, सर–समाज कँ छोड़िक' रने–वने भटकि रहलाह अछि। एहि सँ हिनका प्रेरणा भेटतनि। नव स्फूर्ति जागृत हेतनि, उर्जावान होयताह। एखन धरि जे मालतीक विचार कँ छोड़िक चलबाक आदत छनि, से संगे–संगे चलबाक आदत भ'' जेतनि।
प्रेम,"हम मालती कँ छोड़िक तँ कतहुँ नहि जाइत छी। जतए जाइत छी हुँनका संगहि जाइत छी"।
मणिकान्त, " ई तँ मालतीक बड़प्पन छनि। एहि मे अहाँक कोनो बड़प्पन नहि अछि। अहाँ मालतीकें ल' क' अवश्य चलैत छी मुदा हुनका विचार कँ छोड़ि दैत छियनि। हमरा दृष्टि मे इहो हुँनका छोड़ब भेल।
प्रेम, "एहेन कोनो गप्प नहि छैक। हमरा दुनू गोटे मे एहेन अछि जे घरेलू काज मे हम आ बाहरी काज मे मालती दखल नहि दैत छथि।
मणिकान्त, "इएह तँ अपने आरि द' देलियैक आ एहि आरिकँ मालती सेहा लक्ष्मण रेखा बुझि ओकरा नँघबाक प्रयास नहि करैत छथि।
मन मे जे कोनो भाव अबितहुँ हेतनि तँ ओकरा दबा लैत हेतीह। एहि आरि कँ तोड़ब आवश्यक अछि। दुनूक प्रवेश दुनू परिवेश मे होयबाक चाही"।
प्रेम, "एहिठाम हम अपनेक विचार सँ सहमत नहि छी"।
मणिकान्त, "से किएक, ओकर कारण कँ स्पष्ट क' सकैत छी" ?
प्रेम, "स्त्रीगणक सोच छोट होइत अछि। ओ वेशी स्वार्थी होइत छथि। हुँनकर स्वार्थ अपना पति आ बाल बच्चा तक सीमित रहैत छनि। जखन कि मनुष्य एकटा समाजिक प्राणी थीक। दुनू मे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध होइत छैक। समाजक बिना मनुष्यक आ मनुष्यक बिना समाजक' कोनो अस्तित्व नहि रहैत अछि। जेहेन मनुष्य रहत तेहेन समाजक संरचना करत आ जेहेन समाज रहत ओहने मनुष्यक रचना करत। तँ नीक समाजक संरचना करब प्रत्येक मनुष्यक कर्तव्य होयबाक चाही आस्त्रीगण ओहि सँ कटैत छथि। तँ कहल अछि जे हुँनकर सोच छोट होइत छनि।
मणिकान्त, "की ओहि मे केवल स्त्रीगणेक दोष छनि पुरूषक नहि ? पुरूष स्त्रीगणकँ कोन स्थिति मे रखने छथि। स्त्रीक तीन रूप होइत अछि। पहिल माँ केर, दोसर पत्नी केर आर तेसर बेटी केर। मुदा हमर समाज

ओकरा खबासिनि सँ वेशी मान नहि देत अछि। बल्कि आइ–काल्हि घरक स्त्री सँ खबासिनिक वेशी मान–दान होइत अछि। इतिहास गवाह अछि, महाराज दशरथ जे स्वंय सब विद्या मे प्रवीण छलाह, तथापि बिना महारानी कैकेयी सँ पूछने कोनो निर्णय नहि करैत छलाह।

प्रेम, "तँ ने राम कँ वनवास भेलनि"।

मणिकान्त, "राम वनवास दोसरक नजरि मे जे हो, मुदा हमरा नजरि मे ओ सब सँ महत्वपूर्ण काज भेल अछि। जे काज ककरहुँ कहनें दशरथ कहिओ नहि क' सकैत छलाह। ओ काज कैकेयी विरोधीक रूप में तुरन्त क' देलनि। तँ कैकेयीक सूझ–बूझ के हम आदर करैत छी। एकटा गप्प बाजु जखन विदुरक संग अहाँक सर्म्पक बढ़ल तँ मालती अहाँकँ टोकने छलीह।

प्रेम, "(किछु मन पाड़ैत) हँ, टोकने तँ छलीह"।

मणिकान्त, "अहाँ की कहलियनि"।

प्रेम, "हम कहलियनि जे अपना काज सँ मतलब राखू। सब गप्प मे टाँग जुनि अराबूं। इ सब गामक स्तम्भ छथि। हिनका सबकँ मिलाक राखब उचित अछि। गाम–घर मे सब रंगक लोक रहैत अछि। सभक विचार अलग–अलग होइत छैक। तँ सभक संग सामंजस्य बनेबा मे किछु तँ कठिनाइ होइते छैक"।

मणिकान्त, "जँ अहाँ ओहि दिन मालतीक गप्प मानने रहितहुँ तँ आइ इ गैति नहि होइत।

प्रेम, "तँ अहुँ इ चीज मानैत छी जे ई सब किछु विदुरे कयलक अछि"।

मणिकान्त, "इ हम दावाक संग तँ नहि कहि सकैत छी मुदा एहेन सम्भावना व्यक्त कयल जा सकैत अछि"।

प्रेम, "विदुर हमर नीक मित्र मे सँ अछि। ओ एहेन काज नहि करत आ एहि सँ ओकरा की भेटतैक"।

मणिकान्त, "की भेटतैक आ की नहि भेटतैक से तँ अहाँ बुझु आ विदुर बुझथि मुदा केओ गोटे अपन सब हाल रोजगार छोड़िक दिन–राति अहाँक ओहिठाम पड़ल रहए। एहि मे किछु ने किछु रहस्य तँ अवश्य हेतैक"।

प्रेम, "कोनो रहस्य नहि छैक। अनेरे ककरहुँ पर आरोप लगायब उचित नहि। हँ जँ आरोपकँ साबित क' दी, तखन आरोपित करब उचित अछि"।

मणिकान्त, "छोड़ु ने एहि गप्प कँ। हम एखन ओहि आरोप–प्रत्यारोप मे नहि पड़' चाहैत छी। हम तँ इ कहैत छलहुँ जे ककरहुँ मिलाक'अवश्य राखी मुदा ओहि मे अपने विलिन नहि होई। तखनहि अहाँ सकुशल रहि सकैत छी। ककरहुँ संग प्रेम अवश्य करू मुदा प्रेम मे जँ स्वार्थक किरण देखबा मे आबए तँ ओहि सँ बाँचक' चाही। ई स्वार्थ दू सहोदर के बाँटि दैत अछि आ दू अनभुआर लोक के मिला दैत अछि। ई सब किछु व्यवहार पर निर्भर करैत छैक। व्यवहार मे जतेक स्पष्ट रहब, ओतेक नीक। कनेक काल ककरहुँ खराब लागि सकैत छैक मुदा कोनो तरह के फरेब, धोखा, विश्वासघात नहि झेल' पड़त। प्रेम एकटा पटु शिष्य जकाँ सब किछु सुनि रहल छलाह आ अनुभव क' रहल छलाह, जे मणिकान्त बाबू कतेक अनुभवी लोक छथि। कदाचित जँ पूर्व मे हिनका सँ सर्म्पक भेल रहैत तँ दिन दुनियाँ दोसरे रहैत।

मणिकान्त बाबू पुनः सांस छोड़ैत बजलाह, हम सब तँ नहि देखने छी मुदा बाबाक मुँहे जे पिहानी सुनने छी, ओकरा मुताबिक हमरहि गाम मे एकटा किसान छलाह। ओ दु भाय छलाह। बड़काक नाम छलनि रामनारायण आ छोटकाक नाम छलनि श्यामनारायण। रामनारायण गाम मे खेती–पथारी करैत छलाह। श्यामनारायण एम. ए. पास क' क' शहर मे प्रोफेसरी करैत छलाह। दुनू भाय मे बड़ मेधा छलनि। सदरिकाल एक दोसराक बड़ाई करैत रहैत छलाह। रामनारायणक प्रति गाम–समाजक लोकके बहुत वेशी निष्ठा छलैक। गामक लोक कोनहुँ काज मे आवश्यकता पड़ला पर रामनारायणक ओहिठाम मदति लेबाक लेल पहुँचैत छलाह आ रामारायण सेहो यथासम्भव ओकर मदति करबाक प्रत्यन करैत छलाह। ककरहुँ बापक श्राद्ध, ककरहुँ बेटीक विवाह मे रामनारायण दस–बीस हजार टाका के नहि देखैत छलाह। मुदा रामनारायणक ई काज श्यामनारायणक कनियाँ शेफाली कँ नीक नहि लागैत छलनि। ओ सोचैत छलीह जे श्यामनारायण कमा रहल छथि आ रामनारायण ओकरा दुनू हाथे लुटा रहल छथि। किएक तँ रामनारायण जे बाजैत छलाह, श्यामनाराण ओकर

पूर्ति करैत जाइत छलाह। दुनू भाय दू देह एक प्राण छलाह। ककरहुँ कुदृष्टि रामनारायणक घर पर पड़ि गेल। जखन शेफाली एहि सम्बन्ध मे किछु गप्प श्यामनारायण सँ कर' चाहैत छलीह तँ ओ ओकरा टारि दैत छलाह। मुदा कतेक दिन बचताह। एक दिन शेफाली ठानि लेलनि जे श्याम नारायण के अपना वश मे राखब आवश्यक अछि। ओ एतेक दिन जे केलनि से केलनि, मुदा आब ओएह हेतैक जे, हम चाहब। एक दिन श्यामनारायण औफीस सँ अयलाह। शेफाली डेराक गेट खोलि अपना पलंग पर जा' क' पड़ि रहलीह। हुँनका पड़ल देखि श्यामनरायण पूछलनि की मन ठीक नहि अछि की'' ?

शेफाली, ''हमर मन ठीक अछि कि नहि ताहि सँ अहाँकेँ कोन मतलब अछि'' ?

श्यामनारायण, ''मतलब कोना नहि अछि! एहिठाम हमरा अहाँ, अहाँ के हम नहि देखब, तँ दोसर के देखत। बाजू ने कि होइत अछि''।

शेफाली, (रूसबाक नाटक करैत) बजलीह, ''छोड़ु ने हमर चिन्ता किएक करैत छी। हमरा सँ अहाँ के की लेना देना। हम कथी मे, तीन मे कि तेरह मे। अहाँ चिन्ता करू अपना भैया, भौजीक। हमरा लेल भगवान छथि।

श्यामनारायण, ''अहाँ एना किएक बाजैत छी। भैया, भौजीक हम ऋणी छी। किछुओ कयला सँ हम हुँनका ऋण सँ उऋण नहि भ' सकैत छी। बचपनहि मे जखन छः वर्षक छलहुँ, बाबूजी दिवगंत भ' गेलाह। माय तँ पहिनहि चल गेल छलीह। जँ भैया–भौजी नहि सम्हारितथि तँ हमर , कि होइत कहि नहि सकैत छी''।

शेफाली, ''हम कहाँ अहाँ के मना क' रहल छी। हम अहाँक भैया भौजीक हाथ तँ नहि रोकैत छियनि। गामक खेत–पथार सँ की आबैत अछि की नहि, कहिओ हम किछु बजलहुँ अछि। मुदा अहीं बाजू, हम सब जे किछु बाहर मे अर्जित क' रहल छी। ओहुँ पर भैया–भौजीक आँखि गरल छनि। इ उचित नहि बुझाइत अछि। आखिर हम सब अपन निर्वाह कोना करब। एखन बाल–बच्चा नहि अछि। जखन बाल–बच्चा होयत तखन कोना चलत।

श्यामनारायण, ''जहिना एहिठामक अहाँ अपन अधिकार बुझैत छी।

तहिना गामक सब किछु भैया–भौजीक छनि। ओ हुँनकर अपन अरजल छनि।

शेफाली, '' ठीक छै, ओ हुँनकर अपन अरजल छनि तँ हमहुँ ओकर हिसाब–किताब हुँनका सँ थोड़हि मागैत छियनि। ओ अपना मे रहथुँ आ हम अपना मे''।

श्यामनारायण, ''इ तँ ठीक अछि मुदा.....।

शेफाली, ''मुदा की.....।

श्यामनारायण, ''मुदा इएह जे बिलाड़िक गरदनि मे घंटी बान्हत के। किएक तँ हमरा हुँनका लग ठीक सँ ठाढ़ो भेल पार नहि लागत।

शेफाली, ''ठीक छै इ काज हमही करब। अहाँ चुपचाप देखैत रहुँ आ जे जे कहब से टा करए पड़त''।

श्यामनारायण के बुझा गेल जे शेफाली ठीक कहैत छथि। आखिर ओ कतेक दिन इ सब बर्दास्त करत। भौजी तँ नहि, ओ तँ ममताक मूर्ति छथिन्ह मुदा भैया ओकर सब टा टाका धीरे–धीरे टानि लैत छथिन्ह। ओ बुझैत छथि जे हाथ पर वेशी टाका रहने शहर मे लोक वेशी खर्चीला भ' जाइत अछि। एम्हर टाकाक अभाव मे श्यामनारायण शेफालीक आवश्यकताक पूर्ति तँ नहिए क सकैत छलाह, बल्कि अपनहुँ किछु आवश्यक काज छुटि जाइत छलनि। श्यामनारायणक संग विवशता छलनि जे ओ रामनारायण लग किछु नहि बाजि सकैत छलाह। रामनारायण दुनू प्राणी हुँनका बेटा जकाँ पोषणे रहथि। श्यामनारायण के जखन किछु कहबाक आवश्यकता बुझाइत छलनि तँ ओ अपन भाउज शीलाक माध्यम सँ बाजैत छलाह। कौखन शीला श्यामनारायणक पक्ष ल' क' लड़ि जाइत छलीह। तँ श्यामनारायणकेँ रामनारायणक सोझां कखनहुँ किछु बजबाक आवश्यकतो नहि भेलनि। शीला बराबरि रामनारायण के परचारैत रहैत छलथिन्ह, कोनो काज करैत छी, तँ दुनू भाय विचारि क' करू। श्यामनारायणकेँ सेहो पूछिऔन! आब ओ बच्चा नहि छथि। ओहो तँ आब पैघ भेलाह। हुँनकहुँ मे उचित–अनुचित बुझबाक सामर्थ छनि मुदा रामनारायणक कहब छलनि हम जँ गलती करैत छी तँ अहाँ सब बाजू, हमर गलती देखाउ ? एखन धरि तँ हम स्वंय निर्णय लेलहुँ अछि। नीक वा बेजाय जे भेल से निर्णय

ल' क' एतेक दूर धरि परिवारक गाड़ी घिचिक आनल अछि।आई जँ ककरहुँ अहाँ कँ वा श्यामनारायण कँ हमरा निर्णय पर आपत्ति अछि तँ बाजू..... हम कोन काज गलत कयलहुँ अछि'' ? '' सवाल गलत वा सहीक नहि अछि। सवाल विचारक अछि। कोनहुँ काज परिवारक सब गोटेक संग विचार क'क' करबाक चाही। ओहि सँ परिवारक सामंजस्य बढैत छैक। मुदा अहाँ तँ अपना सोझाँ मे ककरहुँ मोजरे नहि करैत छी'', शीला बजलीह।

रामनारायण, ''देखु कोनहुँ काज मे एक गोटेक निर्णय नीक होइत छैक। नीक वा बेजाय ओकर निर्णय जल्दी होइत छैक, आ ओहि सँ काज समय पर भ' जाइत छैक। जँ अहाँ विशेष गोटेक विचारा लेबाक प्रयत्न करब तँ भ' सकैत अछि। विचारक भिन्नताक कारण निर्णय मे देरी भेला सँ काज नहि होमय, वा काज गड़बड़ा जाय। दोसर गप्प ओ तँ वर्ष दिन पर दु–चारि दिनक लेल आबैत अछि। ओकरा सँ विचार करब तँ कखन''।

शीला, '' हम अहाँक गप्प सँ पूर्ण रूपेन सहमत छी मुदा ओकर दोसर पक्ष तँ देखिऔक। श्यामनारायण कि सोचत जे भैया सब किछु अपनहि मने करैत छथि। भ' सकैत अछि ओकरा अहाँक खिलाफ केओ कान भरैक चेष्टा करए। जँ अहाँक संग ओकरा गप्प–शप्प हेतैक तँ शंका अपनहि दूर भ जेतैक, अन्यथा शंका सच मे बदलि जाइत छैक।

रामनारायण, ''ठीक छै एहि बेर गाम आबैत अछि तँ सब किछु पूछि लेबैक।

श्यामनारायणक संगे बड़ असमंजस केर स्थिति भ' गेल। ओ करत तँ की करत। शेफालीक गप्प सेहो ओकरा अर्नगल नहि बुझेलैक। ओ सब के खुश नहि राखि सकैत अछि। शेफालीक संग ओकरा जीवन निर्वाह करबाक छैक। तँ ओकर संग देब उचित छलैकं ओ मनहिमन निर्णय कयलक जे आगू सँ रामनारायणक फरमाइस पूर्ण नहि करत। कोनो ने कोनो बहन्ना बनाक ओकरा टारि देत। एहि सँ भैया–भौजी सेहो घुमा–फिराक' बुझि जेतीह आ शेफाली सेहो मुँह मे आंगुर नहि करतैक।

एकबेर रामनारायण कंटिर झा के बेटीक विवाहक लेल दस हजार टाका गछि लेलनि आ अपन हाथ खाली रहलाक कारण ओ श्याम

नारायण के टाका पठेबाक लेल समाद देलनि। श्यामनारायण तँ सुरफुरेला मुदा हुँनकर कनियाँ शेफाली अड्डा–बज्जर खसा देलनि। ओ अपन फरमाइसक फिरहिस्त श्यामनारायणक सोझां मे राखि देलनि आ इहो बजलीह जे इ सबटा सामान हमरा आई चाही। ओ फिरहिस्त लगभग पच्चीस हजारक छलैक। ओकरा पूर्ति करबा मे श्यामनारायण के छः मास लागि सकैत छलैक। ओ शेफालीक हठक सोझां अपन हथियार राखि देलक आ रामनारायण कँ टाका पठेबाक विचार छोड़ि देलक। जखन विवाहक चारि दिन बाँकी छलैक आ रामनायणकँ टाका नहि भेटलनि, तँ ओ स्वंय श्यामनारायणक डेरा पर गेलाह। ओ सोचलनि जे भ' सकैत अछि श्यामनारायण कँ समाद नहि पहुँचल होनि। हुँनका इ विश्वास छलनि जे समाद पहुँचलाक बाद श्यामनारायण देरी नहि क' सकैत छथि। डेरा पहुँचलाक बाद श्यामरायण जलखै केलनि आ चाह पीलनि। ओकरा बाद बजलाह, ''वौआ चारिम दिन कंटिर झाक बेटीक विवाह छैक। ओकरा हम दस हजार टाका देब, गछि लेलियैक। एखन अपन हाथ खाली छल, तँ अहाँ के समाद देलहुँ। लोकेक काज लोक के होइत छैक। जँ हम ककरहुँ उपकार नहि करबैक, तँ हमर के करत। अहाँ कँ समाद पहुँचल कि नहि?

श्यामनारायण, ''जी हँ, समाद तँ पहुँचि गेल मुदा टाकाक इन्तजाम एखन धरि नहि भेल अछि। एक दू टा संगी लग सेहो बाजल छीं

रामनारायण, ''दस वर्ष सँ अहाँ नौकरी क' रहल छी आ चारि दिन मे दस हजार टाकाक इन्तजाम नहि क' सकलहुँ। तँ नौकरी किएक क रहल छीं एहि सँ नीक तँ गाम मे रहि क' बाप–दादा क' पुस्तैनी खेत–पथारक देख–रेख करितहुँ''।

श्यामनारायण, ''भैया ! एकटा पढ़ल–लीखल लोक गाम मे रहिक' की करत। गाम मे ओकरा जोगरक कोन काज छैक। की गाम मे ओकरा मासे–मास बीस हजार टाका भेटतैक'' ?

रामनारायण, ''ओ बीस हजार कोन काजक जे दस वर्ष मे दसो हजार टाका जमा क' क' नहि रखने छी''।

श्यामनारायण, ''गाम आ शहरक रहन–सहनक स्तर मे फर्क होइत छैक। एहिठाम अपन पोजीशन कायम रखबाक लेल किछु विशेष खर्च करए पड़ैत

छैक। जे केओ डेरा पर आबैत छैक, ओकरा जलखै चाह देब आवश्यक होइत छैक। गाम मे तँ चुने–तमाकुल सँ काज चलि जाइत छैक''। रामनारायण, ''हमरा पढ़ाव' जुनि। टाकाक इन्तजाम भेलह तँ से कह' आ नहि भेलह तँ से कह'।

श्यामनारायण, '' एकटा दोस्त कँ इन्तजाम करबाक लेल कहने छलियैक। देखैत छी, किछु केलक वा नहि । इ कहि श्यामनारायण भीतर चल गेलाह आ शेफालीक कान मे किछु कहि बाहर चल गेलाह।

एम्हर रामनारायणक प्रवचन शरू भ' गेलनि। ई नवका लोक पता नहि की करत। नौकरी मे की राखल छैक। एतेक दिन सँ नौकरी करैत अछि आ दस हजार टाकाक जोगार नहि क' सकैत अछि। हमर तँ प्रतिष्ठा दाव पर लागल अछि। आब हम कोना की करू, किछु नहि फुराइत अछि।

श्यामनारायण तँ बाहर चल गेल छलाह। घर मे रामनारायण आ शेफाली छलीह। शेफाली तँ पहिनहि सँ डाँर कसने छलीह। दुनूक सम्बन्ध तँ भैंसुर–भावहुँ केर छलनि। सोझां कोनाक जइतथि। तँ शेफाली केवाड़क अढ़' सँ बाजि उठलीह, ''सबटा गाम परहक उपजा–बाड़ी तँ हम सब छोड़नहि छियनि। अहुँठाम तँ चैन सँ रहए देबाक चाही। बीच–बीच मे जखन जे भ' सकलनि से तँ देबे केलियनि अछि। आखिर अहुँठाम कोनो गाछ तँ नहिए छैक। हम सब पैघ बुझि क' आदर करैत छियनि। किछु नहि बाजैत छियनि एकर इ तँ मतलब नहि जे हम सब किछु नहि बुझैत छी। कोनो वस्तुक सीमा होइत छैक, मुदा ई तँ सब सीमा कँ नाँघि देलनि''। एतेक गप्प सुनैत रामनारायण के बुझा गेलनि जे ओ कतेक पानि मे छथि। भाय तँ आई धरि मुँह उठाक' बजलो नहि छलनि मुदा भावहुँ घोघे तर सँ सब किछु कहि देलनि''। ओ चोट्टे घुरि अयलाह। ने श्यामनारायणक प्रतीक्षा कयलिन आ ने ओकर बाद ओहिठामक जल पीलनि। आइ हुँनका होश भेलनि जे ओ छोट भाय पर कतेक अत्याचार करैत छलाह। ओकरा चुप्पी के अपन समर्थन बुझैत छलाह। ओ की बुझैत छलाह जे ओहि चुप्पीक भीतर ज्वालामुखी भभकि रहल छलैक। आइ धरि ओ कोनो विषय पर श्यामनारायणक विचार नहि नेने हेताह। जखन कि

कतेको बेर एहि विषय मे हुँनकर कनियाँ शीला बाजल छलीह। शेफाली उचित समय पर चोट कयने छलीह। निशाना सीधे रामनारायणक हृदय मे लागल छलैक। ओकर हृदय छलनी भ' गेल छलैक। भाय ओतबहि दिन भाय रहैत छैक, यावत ओ बच्चा रहैत छैक। जखन ओ पैघ भ' जाइत छैक आ विवाह–दान भ' जाइत छैक, बाल बच्चा भ' जाइत छैक। तखन ओकर प्रेम अपना कनियाँ आ बाल बच्चा दिश आकर्षित होयब स्वभाविके होइत छैक आ भाय–भाउज सँ मात्र भावनात्मक सम्बन्ध रहि जाइत छैक। श्यामनारायण संग सेहो किछु एहेने स्थिति छलैक। ओकरा परिवारक प्रति एखन ओतेक आकर्षण तँ नहि भेल छलैक मुदा शेफालीक प्रबल बिरोधक कारण ओ ई निर्णय नहि क पओलक जे ओ रामनारायणक संग देत वा शेफालीक। ओकर भाउज शीला सेहो बेर–बेर श्यामनारायण कँ शेफाली पर ध्यान देबाक आग्रह करैत छलथिन। ओ कोन भाव सँ कहैत छलथिन, श्यामनारायण से बुझि नहि सकल आ अन्ततः ओ शेफालीक दामन मे ओझरा गेल। । तँ श्यामनारायण शेफालीक योजनानुसार बाहर चल गेल आ एहिठाम शेफाली रामनारायणक आँखिक पर्दा उठा देलनि। रामनारायणक एकटा बड़ पैघ समस्या छलनि। काल्हि कंटिर झाक' बेटीक विवाह छियैक। ओकरा लेल दस हजार टाकाक इन्ताजाम कतए सँ कयल जायत। आइ ओकर वचन टुटि रहल छैक जे ओ कंटिर झा कँ देने छलैक। ओकरा गप्प पर आब के विश्वास करत। अन्ततः ओ हारि–थाकि क' सब किछु भगवान पर छोड़ि देलक। आब ओएह ओकरा वचनक रक्षा क' सकैत छथि। जे भगवानक इच्छा हेतनि सैह होयत। एकरा लेल व्यर्थक माथा–पच्ची करब उचित नहि। गलतीओ तँ ओकरहि छलैक। ओ श्यामनारायणक भरोषे किएक ककरहुँ वचन देलक। ककरहुँ वचन अपना बल–बूता पर देबाक चाही। ओना पैच–पालट के रूप मे रामनारायणक करीब लाख टाका लोकक ओहिठाम अछि मुदा एखन तुरन्त के देत। ओ ककरा सँ माँगत। जकरा सँ माँगत, ओ कोनो लाथो तँ क सकैत छैक। भ' सकैत अछि जे ओकर लाथ फेर रामनारायणकँ असहनीय ने भ' जाइ। रामनारारयण मे इएह तँ खूबी छलनि जे ओ ककरहुँ सँ टाका आपस नहि माँगैत छलाह आ ने सूद लैत छलाह।

अहिक लेल वेशी लोक हुँनका तंग करैत छलनि। रामनारायण सँ लेलहा पैंच लोक आराम सँ सधाबैत छल। कंटिरो झा कँ रामनारायण तीन–चारि दिन फिरा देने छलाह आ स्पष्ट रूपँ बाजल छलाह, "कंटिर भाई एखन हमर हाथ एकदम खाली अछि। एखन हमरा तंग जुनि करू एखन ककरहुँ सँ ल'क काज चला लीअ। बाद मे देखल जयतैक मुदा कंटिर झा एकदम जिद्य पकड़ि लेलनि। रामनारायणक दलान पर सँ उठबाक नामे नहि लैत छलाह। हारि–पारिक' रामनारायण वचन द देलनि, एहि उम्मीद पर जे श्यामनारायण कँ समाद पठाक टाका मँगवा लेब। कतेक दिन सँ मँगनहुँ नहि छथि आ ओहो बीस हजार टाका महाबारी कमाइत अछि। दस हजारक इन्तजाम ओकरा लेल असम्भव नहि हेतैक। शीलाकँ एकर भनक पहिनहि सँ छलनि। एहि सँ पूर्व जखन श्यामनारायण आ शेफाली आयल छलीह। ओ सब चारि–पाँच दिन गाम मे रहलीह। शेफाली आर ककरहुँ पर तँ नहि, मुदा श्यामनारायण पर सदरिकाल भन–भन करैत रहैत छलीह। भीतरे–भीतर ओ शीला सँ दूर रहबाक प्रयास करैत छलीह। शीलाक कोनो गप्पक उत्तर सीधा–सीधा नहि द'क घुमा–फिराक दैत छलीह। इ आभास केवल शीला के भेलनि। शेफाली मे एकटा गुण छलनि। कोनो गप्प जे हुँनका मनोनुकुल नहि हो तँ ओहि लेल ओ श्यामरानायण पर वरषि पड़ैत छलीह। अरोसी–परोषी के ओहि सँ दूर राखैत छलीह। मुदा लालकाकी तँ उड़ैत चिड़ियाँ के चिन्हैत छलीह। ओ कतहुँ सुइ मे फार घुसिया दैत छलीह। ओ आबिक' दुनू दियादिनीक बीच आगि लगेबाक प्रयत्न केलनि। ओ नित्य आबिक' शेफालीक कोठली मे बैसि जाइत छलीह। ओ केहेन लोक छलीह से तँ पूरा टोलक लोक बुझितहि छल। हुँनका देखतहि शीलाक कान ठाढ़ भ' गेल मुदा कओ की सकैत छलीह। इ गप्प कोना कहितथि जे इ हमरा घर–दुआरि मे नहि आबथु। एतेक बजबाक साहसो तँ ककरहुँ नहि छलैक। लालकाकी नित्य आबि शेफालीक कान फुकब शुरू केलनि, कनियाँ अहाँ एतेक दिन पर किएक आबैत छी। बीच–बीच मे अयबाक कोशिश करब, तखन ने अपन चीज वस्तु चीन्हब।

शेफाली, "हम की करब अपन चिज–वस्तु चिन्हक, ओहि लेल भैया आ

दीदी तँ छथिये"।

लालकाकी, "ओ तँ छथिये मुदा अहुँ कँ तँ देखबाक चाही। एहि बेर दू सय मन धान भेल छल। चाउर किएक ने एहिठाम सँ ल' जाइत छी। इ अपना घरक अन्न भेल। एहि मे जे स्वाद हेतैक से किनुँआ मे कत सँ हेतैक। ओहिठाम तँ सब किछु किनिये क' खाइत होयब।

शेफाली, "हमरा सब कँ एहिठाम सँ किछु नहि ल' जयबाक अछि। एहिठामक चीज–वस्तु ओकर छियैक, जे एहिठाम रहैत अछि ओ कोढ़–तोडिक उपजाबैत अछि।

लालकाकी, "एहिठाम सब किछु राँइ–बाँइ होइत अछि आ शहर मे तँ सुनैत छियैक जे सब किछु मँहगे भेटैत छैक। एहिठाम राहड़ि, उड़िद, बूट, मूँग, मोसरी केओ पूछनिहार नहि आ सुनैत छी जे शहर मे राहड़िक दालि सय रूपये किलो भेटैत छैक। सेहो सुगमता सँ नहि। एहि बेर सब सँ वेशी राहड़ि अहीं के भेल छल"। जखन कि सत्य इ छलैक जे रामनारायण कँ मात्र एक मन राहड़ि भेल छलनि। लालकाकी तँ दुनू दियादिनी के भिराब' चाहैत छलीह। तखन ने ओ बीच मे बैसिक' गिरथनि जकाँ पंचैती करितथि। मुदा शेफाली कोनो वस्तु लेबाक लेल तैयार नहि छलीह। ओ तँ कतेक जीद्य क'क' शीला थोड़ेक मरूवाक चिक्कस द' देलनि, जे लोक जितिया मे मरूबाक रोटी आ माछ खाइत अछि। ओना दुनू दियादिनी मे एखन धरि कहिओ कहा–सुनी नहि भेल छलनि मुदा लालकाकीक प्रवेश सँ शीलाक पेटक पानि ड़ोलि रहल छलनि। तँ शीला कँ एकर आभास छलनि जे भ', सकैत अछि जे एहिबेर रामनारायण खाली हाथ आपस आबथि। ओ पहिलकु जे पैच–पालट छलनि ओकरहि सबसँ किछु जोगार क'क' टाकाक इन्तजाम केलनि। रामनारायण जखन आपस अयलाह तँ मुँह–कान सुखायल छलनि। हुँनकर मुँह–कान देखला सँ बुझा रहल छल जे छः मासक रोगी होथि। दू दिन सँ भोजनो तँ नहि कयने छलाह। गाम सँ जे भोजन क' क' गेल छलाह सएह कयने रहि गेलाह। श्यामनारायणक ओहिठाम मात्र जलखै आ चाह प्राप्त भेल छलनि। अबितहि शीलाकँ सब वृतान्त सुनौलनि।

शीला बजलीह, "पहिने अहाँ स्नान करू हम भोजनक इन्तजाम करैत

छी। कनेक दाढ़ी सेहो बनबा लीअ''। छः मासक रोगी सन लागैत छी''।
रामनारायण, ''हमर हालत खराब अछि आ अहाँकेँ मजाक सूझि रहल अछि। हमरा तँ किछु नहि फुरैत अछि, जे कंटिर झा कँ की कहबैक। ओ हमरा पर आश लगौने होयत। आ आई पहिल बेर हमरा कारण ककरहुँ आश पर पानि फिरि जेतैक। जँ भगवानक इएह इच्छा छनि तँ एहि मे हम की क' सकैत छी''।
शीला बजलीह, ''अहाँ भगवान पर भरोष राखू। ओ सबहक लाज बचौनिहार छथि। ओ अहुँक लाज बचौताह आ कंटिरो झा केर। अहाँ पहिने स्नान भोजन तँ करू''।
रामनारायण, ''एँ! अहाँ एतेक दृढ़ता सँ कहि रहल छी, कोनो इन्तजाम कयल अछि की ?
शीला, ''पहिने हम जे कहैत छी, से करू तखन कहब। एतेक गप्प सुनैत रामनारायण के फुर्ति आबि गेल। ओ चट द' इनार पर जा क' चारि डोल पानि ढारलनि आ पूजा–पाठ क' भोजन करबाक लेल आँगन गेलाह। तावत् शीला सेहो भानस क' नेने छलीह। ओ प्रेम सँ रामनारायणकेँ भोजन करौलनि। रामनारायण भोजन क' रहल छलाह आ शीला हुँनका पंखा हौकि रहल छलीह। भोजन कयलाक बाद रामनारायण पुनः शीला कँ पूछलनि, कनेक एम्हर आउँ तँ''।
शीला, ''(आबिक) की कहैत छी'' ?
रामनारायण, ''अहाँ किछु कहलहुँ नहि''।
शीला, ''की कहुँ'' ?
रामनारायण, '' ओएह जे टाकाक इन्तजाम कतए सँ भेल'' ?
शीला बिहुँसैत बजलीह, ''हमरा इ गप्प बुझल छल जे अहाँ श्यामनारायणक ओहिठाम सँ खाली हाथ आपस आयब। हम तँ चाहलहुँ जे अहाँ कँ ओही काल मे रोकी, मुदा भ' सकैत छलैक जे अहाँके हमरा गप्पक विश्वास नहि होइत। तैं नहि रोकलहुँ।
रामनारायण, ''एँ से कोना, अहाँ बुझैत छलहुँ आ हमरा आभासो नहि भेल ?
शीला, ''अहाँ कँ कोना आभास होइत। अहाँ कोनो घर मे रहैत छी। हम तँ घर मे रहैत छी, तैं आभास भेल''। एहिबेर जे कनियाँ आयल छलीह

तँ हुँनकर मन मियाज बदलल बुझायल। हमरा सँ तँ किछु नहि बजलीह मुदा श्यामनारायण कें कोनो दशा बाकिओ नहि रखलनि। हमरहुँ सँ कटले जकाँ रहैत छलीह''।
रामनारायण, ''एकर की कारण भ' सकैत छैक?
शीला, ''कहि नहि सकैत छी''।
रामनारायण, ''की लालकाकीक प्रभाव तँ नहि? लालकाकी आँगन आयलो छलीह की'' ?
शीला, '' हँ आयल तँ छलीह। बहुत कोशिश के बाद कनियाँ सँ गप्प–शप्प भेलनि। हुँनका गेलाक बाद कनियाँ तँ किछु नहि बजलीह''।
रामनारायण, ''तखन एहि प्रकोपक कारण''?
शीला, ''भ' सकैत अछि जे किछु प्रभाव लालकाकीक हो आ किछु नैहर सँ सेहो अनने होथि''।
रामनारायण, '' भ' सकैत अछि। अच्छे इ कहुँ टाकाक जोगार कोना कयलहुँ अछि''?
शीला, '' कंटिर झा कँ देबाक लेल दस हजार टाकाक जोगार हम कयने छी''।
रामनारायण, ''से तँ बुझलहुँ मुदा कयलहुँ कोना, से ने कहुँ ''?
शीला,'' हमरा फेकनी सँ पता लागल जे बुधनाक बेटा बीस हजारक बीमा पठौने छैक। हम बुधना के बजौलहुँ आ ओकरा पूछलियैक, बुधना सुनै मे आयल अछि जे तोहर बेटा बीस हजारक बीमा पठौने छौक''?
बुधना बाजल, ''जी मलिकाइन पठौने तँ छैक मुदा एखन डाक बाबू सँ भेटल नहि अछि। डाकघर सेहो गेल छलहुँ मुदा डाक बाबू सेहो काल्हि बजौने छथि। हम कहलियैक ठीक छैक तँ ओही मे सँ दस हजार टाका हमरा द' दिहैं। हम तोरा एक मास मे आपस क' देबौक।
बुधना बाजल, ''मलिकाइन ओ टाका तँ अहींक लेल आयल अछि। अहाँ आपस किएक करब आ दस हजार किएक, ओ बीसो हजार अहींक थीक। हम काल्हि ल' क' आबैत छी''।
हम कहलियैक, ''तोरा जँ कोनो दोसर काज करबाक होउक, तँ से कर'। हमरा काल्हि मात्र दस हजार टाका चाही। काजे तेहन आवश्यक भ' गेल

अछि तँ कहैत छिऔक''।

बुधना बाजल, ''नहि–नहि मलिकाइन अहाँ के काज रह' वा नहि, हमरा तँ ओ टाका देबाक अछि। हमरा मने अछि जे रामनारायण बाबू केहन बेर पर हमर इज्जत बचौने छलाह। ओ जँ ओहि काल मे ठाढ़ नहि होइतथि, तँ हमरा बेटीक विवाह नहि होइत। बरियाती घुरि क' चल जाइत। ओ तँ भला होअ रामनारायण बाबूक जे हमरा लेल साक्षात् भगवान बनि क ठाढ़ भ' गेलाह। नहि तँ हम ककरहुँ मुँह देखेबाक जोगरक नहि रहि जइतहुँ। ओ दिन हम कोना बिसरि सकैत छी। हम तँ अपनहि हुँनकर भेट करबाक लेल सोचि रहल छलहुँ। तावत् फेकनीक द्वारा अपनेक समाद भेटल आ दौडल–दौडल आबि गेलहुँ। दोसर दिन बुधना बीस हजार टाका ल'क'द' गेल। रामनारायण जे सांस रोकिक पूरा वृतान्त सुनि रहल छलाह, सांस छोड़ैत बजलाह, ''भगवान सब किछु देखि रहल छथि ओ सूतल नहि छथि। ओ सभक' लाज बचावैत छथि। ओ सभक कर्मक फल दैत छथि। हम तँ एकदम निभरोष भ' गेल छलहुँ। सोचि रहल छलहुँ जे कंटिर झा क' मदति करब मुश्किल अछि। किएक तँ आखिरी भरोष छल श्यामनारायणक सेहो टुटि गेल।

शीला, ''लोक के केवल भगवान पर भरोष राख' क चाही यावत् भगवानक कृपा नहि होइत छनि, तावत् केओ ककरहुँ मदति नहि करैत अछि।

रामनारायण, ''ठीक कहैत छी! ओम्हर कंटिर झा तँ बुझू रामनारायणक बाट ताकि रहल छल। ककरहुँ मुँहे सुनलक जे रामनारायण आबि गेलाह। ओ चोट्टे रामनारायणक ओहिठाम पहुँचि गेल आ जोर–जोर सें चिकरब शुरू कयलक, ''रामनारायण बाबू छी यौ..... औ रामनारायण बाबू..... रामनारायण आँगन सँ आवाज देलनि, ''बैसू, आबि रहल छी''रामनारायण हाथ मे दस हजार टाका नेने दलान पर अयलाह आ कंटिर झाक हाथ मे देलनि। कंटिर झा दस हजार टाका ल'क' खुशी–खुशी अपना घर चल गेल।

गामक लोक कँ दोसराक घरक जासूसी करबा मे बड़ आनन्द आबैत छैक। रामनारायण आ शीला तँ ककरहुँ किछु नहि बजलीह आ बजितथि कोना। बजला सँ अपनहि घरक हिनस्ताइ हेतनि मुदा लोक

अंदाज लगायब शरू क' देलक। रामनारायण तँ श्यामनारायणक ओहिठाम टाका अनबाक लेल गेल छलाह। कंटिर झा कँ तँ बुधना वाला टाका देलनि। आखिर श्यामनारायण टाका देलकनि की नहि ? किएक तँ आपस अयलाह बड़ झूर–झमान भ' क'। जे चुहचुही जयबा काल छलनि, से आपसी मे नहि छलनि, मुदा एकर पता कोना लागत। एक गोटे के तैयार कयल गेल, एकर जासूसी करबाक लेल आ बिलटू तैयार भ' गेल। दोसर दिन बिलटू रामनाराणक ओहिठाम विदा भेल आ ओहिठाम जा क' बाजल, ''रामनारायण बाबू हमरा बीस हजार टाकाक नितांत आवश्यकता अछि। कोनो इन्तजाम क' देल जाउ। हम अहाँक इ उपकार कहिओ नहि बिसरि सकैत छी।

रामनारायण बजलाह, ''पहिल गप्प तँ इ जे हमरा लग एखन एकोटा पाई नहि अछि। दोसर इ जे तोरा एखन टाकाक कोन जरूरत भ' गेल छौक। ने विवाह ने दान।

बिल्टू बाजल, ''रामनारायण बाबू पहाड़पुर बालीक मन खराब छैक। ओकरा डाक्टर सँ देखेबाक लेल दिल्ली ल' जेबाक अछि''।

रामनारायण, '' से एहेन कोन बिमारी पहाड़पुर वाली के छैक, जे दिल्ली ल' जेबाक आवश्यकता छैक। काल्हिये तँ देखने छलिऔक जे धूर पर घास काटैत। हमरा तँ केहेन बढ़िया बुझायल छल।

बिल्टू, ''हम की जनैत छी जे कोन बिमारी छैक। राति सँ छाती मे दर्द छैक। रामबाबू कम्पौन्डर लग ल' गेलियैक तँ ओ देखला–सुनलाक बाद बाजल जे दिल्ली ल' जाहक। तँ अपने के कष्ट देलहुँ।

रामनारायण, ''से तँ ठिक सोचने छह' मुदा हमर हाथ एकदम खाली अछि। हाथ पर टाका रहने हम ककरहुँ लाथ नहि करैत छियैक। काल्हि कंटिर झाक बेटीक विवाह छियैक। ओकरा दस हजार टाका कोना–कोना क' जोगार क' क' देने छियैक से तँ हमहीं बुझैत छी।

बिल्टू, ''इ तँ हमहुँ बुझैत छी, जे रहला पर अहाँ ककरहुँ संग लाथ नहि करैत छी आ इ सोचि क' तँ हम आयल छी। कोनो तरहँ हमर बेगरता शान्त क' दीअ। हम जल्दिये अहाँक टाका चुका देब। जँ विश्वास नहि हो तँ हमर जमीन भरना ल' लेल जाउ। आखिर लोक खेतो–पथार तँ

अही दिनक लेल राखैत अछि। पहाड़पुर वाली नहि बाँचत, तँ हम इ सम्पत्ति राखिक की करब।

रामनारायण, "औ जी, जँ हाथ पर टाका रहैत तँ किएक नहि दितहुँ। आइ धरि हम ककरहुँ संग लाथ कैलियैक अछि की, जे तोरा संग करबहु। बिल्टू, "ठिक छै नहि दीअ'। हम तँ बड़ आशा ल' क' आयल छलहुँ। एखन तँ अहाँ के बुधना सेहो टाका देलक अछि आ श्यामनारायणक ओहिठाम सँ सेहो किछु अननहि होयब। तखन कोना कहैत छी जे हाथ खाली अछि। ओना अहाँ कँ नहि देबाक अछि, ओ अलग गप्प छैक। श्यामनारायणक नाम सुनितहि रामनारायणक देह मे आगि लागि गेलैक, मुदा किछु सोचिक तुरन्त ठंढ़ा भ' गेल। ओ तामस मे श्यामनारायणक विषय मे बहुत किछु बाजय चाहैत छलाह, मुदा नहि बजलाह। बात कँ घर सँ बहराय नहि देलनि, मुदा इ सब चोरायल थोड़हि रहैत अछि। बिल्टूके टाकाक आवश्यकता थोरहि छलैक। ओ तँ जासूसी करबाक लेल आयल छल आ अपन काज क' क' चलि देलक। गप्प सौंसे गाम मे पसरि गेल। रामनारायण कँ श्यामनारायण टाका नहि देलक। दूनु भाय मे प्रेम छलैक से टुटि गेलैक, इ गामक लोकक प्रचार छलैक। जे किछु नहि भेल छलैक सेहो लोक बाजैत छलैक। एकर दू टा कारण छलैक। एक इ जे लोकक एहेन स्वभाव होइत छैक जे ककरहुँ घरक गप्प के नून–तेल लगाक परसब आ दोसर जँ इ गप्प सही नहि छैक तँ रामनारायण आ शीला अपना मुँहे बाजथु जे सही की छैक मुदा रामनारायण आ शीला एहि विषय पर अपन मुँह बन्दे रखने छलाह। मुदा गाम भरि मे जकरा मुँहे सुनु से ओएह गप्प। एँ कहुँ तँ कोनाक श्यामनारायण रामनारायणक अपमान केलक। ओकरा कनेको विचार भेलैक। आई ने ओ एतेक पैघ लोक भ' गेल अछि आ ओहो तँ शीला आ रामनारायणेक कारण भेल अछि। जखन श्यामनारायण मात्र तीन वर्षक छल, माय–बाप दुनू एके वर्षक भीतर स्वर्गीय भ' गेलथिन, तखन तँ ओएह भाय–भाउज ठाढ़ भेलनि। ओतेक खेतो–पथार तँ माय–बाप नहिये छोड़िक गेल छलथिन, जाहि सँ नीक जकाँ गुजर–बसर करितथि। ओ तँ धन कही रामनारायण आ शीला के। दुनू कोन–कोन धरानी सँ ओकरा

पढ़ौलक–लिखलौक। पाँच बीघा ,खेत सेहो खरीद कयलक। अपने रामनारायण फाटलो–पुरान पहिरि लैत छल मुदा श्यामनारायण कँ सब दिन बबूआन जकां रखलक। से श्यामनारायण आइ कोना मुँह फेरि लेलकैक। ओकरा आँखिक पानि एतेक जल्दी कोना सुखि गेलैक"।

लालकाकी बाजि उठलीह, "एहि मे श्यामनारायणक की दोष छैक। ओ बेचारा तँ दुनू दिश सँ पिसा रहल अछि। ओ तँ स्वयं दुबिधा मे पड़ल अछि। भाउजक सुनत आ कि कनियाँक"।

मनोहरपुर बाली भौजी बजलीह, " ओ कनियेक सुन', जकरा सँ जीवन सुखमय रहतैक, मुदा भाउजक जे त्याग छैक, ओकरहिटा तँ मन मे राखय। शीला के आर की चाही। ओकरा तँ भरि मुँहे भौजी कहतैक, ओही मे ओकर पेट भरि जयतैक"।

लालकाकी पुनः बजलीह, "अहाँ सब एक दिशाह किएक बाजैत छी। श्यामनारायण तँ गामक सब किछु छोड़नहि छैक। गाम मे जे एतेक धान–चाउर, गहुम–मकई होइत छैक, से की ओ लेबाक लेल आबैत छैक। तखन जे उपर सँ टाका नहि देलकै तँ एकरा लेल रामनारायण के कष्ट नहि होयबाक चाही। आखिर ओकरा कि मजबूरी छलैक इहो तँ बुझबाक चाही।

मनोहरपुर बाली भौजी सेहो नहला पर दहला देलनि आ बजलीह, "ऐँ ये लालकाकी, इ एना अनसोहाँत गप्प कोना बाजैत छथिन। श्यामनारायण सँ टाका ल' क' रामनारायण कोनो अपना बेटा–बेटीक विवाह तँ नहि क' लेलकै अछि आ ने कोनो पानि मे फेकि देलकै अछि। रामनारायण जे जमीन खरीद करैत छथि वा भरना लैत छथि, ओहि मे श्यामनारायण हिस्सा लेताह की नहि ?

लालकाकी, "से सब तँ ठीके छैक, मुदा बाहर मे लोक के कतेक खर्च होइत छैक, तकर अंदाज अछि अहाँ कँ ? हमर भातिज बीस हजार टाका कमाइत अछि आ बाजत जे एको पाइ नहि बचैत अछि। बाहर मे लोक जलो तँ किनिये क' पिबैत अछि। ओना तँ लालकाकी सँ सब हड़कल रहैत छल। कखन ओ ककरा घर मे पैसि क' आगि लगा देतीह, कोओ नहि कहि सकैत अछि। आ हुँनका केओ घर आंगन अयबा सँ रोकिओ

नहि सकैत अछि। कारण ओ भभटपन पसार' मे सेहो माहिर छलीह। लालो काकी मनोहरपुर वाली भौजी सँ हारि मानैत छलीह। जल्दी हुँनका लग नहि सटैत छलीह आ जँ कदाचित सटि जाइत छलीह तँ खाली हाथ आपस आबैत छलीह। मनोहरपुर बाली भौजी लालकाकी सँ बीस पड़ैत छलीह मुदा दुनू मे फर्क छलैक। लालकाकी जकरा सोझां तकरहि सन मुदा मनोहरपुर वाली भौजी स्पष्ट आ उचित गप्प ककरहुँ मुँहे पर बाजैत छलीह, पीठक पाछाँ नहि। हुँनकर गप्प कनेक काल लोक कँ अधलाह लागैत छलैक मुदा हुँनका गप्प सँ ककरहुँ घर नहि बिगड़ैत छलैक।

गामक स्त्रीगणक मुँह सँ एहेन गप्प–शप्प सुनैत–सुनैत शीला के कान पाकि गेलनि। हुँनका इ बुझबा मे नहि आबैत छल जे इ गप्प बहरायल तँ कत' सँ। ओ तँ ककरहुँ लग किछु बाजल नहि छलीह। रामो नारायण नहि बाजल होयताह। श्यामनारायण आ हुँनकर कनियाँ शेफाली तँ एखन अयलो नहि छथि। तखन ई सौंसे गाम कोना गुलगुला गेल आ ओहु मे नीमक–हरदि लगा क'। एकदिन शीला रामनारायण के पूछलनि, "एकटा गप्प पुछू ?

रामनारायण, " पुछू ने..... अवश्य पुछू".....।

शीला," सौंसे गाम गुलगुला रहल अछि। किछु सुनबा मे आयल अछि, की नहि"।

रामनारायण, "हमरा तँ किछु सुनबा मे नहि आयल अछि। की गुलगुला रहल छैक। कनेक फरिछा क' तँ कहुँ"।

शीला, "श्यामनारायण बला गप्प अहाँ ककरहुँ लग बाजल छलहुँ की" ?

रामनारायण, " नहि तँ! से किएक, की भेलैक अछि" ?

शीला, " भेलैक तँ किछु नहि मुदा ओहि मे तेल–मसाला लगाक' सौंसे गाम प्रसाद बाँटल जा' रहल अछि"। आखिर इ गप्प बहरायल तँ कत' सँ ? श्यामोनारायण तँ एखन नहि अयल छथि। तखन ई....."।

रामनारायण, "(किछु मन पाड़ैत) अच्छे तँ ओ सार एत' जासूसी कर' आयल छल"।

शीला, "के जासूसी कर' आयल छल"।

रामनारायण, "जखन हम श्यामनारयणक ओहिठाम सँ आयल छलहुँ तँ

एक दिन बिल्टू हमरा लग बीस हजार टाकाक लेल आयल छल। हम ओकरा कहलियैक जे हमरा लग टाका नहि अछि तँ ओ बाजल "एखन तँ श्यामनारायण अहाँ के टाका देबे केलक अछि। हम कहलियैक श्यामनारायणक ओहिठाम हम दोसर काज सँ गेल छलहुँ। आब बुझलहुँ ओ किएक आयल छल।

शीला, "ओही गप्प पर सौंसे गाम मे काना–फूसी भ रहल अछि"। रामनारायण अनुभवी लोक छलाह आ गामक चक्र–चालि सँ सेहो खूब नीक जकाँ अवगत छलाह। ओ विचार कयलनि जे जखन बिना किछु कहने–सुनने लोक एतेक टा बबंडर ठाढ़ क' सकैत अछि, तखन तँ ओ सब हमरा खिलाफ श्यामोनारायण कँ भरकाब मे पाछाँ नहि रहि सकैत अछि। कम सँ कम एखन जे हमरा आ शीलाक प्रति श्यामनारायणक प्रेम अछि, ओ तँ बनल रहत। किएक ने चुपचाप श्यामनारायणक हिस्सा कात क' क' राखि दियैक। कम सँ कम एहि विषय पर तँ दुनू भाय मे कहा–सूनीक अवसर नहि आओत। तखन तँ एकठाम रहने बहुत बात होइत छैक, तकरा की करबैक। शीला सेहो श्यामनारायण कँ कतेको बेर एहने सलाह देने छलीह। शीला स्त्री छलीह। घर द्वारि मे रहैत छलीह। शेफालीक गप्प–शप्प सँ हुँनका पहिनहि एकर भनक लागि गेल छलनि मुदा रामनारायण एकरा बुझबाक लेल तैयार नहि छलाह। हुँनका आँखि पर भातृ–प्रेमक चश्मा लागल छलनि।

ओ बाजैत छलाह, "अहाँ दुनू दियादिनी घरक भीतर जे करब से करू। ओकर असरि हमरा दुनू भाय पर नहि भ' सकैत अछि"। एहिबेरक घटना सँ रामनारायणक दिल टूटि गेल। हुँनका आँखिक चश्मा हटि गेल। ओ अपना मन के बुझौलनि। आई–काल्हि तँ बाप–बेटा भिन्न भ' क' रहैत अछि आ भाय तँ भिन्ने होयबाक लेल होइत छैक। एहि सँ केओ नहि बाँचल अछि। "उँचा चढ़ि–चढ़ि देखा आ घर–घर एके लेखा"आ सौंसे खेत–पथार, घर–घराड़ी, खर–खरिहान, बाग–बगीचा, के दू भाग लगाक' रामनारायण एक चिट्ठी संग श्यामनारायण के पठा देलनि। चिट्ठी एहि तरहँ छलैक :–

चि0 श्यामनारायण

शुभआशीष।

कुशलोपरान्त कुशलाभिलाषी छी। हम अहाँ के बिनु पुछने किछु निर्णय लेल अछि। अपने के अनुमोदन हेतु पठा रहल छी आ आशा करैत छी जे जहिना आइ धरि अहाँ हमर सब गप्प मानैत रहलहुँ अछि, एकरहुँ मानि लेब। भाय–भैयारी मे एकदिन बाँट–बखरा होइतहि अछि। इ बिधि क बिधान अछि। सामंजस्य रहला पर इ प्रेम अधिक दिन धरि अवश्य रहैत छैक, मुदा सब दिन नहि। एक ने एक दिन ओ अन्तिम मुकाम पर पहुँचैत छैक आ ओकर अन्त बाँट–बखरा सँ होइत छैक। कतहुँ प्रेम–पूर्वक तँ कतहुँ घोघाउजि क' क' वा घिना क'। तखन एहि मे घोघाउजि किएक। हम समस्त सम्पतिक बँटवारा दू भाग मे क' देल अछि। अपने हमर प्रिय छी आ छोट सेहो, तँ अपने कँ इ अधिकार द' रहल छी जे एक भाग चुनि ली आ दोसर भागक कागज हमरा पठा दी अहाँ अपन हिस्साक खेती स्वंय करी वा ककरहुँ सँ कराबी, एकरा लेल स्वतंत्र छी। एहि मे हमरा कोनो आपत्ति नहि होयत मुदा यावत् अहाँक सहमति नहि भेटैत अछि वा अहाँक दस्तखत कयल कागज हमरा नहि भेटैत अछि, तावत् दुनू हिस्साक खेती हमही करब। केवल हमर एकेटा इच्छा अछि जे एकर भनक दोसर ककरहुँ नहि लागक' चाही। दुनियाँक नजरि मे हम दुनू भाय जहिना छलहुँ, तहिना रही। इ हमर उत्कट अभिलाषा अछि। एहि कागजक अलावे किछु लहना–तगादा बला नगदी सेहो अछि। जकरा हम चिट्ठी मे जिक्र करब उचित नहि बुझैत छी। जखन गाम आयब तँ ओहो अहाँकँ भेटि जायत। इति, रामनारायण!

चिट्ठी पठौलाक बाद रामनारायण कँ वास्तव मे लगि रहल छलनि, आइ ओ अपन सहोदर, जकरा ओ अपना बेटा जकाँ पोसने छलाह, सँ अलग भ' गेलाह। हुँनकर हृदय दू टूक भ' गेलनि। जेना लागैत छलनि जे किछु हेरा गेल हो। जाहि श्यामनारायण लेल ओ दिन–राति किछु नहि बुझैत छलाह। कतेक बेर ओ शीला के गलती नहिओ रहला पर डाँटि दैत छलाह। ओकरा अपना सँ अलग करैत ककरहुँ कष्ट भ' सकैत अछि।

एतेक दिन जे दू देह एक प्राण छल, ओ आइ दू भ' गेल। एहि मे कष्ट होयब तँ स्वभाविक अछि। ओहि राति रामनारायण आ शीला केओ भोजन नहि केलनि। शीलाक कतेक बुझेला–सुझेलाक बाद रामनारायण मात्र एक गिलास दूध पी' क' सूति रहलाह। हुँनका आँखि सँ निंन उड़ि गेलनि। रहि –रहि क आँखिक सोझां श्यामनारायणक मुँह नाचि रहल छलनि। शीला कँ सोहो रहि–रहि क' बकौर लागैत छलनि। ओ तँ कहबाक लेल श्यामनारायण के भाउज छलीह। श्यामनारायणक लेल तँ ओ माय बनि क' ठाढ़ि छलीह। ई अलग गप्प छल जे शीला हुँनका अपना छातीक दूध नहि पिऔने छलीह। श्यामनारायण मात्र तीन वर्षक छलाह जखन मातृहीन भ' गेलाह। आ शीला दू वर्ष पहिनहि द्विरागमन भ' क' आयल छलीह। नव–नबेली दुल्हिन छलीह शीला, जखन श्यामनारायण के हुँनका कोरा मे देल गेल। तावत् हुँनका अपना बाल बच्चा नहि भेल छलनि मुदा ओ श्यामनारायण कँ मातृत्व प्रदान केलनि। वात्सल्य प्रदान केलनि आ ओ सब किछु देलनि जे एकटा माय अपना बेटा कँ दैत अछि।

मालती, बाजि उठलीह, " लोक कँ किछु कयने नहि बनैत छैक। करैत अछि किछु आ भ' जाइत अछि किछु....."।

मणिकान्त, " मालती जी! दुनियाँ अहिना चलैत छैक आ चलैत रहतैक। हम अहाँ तँ बटोही थिकहुँ, अयलहुँ आ चल जायब। बाट तँ धरले रहतैक। सूत्रधार तँ केओ आर अछि। जे सबकँ एक ताल पर नचा रहल अछि। तँ एहि विषय पर कखनहुँ गम्भीर नहि होयबाक चाही। जे होनी छैक से तँ होयबे करतैक"।

मालती, " ठीक कहैत छी अपने ! लोक कँ अपन कर्त्तब्य करबाक चाही। जँ जीबाक हो तँ आगु देखबाक चाही, पाछाँ नहि। आगु आशा छैक, उम्मेद छैक, लक्ष्य छैक आ पाछाँ भूतक घटना सँ भरल निराशाक मोटरी।

प्रेम, "हमर तँ अपने आँखि फोलि देलहुँ। आब हम एहि विषय पर सोचबे छोड़ि देलहुँ। आब हमर एकहिटा काज रहत, बाबा विश्वनाथक पूजा बस आ जे किछु ओ पठा देताह से प्रसाद रूप मे ग्रहण करब।

मणिकान्त, "लोक के आशावादी होयबाक चाही, निराशावादी नहि। अपनेक एहि गप्प मे सेहो हमरा निराशाक झलक बुझा रहल अछि।

अपनेक गप्प सँ लागि रहल अछि जे अपने आब केवल बाबा विश्वनाथक पूजा करब आर किछु नहि''।

प्रेम, ''जी, अपने सही बुझल अछि''।

मणिकान्त, '' ई ठीक नहि। लोककँ पूर्वक घटना सँ प्रेरणा ग्रहण करैत आगु बढ़बाक चाही। इएह तँ जीवन थीक। तँ लोक के जीवन मे संर्घषरत रहैक चाही आ अहाँ तँ एके दाव मे चारू नाल चित्त.....।

सुलेखा बीच मे बाजि उठलीह, ''आइ भेजनो होयतैक की खिस्से–पिहानी सँ पेट भरि जेतैक'' ?

मणिकान्त, ''इएह तँ हम अहाँ सँ पूछ' चाहैत छलहुँ''।

मालती, ''दीदी ओझाजी लग बड़ सुन्नर–सुन्नर खिस्सा–पिहानी छनि। कतेक मार्मिक खिस्सा सुनौलनि।

सुलेखा, ''बस इएह टा तँ छनि हिनका मे''।

मणिकान्त, ''आर किछु नहि अछि'' आ सब केओ हँसैत विदा भ' गेलाह।

२

धनकाही गाम जे राजनगर सँ दू कोस पूर्व मे छलैक। ओत' सँ राजनगर स्टेशन ट्रेन पकड़बाक लेल मात्र टम–टम साधन छलैक वा साइकिल। ओहो टम–टम भोर में आठ बजेक बाद आ सांझ में सात बजे धरि। ओकर बाद पैदल छोड़ि कोनो साधन नहि छलैक। गाम मे वेशी मजदूर वर्गक लोक रहलाक कारण कोनो विकास नहि भेल छलैक।

स्कूल–कालेज क' तँ नामो–निसान नहि छलैक। गाम मे पढ़ल–लिखल लोकक अभाव छलैक। एखनहुँ गाम में ओएह व्यक्ति रहैत छलाह जे पढ़ल–लिखल कम छलाह। जे केओ पढ़ि–लिखिक बाहर जाइत छलाह ओ पुनः गाम मे रहबाक लेल नहि आबैत छलाह। गाम मे बाढ़ि प्रायः सब साल आबैत छलैक। तँ घरो–द्वारि वेशी लोकक' टटघरे छलैक। कोठा तँ गनले–चूनल चारि–पाँच गोटे कँ छलनि। गामक पूव कमला नदी बहैत छलैक। ओकरहि सँ बाढ़ि आबैत छलैक। ओहिठामक किसानक खेतीक' अलावे मुख्य आयक श्रोत छलैक दूधक बिक्री। एहेन केओ नहि छल जकरा ओहिठाम कम सँ कम दू टा महिष वा गाय नहि हो। ओत' सँ सब दिन करीब चालीस मन दूध राजनगर आबैत छलैक। ओहि गाम मे एकटा स्कूल मास्टर श्रीमंत चौधरी सेहो छलाह। चौधरी जी राजनगर हाईस्कूल में गणित केर शिक्षक छलाह। ओ नित्य साइकिल सँ राजनगर आबैत–जाइत छलाह। चौधरी जी पुरना जवानाक' बी0 ए0 छलाह आ गणित तथा अंग्रेजी में हुँनकर जोर नहि छलनि। हुँनकर पढ़ेबाक–तौर–तरीका सँ विद्यार्थी सब सेहो बड़ प्रभावित रहैत छल। चौधरी जी मे ज्ञानक' कमी नहि छलनि, जाहि सँ समाजक बीच सेहो ओ अपना विद्वताक कारण सर्वमान्य छलाह। बात–विचार सँ एकदम सुशील। हुँनकर धर्म पत्नी श्रीमती सुनीता सेहो कुशल गृहणी छलीह आ दुनू गोटाक जीवन अत्यन्त सुखमय बीति रहल छलनि। सुनीता मे सेहो अहंकारक लेश नहि छलनि। ओ गरीब सँ विशेष प्रेम राखैत छलीह। ओकरा प्रति विशेष दर्द छलनि। कोनो भूखल लोक के ओ अपन खायक खुआ क अपने भूखल रहि जाइत छलीह। चौधरी जी में एकटा विशेष गुण छलनि। ओ चाहैत छलाह जे हमरा गामक सब बच्चा पढ़ए, चाहे ओ कोनहुँ जाति–सम्प्रदायक किएक नहि हो। गामक कोनो बच्चा के ओ खेलाइत देखि लैत छलाह, तँ ओकरा जे डँटबाक छलनि से तँ डाँटिते छलाह। ओकरा माय–बापके सेहो कोनो दशा बाँकी नहि राखैत छलाह। जे बच्चा गरीब छल, ओकरा किताब–कापीक इन्तजाम स्कूल सँ करा दैत छलाह वा अपनहुँ दिश सँ क' दैत छलाह। ओकर परिणाम भेल जे

धनकाहीक सब बच्चा स्कूल ध' लेलक। जखन ओ सब धनकाही सँ राजनगर विदा होइत छल तँ एक रंगक वस्त्र में सब एतेक सुन्नर लागैत छल जकर वर्णन करब कठिन अछि। सब बच्चा एक रंग, एक वस्त्र में रहैत छल, चाहे ओ कोनो जातिक हो। इएह तँ गाँधी–जवाहरक सपना छलनि। किछु बच्चा जे छोट छल आ एखन राजनगर जयबा जोगरक नहि छल, ओकरा संध्या काल राजनगर सँ अयलाक बाद अपना दलान पर बैसा क पढ़ाबैत छलाह। ओकरा एवज में गामक मजदूर सब जकरा बच्चा के ओ पढ़ाबैत छलाह, कहिओ खेतक आरि पर नहि जाय देलकनि। समय पर खेतक अन्न हिनका घर पर पहुँचि जाइत छलनि। एक दिन चौधरी जी डोमु दास के पूछलनि "डोमु दास,! जन–हरबाहक बोइन नहि दैत छियैक की ?

डोमु दास, "जी हँ..... दैत तँ छियैक"।

चौधरी जी, "कत' सँ दैत छियैक" ?

डोमुदास, "अहींक बखारी सँ दैत छियैक"।

चौधरी, "सैह, ककरहुँ मजदूरी नहि राखक चाही। ओहि सँ बड़ड़कति नहि होइत छैक। सब केओ मिलि बाँटिक' खाई। एकरहि लेल मालिक आ मजदूर बनल छैक। मुदा आई काल्हि लोक एकर गलत अर्थ लगाबैत अछि। मालिक ओ जे जुल्म करए आ मजदूर ओ जे एकरा सहन करए। हम नहि चाहैत छी जे केओ भूखल रहिक हमरा खेत मे काज करए।

डोमू दास, "जी नहि सरकार एहेन नहि हेतैक। डोमु दास धनकटनीक पहिल दिन सब मजदूरक खायक चौधरीये जी ओहिठाम बनबाबैत छलैक आ सब केओ ओहिठाम सँ खा क' हुँनकर धान काट' जाइत छलनि। चौधरी जी एकटा गाय सेहो रखने छलाह। गाय बड़ सुन्नर आ दुधगरि छलनि। छोट खुटीक गाय आ गोली रंगक एकदम सीधा। केओ बच्चा सेहो ओकरा बान्हि–खोलि सकैत छल। ओहि गाय के सानी–पानी देवाक' अवसर कहिओ चौधरी जी के नहि भेलनि। हुँनका अयबा सँ पहिनहि डोमु दास ओकर सब सेवा क' दैत छलाह। चौधरी जीक पढ़ायल बच्चा के अंग्रेजी आ हिसाब मे कतहुँ केओ दबा नहि सकैत छलैक। ओ

सब फटा–फट गामो में अंग्रजी बाजैत छलैक। से देखि ओकर माय–बापक संगे गामक लोक सेहो चौधरी जीक' प्रति असीम श्रद्धा राख' लागल। ओही गामक एकटा मजदूर छल, डोमु दास। ओ जातिक हरिजन छल आ चौधरी जीक अनन्य भक्त सेहो। चौधरी जी डोमु दासक बेटा रघुबीर के पढ़ाबैत छलाह। रघुबीर पढ़वा में बड़ तेज छल आ चौधरी जीक सानिध्य मे ओकरा में आर निखार आबि गेलैक। रघुबीर क' नाम तँ ओकर माय–बाप रघुआ रखने छलैक मुदा चौधरी जी ओकर नाम रघुबीर दास राखि देने छलाह। रघुबीर बी० ए० पास केने छलैक। ओकरा विश्वविद्यालय सँ प्रमाण पत्रक संग दस हजार रूपया पारितोषिक केर रूप मे भेटलैक। जाहि सँ चौधरी जी के सेहो बड़' खुशी भेलनि। आ डोमू दास दूनू प्राणीक' तँ गप्पे छोड़ि दीअ'। ओ दुनू प्राणी आबिक सोझे चौधरी जीक पायर पकड़ि लेलकनि से किन्नहुँ छोड़ितहि नहि छलनि। चौधरी जी ओकरा पूछलनि, "आब केहेन लागैत छौक। जखन कहैत छलिऔक जे छौड़ा के पढ़ा–लिखा तँ हमर गप्प कतेक खराब लागैत छलौक। पता नहि मने–मन कतेक गारि पढ़ने होयबें।" नहि, नहि सरकार! गारि तँ नहि पढ़ने छलहुँ मुदा इ अवश्य लागैत छल जे हमर धिया–पूता पढ़ि–लिखि क' की करत'। अनपढ़ रहत तँ हमर संग देत, हमरा संगे खेत मे काज करत'। पढ़ि लेत बँ बेकार भ' जायत। कोनहुँ काजक नहि रहत मुदा अहाँक कृपा मात्र सँ ओ मनुक्ख भ' गेल। आब आगु की कयल जयतैक से तँ अपनहि ने कहब, डोमु दास बाजल।

चौधरी जी बजलाह, "देखह पढ़बाक तँ अन्त नहि छैक। बी० ए० पास कयलक तँ एम० ए० क' सकैत अछि। लॉ क' सकैत अछि आ जे–जे चाहत सब क' सकैत अछि मुदा सब सँ नीक होयतैक प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करब आ ओहि मे बैसब। एतेक पढ़ाई आवश्यक छलैक। एकरा बिना किछु नहि भ' सकैत छलैक। एकर बाद नौकरी करितहुँ लोक पढ़ि सकैत अछि। रघुबीर सेहो सब किछु सुनि रहल छल। ओ पढ़ल–लिखल छल। ते डोमुदास सँ वेशी ओ एहि विषय पर सोचि सकैत छल। ओ निर्णय कयलक जे तैयारी क' क' प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल होयब।

ओ बी० पी० एस० सी० क परीक्षा में शामिल भेल आ प्रथमहि बेर मे उत्तीर्ण भ' गेल। ओकर बहाली सी० ओ० के पद पर भ' गेलैक। एहिसँ डोमुदासक तँ दिन–दुनिये बदलि गेलैक । चौधरी जी सेहो अति प्रसन्न छलाह, ओहिना जेना अगहन मे खरिहान भरल देखि गृहस्थ होइत अछि। ओना तँ अधिक लोक के एहि सँ खुशी भेलैक। किएक तँ रघुबीर सब दिनहि सँ सभक हृदय मे अपन स्थान बनौने छल। ओकरा जे केओ कोनो काज कहैत छलैक, ओ बिना किन्तु–परन्तु के करैत छल। रघुबीर के सी० ओ० बनला सँ चौधरी जीक परेशनी थोड़ेक कम भ' गेल। आब हुँनका ककरहुँ पढ़बाक लेल तगादा नहि कर पड़ैत छलनि। सब बच्चाक माय–बाप नित्य अपना बच्चा के सायंकाल चौधरी जीक ओहिठाम पठाबैत छलैक। बच्चाक संख्या तीन गुण भ' गेल आ एहि बृद्धि सँ चौधरी जी सेहो प्रसन्न रहैत छलाह। ओहिना जेना लहलहाहत फसल देखि किसान होइत अछि। डोमु दास सेहो यावत् चौधरी जी नहि आबैत छलाह, तावत् बच्चा सब के सम्हारैत छलैक। मुदा किछु लोक एहनो छलाह जे दोसरक उन्नति सँ व्यथित रहैत छलाह। खास क' एकटा हरजिनक बेटा सी० ओ० बनि गेल। एकरा सब केओ कोना पचा सकत। खासक ओ व्यक्ति जे अपना के गामक सरगना बुझैत हो। ओ सब चौधरी जीक प्रति षडयंत्र कर लागल। चौधरी जी सोझ लोक छलाह। हुँनका पढ़ब आ पढ़ायब सँ मतलब छलनि। एकरा अलाबे ओ किछु नहि देखैत छलाह। ओ एहि षडयंत्र सँ अनभिज्ञ छलाह। हुँनका तँ तखन पता लागल जखन हुँनकर बदली मधुबनी भ' गेल। चौधरी जी तँ अपने मधुबनी चल गेलाह। गामपर रहि गेलीह सुनीता आ दुनू बच्चा।

मधु आ प्रेम एखन पैघ नहि भेल रहथि। मधु पाँच वर्षक छलीह आ प्रेम तीन वर्षक। चौधरी जी के रहि–रहि क' एकेटा चिंता सता रहल छलनि। दोसरक बच्चाक लेल तँ ओ बहुत किछु केलनि मुदा अपना बच्चाक लेल किछु नहि क' सकलाह। अपनहि बच्चाक बेर में ओ दूर भ' गेलाह। तखन भगवान पर भरोष छलनि। भगवानक जेहेन इच्छा हेतनि से तँ होयबे करतैक। चौधरी जी तँ मधुबनी चल गेलाह मुदा ओ जे स्कूल चलाबैत

छलाह। ओ बिरान भ' गेल। सब बच्चा फेर ओएह गुल्ली–डंडा खेलब शुरू क' देलक। ककरहुँ पढ़बा–लिखबा सँ मतलब नहि रहि गेलैक । ओ तँ चौधरी जीक' डरे सब बच्चा आ ओकर माय–बाप तत्पर रहैत छल। जे गामक बच्चा नित्य राजनगर स्कूल जाइत छल, ओकरहुँ मे कमी भ' गेल। कुल मिला जुलाक' चौधरीजीक सपना बिखरि गेल। धीरे–धीरे चौधरी जी आ गामक अन्य लोक इ बात बुझि गेल जे चौधरी जीक बदली अनायास नहि भेल अछि, करबाओल गेल अछि आ सेहो रघुबीरक कारण। चौधरी जी तँ एहि सब पर ध्यान नहि देलनि मुदा रघुबीर के जखन एकर भनक लागल तँ ओ ठानि लेलक जे चौधरी जी के पुनः राजनगर लायब, चाहे जे भ' जाऊ। ओ एकरा प्रतिष्ठाक' प्रश्न बना लेलक। ओ एहि सम्बन्ध मे डी० एम० साहेब सँ सेहो भेंट करबाक विचार क' रहल छल। रघुबीर चौधरी जीक' प्रति समर्पित लोक छल। आई ओ जे किछु अछि से सब चौधरी जीक बदौलति। ओ अपना बाप के सेहो बाजल जे अहाँ के आब केवल गुरूजीक' खेती–पथारी करेबाक अछि, आर ककरहुँ नहि। चौधरी जीक बदली दू कारण सँ भेल छलनि जेना कि गामक लोक सब बाजैत छल। पहिल तँ इ जे ओ एकटा हरिजनक बच्चा के सी० ओ० बनबा देलनि। आ दोसर जे ओहि सी० ओ० केर परीक्षा में गामक दबंग लोक श्रीधर ठाकुरक पोताक' मदति नहि केलनि। गामक लोक इहो बाजैत छलैक जे चौधरी जी आर बढ़ाबथु हरिजनक बेटा के। जकरा भगवाने छोट बना क' पठा देलनि, ओकरा चौधरी जी पैघ बनैबाक कोशिश केलनि। ई भगवान के कोना देखल जयतनि। तकर फल तँ भेटबे ने करतनि। आर चलाबथु हरिजन पाठशाला। गाममे किछु एहनो लोक छलाह, जिनका चौधरीजीक प्रति श्रद्धा, सहानुभूति तँ छलनि मुदा ओ सब श्रीधर ठाकुरक डरें किछु बाजि नहि सकैत छलाह।

एक दिन मधुबनी मे जिला पदाधिकारी ओहिठाम बैसार छलैक। बैसार मे सब अधिकारी आयल छलाह। ओना तँ रघुबीर जिला पदाधिकारी सँ एहि विषय मे गप्प करब सोचने छल मुदा बैसार मे ओकर परिचय जिला शिक्षा पदाधिकारी गंगेश झा जी सँ भेल। झा जी बड़ नीक लोक

छलाह आ गप्प–शप्प मे सेहो माधुर्यता छलनि। रघुबीर चौधरी जीक' चर्चा करैत बाजल, "श्रीमान् अपनेक द्वारा राजनगर हाईस्कूलक एकटा शिक्षक श्रीमंत चौधरीक बदली मधुबनी कयल गेल अछि। हम चाहैत छी जे पुनः हुनकर बदली राजनगर क' देल जानि।"

गंगेश जी, "औ जी, इ कोना होयत। हुँनका विरूद्ध तँ बड़ पैघ शिकायत छनि। हुँनकर बदली तॅ कमहि भेल। हुँनका पर तँ कारबई होयबाक चाही। हुँनकर नौकरीओ जा सकैत छनि।"

रघुबीर, "श्रीमान्, तखन ऐतेक कृपा कोन कारण सॅ कयल। जॅ नौकरी जयबाक चाही तॅ ओएह कयल जाऊ।

गंगेश जी, "औ जी, अहाँ हुँनकर पैरबी क' रहल छी, की शिकायत। अहाँ तॅ विचित्र लोक छी?"

रघुबीर, "चलु, अपने कम सँ कम हमरा लोक तॅ बुझलहुँ। की शिकायत छनि, चौधरी जीक खिलाफ?"

गंगेश जी, "इएह जे ओ करीब पन्द्रह वर्ष सँ राजनगर मे पदस्थापित छथि। वेशी समय गामहि मे खेती–पथारी मे विताबैत छथि। विद्यालय कम जाइत छथि आ सब सँ पैघ आरोप छनि, ओ जातिवाद करैत छथि।

रघुबीर, "इएह जे ओ विद्यालय कम जाइत छथि। की अपने एकर जाँच कराओल अछि"?

गंगेश जी, "नहि जाँच तँ नहि कराओल अछि"।

रघुबीर, "से किएक" ?

गंगेश जी, "एहि लेल जे भ' सकैत अछि जाँच कराओलाक बाद दोसर कारबाई कर' पड़ैत। तँ केवल बदली क' क' छोड़ि देलियनि।

रघुबीर, "अपने हुँनका संग जे कयल से कयल, विभागोक संग घोर अन्याय कयल अछि।"

गंगेश जी, "से कोना?"

रघुबीर, " जाँच नहि कराक। जँ ओ दोषी छथि तँ सजाक भागी छथि आ विभागक लेल उदाहरण होयत। दोसराक लेल सबक हेतैक। जँ दोषी नहि छथि तँ प्रोत्साहन भेटक चाही, आ गलत शिकायत कर्त्ताक विरूद्ध

मुकादमा चलाओल जयबाक चाही। जाहि सँ दोसर केओ अकारण विभागक समय नष्ट नहि करत। आब सुनु, ओहि व्यक्तिक इएह गलती छैक, जे ओ कोनहुँ जाति धर्म मे फर्क नहि बुझैत छथि। ओ नित्य साइकिल सँ राजनगर जाइत छथि। एकर प्रमाण अपने राजनगर हाईस्कूलक प्रधानाध्यापक सँ ल' सकैत छी। ओ राजनगर सँ अयलाक बाद नित्य राति मे सात बजे सँ दस बजे धरि गरीबक बच्चा, कोनहुँ जातिक किएक नहि हो, के पढ़ाबैत छथि। आई हम रघुबीर दास हरिजनक बच्चा सी0 ओ0 भेलहुँ, इ मात्र चौधरी जीक' कृपा अछि। जहाँ धरि खेती–पथारी करेबाक आरोप अछि। हुँनकर खेती गाम मे सबसँ पहिने होइत अछि। ओ कहिओ अपना खेतक' आरि पर नहि जाइत छथि आ ने हुँनका इ पता छनि जे कोन खेत मे कोन फसल अछि। एखन तँ ओ मधुबनी मे छथि, तँ की हुँनकर खेती–पथारी बन्न अछि। जकरा–जकरा बच्चा के ओ पढ़ाबैत छथि, ओएह सब मिलि क' पहिने हुँनकर खेती करैत अछि, तखन दोसराक। की मजाल छैक ककरहुँ जे चौधरी जीक' जजात के नुकसान पहुँचाओत। चौधरी जीक बदली सँ चौधरी जीक' तँ किछु नहि बिगरत मुदा चौधरी जी जे गाछ लगौने छलाह, ओ अवश्य सूखि जायत।"

गंगेश जी, "हम बुझलहुँ नहि, कथीक गाछ लगौने छथि, चौधरी जी ?"

रघुबीर, "गरीबक बच्चा के पढ़यबाक। अच्छे, श्रीमान् इ कहल जाउ, जे शिकायत कर्त्ता के छथि ?"

गंगेश जी, "शिकायत कर्त्ताक नाम तँ नहि मोन अछि। चलु कार्यालय फाइल देखा दैत छी। सम्भवतः कोनो ठाकुर छथि।"

रघुबीर, "श्रीधर ठाकुर की?"

गंगेश जी, "हॅ ... हॅ... ओएह श्रीधर ठाकुर।"

रघुबीर, " ओ, आब बुझलहुँ। अपने एकर जाँच अवश्य करबाउ। इ अपनहुँ लेल नीक रहत।

गंगेश जी, "छोड़ु ने..... जखन अपने कहिये रहल छी तखन जाँचक कोन आवश्यकता छैक। हम चौधरी जीक बदली पुनः राजनगर क' दैत छियनि।"

रघुबीर, "जी नहि... बिना जाँचक' अपने किछु नहि करब। इ हमर निवेदन अछि। अहाँ नहि जानैत छी, श्रीधर ठाकुर एक नम्बरक धूर्त्त आ लुच्चा अछि। जँ बिना जाँचक किछु करब तँ ओ अहूँ के फँसा सकैत अछि। हँ, एकटा सलाह हमर अवश्य मानब। ओहि जाँचक क्रम मे थानाक' दू टा सिपाही अवश्य ल' लेब। तखन अहाँ के सही स्थितिक जानकारी होयत। अन्यथा अहुँ के खेहारि देत।

दुनू गोटे मिलिक योजना बनौलनि। रघुबीर राजनगर मे सी0 ओ0 छलाह, तँ थाना सँ सिपाही भेटवा मे कोनो दिक्कत नहि भेलनि। श्रीमंत चौधरी आ श्रीधर ठाकुर के सेहो अपन–अपन पक्ष प्रस्तुत करबाक लेल नोटिस देल गेलनि। निर्धारित तिथि पर गंगेश झा आ रघुबीर दास चारिटा सिपाहीक संग श्रीधर ठाकुरक' ओहिठाम पहुँचलाह। चौधरी जी के बजाओल गेल आ शुरू भेल तहकीकात । श्रीधर ठाकुर जतेक भाड़ाक गवाह जुटाक' रखने छलाह, सब सिपाही कँ देखितहि हवा भ' गेल। श्रीधर ठाकुर एकहुँ टा' आरोप के सिद्ध नहि क' सकलाह आ ने गवाह प्रस्तुत क' सकलाह। गंगेशजी आ रघुवीर दुनू किछु काना–फुसी केलनि आ गंगेशजी बजलाह, ठाकुर जी, अपने तँ एकोटा आरोप सिद्ध नहि क' सकलहुँ। एहि मे विभागक जे खर्च आ समय बर्बाद भेलैक, ओ तँ अपनहि सँ वसूल कयल जायत। संगहि कानूनी कारवाई सेहो कयल जा सकैत अछि। ते हम चाहब जे अहाँ अपन शिकायत आपस ल' ली। जाहि सँ फाइल अहीठाम बंद भ' जेतैक आ अहूँ कारवाई स' बचि जायब"। श्रीधर ठाकुरक सबटा लोक तँ सिपाही देखि क' भागिये गेल छलैक। ओकर अपनहुँ हालत देखबा जोग छलैक आ ताहू मे कारवाई केर गप्प सँ ओ आर डरि गेल। ओ बाजल ,"ठीक छै, सरकार! हमरा जे आदेश हेतैक, हम तैयार छी"। श्रीधर ठाकुरक ठोर पर फुफड़ी पड़ैत छलैक। जेना लागि रहल छलैक जे गाय के मारि, पतिया–प्रायश्चित्त क' रहल हो। ओ अपनहि ओहिठाम रघुबीर के कुर्सी पर बैसल देखि भीतरे–भीतर जरि रहल छल मुदा ओ किछु कओ तँ नहि सकैत छल। रघुबीर सेहो एहि गप्प के बुझि रहल छलाह। ओ आर ओकरा खौझेबाक लेल कौखन दुनू

पायर उठाक' ओकरहि दिश टेबुल पर राखि दैत छलाह। गामक नजरि मे रघुबीर अवश्य हरिजन आ डोमू दासक बेटा छल। जे काल्हि धरि लोकक खेते–खेते बोइन करैत छल मुदा सरकारी महकमा मे तँ ओ राजपत्रित पदाधिकारी छल। ओकरा इ पावर छलैक जे कोनो ने कोनो आरोप लगा क' श्रीधर ठाकुर कँ जेल पठा सकैत छल मुदा चौधरीजी क' सेहो हिदायत छलनि। कोनो एहेन काज नहि होयबाक चाही, जाहि सँ दुश्मनी, पुश्तैनी रूप पकड़ि लिए। आगि सँ आगि नहि मिझाओल जा सकैत अछि। आगि मिझाबक लेल जलक आवश्यकता पड़ैत छैक।

गंगेशजी" अपने लिखि क' देल जाऊ; कागज कलम बढ़ावैत (श्रीधर ठाकुर, कागज कलम लैत) हँ तँ की लिखबै सरकार! गंगेशजी" लिखू.. ... हम किछु लोकक बहकाबा में आबि क' श्रीमंत चौधरीक उपर आरोप लगाओल। चौधरीजी बहुत नीक लोक छथि आ हिनका सँ गामक कल्याण भ' रहल अछि। हम कोनो दबाब में नहि बल्कि स्वेच्छा सँ अपन शिकायत पत्र आपस लैत छी।" सबटा कागज–पत्र ल' क' गंगेशजी आ रघुबीर सिपाहीक संग श्रीमंत चौधरीक ओहिठाम अयलाह। चौधरीजी के रघुबीर पहिने पठा देने छलाह। हुँनकहि ओहिठाम सभक मांस–भात भेल छलनि। सब केओ कुर्सी–टेबुल पर बैसि भोजन करब शुरू केलनि। मुदा रघुबीर निचां मे पात ओछाक' खायब शुरू केलनि। चौधरीजी सेहो रघुबीर कँ कुर्सी–टेबुल पर बैसि भोजन करबाक आग्रह केलनि मुदा रघुबीर बजलाह" गुरुदेव! इ टा' गप्प हम अहूँ के नहि मानब। आर अहाँ जे कहब, सब मानि लेब मुदा गुरुक' ओहिठाम कुर्सी पर बैसबाक हमर औकाति नहि भेल अछि। हम तँ भोजनो नहि करितहुँ मुदा भूखे एतेक जोर सँ लागल छल जे बर्दास्त नहि भेल। श्रीधर ठाकुर तँ बड़ प्रयास केलक किछु खोआबक लेल मुदा ओकर अन्न खयबा सँ नीक चंडालक अन्न खायब अछि।

गंगेश,"इ गप्प पहिने ने बजितहुँ। हमहूँ निंचे में बैसितहुँ।

रघुबीर," अपने ठीक छियैक। हमरा लेल एहिठाम इ उचित नहि अछि। इ दोसर ठाम थोड़हि लागू हैतेक"। चौधरीजी पर जे एकटा आरोप छल,

विद्यालय नहि जयबाक, ओकर सत्यापन गंगेश बाबू पहिनहि क' चुकल छलाह। प्रधानाध्यापक महोदय कहने छलथिन "श्रीमान चौधरी जी के बिना हम अपूर्ण छी। हुँनका विषय मे जे किछु कहब से थोर होयत। जँ अपने हमरा ओहिठाम सँ दू टा शिक्षक के हटा ली आ चौधरीजी के द' दी तँ हम अपनेक बड़ उपकार बुझब। चौधरी जी क' गेला सँ हमर सब विद्यार्थी हहरि गेल अछि। कतेक तँ दोसर विद्यालय चल गेल। कतेक स्कूल आयब छोड़ि देलक। मुदा सरकारी आदेशक अवहेलना कोना करब, तँ चुप छी।

श्रीधर ठाकुरक ओहिठाम तँ सिपाही के देखि क' सब पड़ा गेल मुदा चौधरी जी क' ओहिठाम दू सय लोक जमा छल। खास क' ओहेन लोक वेशी संख्या मे छल जकरा बच्चा के चौधरी जी पढ़ाबैत छलाह। रघुबीर क' सह पर डोमू दास सबकँ जमा कयने छलैक। एतेक लोक के एहिठाम देखि क गंगेशजी कँ आश्चर्य भेलनि ओ रघुबीर सँ पूछलनि, "एतेक लोक एहिठाम किएक छथि" ?

रघुबीर, "अहाँ अपने पूछि लिऔक। रघुबीर एक गोटे के इशारा केलक, जे बजबा–भूकबा मे चरफर छल"।

गंगेश जी, "अहाँ सब एहिठाम किएक आयल छी। कोनो हाल–रोजगार नहि अछि की" ?

एक गोटे बाजल, "सरकार! हाल–रोजगार तँ बहुँत अछि, मुदा एहि सँ बढ़िक नहि ?"

गंगेश जी, "साफ–साफ बाजू। की कह' चाहैत छी।"

ओ व्यक्ति पुनः बाजल, "चौधरी जी सँ हमरा सभक बीच एक आशाक किरण उदित भेल छल। हिनका रहला सँ हमरा सभक बच्चा अनपढ़ नहि रहैत। ओकरा दू अक्षरक बोध भ' जाइत। मुदा सरकार हिनकर बदली क' क' हमरा सभक आशा पर पानि फेरि देलक। आब हमरा सभक बच्चा पढ़ि नहि सकत।

गंगेश जी, "किएक स्कूल नहि छैक ? अहाँ सब अपना बच्चा के स्कूल मे पठाउ। सरकार तँ अहाँ सभक लेल बहुत किछु कयने अछि, ओकर

लाभ लीअ'।

ओ बाजल, "सरकार! स्कूल एहिठाम सँ दू कोस दूर छैक। नइन्हटा बच्चा कोनाक दू कोस आओत आ जायत। ओ तँ ओतबहि मे नमरि जायत। पढ़त–लिखत की ?

गंगेश जी, "चौधरी जी पन्द्रह वर्ष सँ राजनगर मे छलाह। सब दिन ओतहि रहताह, इहो तँ नहि भ' सकैत छैक। दोसर गप्प इ खाली एहिठाम खेती करैत छथि। विद्यालय कम जाइत–आबैत छथि।

ओ बाजल, "सरकार! जे केओ इ गप्प बाजैत अछि, ओ एकदम झूठ बाजैत अछि। चौधरी जीक खेती–पथारी तँ हम सब करैत छी। इ तँ खेतक आरिओ पर नहि जाइत छथि। हिनका ओतेक पलखति कत'। इ तँ भोरे स्नान–पूजा क' साइकिल उठाबैत छथि आ राजनगर विदा होइत छथि। सांझ मे आबैत छथि तँ हमरा सभक बच्चा के पढ़ाबैत छथि।

गंगेश जी, "की चौधरी जी, अहाँ जानैत नहि छी, जे सरकारी सेवा मे रहि, दोसर काज–धंधा नहि क' सकैत छी।

चौधरी जी, "श्रीमान् हम कोनहुँ स्कूल नहि चला रहल छलहुँ। हँ, जे बच्चा हमरा ओहिठाम आबैत छल, ओकरा यथा साध्य जतेक हमरा आबैत अछि, ज्ञान अछि, पढ़ा दैत छलियैक। जहाँ धरि सरकारी सेवा मे रहि दोसर वृत्तिक प्रश्न छैक, तँ हम एहि सँ अर्थोपार्जन नहि करैत छलहुँ। गामक गरीब बच्चा जे गुल्ली–डन्डा खेलैत छल, चरबाहि करबाक लेल विवश छल, हम ओकरहि सब के प्रेरित क' वा जबरन संध्या काल स्कूल सँ अयलाक बाद पढ़ाबैत छलहुँ। नहि विश्वास हो तँ हिनकहुँ सब सँ पूछि लिऔन।

गंगेश जी, "ओ आब बुझलहुँ, ई भीड़ अहीं जुटौने छलहुँ। हमरा पड़ दबाब बनेवाक लेल।

चौधरी जी, "हम किनकहुँ नहि बजौलहुँ अछि। आ ने हमरा मधुबनी मे कोनहुँ कष्ट अछि। हमरा केवल भगवान पर भरोष अछि। हुँनका जे मंजुर हेतनि, सैह हेतैक।

गंगेश जी, "हमरा रघुबीर जी सँ सब जानकारी भेटि गेल अछि।

हम तँ केवल अहाँक धैर्य आ दृढ़ता के परखि रहल छलहुँ। इ सब करबाक पाछाँ अहाँक उद्देश्य छल जे हमरा गाम मे केओ अनपढ़ नहि रहए। खासक' गरीबक धिया–पूता।"

चौधरी जी, "एहि लेल जे, जेकरा सामर्थ छैक, ओकर धिया–पूता बाहरो जा' क' पढ़ि लैत छैक मुदा गरीबक धिया–पूता कत' जायत। दिन भरि गुल्ली–डंडा खेलत, गाय–महिसक चरबाहि करत, ककरहुँ ओहिठाम बंधुआ मजदूर बनि क' गुलामीक जीवन बिताओत आ पैघ भेला पर बनिहारी करबाक लेल विवश भ' जायत। आई रघुबीर पढ़ि लेलनि तँ सब के पाछाँ छोड़ि देलनि। की गरीबक बच्चा मे मेधाक अभाव छैक, बिल्कुल नहि। अभाव छैक तँ ओकरा भोजन के, वस्त्र के आ मकान के। जँ ओकरा सुविधा देल जेतैक तँ ओहो सब सँ आगु बढ़ि सकैत अछि। आरक्षण सँ देशक कल्याण नहि भ' सकैत अछि। आरक्षण तँ मात्र वोट बैंक बनि क' रहि गेल अछि। ओहि सँ फायदा गरीबक नहि, नेता के होइत अछि। एहिनाम पर दू समुदाय के लड़ा दैत अछि आ अपने मसीहा बनि भरि झोड़ा वोट ल' क' चलि दैत अछि। आरक्षण होयबाक चाही गरीबक बच्चा के पढ़बा पर। ओकरा निःशुल्क भोजन वस्त्र, होस्टल, किताब आ कापी भेटक चाही। तैखन आजादीक सही मायने लोकक सोझां आओत। एक दिश सरकार आरक्षणक कोटा बढ़ाबैत अछि आ दोसर दिश सार्वजनिक क्षेत्र मे बहाली पर प्रतिबंध लगाबैत अछि। एहि आरक्षण सँ की फायदा छैक मुदा एकरा बुझबाक लेल के तैयार अछि। ओ तँ एकरा लेल मुड़ी कटाब' पर तुलल रहैत अछि। अही सँ बुझि लीअ', ओकरा कतेक ज्ञान छैक। हम तँ एहेन आदर्श शिक्षण संस्थान बनाब चाहैत छी, जाहि सँ गरीब वा कमजोर वर्गक बच्चा केवल सरकारीये क्षेत्र मे नहि बल्कि अन्य क्षेत्र मे सेहो अपन उपस्थिति दर्ज कराओत। जँ से नहि हेतैक तँ देश कँ आजाद भेने एकरा की भेटलैक। ई तँ एखनहुँ गुलामे अछि। ने भरि पेट अन्न आ ने भरि देह वस्त्र। एहि आजादीक ओएह हाल अछि। अंग्रेजक हाथ सँ छूटल तँ पैघ लोकक (सामंतक) हाथ मे फँसि गेल। बुझू जे बेल सँ खसलहुँ तँ बबूर पर अटकलहुँ।

गंगेश जी, "धन्य छी अहाँ आ धन्य अछि, अहाँक विचार। जँ रघुबीर सँ भेट नहि होइत तँ हमरा हाथे, कतेक पैघ अन्याय भ' जाइत। अहाँ तँ ओ काज क' रहल छी, जकरा लेल हम सब एखन सोचिए रहल छी। लगातार सरकारक आदेश आबि रहल अछि मुदा कोना शुरू कयल जयबाक चाही, इ बुझवा मे नहि आबैत अछि। अपने लग कोनहुँ रजिस्टर अछि, जाहि मे सब बच्चाक नाम अंकित हो?

चौधरी जी, "जी हँ ! ओ एकटा रजिस्टर देलनि।

गंगेश जी, रजिस्टर सँ किछु नोट कयलनि आ अपन दस्तखत क' रजिस्टर चौधरी जी के द' देलनि।

गंगेश बाबू बजलाह, "ठीक छै, चौधरी जी! अहाँ के कागज पत्र तँ बाद' मे भेटत। तत्काल अहाँ के हम आदेश दैत छी जे अहाँ गामहि मे रहिक' जतेक लोक के पढ़ाबैत छलहुँ, ओकरा पढ़ाऊ आ एकरा विद्यालय के स्वरूप दिऔक। एखन तँ हम अहाँक प्रतिनियुक्ति करब। दरमाहाक लेल अहाँ के एक बेर मास मे मधुबनी जाय पड़त। विद्यालय कँ स्वीकृति होइतहि अहाँक असालतन बदली अहीठाम क' देल जायत। पुनः रघुवीर जी के बजाक बजलाह, "हम रिपोर्ट तैयार करबा मे अहाँक सहयोगक अपेक्षा करैत छी।

रघुबीर, "अपने जे सहयोग चाहब से भेटत। आई तँ हम अपनेक गुलाम बनि गेल छी। मन होइत अछि जे अहाँक दुनू पायर पकड़ि ली।"

गंगेश जी, "एतेक हमरा जुनि लजाऊ।"

रघुबीर, "सही कहैत छी श्रीमान्! हमरहि कारण हमरा गुरूजी पर आरोप गढ़ल गेलनि। हमरा आई एतेक खुशी भेल अछि, जकर वर्णन नहि क' सकैत छी। ठीक छै..... हम अगिला सप्ताह मे अपनेक भेट करैत छी।"

अगिला सप्ताह मे रघुबीर जी गंगेश बाबूक कार्यालय गेलाह। गंगेश बाबू बजलाह, हम एकटा प्रतिवेदन तैयार कयल अछि। कनेक अपने ओंकरा देखि लीअ' आ जत' जे सुधारक आवश्यकता होई से बाजू।"

रघुबीर जी प्रतिवेदन पढ़ए लगलाह। हलांकि प्रतिवेदन इक्कीस पृष्ठ मे लिखल गेल छलैक। कारण ओ चौधरी जीक' जाँच प्रतिवेदन संगहि नव शिक्षा नीतिक मसौदा सेहो छलैक। जकरा अन्तर्गत धनकाही में प्रयोगक तौर पर विद्यालय केर स्थापना कयल जायत। आ ओकर सफल संचालन हेतु श्रीमंत चौधरीक प्रतिनियुक्ति तत्काल कयल जयबाक चाही। एहि सम्बन्ध मे हम व्यक्तिगत रूपँ श्री चौधरीक अन्तर्विक्षा लेल अछि। ओ सब तरहँ एहि विद्यालयक लेल योग्य एवं उपयुक्त छथि। एकर अलाबे श्री चौधरी मे एकटा आर गुण देखल अछि। ओ गरीब चाहे कोनो जातिक हो वा हरिजनक बच्चा मे कोनो फर्क नहि बुझैत छथि। ओ ओकरा मन सँ शिक्षा दैत छथि। तीन वर्षक कार्य कलाप देखलाक बाद ओकर परिणाम अनुकूल भेला पर मान्यता प्रदान कयल जायत। प्रतिवेदनक मुख्य अंश एहि तरहे छल–

श्रीधर ठाकुर धनकाही राजनगर सँ शिकायत प्राप्त भेल। जकरा अनुसार श्रीमंत चौधरी सहायक शिक्षक जे राजनगर हाई स्कूल मँ पदस्थापित छथि, विद्यालय कम आबैत छथि। अपनहि गाम पर स्कूल खोलि अतिरिक्त अर्थोपार्जन करैत छथि। जे एकटा सरकारी सेवक के नहि करबाक चाही। अधिक समय अपना खेती–बारी मे दैत छथि आ जाति– पातिक उन्माद समाज मे पसारि रहल छथि, जाहि सँ कखनहुँ स्थिति विस्फोटक भ' सकैत अछि। उपरोक्त शिकायतक आधार पर श्रीमंत चौधरीक बदली तत्क्षण प्रभाव सँ मधुबनी जिला स्कूल मे कयल गेल आ स्वयं श्री रघुबीर दास सी0 ओ0 राजनगरक संग वस्तु स्थितिक' जाँच कयल। जाँचक क्रम मे शिकायतकर्त्ता श्रीधर ठाकुर सँ पूछताछ कयल गेल। ओ एकहुँटा आरोप सिद्ध नहि क' सकलाह आ ने एकोटा गबाह प्रस्तुत क' सकलाह। ओ बजलाह जे हमरा लोक सब झूठ–मूठ क' चढ़ा–बढ़ाक शिकायत करबा देलक। हम अपन शिकायत आपस लैत छी। ओकर बाद प्रधनाध्यापक राजनगर सँ बयान लेल गेल। जेकरा मोताबिक श्री चौधरीक उपस्थिति सब सँ अधिक अछि। संगहि श्री चौधरीक कार्यशैली आ पठन–पाठन सँ ओ बड़ प्रभावित छलाह। ओ पुनः श्री

चौधरीक माँग अपना विद्यालयक' लेल केलनि। कहबाक तात्पर्य जे श्री चौधरीक उपर लगाओल इहो आरोप सही नहि पाओल गेल। अंतिम आरोप छल, जातीय उन्माद पसारब आ अतिरिक्त अर्थोपार्जन करब। जखन एकर जाँच कयल गेल तँ एक विचित्र चिज सामने आयल। जकर हम तँ कल्पनों नहि कयने छलहुँ, आ एहि सँ हमरहुँ किछु प्रेरणा भेटल। जे प्रस्ताव एखन शिक्षा विभागक कागजे पर अछि। जकरा लेल एखन अधिकारी सब सोचिये रहल छथि जे कोना एकरा लागू कराओल जयबाक चाही। ओ कार्य श्री चौधरी विगत दस वर्ष सँ क' रहल छथि आ सेहो निःशुल्क। ओकर परिणाम सेहो नीक देखबा मे आबि रहल अछि। श्री चौधरीक बदली सँ चौधरीक तँ किछु नहि बिगरल मुदा ओ स्कूलक जे वातावरण तैयार कयने छलाह, ओ क्षत–विक्षत भ' गेल। ओ दलित समाज, जकरा लेल चौधरी जी काज करैत छलाह। जकरा बच्चा के चौधरी जी निःशुल्क पढ़ाबैत छलाह। समय–समय पर ओकरा सब के किताब आ कापी अपना दिश सँ दैत छलाह, ओ वर्ग श्री चौधरीक बदली सँ अत्यंत मर्माहत अछि आ अपना के अनाथ बुझि रहल अछि। एहि सब पहलू पर विचार करैत हम विभाग सँ आग्रह करैत छी जे सर्वप्रथम धनकाही के सर्व शिक्षा अभियान सँ प्रायोगिक तौर पर जोड़ल जाय। ओतए प्रधानाचार्य केर रूप मे श्री चौधरीक प्रतिनियुक्ति ता धरि कयल जाय, जा धरि योजनाक स्वीकृति नहि भ' जाइत अछि। तीन वर्षक कार्य–कलाप देखलाक बाद अनुकूल परिणामक आधार पर एकरा नियमित कयल जाय। प्रत्येक स्कूल सँ एक–एक शिक्षक एक मासक ट्रेनिंग श्री चौधरीक सानिध्य मे लेताह। ओकर ठहरबाक आ भोजनक इन्तजाम सरकारी खर्च पर श्री चौधरी करताह।

अनुमोदनार्थ प्रेषित
जिला शिक्षा पदाधिकारी

प्रतिवेदन देखि रघुबीर उछलि गेलाह। की अपूर्व प्रतिवेदन तैयार कयल अछि। एकरा लेल अहाँक जतेक सराहना कयल जायत, थोर होयत। गंगेश जी, "रघुबीर जी एकरा लेल तँ सराहना अहाँक होयबाक चाही।"

रघुबरी, "से कोना ?"

गंगेश जी, "जँ अहाँ सँ भेट नहि होइत, तँ इ सब थोड़हि होइत। जखन ककरहुँ जीवन मे सही पथ प्रदर्शक भेटि जाइत छैक तँ स्वतः ओकरा आगू बढ़बाक बाट भेटि जाइत छैक।

रघुबीर, "से तँ अपने ठीक कहैत छी। बिना गुरूक ग्यान नहि होइत छैक। हमरहुँ पथ प्रदर्शक तँ ओएह छथि।

गंगेश जी, "हुँनका आब हमर वा अहाँक पथ प्रदर्शक कहब उचित नहि। ओ तँ राष्ट्र वा देशक पथ प्रदर्शक कहौताह। पन्द्रह दिनक बाद पुनः गंगेश जी आ रघुबीर दास धनकाही पहुँचलाह। एकर कोनहु पूर्व सूचना चौधरीजी के नहि छलिन। ओ दूनू गोटे के देखि आश्चर्य चकित छलाह। रघुबीर हुँनका पैर छुबिक प्रणाम केलकनि। ओकरा भरि मोन आर्शीवाद देलनि। गंगेश बाबू एकटा लिफाफ हुँनका दिश बढ़ौलनि। चौधरी जी लिफाफ खोलि क' देखलिन आ गंगेश जी कँ एक टक देखिते रहि गेलाह। गंगेश जी बजलाह, "की मास्टर साहेब ,अपने एहि व्यवस्था सँ खुश नहि छी की ?"

चौधरीजी "खुशी.... खुशी तँ हमरा एतेक अछि जकर वर्णन नहि क' सकैत छी। जेना ककरहुँ गारल धन भेटला सँ खुशी होइत छैक, तहिना हमरा आई खुशी भ' रहल अछि। ई योजना त' हमर सपना छल आ ई सपना एतेक जल्दी पूर्ण होयत, एकर तँ हम कल्पनो नहि कयने छलहुँ। हमरा लागि रहल अछि जे हमरा सोझाँ गंगेश बाबू जिला पदाधिकारीक रूप मे नहि स्वयं भगवान बनि क' ठाढ़ छथि। बाजैत–बाजैत चौधरी जी आत्म–विभोर भ' गेलाह आ गंगेश बाबूक दुनू पायर पकड़बाक लेल झुकलाह।

गंगेश बाबू पाछाँ हटैत बजलाह, "अपने ई की क' रहल छी? अपने गुरु तुल्य छी। अपनेक ओहिठाम अयला सँ हमरा अमूल्य वस्तु भेटल, एकटा नव दिशा भेटल, एकटा प्रेरणा भेटल। नहि तँ हम आ हमर विभाग वौआइते रहि जाइत। हमर प्रस्ताव तुरंत विभाग सँ सचिवालय चल गेल। ओहिठाम मंत्रिमंडल द्वारा पारित क केन्द्र सरकार के पठा देल

जायत। एहि सँ विभाग मे जे हमर प्रतिष्ठा बढल अछि, एकर एक मात्र श्रेय अहाँके जाइत अछि। प्रथम चरण मे राजनगर प्रखंण्ड मे जतेक मध्य विद्यालय छैक, ओहि मे सँ एक–एकटा शिक्षक एक–एक मासक ट्रेनिंग लेताह। हम सब स्कूल के सूचना पठा देलियैक अछि। आठ दिनक भीतर अहाँ कँ सब स्कूलक शिक्षकक सूची भेटि जायत। ट्रेनिंग मे शिक्षक के बजेबाक अधिकार सेहो अहीं के देल जाइत अछि। एकटा लिपिक के सेहो देल गेल अछि। संम्भवतः ओ काल्हि आबि जायत। ट्रेनिंग मे आब'' बला शिक्षक कँ भोजन आ रहबाक इन्तजाम अपनहि कँ कर' पड़त। ओ खर्च अपने के विभाग द्वारा पहिनहि द' देल जायत। अन्य जाहि वस्तुक प्रयोजन होयत, ओकर माँग क' सकैत छी।

आब चौधरी जीक सर्व शिक्षा अभियान शुरु भेल। सम्पूर्ण पंचायतक लोक सब सँ सम्पर्क करए लगलाह। विद्यार्थीक संख्या मे प्रतिदिन वृद्धि होमए लागल। अन्य पंचायतक शिक्षक सेहो ट्रेनिंग मे आब' लगलाह। एक वर्ष धरि इ कार्यक्रम सफलता पूर्वक चलाओल गेल। चारू दिश धनकाहीक नाम पसरि गेल आ चौधरी जीक तँ सहजहि। चौधरी जीक जतेक दुश्मन छल, सब माँटि पकड़ि लेलक। चौधरी जीक ओहिठाम बराबरि नव–नव हाकिम सब आब' लगलाह आ ओहो सब हिनका कार्य सँ संतुष्ट छलाह। मुदा धनकाहीक उन्नति भगवानों के नहि देखल गेलनि। अचानक एक दिन रातिक दू बजे चौधरी जीक पेट मे दर्द उठल आ यावत् डाक्टर वा वैद्य बजाओल जाइत, चौधरी जी एहि नश्वर देह के छोड़ि ब्रह्म मे लीन भ' गेल छलाह। हुँनकर देह ठंडा भ' गेल। डोमु दास जे प्रायः राति मे चौधरीये जीक ओहिठाम रहैत छलाह, ओहि दिन कोनो कारण वश नहि आबि सकलाह। जखन इ समाचार भेटल तँ डोमु दास सब सँ पहिने रघुबीर के खबरि पठौलक। अपने चौधरी जीक पायर लग ओंघराय लागल। चौधरी जीक लाश पर सुनीताक संग मधु आ प्रेम सेहो बिलखि रहल छल। ओकरा सब के धैर्य के धराओत। जे आबैत छल ओएह अपन सुधि–बुधि बिसरि जाइत छल। ओना तँ इ पुरा इलाकाक लेल चिंताक विषय छल। मुदा डोमु दास तँ आर बेकल भ' गेल। जेना

ओकर सब किछु हेरा गेल होइक। भोर होइत–होइत रघुबीर आबि गेलाह। ओ सुनीता, मधु आ प्रेमक संग डोमु दास के सेहो धैर्य धरौलनि। चौधरी जीक अन्तिम संस्कार कयल गेल। सांझ पड़ैत–पड़ैत श्रीमंत चौधरी अपना संग–संग बिहार सरकार क' सपना के सेहो अधूरा छोड़ि पंचतत्व मे विलीन भ' गेलाह। ओहि राति धनकाही कालरात्रिक समान लागि रहल छलैक। एक श्रीधर ठाकुर के छोड़ि ककरहुँ घर मे ने डिबिया लेसल गेल आ ने आँच पजारल गेल। चौधरी जीक परिवारक सम्पूर्ण भार डोमु दास आ रघुबीर पर आबि गेल। ओना तँ पहिनहुँ सबटा काज डोमु दास करैत छलैक मुदा ओकरा पहिने आ एखन मे बहुत फर्क बुझाइत छैक। पहिने माथ पर चौधरी जीक हाथ रहैत छलैक। आब से नहि रहलैक। खेती–पथारी तँ पूर्ववते सभक सहयोग सँ होइत रहल। रघुबीरक प्रयास सँ सुनीता के शीघ्र पेंशन भेट' लगलनि। ओ दुनू बच्चा के ल' क' मधुबनी मे रह लगलीह। ओहिठाम मधु आ प्रेमक नाम लिखाओल गेल। डोमू दास बीच–बीच मे अन्न–पैन ल' क' मधुबनी जाथि आ हाल–चाल बुझि आपस आबि जाइत छलाह। मधु बी० ए० पास केलनि आ प्रेम आई० एस० सी० कयलाक बाद इंजीनियरिंग केर कोचिंग हेतु पटना चल गेलाह। सुनीता मधु के ल' क' गाम चल एलीह। आब सुनीता के दुटा चिंता छलनि। पहिल मधुक विवाह आ दोसर प्रेमक इंजिनियरींग केर पढ़ाई। आब मधुक विवाह होयब आवश्यक छल। ओना तँ मधुक वयस मात्र उन्नीस वर्षक छलनि मुदा गाम मे ओहि वयस केर केओ बच्ची नहि छल आ जँ केओ होयबो करत तँ बाहरे रहैत होयत। एहि मामिला मे गामक लोक बड़ तेज होइत अछि। लोकक आँखि बड़ तेज होइत अछि। ओकरा सब के तँ किछु ने किछु खोराक भेटक चाही। ओ सब खास क' स्त्रीगण सब आपस मे काना–फूसी कर लगलीह। ऐँ घर मे मकुनी हाथी के रखने अछि आ विवाह दानक' कोनो चर्चे नहि करैत अछि। पता नहि कहिया विवाह दान करतैक। जतेक मुँह ततेक गप्प मुदा सुनीता कौखन एहि सब सँ बिचलित नहि भेलीह। हुँनका बुझल छलनि सामाजिकता। समाज मे घेघ ककरहुँ रहैत छैक आ भारी ककरहुँ लागैत छैक। यावत् उपयुक्त घर–परिवार

नहि भेटत तावत लोक बेटी के कतहुँ फेकि तँ नहिए ने देत। सुनीता रघुबीर लग मधुक विवाहक चर्चा केलनि। रघुबीर गंगेश झा लग चर्चा केलनि। श्रीमंत चौधरी सँ सम्पर्क भेलाक बाद गंगेश झा के सेहो एहि परिवार सँ लगाव भ' गेल छलनि आ ओहो यदा–कदा रघुबीर सँ हाल–चाल पूछैत रहैत छलाह। रघुबीर आ गंगेश झा जी सेहो आब मित्रवत भ' गेल छलाह। जखन रघुबीर मधुक विवाहक चर्चा केलनि, तँ गंगेश जी अपना सारक बेटाक सम्बन्ध मे हुँनका सूचित केलनि। जे एहिबेर इंजिनियरिंग पास क' क' नौकरी शुरू कयने रहथि। गंगेश जी स्वयं अपना सार सँ गप्प केलनि आ कन्याक सम्बन्ध मे विस्तार पूर्वक बजलाह। हुँनका अनुशंसा पर हुँनकर सार तैयार भ' गेलाह। मधुक विवाह खूब धूम–धाम सँ धनकाही मे भेल। एहि विवाह मे करीब दस लाख टाका खर्च भेलनि। हलांकि मधुके देखलाक बाद बर पक्ष सँ कोनहुँ माँग नहि कयल गेल, मुदा सुनीता बजलीह,, "ओकर जे अंश ओकर पितेजी द' क' गेल छथि, ओकरा हम किएक राखब। सुनीता जमाय देखि क' खूब प्रसन्न भेलीह आ रघुबीर के बहुत आशीर्वाद देलनि"।

रघुबीर बाजल, "की मधु अहींक टा बेटी छथि। हमर बहिन नहि छथि की? सुनीता निरूत्तर भ' गेलीह। मधु तँ सात दिनक बाद अपना सासुर चल गेलीह। ई करार पहिनहि भ' चुकल छल जे विवाहक सातम दिन द्विरागमन भ' जेबाक चाही आ सुनीता सेहो मानि गेल छलीह। प्रेमक नामांकन सेहो इंजिनियरिंग कॉलेज सिन्दरी मे भ' गेलनि। ओ सब सँ प्रेम पूर्वक रहैत छलाह। जहिना नाम छलनि प्रेम, तहिना स्वभावों अनुरूप छलनि। विद्यार्थीक संग–संग आध्यापक लोकनि सेहो प्रेमक व्यवहार सँ खुश रहैत छलाह। ओना तँ श्रीमंत चौधरीक मृत्यु सँ मधु आ प्रेमक पढ़ाई पर बहुत असर पड़ल। केओ पढ़ैनिहार नहि रहल, केओ मार्ग दर्शक नहि रहल। तथापि सुनीता एकदम कृत संकल्प छलीह। ओ मधु आ प्रेमक पढ़ाई मे कोनो कमी नहि होमए देलनि। मधु के सासुर गेलाक बाद सुनीताक पूर्ण ध्यान प्रेम पर केन्द्रित भ' गेल। प्रेम इंजिनियरिंग के परीक्षा पास केलनि आ बोकारो मे नौकरी भेटि गेलनि। प्रेमक विवाह मालतीक

संग भेल। विवाह मे सुनीता किछु नहि लेलनि। ओना तँ सुनीता बेटीक विवाह मे दस लाख टाका खर्च कयने छलीह आ प्रेम कँ सेहो दस–बारह लाख टाका आराम सँ भेटि सकैत छलैक मुदा श्रीमंत चौधरी तिलक–दहेजक कट्टर विरोधी छलाह। तँ सुनीता चौधरीजीक मान रखबाक लेल एहेन निर्णय लेलनि। दोसर एकटा आर कारण छलैक। मालती केओ आन नहि छलीह। मालती चौधरीजीक बहिनिक जैधी छलीह। प्रेमक उपनयन मे चौधरी जीक बहिन ममताक संग मालती सेहो आयल छलीह। हुँनकर सुन्दरता आ स्वभाव देखि सुनीता बाजल छलीह, जे हमरा एहने पुतौह चाही। ताहि पर ममता बाजल छलीह, "बाद मे अपना वचन सँ भागब तँ नहि?" "भागब किएक?" एहि मे नुकसान की छैक। टाका–पाई तँ हाथक मैल छी। आबैत–जाइत रहैत अछि, "सुनीता बाजल छलीह। जखन प्रेम बोकारो ज्वाइन केलनि तँ ममता भाउज सँ बजली "भौजी! आई सँ दस वर्ष पहिने जे हमरा अहाँ वचन देने छलहुँ से मोन अछि, आ कि बिसरि गेलहुँ ?"

सुनीता, "की बचन देने छलहुँ ? हमरा तँ किछु मन नहि अछि ?

ममता बाजल छलीह, "हँ, हँ, आब किएक मोन रहत। आब तँ प्रेम इंजिनियर भ' गेलाह। आब तँ केओ हुँनका दस–बारह लाख टाका दहेज मे द' सकैत अछि।

सुनीता, "ममता दाई साफ–साफ बाजू। एना बुझौअलि जुनि बुझाउ।

ममता, "दस वर्ष पूर्व जखन प्रेमक उपनयन मे आयल छलहुँ तँ अहाँ हमरा प्रेम के द' देने छलहुँ। से अहाँ के मोन अछि" ?

सुनीता, "हमरा किछु मोन तँ नहि अछि। ओना प्रेम तँ अहींक छी। एहि मे हमरा देबाक आ नहि देबाक कोन गप्प छैक।

ममता, "अहाँ मन पारू..... प्रेमक उपनयन मे हमरा संग हमर जैधी मालती सेहो आयल छलीह आ हुँनका देखि अहाँ अपन पुतौह बनेबाक लेल हमरा वचन देने छलहुँ।

सुनीता, "हम तँ कहि रहल छी जे प्रेम एखनहुँ अहींक छी। जतए अहाँ सभक इच्छा हो आ जेना इच्छा हो, प्रेमक विवाह करा सकैत छी।

शर्त्त एतबहि जे कनियाँ प्रेम के पसंद होयबाक चाहीं।

ममता, "आ टाका ?"

सुनीता, "एकोटा पाई नहि। विवाह वर कनियाँक हेतैक आ कि टाकाक ? हँ एकटा गप्प हम अवश्य चाहब।"

ममता, "की ?"

सुनीता, "विवाह एकदम सादा–सादी होयत। विवाह मे कोनो बाजा–गाजा नहि रहत। हम कोनो गहना–गुड़िया ल' क' नहि जायब। मात्र दू टा कनियाँक साड़ी रहत आ बरियाती करीब एक सय रहत। एक संध्याक इन्तजाम करबाक अछि। ओकर खान–पान नीक होयबाक चाही।"

ममता, "ई कोना नीक लगतैक। एतेक पैघ–घर–वर आ बिना गहना–गुड़ियाक विवाह। लोक की कहत.....। अहाँ हमरा टारबाक कोशिश क' रहल छी।"

सुनीता, "एकदम नहि, ई अहाँक भैयाक इच्छा छलनि। की अहाँ चाहब जे हुँनकर इच्छा पूर्ण नहि होनि।"

ममता, "नहि... नहि... से तँ नहि चाहब, मुदा एहि सँ समाजक बीच की संदेश जायत। एकरा विषय मे अपने सोचलहुँ अछि की ? अहाँ भैयाक गप्प बाजि देलहुँ तँ हम चुप्प छी नहि तँ इ कोनो गप्प भेलैक। गहना–गुड़िया तँ स्त्रीगणक श्रृंगार थीकैक। ओकरा बिना ओ केहेन लगतैक।

सुनीता, "अहाँ के अपन चिंता अछि की लोकक। समाजक बीच नीक संदेश जेतैक। हमर समाज देखाउस मे बड़' विश्वास करैत अछि। फलां एना केलनि तँ हम हुँनका सँ कथी मे कम छी। हमहुँ एना करब। हमर समाज तँ जे देखैत अछि, ओकर अनुशरण करैत अछि। जँ सब अहीना करतैक, तँ इ कोढ़ मेटायत कोना। एकरहि पाछाँ हमर समाज बर्बाद भ' रहल अछि। लोक के एहि मानसिकता के त्याग करबाक चाही। तखनहि समाजक विद्वेश दूर भ' सकैत अछि। इएह अहाँ भैयाक संकल्प छलनि।"

ममता, "ओना तँ हम इ सब नहि मानितहुँ मुदा भैयाक नाम पर तँ मानहि पड़त।

एहि तरहे मालती आ प्रेम एक बंधन मे बन्हा गेलीह आ सुनीता जेहने चाहैत छलीह, तेहने कनियाँ भेटि गेलनि।

३

प्रेम जी बोकारो मे ज्वाइन केलनि। ओहिठाम हुँनका स्टोरक प्रभारी बनाओल गेल। हुँनका अधीन करीब दस टा आर कर्मचारी छल। प्रेमक व्यवहार सभक संग नीक छल। कार्यालय सँ एकटा जीप आ खूब सुन्दर डेरा सेहो भेटल छलनि। डेरा मे सब सुविधा कम्पनी दिश सँ भेटल छलनि आ उपर सँ मालतीक हस्त शिल्प जाहि सँ डेरा के सजौने छलीह। डेराक आगु मे फुलबारी जाहि मे रंग–बिरंगक फूल आ आगॉ मे बैसबाक लेल छोट–छीन मैदान। जाहि मे आफीस सँ अयलाक बाद प्रेम आ मालती गर्मीक दिन मे घंटो बैसैत छलाह। ओहि बगीचा मे एकटा लतामक गाछ सेहो छल जे बारहो मास फरैत छलैक आ ओ लताम बड़ स्वादिष्ट होइत छलैक। कौखन तँ बड़ा सेहेब सेहो फरमाइस क' दैत छलाह, की प्रेम लताम एसकरहि खाइत छी। आ प्रेम दोसर दिन ओहि मे सँ किछु लताम तोड़बा क' ल' जाइत छलाह, बड़ा सेहेबक लेल। एहि तरहे प्रेमक दुनियाँ बड़ आनन्दमय बीति रहल छलनि। ओहि आनन्द मे आर बृद्धि भेल, जखन संजय आ विजय केर जन्म भेल। संजय आ विजय के अयला सँ प्रेम आ मालतीक मोन मे जे सूनापन छल ओ दूर भ' गेल। दुनू अति व्यस्त रह लगलाह। प्रेम जखन आफीस सँ आबैत छलाह तँ संजय आ विजय केर

संग खेल' लागैत छलाह। ओहि खेल मे ओ भोजनो करब बिसरि जाइत छलाह। जखन मालती बाजैत छलीह, "दस बाजि गेल। काल्हि आफीस जयबाक अछि की नहिं?" तखन प्रेम भोजन क' क' सूतबाक लेल ओछाइन धरैत छलाह। किछु दिनक बाद दुनू भाय के स्कूल मे नाम लिखाओल गेल। दुनू भाय पढ़बा मे ओतेक तेज नहि छलाह, जतेक तेज स्वयं प्रेम छलाह। तखन मिलाजुला क' ठीके–ठाक छलाह। दुनूक परिवेश मे बड़ अन्तर छलनि। प्रेमकँ बचपनहि मे पिताक छत्र–छाया उठि गेलनि। मार्ग दर्शन केनिहार केओ नहि छलनि। कहुँना क' सुनीता हुँनका दुनू भाय– बहिन के पढ़ौने रहथि मुदा संजय आ विजय के नीक परिवेश भेटलनि। ओ सब बी० ए० पास क' क' एम० बी० ए० केलनि आ बंगलौर मे नौकरी कर लगलाह।

जखन संजय आ विजय स्कूले मे पढ़ैत छलाह, तैखन प्रेमक भेंट एक दिन अचानक विदुर सँ भेल। ओ जीप रोकबौलनि आ विदुर सँ गप्प–शप्प कर लगलाह। गामक हाल–चाल पूछलनि। विदुर सेहो धनकाहीयेक छलाह। ओ विशेष काल कोनो ने कोनो काज सँ बोकारो आबैत–जाइत छलाह। इ गप्प तँ विदुरो के बुझल छलनि जे प्रेम बोकारो मे रहैत छथि मुदा कत' रहैत छथि, इ नहि बुझल छलनि। दुनू गोटे के एक दोसराक भेंट सँ बड़ खुशी भेलनि। प्रेम विदुर के एकटा होटल मे ल' गेलाह आ हुँनका भरि इच्छा मिठाई खुऔलनि। संगहि संध्या काल डेरा पर अयबाक आमंत्रण देलनि। विदुर अपन सब काज सरिया क' प्रेमक देल पता पर संध्या काल पहुँचि गेलाह। ओहिठाम प्रेम आ प्रेमक कनियाँ हुँनकर खूब स्वागत–सत्यकार केलनि। बाहर मे रहनिहार लोक के जखन केओ गामक परिचित लोक भेंटि जाइत छैक तँ ओकर आनन्दे अदभुत होइत छैक, जे ओकरा संग कतेक गप्प करी कतेक नहि। गप्प सँ मने नहि भरैत छैक। ओएह हाल एखन प्रेम आ विदुर के अछि। विदुर भोजन केलाक बाद राति मे ओतहि विश्राम केलनि आ प्रातःकाल गाम जयबाक लेल विदा भेलाह। विदुर कँ विदा करैत प्रेम बजलाह, "विदुर भाई, जखन कखनो बोकारो आबी, तँ एहिठाम अवश्य आबी। अहाँक संग

गप्प–शप्प कयने लागैत अछि जेना धनकाहीये मे होई। कोनो संकोच नहि करब।"

विदुर, "संकोच किएक करब? इ तँ अपन घर थीक। हमरा तँ इ बुझल छल जे अहाँ बोकारो मे छी आ मास मे दू बेर हम निश्चित रूपँ बोकारो आबैत छी, मुदा डेरा देखल नहि छल। तँ नहि आबि सकलहुँ।"

प्रेम, "आब तँ डेरा देखि लेलहुँ ने, आब इ बहन्ना नहि चलत।"

विदुर, "नहि....नहि....हम अवश्य आयब। एहि तरहँ प्रेम आ विदुर केर सम्पर्क बढ़ल। विदुर बोकारो बराबर आबैत छलाह आ विशेष काल प्रेमक ओहिठाम ठहरैत छलाह। से हुँनकहुँ सब के अधलाह नहि लागैत छलनि। एक दिन प्रेम जी कोनहुँ मीटींग मे जा रहल छलाह। अनायास हुँनकर नजरि विदुर जी पर पड़ल। ओ गाड़ी रोकि आबाज देलनि। विदुर सेहो रुकि गेलाह। दुनू गोटे मे हाल–चाल भेल। ओकर बाद प्रेम पूछलनि, "कोम्हर आयल छी?"

विदुर, "एकटा विद्यार्थीक कापीक पैरबी मे।"

प्रेम, "ठहरल कत' छी?"

विदुर, "आर कत' ठहरब, अपनेक ओहिठाम जा रहल छलहुँ।"

प्रेम, "आई तँ हमरा ओहिठाम दिक्कत अछि। मालती दुनू बच्चाकेँ परीक्षा दिआबक लेल ओकरहि संगे पटना गेल छथि आ हम एकटा जरूरी मिटींग मे जा रहल छी। हम दस बजे राति तक आपस आयब आ मालती तँ दू दिनक बादे औतीह एखन तँ डेरा मे ताला लागल अछि। अहाँ दस बजेक बाद डेरा पर आऊ।

विदुर, "एतेक काल हम कत' रहब ?"

प्रेम, "अपने जाहि काज सँ आयल छी, तावत् से सब करबाऊ।"

विदुर, "काज तँ काल्हि होयत। हम सब किछु बुझि–सुझिक' आयल छी। कनेक आराम करबाक इच्छा छल।"

प्रेम, "एखन तँ हम बड़ हड़बड़ायल छी। ओहिना दस मिनट देरी भ' गेल अछि। पता नहि बड़ा सेहेब की कहताह, की नहि। एखन हम नहि रुकब। अहाँ नौ बजे मे डेरा पर आऊ। तखन चैन सँ गप्प–शप्प करब।" इ कहि

प्रेम आगु बढ़ि गेलाह आ विदुर एकटक प्रेम के ताकैत रहि गेल। विदुर के प्रेमक व्यवहार बड़ अटपट लागल। आई प्रेम ओकरा एक कप चाहोक लेल नहि पूछलक। ओ तँ बड़ आशा लगाक' आयल रहए। ओकरा आशा पर पानि फिरि गेल। आब ओ जायत तँ कत' जायत। जानकी बाबू सेहो सपरिवार तीर्थ पर गेल छथि। प्रेमक परिचय सँ पूर्व ओ जानकीये बाबूक ओहिठाम ठहरैत छल। ओ मुस्किल मे पड़ि गेल। विदुर के लागल ज प्रेम हुँनका सँ कन्नी कटा रहल अछि। हमर आयब–जायब ओकरा नीक नहि लागैत छैक। हम तँ ओकरा ओहिठाम गेलो नहि छलहुँ। अपने उपकरि क हमरा ल' गेल। इ व्यवहार ओकरा बड़ महँग पड़तैक। ओकरा पता नहि छैक जे ओ ककरा सँ पंगा लेलक अछि। विदुर के प्रेमक प्रति जतेक स्नेह, श्रद्धा छलैक ओ एकहि क्षण मे अश्रद्धा मे बदलि गेलैक। ओ मौकाक तलाश मे लागि गेल। हलांकि एहि सँ प्रेम अनभिज्ञ छल। ओ तँ जे सही स्थिति छलैक ओएह बाजल छल। जँ ओकरा मन मे कोनो तरहक बात रहितैक, तँ चुपचाप चलि जाइत। किएक गाड़ी रोकिक विदुरक संग गप्प–शप्प करैत। मुदा इ सब गप्प विदुरक दिमाग मे नहि आयल। इएह टा तँ विदुर मे कमी छलैक। ओ जहिना अपने दोसरक लेल तत्पर रहैत छल। तहिना दोसरहुँ सँ उम्मेद करैत छल, जे सम्भव नहि छलैक। ओहि दिन सँ विदुर बोकारो प्रेमक डेरा पर आयब–जायब छोड़ि देलक। एक दिन गाम मे प्रेमक भेंट विदुर सँ भेल। कुशल–क्षेम भेलाक बाद प्रेम पूछलनि, "की, विदुर जी, अहाँ बोकरो आयब–जायब छोड़ि देलहुँ की ?"

विदुर, "जी नहि, छोड़लहुँ तँ नहि अछि। तखन कतेक दिन सँ नहि गेलहुँ अछि आ जाइतहुँ छी तँ काज कराक चोट्टहि घुरि आबैत छी। एम्हर तेहेन कोनो काज नहि भेल, जे दू–चारि दिन ठहर' पड़ए'। विदुर साफ झूठ बाजि देलक। ओ तँ दस दिन पूर्व सेहो बोकारो गेल छल। मुदा ओ ताहि ढंग सँ उत्तर देलक जे प्रेम कँ किछु आभास नहि होअ' देलक। विदुरक पेट मे जे प्रेमक प्रति घाव छलैक, ओ दिनानुदिन बढ़िये रहल छलैक। खास क जखन प्रेम के देखैत छल तँ जेना घाव मे टीस मारैत छैक, तहिना बिचलित भ' जाइत छल आ बड़ मुस्किल सँ ओकरा दबा

पाबैत छल। ओ चाहैत छल जे प्रेम के छोट–मोट नहि, एहेन धक्का देल जाय, जे ओ घुरिक' पानिओ नहि माँगि सकत।

एक दिन ओहो समय आबिये गेल। विदुरक प्रतीक्षा खतम भेल। प्रेम सेवा निवृत्त भ' क' गाम अयलाह। संजय आ विजय हुँनका सँ आग्रह कयने छलाह जे सेवा निवृत्तिक बाद पटना मे घर बनाक रहब। मालती सेहो सैह चाहैत छलीह मुदा प्रेमक माँथ पर पिताक विरासत मे भेटल ग्राम सुधारक भूत सबार छलनि। पिताक मृत्युक बाद हिनका दुनू भाय–बहिन कँ जे समाज सँ स्नेह भेटल छलनि, ओहि कर्ज कँ ओ उतार चाहैत छलाह। ओ सब दिन तँ बाहरे मे बितौलनि। पढ़ाई सँ ल' क' नौकरी धरि बाहरे रहलाह। हुँनका गामक लोकक तकलीफ सहन नहि होइत छलनि। हुँनका लग बहुँत तरहक योजना छलनि जाहि सँ गाम आ गामक लोक कँ समृद्ध बनाओल जा सकैत छल मुदा एक बातक कमी सेहो छलनि। ओ निश्छल छलाह। छल–कपट सँ दूर आ गाम–घरक दाव–पँच सँ अनभिज्ञ। ओहिना जेना अभिमन्यू चक्रव्यूहक छः फाटक तँ तोड़ि सकैत छल मुदा सातम नहि, आ ओएह सातम ओकर प्राणघातक भ' गेलैक। प्रेम के गाम अयला पर विदुर जे पहिनहि सँ मौका ताकि रहल छल, सक्रिय भ' गेल आ अपन योजना बनायब शुरु क' देलक। ओ चाहैत छल जे प्रेमकँ ओकरहि बूनल जाल मे उलझा दी, जाहि सँ ककरहुँ संदेहो नहि होयतैक मुदा एकरा लेल धैर्यक' संग समय केर प्रतीक्षा करब आवश्यक छलैक आ कओ रहल छल। एक दिन प्रेमक भेट विदुर सँ भेल। हलांकि विदुर कँ बुझल छलैक जे प्रेम रिटायर भ' क' आबि गेल छथि मुदा ओ अनठा क' बाजल, "की हाकीम, कहिआ अयलहुँ ?"

प्रेम, "आब तँ दू मास भ' गेल।"

विदुर, "दू मास भ' गेल ? से की लम्बा छुट्टी लेल अछि की ?"

प्रेम, "जी हँ, बहुत लम्बा।"

विदुर, "की मतलब! हम किछु बुझलहुँ नहि?"

प्रेम, "हम रिटायर क' गेलहुँ।"

विदुर, "कहिआ?"

प्रेम, "करीब दू मास होइत अछि।"

विदुर, "तखन तँ आब पटना मे रहब। जे अहाँक योजना छल।"

प्रेम, "जी नहि, पटना रहब हमर नहि, हमरा बाल–बच्चाक योजना छलैक। हमर तँ सब दिनहि गाम मे रहबाक योजना अछि। एहिठामक लोकक आर्थिक आ सामाजिक स्तर कँ उठायब अछि।"

विदुर, "हम किछु बाजू ?"

प्रेम, "अवश्य बाजू। एकरहि लेल तँ हम अहाँ लग इ प्रस्ताव राखल अछि। कोनहुँ विषय पर मंथन कयला सँ किछु ने किछु नीको वस्तु बहराइत छैक।"

विदुर, "ओना अहाँक विचार बड़ उत्तम अछि। अहाँ गामक लेल एतेक सोचलहुँ, इएह बहुत। केकरा पलखति छैक जे गामक लेल किछु सोचए। जे पढ़ल–लिखल लोक अछि, ओ तँ बाहरे रहैत अछि। गाम मे बचि गेल तँ अनपढ़ आ मूर्ख। जकर जीवन कौओ–कुकुर सँ बदतर अछि। एकरा सुधारब बड़ कठिन अछि। ई कुकुरक नांगरि थीक। एकरा जतेक सोझ करबै, ओतबहि टेढ़ होयत। तँ हमरहुँ इएह विचार जे अहाँ बाल–बच्चाक गप्प मानि क' पटने मे अपन आशियाना बनाऊ। कदाचित हमहुँ सब जँ कहिओ पटना जायब तँ अहींक ओहिठाम पहुँनाई करब।"

प्रेम, "देखू, पटना मे रहबा मे कोनो हर्ज नहि छैक। ओहिठाम हमरा सभक लग मे के रहत। संजय आ विजय बंगलौर छोड़ि क' हमरा लग तँ नहिए रहताह आ एहिठाम गाम मे समाज बड़ पैघ छैक। केओ ने केओ लग मे रहबे करत''।

विदुर, "हँ, से तँ होयत।"

प्रेम, "पटना मे रहने एकाकी जीवन व्यतीत कर' पड़त। सर–समाज सँ कोनहुँ मतलब नहि रहत। तँ गामक जीवन व्यतीत कर' चाहैत छी।"

विदुर, "गामक लोक के एक सय उपकार क देबैक आ एकटा नहि करबैक तँ सब बिसरि जायत। एहिठामक लोक कृतघ्न होइत अछि।"

प्रेम, "जत' कृतघ्न छैक, ओतहि कृतज्ञ सेहो रहैत छैक। हम किछु योजना सोचिक' रखने छी। ओहिपर काज करब। एकरा लेल हमरा अहाँक संग

किछु नवयुवक केर सहयोग सेहो चाही।"

विदुर, "किछु नवयुवक हम अहाँकेँ द' सकैत छी, मुदा हमरा छोड़ि दीअ'। हम सब आब कोन काजक छी। आब ओतेक भाग–दौर हम थोड़हि क' सकब।"

प्रेम, "ओना अहाँ सहयोग नहि करी तँ ओ दोसर गप्प भेल मुदा हम तँ चाहब जे अहाँ सब सनक किछु लोक एहि मे अवश्य रहथि।"

विदुर, "ठीक छै, जँ अहाँ एतेक त्याग क' रहल छी तँ हमहुँ सब यथा सम्भव सहयोग अवश्य करब।

किछु दिनक बाद प्रेम ग्रामीण सभक एकटा बैसार बजौलनि। जाहि मे भोला बाबू आ श्रीधर ठाकुर सहित अन्य लोक छलाह। सभक सोझां मे प्रेम अपन उद्येश्य रखलनि आ सभक विचार पूछलनि। विदुर तँ इ चाहिते छल। ओकरहि मन मोताबिक योजना बनल। जे काज विदुर करैत से प्रेम स्वयं क' रहल छल। ओ बाजल, प्रेमक मोन मे जँ एहि तरहक भावना छनि तँ इ बड़ पैघ गप्प भेल। के एहेन अछि जे गरीब आ कमजोर क उत्थान चाहैत अछि। भाषण तँ राजनेता सब सेहो दैत छथि आ वोट लेलाक बाद पुनः डुमरीक फूल भ' जाइत छथि। गामक कतेको लोक तँ रिटायर भेलाह अछि। केओ पाँखिओ नहि देखैत छनि। सब मधुबनी आ दरिभंगा मे महल बना क' रहैत छथि। ई तँ स्व0 प्रीमंत चौधरीक' सपना छल। जँ एकरा मूर्त रूप देवा मे प्रेम सफल होइत छथि तँ इ चौधरी जीक सही श्रद्धांजलि होयत। जँ प्रेम सनक दूइयो–चारि गोटे हमरा समाज मे भ जायत तँ हमर गाम एहि इलाका मे सबसँ नीक मानल जायत। तँ हम सब प्रेम के आश्वासन दैत छियनि जे इ समाज आ समाजक लोक सतत अहाँक संग अछि। भोला बाबू कँ सेहो इ योजना नीक बुझेलनि मुदा श्रीधर चौधरीक कान ठाढ़ भ' गेल। ओ किछु नहि बाजल। ओ किछु बिगारियो तँ नहि सकैत छल। ओकरा बुझल छलैक जे रघुबीर एकर मददगार भ' सकैत छैक। इ गप्प विदुरो बुझैत छल, तँ ओ कतहुँ प्रत्यक्ष रूपँ नहि आयल। ओ तँ चाहि रहल छल जे पहिने प्रेम एहि दल–दल मे फँसि तँ जाई। ओकर बाद तँ रघुबीर की ओकर बापो नहि ओकरा

निकालि सकैत छथि। इ बोकारो नहि थिकैक, जाहिठाम हाकिमी कयलहुँ। इ थिकैक धनकाही, जतए विदुर जे किछु चाहताह सैह हेतैक। विदुर तँ अपना स्वार्थवश प्रेमक संग द' रहल छल आ चूकि विदुर संग द' रहल छल, तँ ककरहुँ बिरोधो करबाक सामर्थ नहि छलैक। मुदा प्रेम एहि समर्थन कँ अपन बुधियारी बुझैत छलाह। विचार–विमर्शक बाद कमीटी बनाओल गेल। कमीटीक अध्यक्ष प्रेम, सचिव विदुर आ कोषाध्यक्ष डोमू दास भेलाह आ द्रुत गति मैं शुरु भेल ग्राम सुधार कार्य।

एक दिन प्रेमक दलान पर सब केओ बैसल छलाह आ चाह पी रहल छलाह। चाहक चुस्की लैत विदुर बजलाह, "प्रेम बाबू! अहाँ सब गाम मे रहबाक निर्णय ल' क' समाजक उपर बड़ पैघ उपकार कयल अछि। के अछि जे समाजक लेल अपन सुख–सुविधा त्यागि देत। गामक लोक कतेक कष्ट मे रहैत अछि, तकर अनुभव अहाँ के आब होयत। अहाँके अयला सँ आब गाम, गाम नहि रहत। एहिठाम नवक्रान्ति आओत। नव–नव तकनिक विकसित होयत।"

मालती, "बिजलीक अभाव मे बड़ दिक्कत होइत अछि। ने टी0भी0 देखि सकैत छी, ने रातिक' सुझै अछि। दिन–दुनियाँ किछु नहि बुझैत छी आ फ्रीजक जल पीबाक लेल तँ बुझू तरसैत छी।"

विदुर, "एकरहि समाधानक लेल ने भगवान प्रेम के एहिठाम पठौने छथि। आब इ समस्या वेशी दिन धरि नहि रहत। बिजलीक लेल तँ सब गप्प–शप्प भ' गेल अछि। ओकर काज काल्हि सँ शुरु भ' जायत। अहींक कृपा सँ आब दोसर सेहो फ्रीजक जल पीयत।"

मालती, "इ तँ कतेक दिन सँ सुनैत छी। सुनैत–सुनैत कान पाकि गेल। एहेन नहि हो जे यावत सोखाक भाव होमए, तावत् कारणीक ऑखिये बैसि जाय।"

विदुर, "नहि, नहि एहेन नहि हेतैक आ जँ अहीं हिम्मत छोड़ि देबैक, तँ दोसरक की होयतैक। अहाँ सब बड़ पैघ त्याग कयल अछि। अही सुख–सुविधाक लेल ने रिटायर्ड लोक सब बाहरे रहि जाइत छथि। गामक बाटे बिसरि जाइत छथि। गाम दिश उनटि क' नहि देखैत छथि आ गाम

ओहिना उपेक्षिते रहि जाइत अछि। मुदा आब से नहि हेतैक। हमरा गाम के देखि लोक के सेहेन्ता लगतैक।" विदुर हवा भरि रहल छलाह आ प्रेम ओहि मे फुलि रहल छलाह।

गामक पचासटा युवक कँ स्वरोजगारक तहद बैक से पचीस–पचीस हजार टाका ऋण दिआओल गेल आ ओकर जमानतदार भेलाह प्रेम। नवयुवक सभक रोजगार नीक जकाँ चलए लागल। एक वर्ष धरि ओ लोकनि बैकक किस्त सधौलनि। ओकर बाद बैंक मे किस्त जमा करब छोड़ि देलनि। महिलाक लेल पापड़ उद्योग आ मोमबत्ती बनयबाक कारखाना बनल। सबके पढ़ायल जयबाक चाही, जे कहिओ प्रेमक पिता स्व0 श्रीमंत चौधरीक सपना छलनि, प्रेम ओकरा पूरा करबाक प्रयास क' रहल छलाह। महिला उद्योग आ मोमबत्तीक कारखाना मे प्रेम अपन पूजी लगौलनि आ ओहि मे इ शर्त्त राखल गेल छलैक, जे पूजीक बाद जे मुनाफा होयत ओ सभक बीच बाँटल जायत। ओ ककरहुँ एक गोटेक नहि रहत। कारखानाक मसीन सब आबि गेल मुदा बिजलीक अभाव मे छः मास धरि रखले रहि गेल। जखन छः मासक बाद बिजली आयल तँ मसीन चलबे नहि कयल। पता नहि राखल–राखल खराब भ' गेल वा पहिनहि सँ खराब छल। ओकरा लेल पुनः कम्पनी कँ लिखल गेल। जकर जबाव किछु नहि आयल। एहि तरहँ मसीन पर कयल गेल खर्च बेकार भ' गेल। नवयुवक सभक दोकान ततेक सुन्दर ढंग सँ चलि रहल छलैक, जे प्रेम ओकरा देखि बड़ संतुष्ट छलाह। स्कूल सेहो चलि रहल छलैक। राति मे सब केओ, जतेक लोक दिन भरि मजदूरी करैत छल, आबि क पढ़ैत छल। जे नहि आबैत छल, ओकरा डोमू दास खूब फज्जहति करैत छलैक। मसीन मे करीब दू लाख टाका लागल छलैक। जे लगभग बुरि गेल। एहि घटना सँ भोला बाबूक दिमाग चकरायल। हुँनका मन मे शंका भ' गेल, इ विदुरक काज तँ नहि। जँ विदुर मन सँ रहैत, तखन इ बात नहि होइत। हुँनका संदेहक एकटा आर कारण छलनि। विदुर आ श्रीधर ठाकुर बराबरि काना–फूसी करैत रहैत छलाह। भोला बाबू आ श्रीधर ठाकुर आमने–सामने रहैत छलाह। तँ हुँनका एकर भनक लागि गेलनि। ओ प्रेम कँ अगाह क'

देव उचित बुझलनि आ एक दिन प्रेमक ओहिठाम गेलाह। भोला बाबू गामक संभ्रान्त लोक छलाह। ओ प्रेम आ विदुर दुनू के जनैत छलाह। प्रेम श्रीमंत चौधरीक बालक अछि। ओ ककरहुँ अहित नहि क सकैत अछि आ विदुर सेहो अछि तँ निष्ठावान लोक मुदा बहुत जिद्दी अछि। जँ कोनहुँ गप्प पर गीरह बान्हि लेलक तँ ओकरा छोड़ब कठिन छलैक। ओ विदुरक आव–भाव सँ बुझि गेलाह जे प्रेम आ विदुर केर प्रेम मे कतहुँ ने कतहुँ प्रपंच अछि। जँ नहि सम्हरत तँ ओ बर्बाद भ' जायत। विदुर ओकरा कोनो जोगरक नहि छोड़तैक। भ' सकैत अछि जे एहि मे श्रीधर ठाकुरक सेहो कोनो चालि होई। श्रीधर ठाकुर आ श्रीमंत चौधरीक परिवार मे पूर्वहि सँ मन–मोटाव चलि रहल अछि। आब ओ बापक कुन्नह बेटा सँ सधाओत। अपने प्रत्यक्ष रूपँ तँ वार नहि करत। भ' सकैत अछि जे विदुर के सनकौने हुए। ओ प्रेम कँ पूछलनि, "बौआ! एकटा गप्प कहु? अन्यथा तँ नहि लेब?"

प्रेम, "नहि, नहि, अन्यथा किएक लेब। अवश्य बाजू।"

भोला बाबू, "विदुर कँ कतेक दिन सँ जानैत छी।"

प्रेम, "करीब बीस वर्ष सँ।"

भोला बाबू, "आ हम ओकरा पचास वर्ष (जतेक विदुरक अवस्था छलैक) सँ जानैत छी।"

प्रेम, "कहबाक अभिप्राय की अछि। हम किछु नहि बुझलहुँ'.....

भोला बाबू, "अहाँ बुझबो नहि करबैक। विदुर ओ तिलकोरक फर थीक, जे केवल देखबा मे लाल लागैत अछि। लोक ओकरा खाइत नहि अछि। विदुरक दोस्ती आ दुश्मनी मे वेशी फर्क नहि बुझाइत छैक। आ ई फर्क सब बुझिओ नहि सकैत अछि।"

प्रेम, "भोला कका' अहाँक गप्पक हमरा किछु अर्थे नहि लागि रहल अछि। विदुर हमर मित्र अछि। ओ सबटा अपन हाल–रोजगार छोड़ि दिन–राति हमरा ओहिठाम पड़ल रहैत अछि। ओ केवल अपना घर मे खाइत अछि। हाथ हमरहि ओहिठाम आबिक' सुखाबैत अछि।"

भोला बाबू, "इएह तँ रहस्य छैक। केओ ककरहुँ मदति करैत अछि, अपन समय देखिक'। अपन हाल–रोजगार सम्हारिक'। नहि की अपन

हाल–रोजगार छोड़िक'। ओना विदुर सनक दोस्त भेटब कठिन अछि, जँ कोनो मतान्तर नहि भेल हो, तखन आ जँ मतान्तर भेल हो तँ एहेन दुश्मनो भेटब दुर्लभ अछि।

प्रेम, "भोला कका' अहाँ तँ आर हमरा भ्रमित क' देलहुँ। अहाँ की कह' चाहैत छी, हम किछु बुझि नहि रहलहुँ अछि।"

भोला बाबू, "ठीक छै, एकटा गप्प कहु', जतेक दिन सँ अहाँ विदुर के जानैत छी, कहिओ कोनो गप्प पर टंटो–घंट भेल अछि ?

प्रेम, "नहि, एहेन तँ कोनो गप्प नहि भेल अछि। हम सब कतेक सुन्दर सँ सब काज क' रहल छी। विदुर सँ हमरा अपेक्षा सँ वेशी सहयोग भेटि रहल अछि। ओकरा पर संदेहक कोनो कारण नहि बनैत अछि। (प्रेम पूर्व घटना के मन पाड़बाक कोशिश क' रहल अछि)

भोला बाबू, "इएह तँ विदुर मे खूबी छैक। आ अपेक्षा सँ वेशी इएह तँ आशंका कँ जन्म दैत अछि। तथापि जँ सब किछु ठीक अछि, तखन तँ विदुर सनक दोस्त दोसर केओ नहि भ' सकैत अछि। मुदा जँ दुनूक बीच कहिओ किछु भेल होयत तँ एकरा सनक दुश्मनो दोसर नहि भेटत। ओना अहाँ कहैत छी तँ ठीके होयबाक चाही। मुदा हमर मन ठहकि रहल अछि। अहॉक संग नहि तँ ककरहुँ दोसरेक संग मुदा किछु रहस्य छै अवश्य। तथापि कनेक साकांक्ष रहब नीक होयत। एहि गप्प कँ अपनहि तक राखब। हम अहाँके अपन लोक बुझि क' कहल अछि। एतेक गप्प–शप्प करैत भोला बाबू चल गेलाह। प्रेम एहिपर दिमाग खपायब उचित नहि बुझलक। ओकरा गामक कतेक लोक विदुर सँ बचबाक सलाह देने छलैक मुदा प्रेम ककरहुँ सलाह पर ध्यान नहि देलक। ओ सोचैत छल जे गामक लोक कँ हमरा दुनूक प्रेम देखल नहि जाइत छैक। हमरा दुनूक दोस्ती देखि लोक जरैत अछि। ओकरा विदुरक व्यवहार मे कोनो फर्क नहि बुझाइत छलैक। आखिर ओ संदेह करत तँ कोन आधार पर। बिना आधारे ककरहुँ पर संदेह करब उचित नहि होइत अछि। विदुरक कारबार खूब जोर–शोर सँ चलि रहल छलैक। ओ सब सँ टाका

ओसूल करैत छल आ बैक मे जमा करबा सँ मना करैत छल। ओहि मे सँ किछु टाका प्रेमक हाथ जाइत छलैक आ वेशी विदुरेक घर रहैत छलैक। विदुरक जासूस सदिखन प्रेमक इर्द–गीर्द घुमि रहल छलैक। प्रेम दिन भरि मे ककरा सँ की गप्प केलक से विदुर के खबरि भ' जाइत छलैक। प्रेम आ भोला बाबू मे जे किछु गप्प भेल से विदुरक कान मे चल गेल। हलांकि प्रेम भोला बाबूक गप्प पर कान नहि देलक मुदा ओ तँ जहर उगलबा सँ बाँकी नहि रहलाह। इ अलग गप्प भेल जे हमरा व्यवहारक कारण प्रेम विश्वास नहि केलक मुदा काल्हि नहि करत, एकर कोन गारंटी। तँ विदुर भोला बाबू के उलहन देबाक लेल पहुँचल आ बाजल, "की औ भोला कका, हम अहाँक की बिगारने छी।"

भोला बाबू, "विदुर कँ देखितहि बुझि गेलाह, जे केओ ओकरा बाजि देलक, मुदा ओहिठाम तँ केओ नहि छल। कही प्रेम तँ...तथापि भोला बाबू उत्तर देलनि, "किछु तँ नहि।"

विदुर, "तखन एहेन काज किएक करैत छी ?"

भोला बाबू, "की करैत छी ?"

विदुर, "की करैत छी, से अहाँ हमरा सँ पूछैत छी। एहिगाम मे हमर जँ केओ मित्र अछि, तँ ओ अछि प्रेम चौधरी। जहिया सँ ओ गाम आयल अछि, हम अपन सब हाल रोजगार बिसरि क' ओकरा पाछाँ पागल भेल छी आ अहॉ हमरा दुनूक बीच दरारि घीच रहल छी।"

भोला बाबू, "हम किएक दरारि घीचब। हमरा की प्रयोजन अछि। अहाँ दुनू जतेक मिलि क' रहब, ओतेक नीक। कतेक सुन्दर तँ गामक विकास क' रहल छी दुनू गोटे मिलिक'।"

विदुर, "तखन अहाँ काल्हि प्रेम कँ की कहैत छलियैक ?"

भोला बाबू, "किछु तँ नहि, प्रेम किछु बाजल अछि की ?"

विदुर, "के बाजल आ के नहि बाजल छोडु ने एहि गप्प कँ। हम एतबहि कहब जे हमरा जुनि खोचारू। जँ हम अहाँक किछु बिगारने होई, तखन तँ ठीक अछि, अन्यथा दोसराक टाट मे पायर घुसियेबाक कोशिश जुनि

करू।"

भोला बाबू, "विदुर, अहाँ पूरबासाइत करा सकैत छी। हम एहि सब सम्बन्ध मे किछु बजले नहि छी। अहाँ के जे केओ कहलक अछि, फूसि कहलक अछि।

विदुर, "भोला कका! धनकाही मे पचास वर्ष सँ ढोढ़ नहि हँकलियैक अछि। हमहूँ लोकेक संग रहैत छियैक। अहाँ हमरा की पढ़ायब। हम तँ अपनहि उड़ल कौआ के चिन्हैत छी। अपने बुढ़ लोक छी आ समाज मे सेहो नीक प्रतिष्ठा अछि, तँ हम चुप छी। जँ दोसर रहैत तँ ओकर हम एखन धरि कपाल–क्रिया क' देने रहितियैक। हल्ला सुनिक' श्रीधर ठाकुर अयलाह आ हाथ पकड़ि क' विदुर के अपना ओहिठाम ल' गेलाह। ओहिठाम ठाढ़ लोक तँ इ बुझलक जे श्रीधर ठाकुर झंझट के शांत करबाक लेल विदुर कँ पकड़िक' ल' गेलाह। मुदा ओ तँ किछु आर चाहैत छलाह। ओ विदुर के अपना दलान पर बैसबैत पूछलनि, "की भेल छल। किएक हल्ला करैत छलहुँ ?"

विदुर, "हल्ला की करब, कपार। हम जँ ककरहुँ संग दोस्तीओ करैत छी, तँ लोक जरैत अछि। किएक हम मनुक्ख नहि छी, हमरा ककरहुँ सँ दोस्ती नहि करक' चाही। आ इ भोला बाबू! हम तँ हिनका सीधा बुझैत छलहुँ मुदा इ तँ पहुँचल फकीर छथि।"

श्रीधर ठाकुर, "से की ?"

विदुर, "देखु ने हमरा आ प्रेम के दोस्ती अछि। इ हिनका अखरैत छनि। इ जाक' प्रेम कँ सलाह दैत छलाह जे विदुर सँ बाँचि क' रहब। एहेन आगिलगौन लोक नहि देखल अछि। कहु ने, एहि गाम मे हम ककर की ल' लेलियैक अछि। जकरा काज मे हम ठाढ़ नहि होइत छी, ओकर काज होइतहि नहि छैक। अपन तन–मन आ धन ल' क' सभक बेगरता शांत करैत छी। केओ दू टा पाई सूदो दैत अछि हमरा?"

श्रीधर ठाकुर, "आब तामस शांत करह। ओ बुढ़ लोक छथि। बुढ़ आ बच्चाक एके स्वभाव होइत छैक। तँ अपन जे काज करैत छी से करैत

रहुँ। इ सब अहिना बीच मे टरटराइत रहताह।"

विदुर, "इ सब गामक मुँह पुरुष छथि। कत' गेलनि, मुँह पुरुखी, जखन राम झाक बेटीक बरियाती घुरि क आपस जा रहल छलनि। ओहि काल मे एहि गाम मे केओ महापुरुष नहि छलाह। सब घर मे घुसिया गेलाह। ओहि काल इएह विदुर अपना जान पर खेलि क' राम झाक' बेटीक विवाह करौलनि। तखन विदुर खराब नहि छलाह आ एखन विदुर खराब भ' गेलाह। किएक तँ हिनका सब कँ केओ नहि पुछैत अछि।"

श्रीधर ठाकुर, "विदुरक ध्यान दोसर दिश मोड़बाक लेल पूछलनि, 'हँ, हमहुँ ओहि दिन गाम मे नहि छलहुँ। अयलहुँ तँ पता लागल मुदा विस्तार सँ नहि बुझि सकलहुँ। कतेक दिन सँ सोचि रहल छलहुँ, अहाँ सँ पूछबाक लेल। मुदा मौका नहि भेटैत छल। तखन कोना की भेल छलैक।"

विदुर, "राम झा बेटीक विवाह जयरामपुर ठीक केलनि। एक लाख टाका देव तय भेलैक। राम झा पचास हजार टाका द' देलनि आ पचास हजार गछलनि जे विवाह दिन तक द' देव। ओ बेचारे राति–दिन टाकाक जोगाड़ मे एड़ी सँ चोटी एक क' देलनि मुदा जोगाड़ नहि भेलनि। बरियाती आबि गेल। जखन आज्ञाक डाला समधि कँ सोझां राखल गेल तँ ओ शेष टाकाक माँग केलनि। राम झा लग टाका रहैत, तखन ने ओ दैत। ओ अनुनय–विनय कर लागल मुदा समधि किछु नहि सुनलक। हम अपना दलान पर छलहुँ। हमर एकटा चेला फूचाई पहुँचल आ हमरा जगौलक। हम उठलहुँ आ पूछलियैक, "की फूचाई, एतेक रातिक'। की बात छैक?"

फूचाई बाजल, "गुरु! आई गामक इज्जत जा रहल अछि।

हम, "से की, की भेलैक अछि?"

तखन फूचाई हमरा सब गप्प बाजल। हमहूँ सोच मे पड़ि गेलहुँ जे एखन पचास हजार टाकाक जोगाड़ कोना भ' सकैत अछि? ककरहुँ घर मे राखल नहि हेतैक आ बैंक तँ राति मे नहि खूजत। तखन फूचाई हमरा दिमाग मे एकटा योजना देलक। योजना तँ बड़ खतरनाक छलैक। ओहि

मे किछु भ' सकैत छलैक मुदा गामक प्रतिष्ठाक सबाल छलैक। हम आ फूचाई दुनू गोटे राम झाक ओहिठाम गेलहुँ तँ देखैत छी जे बरियाती सब विदा भ' गेल। हम समधि कँ पूछलियनि, "समधि एतेक राति मे पचास हजार टाकाक जोगाड़ तँ सम्भव नहि अछि। जँ अपने जेबड़ ली तँ हम इन्तजाम क' सकैत छी। जँ अहाँ सब चल जायब तँ लोक की कहत। हमरा सब के तँ जे कहत से कहबे करत, अहुँ कँ कहत जे अवश्य वर मे कोनो दोष होयतैक, तँ फिरा देलकैक। एतेक गप्प सुनितहि समधि कँ सब हवा बहरा गेलनि। ओ जेवड़ लेबाक लेल तैयार भ' गेलाह। तखन हम अंगने–अंगने घुमि क' दस भरि सोनाक जेबड़क जोगाड़ कयलहुँ आ समधि कँ देलियनि आ संगे इहो कहलियनि जे राम झा कँ छः मासक समय दिऔन। ओ पचास हजार टाका ल' क' जेताह आ इ जेबड़ आपस ल' लेताह। ओकर बाद सब बिध–बाध भेल आ हँसी–खुशीक संग विवाह भेल। समधि जेबड़ कत' रखने छलाह से फूचाई देखने छल। धनकाही सँ जयरामपुर करीब दस किलोमीटर छलैक आ बीच मे चारि किलोमीटरक एकटा चौर छलैक। ओहि बीच मे कतहुँ कोनो घर द्वारि नहि छलैक। ओहि बीच मे एकटा पाकड़ि के गाछ बड़ विशाल छलैक। बरियाती सब साइकिल सँ आयल छलाह। राति अन्हरिया छलैक। रातिक आठ बजे वरियाती सब खा–पी–क' विदा भेल। हमरहुँ चेला सब साइकिल सँ दस मिनट पहिने पाकड़ि तर पहुँचि गेल। ओहिठाम खेत मे साइकिल के सुता देलक आ सब केओ गाछ पर चढ़ि गेल। जखन बरियाती सब गाछ लग आयल तँ उपर सँ फुचाई आ ओकर संगी सब पटाखा फोरब शुरु क' देलक सब बरियाती खसैत–पड़ैत जान बचा' क' भागि गेल। समधि पकड़ा गेल। ओकरा जान सँ मारबाक धमकी देलक। ओ सब सामान ल' क' द' देलक। इहो सब सामान ल' क' चलि आयल आ ओहो सब जान बचाक भागल। एहि घटना सँ जयरामपुरक लोक समधि कँ पुलीस मे रिपोर्ट करबाक सलाह देलकनि मुदा हुँनकहि जमाय कहलकनि, जे भेलैक से भेलैक, जँ पुलीस मे जेताह तँ अपनहि डौरी एक्ट मे फँसि जेताह आ

ताहि डरें ओ कतहुँ रिपोर्ट नहि केलनि। हमहुँ जकरा–जकरा सँ जेबड़ नेने छलियैक से द' देलियैक। कहुँ जँ बात आगाँ बढ़ितैक, तँ बहुत किछु भ' सकैत छल। आ ओहि मे तँ विदुरे ने फँसैत।

श्रीधर, "ई तँ बड़का पुरुषारथ बला काज कयलह। इ काज तोरा छोड़ि दोसर केओ कओ नहि सकैत छल। इ सब करबाक लेल करेजा चाही आ ओ करेजा विदुर के छोड़ि दोसर ककरा छैक। आब इ गप्प–शप्प छोड़ह। एहि सब मे पड़बह तँ अपना मिशन मे सफल नहि भ' पयबह।"

विदुर, "मिशन....कोन मिशन....?"

श्रीधर, "फेर हमरहि बुझौअलि बुझा रहल छह'। तौं विदुर छह तँ हमहुँ श्रीधर छी। हँ, तोरा एतेक तेज हम नहि छी। मुदा कने–मने बुझैत छियैक अवश्य। बदला लेब जँ केओ सिखए तँ तोरा सँ सिखए। कतेक चतुराई सँ दोस्त बना क' ओकरा काटि रहल छह, आ तोरा काटल कँ केओ झारिओ नहि सकैत अछि।" विदुर बुझि गेल जे श्रीधरक इशारा कत' छलैक। तथापि ओ बाजल, "एहेन कोनो गप्प नहि छैक। हम ककरहुँ सँ दुश्मनी किएक करब। हँ, जँ केओ आगु भ' क' करत, तखन तँ पाछु सँ करहिटा पड़त। ओना अहुँ जानैत छी, जे हमरा नजरि मे दोस्त आ दुश्मन दुनू बरोबरि अछि। हम दोस्तक लेल दोस्त आ दुश्मनक लेल दुश्मन छी।"

श्रीधर, (अपन पाशा फेकैत) "की कोनो नव घटना छैक आ कि पुरनके...

विदुर, "पुरनकेक की मतलब ?"

श्रीधर, "से की, तोरा बुझल नहि छहुँ।"

विदुर, "नहि, हमरा तँ किछु नहि बुझल अछि ?"

श्रीधर, "तखन छोड़ह एहि गप्प कँ। जखन किछु बुझले नहि छह, तखन एकरा खोधब बेकार अछि।"

विदुर, "नहि...नहि.....कहुँ ने....कनेक हमहूँ तँ बुझियैक।"

श्रीधर, "हमरा तँ भेल जे तोरा बुझल छह, तँ एकर चर्चा कयल। तखन कनेक नवका घटना सुना देह जाहि पर तोहर अनवरत अनुष्ठान चलि रहल छौह।"

विदुर, "नव कहाँ किछु अछि। हम की कहूँ अहाँके।"
श्रीधर, "ने नव अछि आ ने पुरान अछि। तखन अछि की। किएक दिन–राति अपस्याँत रहैत छह। वैद्यक घोड़ा उबान नहि चलैत छैक। किछु ने किछु तँ छैक अवश्य।"
विदुर, "हम एके शर्त्त पर कहब जे अहाँकेँ पुरना सेहो सुनाब' पड़त।"
श्रीधर, "ठीक छै, हम पुरनो सुना देबह।"
विदुर, "प्रेम बोकारो मे रहैत छल। ई तँ हमरा बुझल छल, मुदा ओहिठाम कत' रहैत छल, ई ने हमरा बुझल छल आ ने बुझबाक जरूरत भेल। हमहूँ अपना यजमानक ओहिठाम बरोबरि जाइत छलहुँ। एक दिन प्रेम सँ भेट भ' गेल। ओ बड़ आग्रह केलक आ ओकरा आग्रह पर हम ओकरा डेरा पर गेलहुँ। दू दिन रहबो कयलहुँ। बड़ आग्रह भेल। हमरहुँ नीक लागल आ प्रेम बाजल, जे जखन आबी तँ हमरहि ओहिठाम रही। हमहुँ जखन जाइत छलहुँ तँ सब काज कयलाक बाद प्रेमक डेरा पर चल जाइत रही। ओकर व्यवहार हमरा बड़ प्रभावित केलक मुदा हम कि बुझलहुँ जे ओ हमरा परिका क' ठेल देत आ सैह केलक। काजक शिलशिला मे एक दिन बोकारो गेलहुँ। बाटे मे प्रेम भेटि गेल। भरि मुँह गप्पो–शप्प नहि केलक। बाजल जे जरूरी काज अछि, गप्प करब तँ देरी भ' जायत। संगहि इहो बाजल जे आई डेरो पर केओ नहि अछि। तँ डेरा जयबाक काज नहि अछि। एक कप चाहोक आग्रह नहि केलक। से ओ कतेक पैघ हाकिम भ' गेल जे ओकरा एहिलोक सँ गप्पो करबाक पलखति नहि रहलैक। हम अपना यजमानक ओहिठाम गेलहुँ, तँ ओकरहुँ घर मे ताला लटकल छलैक। ठंढाक समय आ उपर सँ टिप–टिप बुंद पड़ि रहल छलैक। सोचि सकैत छी जे हमर की स्थिति भेल होयत। हमरा अत्यन्त कष्ट भेल आ जतेक देह पर बुंद पड़ैत छल, लागैत छल जेना आगिक गोला देहपर खसि रहल हो। हम कोनो तरहेँ स्टेशन पर जा' क' राति गमौलहुँ। फेर सबेरे अपन काज सब सलटा क' आपस गाम अयलहुँ। हम संकल्प

कयलहुँ, एक दिन एकर ओइल प्रेम सँ अवश्य लेब। ओकरा इ एहसास करा देबैक जे विदुर की चीज अछि। ओ एखन धरि विदुरक दोस्ती देखलक अछि। ओ विदुरक दुश्मनी नहि देखलक अछि। इएह अछि हमरा संगक घटना। एकरहि लेल हम ई ताना–बाना बुनि रहल छी। अपन सबटा हाल–रोजगार छोड़िक' प्रेमक पाछु बताह भेल रहैत छी। भोला बाबू ओकर सलाहकार बन' गेल छलाह। इ तँ अपना भरि बड़ प्रयास केलनि, मुदा प्रेम किछु नहि सुनलकनि। बैसबोक लेल नहि कहलकनि। हमर एकटा जासूस सदिखन प्रेमक इर्द–गीर्द घुमैत रहैत अछि। ओ कखन ककरा सँ की गप्प करैत अछि, इ सब सूचना हमरा तुरंत भेटि जाइत अछि। एकरहि लेल भोला बाबू कँ अगाह कर' गेल रही। हमरा तँ होइत छल जे इ बड़ नीक लोक छथि मुदा ई सुसुरमुँहा एहेन भीतर घूइयाँ अछि, इ नहि बुझल छल।
श्रीधर, "आई बुझि ने गेलहक, चलह इहो नीके भेलहँ। एहि नव घटनाक सम्बन्ध मे हमरा तँ किछु नहि बुझल छल। हमरा तँ होइत छल जे पुरना गप्प पर ताँ एतेक शमा बाँन्हि रहल छह।"
विदुर, "पुरना गप्प की छैक, सेहो तँ कनेक कहल जाउ ?"
श्रीधर, "ताँ एतेक जिद्य करैत छह, तँ कहि दैत छियह। की पंडित जी एकर चर्चा कहिओ नहि कयलथुन्ह ?"
विदुर, "जी नहि! ओ तँ कहिओ किछु चर्चा नहि कयलनि।"
श्रीधर, "ठीक छै, तखन हमही कहि दैत छियहुँ। हलांकि इ घटना जकर चर्चा श्रीधर ठाकुर क' रहलाह अछि, ओ बनावटी छल आ श्रीधरे ठाकुरक गढ़ल छल। ओ एहि लेल एकरा गढ़लक जे भविष्य मे श्रीधर आ विदुरक बीच बड़ पैघ झंझट होम' बला छलैक आ विदुर जँ प्रेम सँ लड़ि जाइत अछि, तँ ओहि मे घुमा–फिरा क' श्रीधरे ठाकुरक जीत हेतैक। कारण ओकरा तँ दुनू सँ अपन ओलि सधेबाक छलैक। तँ दुनूके लड़ेबाक उद्येश्य सँ इ घटना गढ़ल गेल। घटना एहि तरहे विदुरक सोझां राखल गेल। प्रेमक पिता श्रीमंत चौधरी मात्र कहबाक लेल ब्राह्मण छलाह। ब्राह्मण कुल

मे जन्म लेलनि। सब संस्कार प्राप्त कयलनि मुदा ओ कहिओ ब्राह्मणक उत्थानक वास्ते किछु नहि केलनि। पेशा सँ ओ स्कूल मास्टर छलाह आ केवल हरिजनक उत्थान चाहैत छलाह। जकरा भगवाने निचां क' क' पठौने छथि। ओकरा दोसर कतेक उपर उठाओत आ अही उपर उठयबा मे ओ अपनहुँ उपर चल गेलाह। गाम मे हरिजन विद्यालय खोलबौलनि। जाहि मे केवल हरिजनेक बच्चा पढ़ि सकैत अछि। ब्राह्मणकेँ देवता तुल्य मानल गेल छैक। ओकर जँ अहाँ अहित करबै, तँ अहाँके कहिओ नीक नहि भ' सकैत अछि। सैह चौधरी जीक संग भेल' आ ओएह बाट तँ बेटो धयने छैक।"

विदुर, "से कोना ?"

श्रीधर, "एहि गाम विकास योजना मे जतेक लोक के ऋण दिआओल गेल छैक, ओहि मे एकोटा ब्राह्मण अछि?"

विदुर, "नहि, से तँ नहि अछि। इ सबटा तँ विदुरेक कयल छलैक। ओकरा एहि मे मगजमारी करब उचित नहि बुझेलैक ओ बाजल, "एकरा सबके छोडु' मुख्य घटना की अछि, से कहुँ।"

श्रीधर, "सैह ने कहि रहल छी। श्रीमंत चौधरी अपना घर पर हरिजन सबके पढ़ाबैत छलाह। जखन ओ राजनगर सँ आबैत छलाह, तखन संध्याकाल हुँनकर पाठशाला चलैत छल। ओना तँ ओ सरकार के हलफनामा देलनि जे ओ ककरहुँ सँ एकटा कैंचा नहि लैत छलाह मुदा ई विश्वास करबा योग्य गप्प नहि लागल। ओहि मे केवल हरिजनेक बच्चा सब पढ़ैत छल आ बुढ़ सबके जे अंगूठा छाप लगाबैत छलाह, सब के दस्तखत करब सिखाओल जाइत छलैक। ओही स्कूल मे अपनेक अग्रज विनोद सेहो पढ़बाक लेल जाइत छलाह। पंडित जी के बड़ आशा छलनि जे चौधरीजी विनोद के पढ़ा–लिखा क' कोनो हाकिम बना देताह। मुदा से नहि भेल। हाकिम बनला रघुबीर, डोमू दासक बेटा आ विनोद पासो नहि भेलाह। एहि सँ पंडित जी के बड़ कष्ट भेलनि। पंडित जी हमरा लग बजलाह। हम चौधरी जीक खिलाफ लिखा–पढ़ी कयलहुँ, तँ हुँनकर

बदली मधुबनी भ' गेल। फेर रघुबीर पैरबी–पैगाम क' क' हिनका एहिठाम ल' अनलक। हमहुँ चुप रहि गेलहुँ। किएक तँ आई–काल्हि जनिते छह, हरिजन हाकिम कँ कतेक पावर रहैत छैक। सब ओकरहि सुनत। हमरा सभक केओ नहि सुनत।

विदुर, "ठीक छै, देखैत ने जाउ, जे कोन हाकिम बचाबैत छैक, विदुरक फंदा सँ। विदुरक फंदा मे आयब बड़ आसान छैक मुदा ओहि सँ बहरायब ओतबहि कठिन।"

श्रीधर, "ठीक छै, कनेक सम्हरि क' पायर धरिह'। जँ उलंग भ' जेबह तँ फेका जयबह।"

विदुर, "एकर परिणाम भेटवा मे एखन तीन–चारि वर्ष लागत। विदुरक काज धीरे–धीरे मुदा सही जगह पर होइत छैक। ओकर निसाना अचूक छैक। एखन तँ श्रीधर ठाकुर अपना दाँव मे सफल भ' गेल। ओ प्रेम आ विदुर केर दुश्मनी मे जँ किछु कमी छलैक, तँ ओकरा पूर्ण क देलक। एकरहि कहैत छैक एक तीर सँ दू निशाना। मुख्य रूप सँ श्रीधर ठाकुरक इएह दुनू दुश्मन छलैक मुदा एकर बोध केवल श्रीधर ठाकुर कँ छलैक। प्रेम आ विदुर एहि सँ अनभिज्ञ छल। तँ गामक लोकक बैसार मे प्रेम श्रीधर ठाकुर कँ सेहो बजौने छलैक।

एहि तरहँ करीब तीन वर्ष धरि प्रेम जीक विकास कार्य जोर–शोर सँ चलल। ओकरा बाद एहिमे शिथिलता आयब शुरु भ' गेल। किछु कर्जदार ओहि मे सँ भागिओ गेल आ जे बाँचल छल, ओकरा दुकान मे हजारो टाकाक सामान नहि छलैक। दू वर्ष सँ केओ बैंकक टाका जमा नहि कयलक। इ गप्प प्रेमकँ तखन बुझायल, जखन बैंकक नोटिस आयल आ नोटिस एहि तरहँ छलैक–

श्री प्रेम चन्द्र चौधरी

धनकाही

राजनगर

अपने कँ विदित हो कि अपनेक जमानत पर देल गेल ऋणक

वापसी एखन धरि बैंक के नहि भेल अछि। शुरु–शुरु मे तँ किछु टाका जमा भेल अवश्य, मुदा करीब दू वर्ष सँ एकोटा पाई नहि आयल अछि। प्रत्येक व्यक्ति उपर लगभग छियालीस हजार बकाया भ गेल अछि। जखन बैंकक टीम निरीक्षण मे गेल तँ पाओलक जे तीस गोटे गाम सँ बाहर चल गेल छथि आ मात्र बीस गोटे दुकान चला रहल छथि, मुदा हुँनका दोकान सँ हजारो टाका बहरायब सम्भव नहि बुझाइत अछि। एहि तरहँ बैकक टाका करीब तेइस लाख होइत अछि मुदा अहाँक खाता मे मात्र नौ लाख टाका बॉचल अछि। जँ एक मासक भीतर बैकक ऋण चुकता नहि होइत अछि, तँ अपनेक जमा राशि नौ लाख के सीज करैत शेष राशि प्राप्त करबाक लेल कानूनी कारबाई कयल जा सकैत अछि।

भवदीय

ह0–

शाखा प्रबंन्धक

क्षे0 ग्रा0 बैंक, राजनगर

नोटिस पढ़ितहि प्रेमक पायर तरक जमीन ससरि गेल। ओ विदुर कँ तकबौलनि। विदुर प्रेमक मित्र आ विकास कमीटीक सचिव सेहो छलाह। विदुर गाम मे नहि छलाह। प्रेम कँ इ गप्प बुझल छलनि जे विदुर वेशी काल बाहर रहैत छथि। हुँनकर धंधा गाम सँ वेशी बाहरे फलैत–फूलैत छलनि। ओ टिप्पणी बनायब, अवश्यकतानुसार यंत्र, लाकेट, आदिक धंधा करैत छलाह। तखन जतेक लोक बैंक सँ ऋण नेने छल, सबकँ बजबाओल गेल। जे गाम मे छल से आयल आ बाजल, जे हम सब तँ मासे–मास विदुर जी कँ टाका द' दैत छियनि। ओ बैक मे जमा केलनि वा नहि, से तँ ओएह कहताह। विदुर जी किछु टाका प्रेम के दैत अवश्य छलथिन मुदा ओ कोन मद मे दैत छलथिन, इ स्पष्ट नहि भेलनि। आब तँ प्रेम सोच मे पड़ि गेलाह। एहि तेइस लाखक इन्तजाम कोना होयत। विदुर रहैत तँ किछु ओहो विचार दैत। प्रेम सोचैत छलाह जे बैकक तँ नौ लाख चले गेल। उपर सँ जमीन–जथा सेहो चल जायत आ बदनामी जे होयत से अलग।

एखन डोमू दास छोड़ि हुँनकर नोरो पोछनाहर केओ नहि छलनि। ओ डोमू दास के मधुबनी पठौलनि आ एकटा ओकील के बजबौलनि। हुँनका सब गप्प बजलाह। ओकील सेहेब बजलाह, "काज तँ अहाँ बड़ सुन्नर शुरु कयने छलहुँ मुदा हमर समाज एतेक जागृत नहि अछि। जे एहि गप्प कँ बुझि सकए। जँ अपने गारंटी नहि लितहुँ तँ एकरा सब के दसो टाका देनिहार केओ नहि छलैक। अही लेल जे एकरा सभक शाख मरल छैक, इ सब विश्वास करबाक जोगरक नहि अछि। नालीक कीड़ा कौखन गंगाजल मे नहि रहि सकैत अछि। ओएह दशा एकरा सभक छैक। आई हमरा देशक संग पूरे विश्व मंदीक दौर सँ गुजरि रहल अछि। कारण बैंक सँ ऋण लेलक आ आपस नहि केलक। ओ ऋण एक–एक व्यक्ति के करोड़ मे छैक आ ओहि करोड़क केओ गारंटी नहि देने छलैक। ओ केवल ओकरा शाख पर भेटल छलैक। ओ सब पहिने हजार मे ऋण लैत अछि। ओकरा चुकाक' लाख मे जाइत अछि, कोनो दिक्कत नहि होइत छैक। हमरा ओहिठाम लोक दूइये–चारि हजार मे अपन शाख खराब क लैत अछि।

ओकील सेहेब प्रेम जी कँ सलाह देलनि, जे बैंक मे जमा टाका तँ बैंक जप्त क' लेत, किएक तँ ओ अहाँक नाम सँ अछि। बाँकी बचल जमीन आ घर–द्वारि तँ ओ चूकि अहाँक बाबूजीक नाम सँ अछि, तँ ओहि पर बैक किछु नहि क' सकैत अछि। हँ! एकटा समस्या भ' सकैत अछि, मुदा ओकरहुँ समाधन छैक।

प्रेम, "की समस्या भ' सकैत अछि ?"

ओकील सेहेब, "अहाँक गिरिफ्तारी भ' सकैत अछि। आ जँ गिरिफ्तार क लेत, तखन तँ शेष राशिक लेल दबाब बढ़ि जायत। तँ हम सलाह देब, जे अपने किछु दिनक लेल बाहर कतहुँ एहेन ठाम जत' अपन केओ नहि हो, चल जाउ। जखन सब किछु शांत भ' जेतैक तँ चल आयब। प्रेम ओकील सेहेब के फीस आ विजय केर टेलीफोन न0 दैत बजलाह, "अहाँ एहि केश के देखैत रहब। जखन कोनो आवश्यकता हो,

तँ एहि नम्बर पर हमर बालक उपलब्ध रहत। अपने ओकरा सँ गप्प क सकैत छी। हम एखन किछु दिन तीर्थाटन पर चल जाइत छी। घरक ताला–चाभी डोमू दास के थम्हा देल गेल। प्रेम आ मालती विचार केलनि जे राता–राती गाम सँ बहरा जायब आ जे गाड़ी भेटत, पकड़ि क' दरिभंगा आ ओतए सँ दिल्लीक गाड़ी पकड़ि किछु दिन बनारस मे रहब। तकर बाद जे जेना विचार होयत से करब। एकर भनक मात्र डोमू दास कँ छलैक। डोमू दास बाजल छलैक जे हम स्टेशन पहुँचा देव। अहाँ सब सुकुमार लोक कोना सुटकेश ल' जायब मुदा प्रेम ओकरा मना क' देने छलैक।

४

धनकाहीये गाम मे एकटा कर्मकांडी पंडित छलाह आ नाम छलनि पंडित कपिलेश्वर ठाकुर। पंडित जी स्वभाव सँ अत्यंत निर्मल छलाह। सभक नीक सोचैत छलाह। ककरहुँ प्रति दुर्भावना नहि छलनि। ओहि परोपट्टा मे ओहेन कर्मकांडी दोसर केओ नहि छल। तँ पंडित जी कँ दूर–दूर धरि पूजा–पाठ करेबाक लेल जाय पड़ैत छलनि। पंडित जीक विवाह राजनगरक श्री महानंद झाक पुत्री दयावतीक संग भेलनि। दयाबती अत्यंत सुन्नरि आ सुशील छलीह। ओ पंडित जीक गृहस्थीक गाड़ी घिचबा मे अपन पूर्ण सहयोग करैत छलीह। पंडित जी भोर मे पूजा–पाठ

क' क' किछु जल पी' क' जे बहराइत छलाह तँ रातिये मे आबैत छलाह। कहिओ–कहिओ तँ पंडित जी रातिओ क' नहि पहुँचैत छलाह मुदा ओकर जानकारी दयाबती कँ भेटि जाइत छलनि। एक दिन पंडित जी एकटा यजमानक ओहिठाम गेलाह। उम्मेद छलनि जे सांझ धरि घुरि आओताह। ओ दयाबती कँ किछु कहि क' नहि गेलाह। ओहुना जखन राति मे पंडित जी नहि आबैत छलाह तँ कोनो व्यक्तिक द्वारा सिदहा आ समाद दुनू पठा दैत छलाह आ दयाबती निश्चिंत भ' जाइत छलीह। एक दिन पंडित जी यजमानक ओहिठाम सँ एकोदिष्ट कर्म कराक आपस आबि रहल छलाह, कि दोसर यजमान भेटि गेलनि आ पंडित जी सँ हाथ जोड़िक बाजल, पंडित जी, आई हमरा सत्यनारायण पूजाक' अचानक विचार भ' गेल अछि। सब इन्तजाम भ' गेल अछि। केवल अपनेक कृपाक आवश्यकता छैक।"

पंडित जी बजलाह, "औ जी, हमरा दूइयो दिन पहिने बाजल रहितहुँ। हम गाम पर सँ बाजिक' नहि अयलहुँ अछि आ एखन नहि जायब तँ गाम पर सबके अंदेशा भ' जेतैक। केओ राति भरि खयबो–पीबो नहि करत। अहाँ तँ हमरा बड़ पेशम–पेश मे द' देलहुँ।"

यजमान बजलाह, "जी, हमर बालक हरियाणा मे रहैत अछि आ छुट्टी मे गाम आयल छल। काल्हि ओ चल जायत। तँ हड़बड़ी मे एहेन निर्णय भेलैक। अपने कँ कष्ट अवश्य होयत। एकरा लेल क्षमा चाहैत छी।"

पंडित जी, "एहि मे क्षमाक कोनो गप्प नहि छैक। कोनो तरहँ जँ समाद पहुँचि जइतैक तँ नीक होइतैक।"

यजमान बजलाह, "ठीक छै, अपने चलु। हम प्रयास करैत छी। जँ केओ गाड़ी बला भेटि जायत, तँ हम पठा देबैक। पंडित जी पूजा करेबाक लेल चल गेलाह। संयोगवश ओहि दिन केओ समदिया नहि भेटलनि आ पंडित जी के पूजा–पाठ कराबैत राति नौ बाजि गेल। भोजन करैत–करैत दस बाजि गेल। दस बजे राति मे गाम आयब सम्भव नहि छलनि। एक

तँ एसकर आ दोसर अन्हरिया राति। हाथ के हाथ नहि सुझैत छलैक। एहेन मे तीन कोसक दूरी तय करब बड़ कठिन छलैक। पंडित जी राति ओतहि गमौलनि मुदा हुँनका आँखि मे निंन कत'। ओ तँ भरि राति दयाबतीक कष्टक अनुभव करैत छटपट क' रहल छलाह। तीन बजे भोरहि ओतए सँ चललाह आ पाँच बाजैत–बाजैत अपना गाम पर अयलाह। एहिठाम दयाबती राति कोना कटलनि से भगवाने बुझैत छलाह। मन मे कतेक तरहक आशंका होइत छलनि। पंडित जी कँ किछु भ' त' ने गेलनि। जँ नहि अयबाक रहैत छलनि तँ कहि जाइत छलाह। जहिया कहि क' नहि जाइत छलाह, ओहि दिन केओ ने केओ समाद ल क आबि जाइत छल मुदा आई तँ केओ समदिओ नहि आयल। ककरहुँ सँ पुछबो करथिन, तँ की पूछथिन। हुँनका तँ इहो नहि बुझल छनि जे पंडित जी कोन गाम गेल छथि। आब तँ भगवाने पर भरोष छनि। ओएह पंडित जी कँ रक्षा करताह आ सकुशल घर पहुँचौताह। दयाबती भरि राति कानैत–कानैत आ देवी–देवता कँ गोहराबैत भोर केलनि। राति खयबो–पीबो नहि केलनि। ओना तँ खयबाक सामग्री घरो मे छलनि मुदा ओ पंडित जीक' अयलाक बादे वा नहि औताह इ समाद भेटलाक' बादे भोजन करैत छलीह। एकर दुनू अर्थ छलैक। एक अर्थ छलैक, यावत् पतिक' दर्शन नहि होयत, पति भोजन केलनि वा नहि, इ नहि बूझब, ता धरि भोजन नहि करब। इ पतिव्रता धर्मक नियम छैक। दोसर अर्थ छलैक, पति महोदय पाथेय (सिदहा) मे की आनैत छथि। एहेन वस्तु जे राखल नहि जा सकैत हो। रखला सँ भिनसर धरि खराब भ' जायत आ जँ पहिने खा' लेब तँ ओकरा कोना खायब, तँ दयाबती पंडित जी क प्रतीक्षा मे बिना खयने–पीने सूति रहल छलीह। कमजोरी सँ करबटो फेरल नहि होइत छलनि। ठीक पाँच बजे पंडितजीक आवाज कान मे पड़लनि, "सुनैत छी।"

दयाबती चेहा क' उठलीह आ आवाज दिश कान देलनि। पुनः केवाड़क सीकड़ि झनझनायल आ आवाज आयल, "कने केवाड़ खोलु ने।"

दयावती पंडितजीक आवाज चिन्हि हड़बड़ा क उठलीह आ

केवाड़ खोलबाक लेल चलि गेलीह। हुँनका एतबहुँ होश–हवास नहि रहल जे देह पर आँचरो अछि की नहि। ओ तुरंत जा क' केवाड़ खोलि देलनि। पंडितजी दयाबतीक स्थिति देखि आवाक रहि गेलाह...आ बजलाह, "की भ गेल अहाँके ? तखन दयाबती अपना देह कँ निहारलनि। देह पर सँ आँचर ससरि क निचां मे लेटा रहल छलनि। ओ लाजे भीतर घर मे पड़ा गेलीह। पंडित जी सेहो हँसैत बजलाह, "बकलेल नहितन।"

पंडित जी सब सामग्री घर मे रखलनि आ हाथ–पायर धो क बैसलाह। आब दुनू गोटे के गप्प–शप्प शुरु भेल। दयाबती बजलीह, "जँ नहि अयबाक छल तँ कम सँ कम कहि तँ दितहुँ। हम राति मे अहाँक प्रतीक्षा मे खायबो–पीबो नहि कयलहुँ आ एतेकटा आँगन मे एसकरहि छलहुँ, डरो होइत छल।"

पंडित जी, "से किएक, एसकरहि किएक छलहुँ। बसंती नहि आयल की?"

दयाबती, "ओकरा कहाँ कहने छलियैक। कोनो इ बात बुझल छल, जे अहाँ नहि आयब। अहींक बाट जोहैत, कखन आँखि लागि गेल, बुझबो नहि केलियैक।"

पंडित जी, "हँ, से तँ गलती भेल, मुदा हमरहुँ बुझल कहाँ छल। ओ तँ अचानक सीतापुरक यजमान बाट सँ घुरा क' ल' गेल। बाजल जे हड़बड़ी मे विचार भेलैक अछि, तँ अपने के पहिने सूचना नहि द' पाओलहुँ। जखन यजमानिका रखने छी, तखन तँ ओकर तोष राखहिटा पड़त। हम बहुत प्रयास कयल आ बेचारा यजमान सेहो बड़ प्रयास कयलक' मुदा केओ मोटर–साइकिल बला व्यक्ति नहि भेटल। तँ अहाँकँ समाद नहि भेटल। यजमानिका राखक लेल इ सब जरूरी भ' जाइत छैक। नहि तँ एहि दस कट्ठा खेत सँ की होयत।"

दयाबती, " हमरा पर भरि राति की बीतल अछि से हमहींटा जनैत छी। कोना–कोनाक' राति कटने छी। अहाँ की बुझबँ।"

पंडित जी, " सब बुझैत छी। हम इ अनुभव करैत छलहुँ मुदा कओ की सकैत छलहुँ। पूजा–पाठ कराबैत राति दस बाजि गेल आ ओहिठाम

सँ तीन कोस जमीन एतेक राति क' कोना अबितहुँ। जँ कोनो घटने घटि जाइत, तखन की करितहुँ। ओना हमहुँ कोनो सुख सँ नहि छलहुँ। भरि राति छट–पट करैत बितौने छी। भोर होइतहि भागल छी।"

दयावती, "नहि....नहि... से तँ नीके कयलहुँ। अबेर भ' गेल तँ कोना अबितहुँ। हमरा तँ मन मे कतेक तरहक शंका भ' रहल छल। कतेक देवी–देवता कँ कबुला–पाती कयल अछि।"

पंडित जी, "कबुला–पाती तँ हमहुँ कयल अछि।"

दयाबती, "अहाँ किएक कबूला–पाती कयलहुँ अछि? की भेल छल अहाँके?"

पंडित जी, "हमरा किछु नहि भेल छल। हम तँ एहि लेल कबुला–पाती कयल जे जल्दी सँ भगवान अहाँ के कोरा भरि देथि, जे अहाँ एसकर नहि रहब।"

दयाबती, "दुर....जाऊ...अहाँ तँ कत' केर गप्प कत' ल' गेलहुँ।" आ लजाक' मुँह झाँपि लेलनि।

पंडित जी यजमानिका सँ आनल सामग्री आ दक्षिणा में भेटल टाका दयाबती के हाथ क' द' देलनि आ कपड़ा उतारि स्नान करबाक लेल चल गेलाह। तावत् वसंन्ती सेहो आबि गेल। घर–द्वारि साफ करबाक आ वर्तन–वासन धोबाक भार ओकरहि छलैक। यजमानिका सँ आयल भोजनक सामग्री मे सँ किछु ओकरहुँ भेटि जाइत छलैक। ओ ओही सँ तृप्त रहैत छल। उपर सँ किछु टाका–पाई नहि लैत छल। ओ तँ यजमानक ओहिठाम सँ आयल रंग–विरंगक सचारे सँ तृप्त रहैत छल। एकर अलावे एक–दूटा घर मे आर काज करैत छल मुदा सब सँ पहिने पंडित जी ओहिठाम। किएक तँ ओ बुझैत छल जे पंडित जी आठ बजे धरि पूजा–पाठ करैत किछु जल पी' क' बहरा जाइत छथि। बसन्ती पंडित जी क' बगल मे रहैत छल। गरीब लोक छल आ माय–बाप सेहो नहि छलैक। ओकर माय–बाप तँ ओकर नाम भोकरी रखने छलैक मुदा ओ पंडित जी कँ पसिन्न नहि छलनि। ओ ओकर नाम वसंन्ती राखि देलनि आ ओहि दिन सँ सब केओ ओकरा वसन्ती कह' लागल। वसन्ती छल तँ गरीब मुदा

इमानक बड़ पक्का छल आ जे बाजैत सैह करैत। चाहे ओकरा लेल ओकर गरदनिओ किएक नहि कटि जाई। वसन्ती के दयावती लग बड़ नीक लागैत छलैक आ दयाबती सेहो ओकरा संग खुलिक सब गप्प–शप्प करैत छलीह। कौखन तँ वसन्ती दयाबतीक गप्प सुनि क' लजा जाइत छल आ बाजैत छल, हमरा ई सब जुनि कहूँ। दयाबती बाजैत छलीह, "जखन विवाह हेतौक, तखन इ सब ककरा पूछबँ। आ वसन्ती बाजैत छलैक, हम विवाह–तिवाह नहि करब। विवाह मे बहुत खर्च होइत छैक। के देत हमरा ओतेक टाका–पाई आ के ताकिक' आनत हमरा लेल वर।"

दयाबती बाजैत छलीह, "चिंता किएक करैत छँह। हम देबौ टाका आ पंडित कका ताकि क अनथुन वर।"

एहि तरहे खाली समय मे दयाबती बसन्तीक संग गप्प–शप्प करैत अपन समय काटैत छलीह।

पंडित जीक विवाहक उपरान्त दू वर्षक' बाद हुँनकर माता श्री स्वर्गीय भ' गेलथिन्ह। ओकर बाद दयाबती के ओतेक टा घर मे एसकर रहब नीक नहि लागैत छलनि। तँ पंडित जी वसन्ती के बजौलनि आ ओकरा अपना आंगन मे रहबाक लेल बजलाह। वसन्ती सेहो दयावतीक स्वभाव सँ परिचित छल। ओ पहिनहुँ कतेक वेर आंगन आयल छल आ दयाबती सँ गप्प–शप्प कयने छल। वसन्ती के दयाबती सँ गप्प करबा मे अद्भुत आनन्द आबैत छलैक। ओ पंडित जीक' आग्रह स्वीकार क लेलक आ पंडित जी दयाबती सँ निश्चिंत भ' अपन यजमानिकाक कार्य करए लगलाह। आन दिन तँ वसन्ती कँ कतेक काल धरि चिकर' पड़ैत छलैक, तखन केवाड़ खुजैत छलैक। आई एकहि आवाज पर केवाड़ खुजि गेलैक। ओकरा बड़ आश्चर्य भेलैक। ओहुना पंडित जी अबेर क' आबैत छलाह, तँ दयाबती के सूतबा मे देरी होयब' स्वाभाविके छलनि। आ जखन देरी सँ सूतैत छलीह तँ उठबो करतीह देरीये सँ ने।

वसन्ती बाजल, "काकी! आई एतेक भोरे उठि गेलहुँ। कोनो विशेष गप्प छैक की?"

दयावती, "आई सूतल कहाँ छलहुँ, जे भोरे उठब।"
वसंन्ती, "से किएक?"
दयाबती, "राति तोहर पंडित कका घर नहि अयलाह। तैं राति भरि सोच–फिकिर मे आ प्रतीक्षा मे काटि देलहुँ।"
वसन्ती, "अहाँ हमरा लग इ गप्प कहाँ बाजल छलहुँ, जे राति पंडित कका नहि औताह?"
दयाबती, "से हमरहुँ बुझल कहाँ छल। ओ तैं कहि क' किछु नहि गेल छलाह, आ ने कोनो समादे आयल।"
वसन्ती, "तखन किछु भाँज लागल की नहि?"
दयाबती, "हँ....हँ..एखनहि आयल छथि। स्नान करबाक लेल कल पर गेल छथि।"
वसन्ती, "कहूँ तैं अहाँ एसकरहि भरि राति फकसियारि कटने होयब। कनेक हमरहुँ तैं आवाज दितहुँ।"
दयाबती, "हमरा की बुझल छल, ओ नहि औताह। हम तैं आशे पर रहि गेलहुँ, जे आब आओताह.... आब आओताह...। वसन्ती अपन दिनचर्या मे लागि गेल आ पंडित जी सेहो स्नान पूजा करैत किछु जल पी' क' यजमानिकाक बाट धेलनि।

किछु कालान्तरक बाद पंडित जी कैं चारिटा पुत्र भेलनि। चारुक जन्म वृष राशि आ रोहिणी नक्षत्र मे भेलनि, तैं पंडित जी नाम रखने छलाह, विनोद, विदुर, विक्रम आ विभास। पंडित जीक चारु बेटा अत्यंत मेधावी छलनि। पंडित जीक चारु बेटाक प्राथमिक शिक्षा श्रीमंत चौधरीक ओहिठाम भेल आ कनेक पैघ भेला पर राजनगर मे नाम लिखाओल गेल। गाम सँ राजनगरक दूरी सब बच्चा पैदल तय करैत मिडिल पास कयलकनि। ओहि सँ आगु पढ़यबाक सामर्थ पंडित जी कैं नहि छलनि। अपन वृत्ति चलेबाक लेल ओतेक पढ़ाई काफी छलैक। ओ सबकैं अपन वृत्ति कर्मकांड सिखा क तैयार केलनि आ धीरे–धीरे सबके यजमानिका धरा देलनि। आब पंडितजीक अवस्था सेहो लगभग पचास वर्षक भ'

गेलनि। आ ओ तेजी नहि रहि गेलनि जे शुरु–शुरु मे छलनि। चारु भाय कैं यजमानिका पकड़ि लेला सँ सभक' परेशानी कम भेलनि। आ आमदनीयो मे वृद्धि भेलनि। धीरे–धीरे पंडित जी सात बीघा धनहा खेत खरीद केलनि। चारु भाय मे माँझिल विदुर बड़ तेज छलाह। ओ कर्मकाण्डक'–अतिरिक्त टिप्पणि बनायब सेहो जानैत छलाह। यजमानिका मे सब दिन चूरा–दही खाइत–खाइत हुँनकर मन ऊबि गेल। ओ रसे–रसे सब यजमान अन्य भाय कैं द देलनि आ अपने टिप्पणि बनायब शुरु क' देलनि। एके वर्ष मे ततेक सोरहा भ' गेल जे विदुर कैं कतहुँ जयबाक काज नहि, घरे पर भीड़ लागल रहैत छलनि। टिप्पणि बनाक' ओ बाहरो ल' जाइत छलाह। खासक एकटा बगलक गामक ककरहुँ कुटम्ब बोकारो मे रहैत छलैक। ओ आयल तैं विदुर सँ भेट भेलैक। ओ हिनका ज्ञान आ व्यवहार सँ बड़ प्रभावित भेल। हिनका सँ आग्रह कयलक, बोकारो चलबाक लेल। ओकरहि आग्रह पर पहिल वेर विदुर बोकारो गेलाह। ओही क्रम मे हुँनकर परिचय जानकी बाबू सँ भेल। जानकी बाबू विदुरक काज सँ एतेक प्रभावित भेलाह, जे ओ विदुरक गुलाम बनि गेलाह। पंडितजीक अवस्था सत्तरि पार क' चुकल छल। ओ आब कतहुँ नहि जाइत छलाह। पूजा–पाठ मे वेशी समय दैत छलाह आ संध्याकाल अपनहि दलान पर बैसि किछु भगवत चर्चा करैत छलाह। पंडितजीक प्रवचनक असरि विदुर पर वेशी भेल। ओ परोपकारी तैं छलाहे संगहि अत्याचारक विरोधी सेहो। ओ झूठ बर्दास्त नहि क' सकैत छलाह आ झूठ्ठा कैं तैं खेहारि मारैत छलाह। ओ जतबहि एक लाचार आ वेवश कैं मदति करैत छलाह, ओतबहि झूठ्ठा के एहि तरहैं माटि धरा दैत छलाह, जे ओकरा किछु बुझबो मे नहि आवैत छलैक। यावत् ओ सम्हरैत, तावत् ओकर सर्वनास भ' जाइत छलैक। छल–कपट मे सेहो ओ माहिर छल मुदा ओकर उपयोग ओहने लोक पर करैत छल, जे अपना कैं बड़ तिरंदाज बुझैत छलाह। सामान्य लोक लेल विदुर, विदुर नहि, वरदान छलैक। एक बेरक घटना अछि –

राजेश्वर बाबूक बेटीक विवाह छलनि। तिलक मे किछु टाका देब

बाँकी रहि गेल छलैक। जे विवाह सँ पूर्व देबाक छलैक। सब इन्तजाम पूर्ण छलैक। आब परिछनक लेल वर कँ बजाओल जायत कि राजेश्वर बाबूक नवका समधि हुँनका बजौलनि आ कान मे किछु कहलनि। राजेश्वर बाबू दस दिनक' आर समय मँगलनि। ओ बजलाह, "एखन तँ वर–वरियातीक स्वागत मे बहुत टाका लागि गेल। सब वस्तुक दाम तँ आकाशे छुने छैक। हम अपनेक लेल टाकाक' इन्तजाम क' क' रखने छलहुँ मुदा वरियातीक इन्तजाम बात मे उम्मेद सँ वेशी लागि गेल। ओहि मे कमी करितहुँ तँ अपनोक बदनामी होइत। तँ हमर आग्रह जे दस–पन्द्रह दिनक समय देल जाऊ। मुदा हुँनकर समधि अड़ि गेलाह, ओ बजलाह, "यावत् टाका नहि देव, तावत् वर परिछनक लेल नहि जा सकैत अछि। जँ दू घंटाक' भीतर इन्तजाम नहि करब तँ हम बरियाती कँ ल' क' आपस चलि जायब। गामक गणमान्य लोक सब सेहो राजेश्वर बाबूक समधि कँ बहुत तरहँ अनुनय–विनय केलनि मुदा ओ टस सँ मस नहि भेलाह। अपना जीद्य पर अड़ल रहलाह। पंडित कपिलेश्वर ठाकुर जिनका पंडित रूप मे पूरे इलाकाक लोक जानैत छल। पैघ लोक तँ हुँनका नहि कहल जा सकैत छल। किएक तँ आइ–काल्हि पैघक परिभाषा भेलैक टाका बला लोक। जिनका लग जतेक टाका हो, से ओतेक पैघ लोक कहाबैत छथि। पंडित जी टाका बला लोक तँ नहि छलाह मुदा व्यवस्थित लोक अवश्य छलाह। राजेश्वर बाबूक समधि सेहो हुँनका जानैत छलाह। पंडित जी हुँनका लग गेलाह आ पूछलनि, "अपने हमरा चिन्हैत छी ?"

समधि, "हँ.....हँ.. किएक नहि चिन्हब। अपने कँ के नहि चिन्हैत अछि।"

पंडित जी, "अपनेक बाँकी टाका हम गछैत छी। जँ राजेश्वर बाबू दस दिनक भीतर अहाँक टाका आपस नहि केलनि, तँ हम अहाँक टाका देब।"

समधि, "देखु, पंडित जी! अहाँ बीच मे नहि पड़ु। हम एहेन कतेको घटना देखने छी। विवाह भेलाक बाद ककरहुँ केओ नहि पूछैत छैक। आखिर ओकर बाद हम कओ की सकैत छी। लोको कहैत छैक, "भेल विवाह भोर करबह की।"

पंडित जी, "हम बीच मे कोना नहि पड़ु। राजेश्वर बाबूक कन्या समाजक कन्या थीक। ओ हमरहुँ तँ कन्ये थीक।"

समधि, "ठीक छै, तखन अपने सब इन्तजाम करु। हम दू घंटाक समय द' रहल छी। सब केओ थाकि हारि क' चल गेलाह। राजेश्वर बाबू मुँह मे ध ान देथि तँ लाबा होइत छलनि। आब करु तँ की करु। ग्यारह बजे राति मे टाका के देत। ककरा सँ माँगु। कम–सम तँ छलैको नहि। बीस हजार ककरहुँ घर मे हेतैक की नहि। ओ माँथ पकड़ि क' बैसि गेलाह। ओहि झुण्ड मे विदुर सेहो छलाह। ओ पंडित जीक अपमान सहन नहि क सकलाह मुदा पंडितजीक डरँ चुप छलाह। जखन पंडित जी चल गेलाह, तखन विदुर अपना बाल सखाक' संग किछु काना–फूसी केलनि आ आबि क' समधि केर सोझां मे ठाढ़ भ' गेलाह। ओहिकाल दरबज्जा पर केओ चेतन लोक नहि छल। गाम–घरक जतेक लोक छल सब निरास भ' क' चल गेल। ओहिठाम केवल राजेश्वर बाबू छलाह आ विदुरक चण्डाल चौखरी। तँ विदुर के ककरहुँ परबाहि नहि भेलनि। ओ समधि सँ जा' क' पुछलनि, "की वरक' बाप अपनहि छी ?"

समधि, "जी हँ, अपने के थिकहुँ ?"

विदुर, "हम कन्यागतक भातिज थिकहुँ।"

समधि, "कहल जाऊ, की कह' चाहैत छी ? टाकाक' इन्तजाम भेल।"

विदुर, "जी नहि टाकाक इन्तजाम तँ नहि भेल।"

समधि, "तखन हमरा की आदेश अछि?

विदुर, "आदेश तँ अपनहि ने करब। हम तँ याचक छी। अपनेक सोझां याचक' बनि क' ठाढ़ छी। अपने जँ कृपा करितहुँ तँ बड़ नीक होइत।"

समधि, "एखन अहाँ बच्चा छी। एखन इ सब बात अहाँ नहि बुझबैक। जँ टाकाक' इन्तजाम क' सकी तँ से कहुँ, नहि तँ बरियाती आपस चल जायत।"

विदुर, "तखन सैह कयल जाऊ। अनेरे दलान के किएक भरिऔने छी।"

समधि कँ एहि तरहक' उत्तरक' अपेक्षा नहि छलनि आ सेहो

एकटा बच्चा सँ जकर वयस करीब अठारह–उन्नैस वर्षक' छल। ओ तँ अपेक्षा करैत छलाह जे गामक लोक सब किछु टाकाक' जोगार क' क' आओत आ हमरा पायर पर अपन नाक रगड़त, मुदा आब तँ सब उम्मेद पर पानि फिरि गेल। ओ सब जयबाक' लेल तैयारी कर लगलाह। बरियाती सभक भुखे हालत खराब छलैक। आब गामो जायत तँ ओहिठाम भानस क' क' थोड़हि राखल हेतैक। तथापि सब विदा भेल।

विदुर बाजल, "एक मिनट रुकि जाऊ। बीस हजार टाकाक लेल अहाँ बरियाती आपस ल' जा' रहल छी। मुदा हमर जे अपनेक ओहिठाम दू लाख सत्तरि हजार टाका जमा अछि, तकर की हेतैक। ओ टाका चुकता क' देल जाऊ। ओकरा बादे अपने सब एहिठाम सँ जा सकैत छी।"

समधि, "ठीक छै, हम गाम पर जा' क अहाँक टाका पठा दैत छी। एखन संग मे तँ नहि आनल अछि। वा एक–दू गोटे कँ संग' क' दीअ, जिनका हम टाका द' देबैन।"

विदुर, "जखन अहाँ के बीस हजारक लेल हमरा पर विश्वास नहि भेल। तखन हम दू लाख सत्तरि हजारक लेल कोना अहाँ पर विश्वास करु। विश्वास तँ दुनू दिश सँ होयबाक चाही।"

समधि, "से तँ करहिटा पड़त। बिना विश्वासे तँ किछु नहि होइत छैक। विश्वासे पर तँ दुनियाँ टिकल छैक।"

विदुर, (गम्भीर होइत) "बिल्कुल सही कहल अछि अपने, मुदा विश्वास तँ अपनहि तोड़ल अछि। तखन एकटा काज कयल जा सकैत अछि।"

समधि, "की ?"

विदुर, "अपने बाप–बेटा एहिठाम रहूँ आ सब बरियाती कँ जाय दिअनु। जखन हमरा हमर टाका भेटि जायत तँ हम अहाँ बाप–बेटा कँ छोड़ि देब।"

समधि, "से कोना होयत। हमरा तँ जायहिटा पड़त। बिना हमरा गेने टाका के देत।"

विदुर, "ठीक छै, तखन अपने जाऊ आ एहिठाम वर आ पाँचटा वरियाती

कँ छोड़ि दिअनु।"

समधि, "एहेन कयल जाऊ। तत्काल सब बरियाती कँ अहीठाम छोड़ि दैत छी। केवल दुनू बाप–बेटा जा रहल छी। कारण टाका हुँनकहि बक्सा मे अछि आ ओएह रखने छथि।"

विदुर, "अहाँ हमरा खूब पढ़ाबै छी। हम तँ अपनहि लोक कँ पढ़ाबैत–पढ़ाबैत एतेकटा भेल छी। अहाँ हाथी ल' क' चल जायब आ हम सब गोबर के ओगरैत रहब।"

समधि, "एहिठाम हाथी आ गोबरक कोन गप्प आबि गेलैक। हम अपनेक गप्प बुझलहुँ नहि?"

विदुर, "मुदा हम तँ अहाँक गप्प बुझि गेलहुँ, तँ ने हाथी आ गोबर केर गप्प केलहुँ। बिना बरक बरियाती गोबर नहि तँ आर की थीक। बिना वरक बरियाती कँ कतहुँ पूछ भेलैक अछि की?"

समधि, "तखन अपनहि कहूँ, की कयल जाय?"

विदुर, "आश्वस्त भ' गेलाह जे समधि आब पूर्ण रूपँ जाल मे फँसि गेल छथि। आब हुँनका जेना–जेना विदुर नचौताह ओ नचता। वरियाती सब भूखे छटपट करैत छल। ओकर की दोष छलैक। ओ बेचारा तँ खयबाक लेल आयल छल। विदुर ओकरहुँ सहानुभूति पायबाक लेल बजलाह, "पहिने अपने सब भोजन करू। कारण एहिठाम सामग्री तैयार अछि। जँ अपने लोकनि भोजन नहि करब तँ सब बर्बादे हेतैक। आ गामो जायब तँ ओहिठाम भानस भेल नहि होयत। भोजन केलाक बाद वरक संग जे केओ रह चाही से रहि सकैत छी, जे जाय चाही से जा सकैत छी। एहिठाम किनकहुँ संगे कोनो तरहक' दुर्व्यवहार नहि हेतनि, एकर गारंटी अछि। एकटा बात आर....।

समधि, "से की?"

विदुर, "एखन ग्यारह बाजि रहल अछि। एहिठाम सँ अहाँक गामक बाट गाड़ी सँ एक घंटाक अछि। अपने कँ एक घंटा जयबा मे, एक घंटा अयबा मे आ एक घंटा व्यवस्था मे, कुल तीन घंटाक समय देल जाइत अछि। जँ

दू बजे धरि अपने टाका ल' क' नहि आयब तँ हम सब वरक' विवाह करा देबनि।"

समधि, "एहेन जोर जबरदस्ती, एहि लेल ने जे हम अहाँक गाम मे आयल छी। हम सब कम गोटे छी आ अहाँ सब जथगर छी तैं ने।"

विदुर, "जँ सैह करैक रहैत तँ अपने कैं तीन घंटाक' समय किएक दितहुँ। एखन धरि तँ सब काज भ' गेल रहैत। जँ अपने भरि राति नहि आयब तँ हमर तँ लगन खराब भ जायत। हम अहाँक की क' लेब। वर हाथ सँ निकलि गेलाक बाद हमर टाका आपस होयत की नहि, एकरहुँ मे संदेह अछि। समधि सोच मे पड़ि गेलाह। ओ तँ विदुर कैं बच्चा बुझैत छलाह मुदा ओ तँ बुढ़बोक बाप निकलल'। ओ तँ से नस पकड़ि लेलक' जे समधि केर बीस हजार सीधे पानि मे चल गेल। ओ बुझैत छलाह जे तीन घंटाक' भीतर आयब सम्भव नहि छलैक। ओ तँ कोनो तरहैं एहिठाम सँ भाग' चाहैत छलाह। टाका घर मे थोड़हि राखल छलनि। किछु बाजार मे खर्च भेलनि. आ बाँकी बैंक मे रखने छलाह। हुँनकर पाशा पलटि गेल छलनि। ओ सोचने छलाह जे बरियाती आपस के नाम पर किछु ने किछु अवश्य भेटि जायत मुदा एहिठाम तँ नहला पर दहला पड़ि गेल। ओ अपनहि जाल मे फँसि गेलाह। एतेक काल धरि तँ दस दिनक समय माँगल जाइत छलनि मुदा आब तँ सेहो नहि। ओ माँथ पर हाथ धयने बैसल छलाह।

विदुर पुनः पूछलनि, "तखन की विचार भेल अपने कैं। अनेरे समय बर्बाद करब उचित नहि। राति बहुँत भेलैक। हमहुँ सब तँ आराम करब।"

समधि, "जाऊ ने, अपने आराम करु। हम सोचि रहल छी। की कयल जा सकैत अछि।"

विदुर, "हम सब एहेन लोक नहि छी। अतिथि दलान पर बैसल रहताह आ हम सूतबाक लेल चल जायब। इ हमरा सभक संस्कार नहि अछि। हम सब अपना सँ पैघक सोझां, सोझ भ' क' गप्पो नहि करैत छी। नहि तँ इ झंझट तँ सांझे मे फरिछा गेल रहैत।"

समधि, "तखन हमरा संग कोना गप्प करैत छी। हम अहाँ सँ छोट थिकहुँ

की ?"

विदुर, "ठीक कहल अछि अपने। हमरा अपने सब सँ गप्पो नहि करक चाही। एहि लेल नहि जे अपने हमरा सँ छोट नहि छी। बल्कि एहि लेल जे अपनेक क्रिया अपने कैं एतेक छोट बना देलक, जकर वर्णन नहि।"

समधि, "हम तय भेल टाका मँगलहुँ, तँ हमर क्रिया छोट भ' गेल अहाँ गछि क' नहि देलहुँ तँ अहाँक' क्रिया पैघ भ' गेल।"

विदुर, "जखन अहाँ वर के ल' क' हाट पर बैसल छलहुँ, तैखन अहाँके जे दाम–दिगिर करबाक' छल, क' लितहुँ। एखन अहाँ ककरहुँ दरबज्जा पर सँ वरियाती आपस ल' क' चल जेबैक, जानैत छी ई कतेक पैघ गप्प भेलैक। हमरा सभक जे बदनामी होयत से तँ होयबे करत। अहुँ ककरहुँ मुँह देखेबाक जोगरक नहि रहब। अहाँ बेटाक विवाह कराबए आयल छी, कि हाट पर बेटा के बेचबाक' लेल।"

समधि, "जखन जोरे–जबरदस्ती होइत छैक, तँ जे मन हो से करु।"

विदुर, "गलती बात जुनि बाजू। अहाँ संगे आर लोक छथि, की औ–बाबू हम हिनका संग जबर्दस्ती क' रहल छियनि?" हम अपनेक संग जतेक स्पष्ट आ शिष्टाचारक संग गप्प क' रहल छी, दोसर ठाम एतेक अवसर नहि भेटैत। दोसर ठाम एतेक काल तँ गल हस्ते न धोधरः...। जँ अहाँ हमरा ओहिठाम बेटाक' विवाह नहि करेबनि। तँ हमरा एखन टाका आपस क' दीअ' आ अहुँ सब जाऊ। अपन चीज हासिल करबाक लेल सब जोर–जबदरस्ती करैत अछि। अहाँ कोना सांझे सँ नाटक पसारने छी।"

समधि केर संग चारि पाँच गोटे उठि क' कात मे गेलाह। बड़ी काल धरि सब फुसफुसेलाह। तखन आबिक' समधि बजलाह, "हम अहाँ सब सँ झंझट मे नहि सकब। जे मन हो से करु। ल' जाऊ, बौआ कैं विआहि दिऔन। हम बीस हजार टाकाक लेल छाती वज्र क' लेलहुँ। हमरा लोक सब कहैत छल, बेटाक विवाह धनकाही नहि करेबाक लेल। हमरा कपार मे आगि लागल छल जे हम नहि मानलहुँ। इ तकरे परिणाम थीक।"

विदुर, "अहाँ के तँ धनकाहीक माँटि के प्रणाम करबाक चाही। एहिठाम

अपने कैं ज्ञान प्राप्त भेल, जे ककरहुँ ओहिठाम जा क' नहि घिनाबी। अही घिनाब' मे ने बीस हजारक' गच्चा लागल अछि।"

गीतनाद शुरू भेल। गीतक' स्वर सुनि अगल–बगल केर दाई–माई जे निरास भ' क' चलि गेल छलीह, पुनः घुरि क' अयलीह। वरक' परिछन भेल आ विवाह शुरु भेल। बरियाती सब के जान मे जान आयल। ओहो सब भोजन करब शुरु केलनि। कनेक काल पहिने जे जगह सुनसान छल ओ क्षणहि मे विदुरक तीक्ष्ण बुद्धिक कारणेँ हर्षमय भ' गेल। शहनाई पर राग मल्लार बाजि उठल। राजेश्वर बाबू जे कनेक काल पूर्व माँथ पर हाथ धयने बैसल छलाह, चौंकि उठलाह, "इ चमत्कार कोना भेलैक, ओहो नहि बुझि सकलाह। विदुर अपन शिष्य मंडलीक संग बरियाती के भोजन मे लागल छलाह। जखन राजेश्वर बाबू के पता लागल जे इ चमत्कार आर ककरहुँ नहि, विदुरक अछि। तँ दुनू हाथे विदुरक' पायर पकड़ लगलाह। विदुर बाजल, "हाँ.....हाँ....इ अहाँ की क' रहल छी? अहाँ पागल भ' गेलहुँ की। हम अहाँक बेटाक समान छी। हमरा पाप किएक चढ़ाबैत छी?"

राजेश्वर बाबू कानैत–कानैत बजलाह, "अहाँ जे काज कयल अछि, ओ काज केओ बेटा नहि बापे क' सकैत अछि। बाजैत–बाजैत राजेश्वर बाबू भाव विह्बल भ' गेलाह। भोर होइत होइत गामक लोक संगे सब एहि प्रसंग के बुझि प्रसन्न छलाह आ पंडित जी सेहो विदुरक बुद्धिमत्ता सँ प्रसन्न छलाह। विदुर जाहि तरहेँ एहि मामला के सलटने छलैक, इ केओ कल्पनो नहि क' सकैत छल। विदुर मे एक गुण कहिऔ वा दुर्गण आर छलनि। जँ हुँनका इ बुझा गेलनि जे अमुक व्यक्ति हमरा बेबकूफ बना रहल अछि वा ठकि रहल अछि। तँ ओकरा ओ जड़ि–मुड़ि सँ उखाड़ि क' फेकि दैत छलाह। ओ काज ओ एतेक होशियारी सँ करैत छलाह, जे अगिला कैं किछु पते नहि चलैत छलैक। एकरा लेल ओ परिणामोक चिंता नहि करैत छलाह। जे हेतैक, देखल जयतैक। किछु एहने घटना प्रेम आ विदुरक संग भेल। हलांकि प्रेम निष्कपट लोक छलाह। एहिठाम विदुर के किछु भ्रम भ' गेलनि। विदुर गप्प सँ गप्प बहार

केलनि। वास्तविकता नहि बुझि सकलाह। एक तरहेँ ओ प्रेम पर अत्याचार केलनि आ सेहो अकारण मुदा जखन हुँनका सही स्थितिक भान भेलनि तँ प्राशचित्त सेहो कयलनि।

विदुर जी टिप्पणि बनाबक विशेषज्ञ छलाह आ एही क्रम मे ओ यदा–कदा बोकारो सेहो जाइत छलाह। ओहिठाम हुँनकर किछु स्थायी यजमान छलनि, जे विशेष काल हिनका आमंत्रित करैत छलनि। संयोगवश एक दिन विदुरक भेट प्रेम सँ भेल। प्रेम हर्षपूर्वक हुँनका अपना डेरा पर ल' गेलाह आ हुँनकर खूब आगत–स्वागत केलनि। बाहर मे अपना इलाकाक लोक भेटला सँ एक अद्भुत आनन्द होइत छैक। से प्रेम कैं सेहो भेल। विदुर तीन–चारि दिन जमि क' पहुँनाई केलनि आ जखन आब' लगलाह तँ प्रेम आग्रह पूर्वक कहलनि, "विदुर जी! अहाँ जखन कहिओ बोकारो आबी, तँ एहिठाम अवश्य आबी। एहिठाम आबिक' हमरा कुटिया कैं पवित्र करी।"

विदुर बजलाह, "अवश्य–अवश्य, ई तँ अपन घर थीक। एहिठाम अयबा मे संकोच की। अहाँ कहब, तखन आयब? बिनु कहनहुँ आबि जायब।"

प्रेम, "तखन एतेक दिन सँ किएक नहि आबैत छलहुँ ? बुझल नहि छल की, जे हम एहिठाम छी।"

विदुर, "बुझल तँ छल मुदा डेरा नहि देखल छल। तँ नहि आबैत छलहुँ। ई कहि ओ विदा भ' गेलाह।"

प्रेम (अरियातैत), "डेरा नहि देखल छल, इ बहन्ना आब नहि चलत। नहि एनिहारक लेल तँ कतेक बहन्ना भेटि जाइत छैक।"

विदुर, "नहि....नहि....अवश्य आयब। एहि तरहेँ प्रेमक डेरा विदुरक अड्डा बनि गेल। मास मे दू बेर विदुर बोकारो जाइत छलाह आ जमि क' अपन धंधा करैत छलाह। पहुँनाई तँ प्रेम बाबूक ओहिठाम होइतहि छल। एतेक स्वागत–सत्यकार तँ विदुर कैं यजमानिको मे नहि होइत छलनि। ओहि दौरान विदुर आ प्रेम राति–राति भरि जागि क' गप्प–शप्प करैत छलाह। विदुर आ प्रेम एतेक रमि गेलाह जकर वर्णन नहि कयल जा सकैत अछि।

प्रेमक कनियाँ आ दुनू बेटाक संग सेहो विदुर एकदम रमि गेल छलाह। एक दिन प्रेम हँसी–चौल केर लहजा मे विदुर कँ बजलाह, "विदुर भाई, अहाँ तँ बराबरि बोकारो आबैत जाइत रहैत छी। किएक ने एहिठाम एकटा घर बना लैत छी। यावत् हम छी, तावत् तँ कोनो गप्प नहि मुदा हमरा रिटायरक बाद तँ दिक्कत होयत।"

विदुर, "दिक्कत किएक होयत। जखन अहाँ सँ भेट नहि भेल छल तँ हम बोकारो मे ठहरैत छलहुँ की नहि? कनेक सस्त होअ'व–महँग, मुदा एतेक जे मकान बनल छैक, ओ ककरा लेल। दुनू गोटे हँसी–मजाक मे गप्प के टारि देलनि, मुदा विदुर एकरा गम्भीरता सँ लेलनि। आखिर प्रेम इ गप्प बाजल किएक ? एखन एकर कोनो तूक तँ नहि छलैक। हमर आयब ओकरा अखरैत छैक की? बजाक तँ ओएह अनने छल। हम अपना मने तँ आयलो नहि छलहुँ। इहो बाजल छल जे जखन आबी तँ हमरहि ओहिठाम ठहरी। तखन एहेन गप्प ओ किएक बाजल। हम की पेट ओछौने फिरैत छी। ठीके लोक कहैत छैक "मान घटै जहाँ नित्यः जाई।" ओहि राति विदुर कँ निंन नहि भेलनि। भोरे सबेरे उठलाह आ स्नान पूजा क' किछु जलखै केलनि। ओकर बाद विदा भ' गेलाह।

प्रेम पूछलनि, "की औ, एतेक भोरे–भोरे कत' विदा भेलहुँ।"

विदुर, "औ जी, नौ बाजैत छैक आ अहाँक लेल एखन भोरे भेलैक अछि?"

प्रेम, "कहबाक अभिप्राय ई जे एखन तँ अहाँक जेबाक वेर नहि भेल अछि। एखन तँ ककरहुँ दोकानो नहि खुजल हेतैक।"

विदुर, "हमरा दोकान सँ कोन काज। दोकान नहि खुजल हेतैक तँ घरे पर चल जायब। सोचैत छी, जँ जल्दी काज भ' जायत तँ तीन बजेक बस पकड़ि क' गाम चल जायब।"

प्रेम, "एतेक जल्दी? अहाँ तँ बाजल छलहुँ जे एहिबेर आठ दिन रहब।"

विदुर, "आठ–दिन मे एको दिन बाँकीओ छैक की?"

प्रेम, "अरे हँ, हम तँ गप्प–शप्प मे किछु बुझवे नहि केलहुँ। कोना क' आठ–दिन बीत गेल। आब कहिआ आयब?"

विदुर, "कहिआ आयब से तँ नहि कहि सकैत छी मुदा जल्दीये आयब।"

करीब पन्द्रह दिनक बाद विदुर पुनः बोकारो अयलाह। ओ मन मे सोचिये रहल छलाह कि प्रेमक ओहिठाम जाई की नहि। तावत् प्रेमक नजरि विदुर पर पड़ल। ओ आफीसक गाड़ी मे सबार छलाह। गाड़ी रोकबौलनि आ विदुर के आवाज देलनि, "की औ, विदुर जी, कोम्हर चललहुँ अछि?"

विदुर, "एहिठाम किछु काज सँ आयल छलहुँ। काज तँ आई नहि भेल। काल्हि बजौने अछि। ते अपनेक ओहिठाम जा रहल छलहुँ।"

प्रेम, "ई तँ अपनेक महानता अछि जे एहि अदना के मन राखैत छी, मुदा आई हम क्षमा चाहब।"

विदुर, "से की?"

प्रेम, "मालती दुनू बच्चा कँ ल' क' परीक्षा दिआबए पटना गेल छथि आ हम आफीसक आवश्यक मीटींग मे जा रहल छी। मीटींग कतेक काल धरि चलत, कहि नहि सकैत छी। रातिक दसो बजि सकैत अछि। हम एहि बेर अपनेक कोनो आगत–स्वागत नहि क' सकलहुँ। दस मिनट हम पहिनहि सँ लेट छी। एकर पूर्ति हम दोसर खेप मे करब। एखन आज्ञा चाहैत छी आ गाड़ी आगाँ बढ़ि गेल। विदुर टक–टक तकिते रहि गेलाह। विदुर के जेना लागल जे केओ एके बेर माँथ पर एक सय हथौरा मारि देने हो। ओ मने मन भनभनायल। आज्ञा...आज्ञा तँ एहेन हम देब जे अहाँक सात पुरुषा धरि मोन राखत। अहाँ दोसर ककरहुँ नहि विदुर कँ छेड़ने छियैक। विदुर ओ गेहूँमन थीक जे अकारण ककरहुँ दिश देखितो नहि अछि आ जे छेड़ैत अछि, ओकरा छोड़ितहुँ नहि अछि। विदुरक मोन मे किछु दिन पूर्व जे शंकाक अंकुर फूटल छलैक, आई ओ विशाल गाछ भ' गेलैक। आब विदुर वेशी काल एकरहि विषय मे सोचैत रहैत छल, जे एकर शुरुआत कोन तरहँ कयल जयबाक चाही। एक दिन विदुर अपना दलान पर पड़ल–पड़ल किछु सोचि रहल छलाह। ओ देखलनि जे एकटा मोट–सोट मूस अपना बीहरि सँ बहराय निचां सँ कूदि क' पाँच फीट उँच सीक पर चल जाइत

अछि आ ओहि मे राखल सामग्री खा लैत अछि। ओना तँ मूसक इ विशेष गुण छैक जे ओ कूदिक कतहुँ जा सकैत अछि मुदा निचां सँ पाँच फीट छः फीट कूदब आश्चर्यक गप्प अवश्य छलैक। ओ अनुमान लगौलनि जे एकरा बीहरि मे अवश्य कोनो वस्तु छैक, जकरा बल पर इ कूदि रहल अछि। ओकर बीहरि खुनबौलनि। दू दिन मे ओकरा बीहरिक अन्त भेल। ओहि बीहरि मे बहुत नोट थकियायल राखल छलैक, जकरा पर ओ मूस बैसल छल। अपन बीहरि खुनाइत देखि मूस तँ कूदि क' भागि गेल, मुदा ओ नोट सब विदुर कँ हाथ लागल। ओकर बाद दोसर दिन विदुर देखैत छथि जे ओएह मूस जे काल्हि धरि पाँच फीट छः फीट कूदैत छल, आई दूइयो–तीन फीट नहि कूदि पावैत अछि। सींक पर राखल सामग्री आब खायब तँ दूर ओ छुबियो नहि सकैत अछि। विदुर कँ बुझबा मे आबि गेलनि जे नोट मे कतेक बल छैक। तँ जँ ककरहुँ बलहीन करबाक हो, तँ सबसँ पहिने ओकर टाका खर्च करबा दीअ। विदुर कँ फार्मूला भेटि गेल। ओ ओकरहि अनुरूप योजना बनौलनि। प्रेम के नोटक गर्मी छैक। ओ किछु दिनक बाद रिटायर करत आ ओहि मे जे टाका भेटतैक, ओकरा खर्च करा देबैक। ओकर सब बुधियारी सठि जेतैक। एकरा लेल ओकरा सँ सटिये क' रहब उचित अछि। दूर रहिक' ओतेक कारगर नहि भ' सकैत छी, जतेक सटिक'। ओकरा डेरा पर ठहरब नहि, खायब–पीअब नहि मुदा भेट करबाक बहन्ना सँ जायब अवश्य। तखनहि ने ओकर की योजना छैक से बुझि पायब। बीच–बीच मे जाइत–आबैत रहब तँ ओकरा एहि षटयंत्रक आभासो नहि हेतैक। आब विदुर के प्रतीक्षा छल तँ प्रेमक रिटायरमेन्टक, जाहि मे मात्र एक वर्षक देरी छलैक। एहि बीच विदुर कतेको बेर बोकारो गेलाह। प्रेम सँ भेट सेहो कयलनि मुदा ओत' ठहरलाह नहि। एक दिन विदुर प्रेमक डेरा पर गेलाह। प्रेम ठहरबाक लेल आ भोजन करबाक लेल बड़ आग्रह केलनि।

विदुर बजलाह, "देखु भोजन तँ हम यजमाने क ओहिठाम क' लेलहुँ। कतबहुँ मना केलियैक मुदा नहि मानलक। ठहरलो ओकरहि ओत' छी।

झोरा–झपटा सेहो ओतहि अछि। किएक तँ राति मे सेहो अनुष्ठान छैक। एहि लेल राति मे ओतहि रहब आवश्यक अछि।"

प्रेम बजलाह, "ठीक छै, तखन काल्हि एतहि रहब। बहुत दिन भ' गेल, दुनू गोटे भरि मोन गप्पो नहि कयलहुँ अछि।"

विदुर, "काल्हुक तँ हमर टिकट बस सँ रिजर्व करायल अछि।"

प्रेम, "छोड़ु ने, हम ओकरा केन्सिल करबा क', दोसर दिनक' कटा दैत छी।"

विदुर, "एकटा हमरहि नहि ने अछि। हमरा संगे आर बीसटा पंडित छथि। संगहि आयल छथि, तँ संगहि जायब आवश्यक छैक।"

प्रेम, आश्चर्य सँ बीसटा आर...से की छलैक?"

विदुर, "यजमानक ओहिठाम नौ दिन सँ महामृत्युंजय जाप चलि रहल छलैक। सवा लाखक संकल्प छलैक आ इ भार हमरहि भेटल छल। हमही सब पंडित के अनने छी। आई राति मे ओकर हवन होयत आ भोरे हम सब चल जायब।"

प्रेम, "औ जी, अहाँ एहिठाम नौ दिन सँ छी आ हम आई बुझलहुँ अछि। हमरा सबकँ कनेको भनक नहि लाग' देलहुँ। आब तँ अबितहुँ नहि छी। की कोनो बात भेलैक अछि की? आखिर एतेक दूरी किएक ?"

विदुर, "नहि.....नहि...एहि मे दूरीक कोनो गप्प नहि छैक। कोनो बात रहितैक तँ आइये किएक अबितहुँ। नौ दिनक जाप आ सेहो एकैस पंडितक संग भोर आ सांझ चलि रहल छलैक। अगुआ हमहीं छलहुँ, तँ सब बातक ध्यान राख' पड़ैत छल। कतहुँ कोनो चूक नहि होमए, तँ सब पंडित पर ध्यान राख' पड़ैत छल।"

प्रेम, "अहाँ तँ तेहेन बेरे मे एलहुँ जे किछु बाजिओ नहि सकैत छी। फेर कहिआ आबि रहल छी?"

विदुर, "अगिला मासक बीस तारीखक हम फेर आबैत छी, मुदा भेंट अहीना भ' सकत। किएक तँ ओहो अनुष्ठाने छैक आ ओकरहुँ मे ग्यारह पंडित रहताह".....

प्रेम, (बात काटैत) "ओकरहुँ अगुआ अहीं रहब सैह ने।"

विदुर, "जी।"

प्रेम, "ठीक छै, जखन पलखति हो, तखन अवश्य आयब। हमरा तँ दर्शनो द' दैत छी। तँ हमर करेजा सूप सनक फुलि जाइत अछि।"

विदुर, "समय निकालि भेंट अवश्य करब। इ कहैत विदुर चल जाइत छथि। विदुर जतेक गप्प बाजल, ओहि मे एकोटा सत्य नहि छलैक। मुदा एहि ढंग सँ प्रस्तुत केलक जे प्रेम के विश्वास कर' पड़लैक।"

किछु दिनक बाद प्रेम रिटायर भ' क' गाम अयलाह। बेटा आ कनियाँक विचार छलनि जे पटना मे घर बनाक रहथि मुदा हुँनका उपर समाज सुधारक नशा चढ़ल छल। जाहि मे विदुर सेहो खूब हवा देलनि। आई विदुरक प्रतीक्षा खतम भेल। ओ अपना योजना कँ सफल करबा मे लागि गेल। प्रेमक जतेक टाका छलैक, ओकरा ओ लहना लगेबाक विचार देलक। गाम' मे लोक दू आ तीन प्रतिशत ब्याज पर टाका लगाबैत अछि। जँ अहाँ दूइयो प्रतिशत पर दैत छी तँ वर्ष मे चौबीस प्रतिशत भेलैक आ चारि वर्ष मे मूर दोबर। की एतेक फायदा कोनो बैक द' सकैत अछि। प्रेम आधा टाका बैंक मे आ आधा विदुरक सलाह पर गामक लोक मे बँटबा देलनि। आ विदुर सबके हिदायत क' देलनि जे टाका हम दिऔने छियह। सब केओ सूद आ मूर केवल हमरा लग' जमा करिह। बिना हमरा सँ पूछने प्रेम बाबू कँ एकोटा पाइ नहि देबाक छैक। जे टाका प्रेम बैक मे रखले छल, ओकरा विरुद्ध बेरोजगार सबके बैक लोन दिआ देलक। सभक जमानत प्रेम देलनि। जाहि सँ समय अयला पर ओहो अवरुद्ध भ' जाईक। प्रेमक जतेक कार्यक्रम घरेलु वा सामाजिक होइत छलैक, विदुर ओहि मे खूब बढ़ि–चढ़ि क भाग लैत छलैक। जाहि सँ कहिओ प्रेम कँ विदुर पर शक नहि भेलैक। आ जहिया सब किछु बुझवा मे आयल, तहिआ बहुत देरी भ' चुकल छल। प्रेमक सब किछु खतम भ' गेल छलैक। मुदा तैयो हुनका विदुर पर शक करबाक कोनो आधार नहि भेटलनि।

५

परिवेश मे बदलाव बाल्यकाल व शैशव काल मे भेला सँ लोक ओही वातावरण वा परिवेश मे रमि जाइत अछि। मुदा बुढ़ारीक परिवेशक बदलाव नीक नहि होइत अछि। गामक वातावरण आ शहरक वातावरण मे बहुत फर्क होइत अछि। गाम मे सामाजिकता अछि। एक दोसरक दुःख–सुख मे खोज पुछारि करैत अछि। कतहुँ जँ दसटा लोकक काज भेल तँ बिना बजौने हाजिर मुदा शहर मे ओकर अभाव अछि। ककरहुँ सँ ककरहुँ मतलब नहि रहैत छैक। पुछबै तँ बाजत अन्यथा ओहो नहि। शहर मे जँ टाका अछि तँ सब किछु घर पहुँचि जायत। अहाँके कोनो हाथ–पायर हिलेबाक जरूरत नहि मुदा गाम मे तकर अभाव अछि। गाम मे कोनो काज तँ रहैत नहि छैक। दिन भरि सब केओ बैसिक' ताश खेलताह आ एक–दोसरक खिद्धांश करताह। ककरा सासु के ककरा पुतौह सँ झगड़ा भेलैक। ककर पुतौह ककरा सासुके मारलक। इ सब रिर्पोट एकेठाम बैसल भेटि जायत। शहर मे इ सब नहि होइत छैक। सब अपना–अपना मे बेहाल। ककरहुँ एतेक पलखतिये नहि जे ककरहुँ विषय मे सोचत। तथापि एकटा ग्रामीण परिवेश मे रह' बला व्यक्ति शहर मे अपन समावेश क' सकैत अछि मुदा शहरी परिवेश मे रह' बला लोक ग्रामीण परिवेश मे अपन समावेश नहि क' सकैत अछि। आ जँ करबहुँ करत तँ बड़ मुश्किल सँ। कारण शहर मे जे सुविधा छैक ओ गाम मे नहि छैक। ग्रामीण परिवेशक एकटा बुढ़ लोक शहर मे नहि रहि सकैत अछि। ओकरा हरदम गप्प करबाक लेल केओ ने केओ चाही, से कत' भेटत। तहिना जे केओ सब दिन शहर मे रहलाह, हुँनका लेल ग्रामीण परिवेश दूरक ढोल सोहावन अवश्य लागैत हेतनि। मुदा ओ अचानक आबिक' ग्रामीण परिवेश मे जीवन व्यतीत क' लेताह सम्भव नहि बुझना जाइत

अछि। हमर एकटा मित्र छथि। ओ सब दिन पटनाक दानापुर मे रहलाह। ओतहि ओ शिक्षक छलाह। ओतहि रहि क' सब धिया–पूता के पढ़ौलनि–लिखौलनि आ रिटायर भ' क' अपने दुनू प्राणी ओतहि रहैत छथि। हुँनकर दू टा बालक पटना मे काज करैत छनि आ ओतहि डेरा ल' क' रहि रहल छनि। हुँनका बेटा सब आग्रह करैत छनि जे पटना मे आबि क' रहुँ मुदा ओ छथि जे टस सँ मस नहि होइत छथि। संयोग बस एकबेर पटना गेलहुँ तँ मित्र कँ भेट केलियनि। ओ बहुत खुश भेलाह। करीब पन्द्रह वर्षक बाद दुनू गोटे के भेट भेल छल। एहि बीच मे देहो दशा मे बड़ बदलाव आबि गेल छलनि। दाँत सबटा टुटि गेलनि मुदा ओकर स्थान पर दोसर कृत्रिम दाँत बनबौने छलाह। चलबा–फिरबा मे किछु कष्ट छलनि। मुदा रूआब ओएह तीस वर्ष पहिने बला। हम हुँनका पुछलियनि, मित्र एहिठाम जे एसकर रहैत छी ताहि सँ नीक तँ पटना मे रहितहुँ। अहाँक बेटा तँ पटने मे रहैत छथि, की ओ सब अहाँ सभक भार नहि उठा सकैत छथि।

मित्र बजलाह, "देखु धिया–पूताक संग रहबा मे कोनो हर्ज नहि छैक। ओ सब सेहो बहुत जिद्द करैत अछि। मुदा ओकरा सभक संग रहने ओकरा सब के दिक्कत हेतैक। ओकरा स्वतंत्रता पर आघात हेतैक। ओ एखन जतेक स्वच्छन्द भ' क' रहि रहल अछि, सम्भवतः नहि रहि पाओत। बच्चा कतबहुँ पैघ किएक नहि भ' जायत, तथापि ओ माय–बाप लग बच्चे रहत। ओकरा गलती पर माय–बाप ओकरा टोकबे करत। इ सब केओ बर्दास्त नहि क' सकैत अछि। बाल–बच्चा के लागैत छैक जे बुढ़ा–बुढ़ी ओकरा अधिकार क्षेत्र मे हस्तक्षेप क' रहल छथि। ओ कदाचित एकरा बर्दास्त कओ लेत मुदा ओकर कनियाँ किएक बर्दास्त करत आ एतहि से दुनू परिवार क बीच शरू होइत अछि कलह। जखन एकबेर ककरहुँ मुँह खुजि जायत तँ ओकरा ब्रह्मो नहि बन्द क' सकैत छथि। जँ ओहिठाम दोसर डेरा ल' क' रहब तँ लोक कहत जे बाप–बेटा मे नहि पटलनि तैं फराके भ' क' रहैत छथि। केओ बाजत जे बेटा–पुतौह केहेन चंडाल छैक जे बुढबा–बुढ़िया कँ नहि राखि सकल, तँ केओ बाजत जे इ बुढबा–बुढ़िया केहेन षटकर्मी अछि जे अपना बेटा–पुतौह के नहि डेबि सकल। जतेक

मुँह ततेक अनुमान। जखन कि एहि अनुमान के सत्यता सँ कोनो मतलब नहि रहैत छैक। मुदा अहाँ कतेक लोकक मुँह रोकब। लोकक काना–फूसी मे एतेक सामर्थ छैक जे जतए किछु नहि छैक, ओतए किछु ने किछु अवश्य करा देत। एकटा गप्प आर अछि। एहिठाम सब क्रेओ चिन्हैत अछि। किछु एहेनो लोक अछि जे हमर विद्यार्थी रहि चुकल अछि आ एखन व्यापार आदि मे लागल अछि। जकरा जे टहल अढ़ाबैत छियैक, क' दैत अछि। जेम्हरे जाइत छी, ओम्हरे "मास्टर साहेब प्रणाम" कहनिहारक ताँता लागि जाइत अछि। विद्यार्थी तँ विद्यार्थी ओकर माय–बाप सेहो खूब इज्जत करैत अछि। एहिठाम जतेक आनन्द पूर्वक जीवन बिता रहल छी, दोसर ठाम ओतेक आनन्द भेटत वा नहि, कहि नहि सकैत छी। पटना मे जायब तँ ओहिठाम किछु दिन अनभोआरे ने रहब। तँ हम सब तरहँ एहिठाम रहब उपयुक्त बुझैत छी, तावत्, यावत् अपन हाथ–पायर काज करैत अछि। जखन ओछाइन ध' लेब तखन तँ बेटा–पुतौह छैहे। कोनो हमरा ककरहुँ सँ झगड़ा तँ नहि भेल अछि। जखन मन होयत चल जायब। हमरा बुझायल जे हुँनकर कथन एकदम सही आ व्यवहारिक अछि। हमरा समाजक एहेन मनोदशा छैक। ओ दोसराक टाट मे भूर करबाक चेष्टा करैत अछि। हमहुँ हुँनकहि हँ मे हँ मिलाकए बजलहुँ, "किछु हद धरि अहाँक सोच एकदम सही अछि। आहार व्यवहार मे जतेक स्पष्ट ओतेक नीक आ अपनहुँ परिवार मे जतेक दूर रहब, प्रेम ओतेक अधिक होयत। जतेक सटल रहब कलह ओतेक वेशी होयत"। हम मन मे सोचलहुँ जे एहेन सोच बला व्यक्ति सब दिन सुखी रहत आ जीवन मे कहिओ ककरहुँ सँ धोखा नहि खायत। जे दौड़त सैह ने खसत। जे दौड़बे नहि करत ओ किएक खसत।

लहना–तगादा लगौनिहार व्यक्तिक एक अलग स्वभाव होइत अछि। ओकरा दोसराक दुःख सँ कोनो मतलब नहि। ओकरा हृदय मे संवेदना नामक कोनो चीज नहि होइत अछि। ओकरा दोसराक दुःख सँ कोनो मतलब नहि रहैत छैक। ओ मात्र अपना फायदा सँ मतलब राखैत अछि। ओ तँ मात्र दोसराक मजबूरीक फायदा उठाबैत अछि। इएह तँ ओकर व्यवसाय केर मूल मंत्र थिकैक। जे केओ ककरहुँ दस टा गारि देबाक आ

ककरहुँ सँ दसटा गारि सुनबाक समर्थ राखए, ओएह एहि धंधा मे फलि–फूलि सकैत अछि। जकरा मे इ सामर्थ नहि होइक, ओकरा एहि सब सँ दूरे रहक चाही। प्रेम बाबू इएह तँ गलती केलनि। ओ जीवनक अधिकांश क्षण बोकरो मे बितौलनि आ बुढ़ारी गाम मे बितेबाक निर्णय केलनि। हुँनकर निर्णय गलत छलनि वा सही, ई तँ नहि कहि सकैत छी मुदा ओ जे योजना शुरू कयलनि, निश्चित रूपे ओ कल्याणकारी छलैक। ओ योजना ग्रामीण विकास लेल बहुत प्रभावी छलैक। ओहि मे सभक हित छलैक, विशेषक' गरीबहाक। एहेन कर' बला के अछि ? देशक जे नेता छथि ओ तँ डपोर शंखो कँ पाछाँ छोड़ि देलनि। तखन एकरा लेल अनुकूल वातावरण बनायब आवश्यक छलैक। सब कँ ट्रेनिंग केर जरूरत छलैक जे एहि योजना के कोन तरहँ कार्यरूप देबाक चाही। एहि सँ ककरा कतेक लाभ हेतैक। जाहि सँ कम सँ कम लाभार्थी दोसराक बहकाबा मे नहि आबए। ओ अपन हित अनहित बुझि सकए। गामक विकास हो, इ तँ सब केओ बाजैत अछि, मुदा अन्तः करण सँ चाहैत नहि अछि। जखन विकासक काज शुरू होयत तँ अधिक लोक ओकर कार्य करबाक तरीकाक विरोध करत। खास क ओ लोक जकर समाज मे बर्चस्व छैक। जेकरा नहि कोनो भूर भेटतैक ओ मजदूरक मजदूरी कम देबाक दोहाइ देत। जाहि सँ कहुना काज ठप भ' जायत, विकास अवरूद्ध भ' जायत। ओ चाहैत अछि जे ओ जे बाजए सहए होइक। से कोना भ' सकैत छैक। पूंजी लगौनिहार कि बेबकूफ छैक। ओकर योजना छैक, ओकर तौर–तरीका छैक। नतीजा होइत छैक जे जकरा लाभ भेटत, ओएह प्रत्यक्ष रूपे एकर विरोध करैत अछि। चाहे दबाब मे वा लोभवश। आखिर अहाँ ककर काज क' रहल छियैक। गामक विकास क' रहल छी आ गामक लोक कँ किछु बूझले नहि छैक, तँ एहि विकास सँ की फायदा। गामक विकास अवश्य होयबाक चाही। समाज सँ गाम आ गाम सँ देश छैक। जँ देशक सब गामक विकास भ' जायत, सब केओ साक्षर भ' जायत तँ देश स्वतः विकसित भ' जायत। आई–काल्हि सरकार दिश सँ एतेक ने विकासक योजना आयल अछि, जकर वर्णन नहि। आवश्यकता अछि ओहिपर सुनियोजित ढंग सँ काज करबाक, मुदा समाजक बीच जानकार लोक

नहि रहलाक कारणे ओ सब योजना मुखिया आ बी. डी. ओ. क पेट मे चल जाइत अछि। जँ केओ ओकर विरोध करैत अछि, तँ विभिन्न दाव–पँच लगाक' ओकर मुँह बन्न क' देल जाइत अछि। गलती हमरहुँ सभक अछि। चुनाव काल मे जाति–पातिक प्रवाह मे बहि जाइत छी। सुयोग्य उम्मीदवार क' चयन नहि क' पावैत छी। तखन तँ ओकर प्रतिफल भोगहिटा पड़त। गामक जे पढ़ल लिखल लोक सब दिन बाहर रहिक नौकरी–चाकरी केलनि। ओ आब रिटायर भेलाक बादो गाम मे नहि रह' चाहैत छथि। ओ आब अपनहि समाज मे अपना के समायोजित नहि क' पावि रहल छथि। ओकर कतेक कारण छैक एक कारण छैक गाम मे बिजली–पानिक अभाव। दोसर परिवेश, तेसर कुटनीति, चारिम प्रेमक अभाव, पाँचम शिक्षाक अभाव, छठम परिवहनक कमी आदि। कोनो व्यक्ति जे सब दिन वा जीवनक अधिकांश समय शहर मे बितौलनि, ओ एहि अभाव मे दू–चारि दिन सँ वेशी नहि रहि सकैत छथि। आ दोसर गप्प हमरा समाजक लोक सेहो हुँनका वेशी दिन नहि रह' देतनि। हुँनका होइत छनि जे एहिठाम विशेष दिन रहि जेताह तँ वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के छिन्न–भिन्न क' देताह। कारण ओ शहरी व्यक्ति अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाओत। ओ गलत काजक विरोध करत। तखन तँ मुखिया सरपंचक जे पिठ्ठु लोक अछि, ओकर दालि कोना गलत। ओ सब तँ झूठो हल्ला क'क' दोसरक आवाज के दबा दैत छल, से तँ नहि होयत। एहेन घटना हमरा गाम मे एकबेर भेल छलैक। एकटा प्रोफेसर छलाह आ नाम छलनि आमोद जी। स्वभाव सँ एकदम निर्मल आ प्रखर वक्ता। कोनो विषय पर कम सँ कम चारि घंटा बाजि सकैत छलाह। ओ सब दिन पटना मे रहि क' पठन–पाठन केलनि। आ ओतहि पटना विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर भ' गेलाह। ओ सभक गप्प सुनैत छलाह आ यथा साध्य ओकर निराकरण सेहो करैत छलाह। सभक समुचित आदर सेहो करैत छलाह। हुँनका गप्प सँ ककरहुँ कष्ट नहि होइत छलैक। युवा वर्ग जे एखन अध्ययनरत छलाह, ओ तँ आर हुँनका पाछाँ दीवाना भेल छलाह। एकर दूटा कारण छलैक। एक तँ ओ सब सँ प्रेम करैत छलाह, आ प्रेमक बशीभूत भ' सब हुँनकर अनुशरण करैत छल। दोसर ओ विद्वान

छलाह, तैं विद्यार्थी हुँनका गुरूवत मानैत छलथिन्ह। आमोद जी गाम मे धर्मक काज वा समाजिक काज मे खूब दिलचस्पी लैत छलाह। गाम मे पंचायत चुनाव केर समय आबि गेल। फुचाइ झा मुखिया लेल नामांकन केलनि। गामक विशेष लोक फुचाई झा क विरोध मे छलाह। जखन एकर भनक आमोदजी के लागल तैं ओ छुट्टी ल' क' गाम अयलाह आ ग्रामीण सब सँ फुचाइ झा क' पक्ष मे भोट देबाक आग्रह केलनि। ग्रामीण लोकनि फुचाइ झाक पुरजोर विरोध केलनि। फुचाइ झा चोर अछि, ओ सब टा फण्ड खा जायत। गामक विकास किछु नहि करत। विस्कोमान भवनक निर्माण हेतु दू लाख टाका भेटल छल। ओ दुनू लाख टाका आफीसक मेल सँ फुचाई झा डकारि गेलाह, आ ढेकारो धरि नहि केलनि। आमोद जी सब के बुझौलनि "फुचाई झा गामक लोक छथि जँ हिनका भोट नहि देवनि तैं, आन गामक लोक पंचायतक मुखिया भ' जायत, ओकर की क' लेबैक। ई तैं गामक लोक छथि। सब केओ घेरि–घारिक हिनका सँ सब काज करायब। कतेक घमर्थन भेलाक बाद सब केओ तैयार भेलाह आ फुचाई झा भारी मत सँ विजयी भ' क' मुखियाक पदभार ग्रहण केलनि। किछु दिन तैं बड़ बढ़िया रहल मुदा खायल मुँह कतहुँ बरजल जाय। फेर फुचाई झा अपना रंग मे आबि गेलाह। सब काज मे अपन फीस बाँन्हि देलनि। बिना फिसे ककरहुँ दरखास्तो पर दस्तखत नहि करैत छलाह। आ बाजैत छलाह "हम की करू बिना किछु लेने–देने किरानी फाइले नहि बढ़ाबैत अछि। हम अपना लेल थोड़हि इ सब करैत छी। हम तैं चाहैत छी जे अहाँ सभक काज सुगमता पुर्वक भ' जाय, तैं इ सब कर' पड़ैत अछि। रीलीफ बँटवारा मे लोक कैं अदहा–छिदहा दैत छलाह। जँ केओ बाजैत छल तैं कहैत छलाह "सरकारे एतबहि देलक। तखन कि हम एकरा अपन घर सँ पूरा करब"। लेबाक छह तैं लएह नहि तैं जाह। लोक की करत जे भेटैत छलैक चुपचाप ल' लैत छल।

एकदिन आठ–दस गोटे आमोदजी कैं ओहिठाम गेलाह आ हुँनका विस्तार पूर्वक वस्तु स्थिति सँ अवगत करौलनि। आमोद जी फुचाइ झा क' ओहिठाम गेलाह। फुचाइ झा क गप्प हुँनका बड़ अटपट लगलनि। हुँनका बड़ कष्ट भेलनि। ओ कागज कलम बहार केलनि आ फुचाइ झाक

खिलाफ दरखास्त तैयार क' बी. डी. ओ . के पठा देलनि। एहि सँ पूर्व सेहो आमोद जी बी. डी. ओ. के खिलाफ कतेक लिखा पढ़ी कयने छलाह आ एकटा वी. डी. ओ. पर कारबाई सेहो भ' चुकल छलनि। तैं आमोद जी के दरखास्त पर वी. डी. ओ. साहेब पहिने तैं फुचाई झा के बड फज्जहति केलनि। फेर हुँनका किछु बुझा–सुझा क जाँच करेबाक लेल तैयार रहबाक आदेश देलनि। जाँचक तिथि तय भेल। बी. डी. ओ. साहेब पंचायत भवन मे अयलाह। ओहिठाम सब के बजाओल गेल। आमोद जी के सेहो बजाओल गेल आ हुँनका बी. डी. ओ. साहेब अपना बगल मे कुर्सी पर बैसौलनि। पूर्व योजनानुसार फुचाई झा सेहो अपन किछु चाटुकारक संग उपस्थित भेल। जाँच कार्य शुरू भेल। सब सँ पहिने आमोद जी विषय वस्तु पर प्रकाश देलनि। तर्क पूर्वक सब तथ्य सँ बी. डी. ओ. साहेब के अवगत करौलनि। आमोदजीक एकोटा तथ्य वा तर्क कटबाक योग्य नहि छल। बी. डी. ओ. साहेब सेहो ओहि सँ सहमत भेलाह। आ फुचाइ झा के मारबेटा नहि केलनि, बाँकी सब दुर्दशा पूरा क' देलनि। हुँनका एतेक धरि कहि देलनि जे अहाँके कखनहुँ मुखिया सँ सस्पेंड कयल जा सकैत अछि। फुचाई झा किछु बाज' चाहलनि, तैं बी. डी. ओ. साहेब डाँटि क' बैसा देलनि। की बाजब अहाँ, अहाँ तैं हमरहुँ सभक इज्जत खाक मे मिला देलहुँ। आब बाँकिये की रहल।

आमोद जी बजलाह, "श्रीमान प्रजातंत्र मे सबके अपन पक्ष प्रस्तुत करबाक अधिकार छैक। मुखिया जी की, कह' चाहैत छथि सुनि तैं लिऔन"।

फुचाई झा कर जोरि ठाढ़ भ' बजलाह, "सरकार! हम ई मानैत छी जे हमरा सँ गलती भ' सकैत अछि। हमहुँ लोके छी कोनो भगवान नहि, मुदा हमरा उपर जे आरोप लगाओल गेल अछि, सब निराधार अछि। आवेदन मे जिनका नाम क उल्लेख कयल गेल अछि, सब केओ एहिठाम उपस्थित छथि। कनेक हुँनकहुँ सँ पुछि लेल जाउ"।

बी. डी. ओ. साहेब, "हुँनकहि शिकायत पर तैं आवेदन लिखल गेल अछि। हुँनका सँ की पुछबनि।

फुचाई झा, "शिकायत मनगढ़न्तो तैं भ' सकैत अछि। ककरहुँ नीचा देखेबाक लेल वा व्यक्तिगत स्वार्थ क' पूर्तिक लेल।

बी. डी. ओ. साहेब, "ककर की स्वार्थ छैक, ई जाँचक विषय नहि अछि। तखन शिकायतकर्त्ता सँ अहाँक संतोषक लेल पूछल जा सकैत अछि। शिकायत पत्र मे जतेक लोकक नाम छलैक, बेरा–बेरी सब कँ बजाओल गेल। सब सँ बी. डी. ओ. साहेब पूछलनि मुदा केओ मुखियाक विरोध मे मुँह नहि खोललक। ओ सब तँ राति मे मेनेज भ' गेल छलैक। एहि तरहँ आमोदजीक द्वारा लगाओल एकहुँटा आरोप साबित नहि भेल। बी0 डी0 ओ0 साहेब बजलाह "प्रोफेसर साहेब हम तँ बुझैत छलहुँ अहाँ सब पढ़ल लिखल लोक छी, समाज कँ उचित दिशा प्रदान करब, समाजक पिछड़ापन दूर करब, ओकरा शिक्षित करब मुदा जँ अही लोकनि झूठक खेती करब तँ दोसरा सँ लोक की उम्मीद करत। अपने हमर कतेक समय बर्बाद कयल एकर बोध अछि अपने कँ। हम कतेक आवश्यक काज के छोडि क आयल छी।

प्रोफसर साहेब तँ अपने आश्चर्य चकित छलाह। जे सब हुँनका ओहिठाम जा' क' मुखियाक शिकायत कयने छल, ओएह सब एखन अपन बयान देवाकाल अपना बात सँ फिरि गेल।

मुखिया बजलाह, "सरकार ! आमोदजी कँ हम सब बड़ मानैत छियनि। पूरा गामक लोक मानैत छनि। हमरा मुखिया बनेबा मे सेहो हिनकर बहुत योगदान छनि। एकर ई तँ मतलब नहि भेल, जे–जे किछु हमरा हाथ मे नहि अछि, सेहो हम हिनका कहने क' दी"।

बी0 डी0 ओ0, "की मतलब ? ई की कहैत छलाह ?

फुचाई झा, "आमोद जी सब दिन पटना मे रहलाह। ओहिठाम बिजली–पानिक अभाव नहि छलैक। एहिठाम गाम मे मासक मास बिजली नहि रहैत अछि। आमोद जी ओकर कमी पूरा करबारक लेल जेनेरेटर लेलनि आ जेनेरेटर किरासन तेल पर चलैत छैक। ओकर खातिर आमोद जी कँ तीस लीटर किरासन तेल मासे–मासे चाही। अपनहि कहल जाउ, हम ककर पेट काटिक' हिनका तीस लीटर किरासन तेल देबनि। इएह हमरा दुनूक बीच मनमोटावक कारण अछि। एकरहि लेल पहिने तँ आमोद जी हमरा चेतावनी देलनि। फेर अपनेक ओहिठाम शिकायत केलनि।

आमोद, "ई सब मनगढ़न्त अछि। हम व्यक्तिगत रूपे हिनका सँ किछु

नहि माँगने छलियनि"। तँ सही की अछि अपनहि बाजल जाउ, "बी0 डी0 ओ0 साहेब बजलाह, "ओ अपना योजना मे सफल भ' गेलाह। फुचाई झा हुँनकहि सिखौला पर तँ सब किछु बाजि रहल छलाह। आमोदजी किछु उत्तर दितथि ताहि सँ पूर्वहि मुखियाक जतेक चाटुकार छल, सब बाजि उठल मुखियाजी ठीक कहैत छथि। ई गप्प हमरा सभक सोझाँ मे भेल छल। ई कहैत ओ सब हल्ला गुल्ला करब शरू क' देलक। जे ओहि मे आमोद जी क पक्ष मे बजबाक चेष्टा कयलक, तँ ओकर आवाज ओहि शोर मे दबि गेल। प्रोफेसर साहेब जे गामक कल्याणक लेल, गरीब–गुरूबाक मदतिक लेल फुचाइ झा पर आरोप लगौने छलाह। ओ स्वयं आरोपी भ' क' मुँह लटकौने अपना घर अयलाह। जे किछु दशा बाँकी बाँचि गेल छलनि, ओकरा पत्नी पूर्ण क' देलथिन्ह। तीन–चारि दिनक बाद एकटा कार्यवश प्रोफेसर साहेबक ओहिठाम गेलहुँ तँ घर मे ताला लटकल देखलियनि। पता लागल जे बाहर गेल छथि। नौ वर्ष बीत गेल एखन धरि आपस नहि आयल छथि। एहि सँ पूर्व आमोद जीक संग एकटा आर घटना घटल छलनि। दूर्गापूजाक अवसर पर ग्रामीण लोकनि कँ किछु सलाह देलथिन्ह। ग्रामीण लोकनि हुनका सलाह सँ आह्लादित भेलाह, मुदा जे गामक दबंग लोक छलाह, हुँनका इ विचार नहि पचलनि। हुँनका बुझायल जे एहि सँ ओकर नाम हमरा सँ वेशी प्रसारित भ' जायत। सब ओकरहि आगाँ–पाछाँ करत। ओ अपना चमचाक द्वारा ओहि योजनाक विरोध करबा देलनि। ओकर चमचा सब बाजल प्रोफेसर बाबू ! इ शहर नहि गाम छियैक। एहिठाम ओएह हेतैक जे अदौ सँ हमर बाप–दादा करैत आयल छथि। अहाँ एहि मे अपन दिमाग नहि लगाबू ! अहाँक वश चलेए तँ गामो मे छौड़ी सब कँ शहरे जकाँ साइकिल पर घुमा देबैक। ओहि दंबगक दबंगता मे प्रोफेसर आमोदक प्रगतिवाद ओहिना दबि गेल जेना, जन्मौटी नेना कँ केओ अनायास कँठ दाबि देने होमए।

इएह हाल प्रेम बाबूक भेलनि। ओ अपनहि गाम मे अपनहि समाजक बीच, अपनहि जन्मभूमि पर अनठिया कुकुर बनि गेलाह आ गाम छोड़बाक लेल विवश भ' गेलाह।

६

विदुरजी प्रेमक संग गाम मे जे कयलनि से तँ करबे केलनि, बोकारो मे सेहो एकटा गरीब विधबा सँ चरित्र हनन केर मामिला मे केश करबा देलनि। जखन ककरहुँ पर आफत–विपत्ति आबैत छैक तँ चारू दिश सँ, जाहि सँ ओकरा पड़ेबाक कोनो बाट नहि भेटैत छैक ओ मकराक जाल जकाँ सब दिश सँ घेरा जाइत अछि। विदुरक आक्रमण सेहो एहि नीतिक तहत भेल छलैक। ओ तँ सोचलक जे प्रेम उलझिक छटपटायत आ हमरा शरण मे खसत मुदा प्रेम तँ निर्मल लोक छल। ओकरा मन मे कोनो छल कपट नहि छलैक। ओ तँ ककरहुँ किछु बिगारने नहि छलैक। ओ गरीबक उत्थान कर' चाहैत छल। एहेन लोकक मदैत भगवानो करैत छथि। प्रेम ओहि भगवानक कृपा सँ विदुरक बनाओल चक्रव्यहू सँ बहराय, कतहुँ अन्यत्र चल गेल। जकरा बारे मे ककरहुँ पता नहि छलैक। ओकरा अपनहुँ नहि बुझल छलैक, जे ओ कत' जा रहल अछि। एहि सम्बन्ध मे विदुरोक किछु पता नहि चललैक। एकर खबरि मात्र प्रेमक दुनू बेटा कँ छलैक। ओकरा लग मे प्रेमक टेलीफोन नम्बर छलैक। जाहि सँ कहिओ काल सबके एक दोसर सँ गप्प–शप्प भ' जाइत छलैक। ओना प्रेम गाम छोड़ि देलक, ई तँ रघुबीरो बुझैत छल मुदा कतए गेल इ रघुबीरोके नहि बुझल छलैक। विदुर प्रेम के प्रकट कर' चाहैत छल। ओ इ बुंझ' चाहैत छल जे प्रेम एखन कत' अछि आ कोन दशा मे अछि। ओकरा कतेक दर्द छैक। ओकरा संदेह छलैक जे सब दिन तँ ओ बोकरो मे रहल तँ भ' सकैत अछि जे ओ ओतहि कोनो डेरा ल' क' रहि रहल हो। एकरहि लेल विदुर बोकारो आबिक प्रेमक विरूद्ध षटयंत्र शुरू कयलक। ओ सोचलक जे प्रेम कतहुँ होयत तँ एहि नोटिस पर कोर्ट अवश्य आओत। मुदा से नहि भेलैक। प्रेम बोकारोक सरकारी डेरा खाली क चुकल छलाह आ ओ डेरा गांगुली बाबू के भेटि गेल। गांगुली जी प्रेम सँ जुनियर छलाह। दुनू गोटे मे खूब पटैत छलनि। दुनू गोटे के परिवारिक सम्बन्ध बड़ नीक छलनि। बंगाली घर कँ सजेबा मे सिद्ध–हस्त होइत अछि। गांगुली बाबूक घर

देखि मालती बड़ प्रभावित भेलीह। ओ खासक' इ कला सिखबाक लेल गांगुली बाबूक ओहिठाम वेशी काल जाइत छलीह,आ हुँनका कनियाँ के अपना डेरा बजाबैत छलीह। पहिने तँ मालती के लागल जे गांगुली बाबूक कमाइ प्रेम सँ वेशी अछि। तँ ने एतेक कीमती सामान सँ घर भरने अछि, मुदा जखन गागुंली बाबूक कनियाँ मालतीक घर कँ सेहो सजा देलनि, तखन मालती कँ विश्वास भ' गेलनि जे इ कला थीक। एहेंन कला अवश्य सिखबाक चाही।

एकदिन कचहरीक एकटा कर्मचारी कोर्टक नोटीस ल' क' आयल आ डेरा क' कुंडी खटखटायब शरू क' देलक। ओकर आवाज सुनि क' गांगुली बाबू बाहर अयलाह आ पूछलनि, "क्या बात है किसे खोजता है"।

चपरासी, "प्रेम बाबूक एकटा नोटीस अछि। प्रेम बाबू कतए छथि।

गांगुली बाबू "ओरे बाबा, यहाँ कोइ प्रेम–ब्रेम नहि रहता है। प्रेम तो कबका डेरा खाली कर चला गया। छः महीना से इधर को हम रह रहा है।

चपरासी, "तखन प्रेम बाबू कत' भेटताह ?

गांगुली बाबू, "इ हमको नही मालूम कि प्रेम बाबू किधर को मिलेगां

चपरासी, "एहि नोटीस मे तँ एहिठामक पता लिखल गेल अछि। एकटा काज करू, इ नोटीस अहीं ल' लीअ। नहि तँ हम एकरा अही देवाल पर साटि देब।

गांगुली बाबू, "ओरे बाबा, प्रेम का नोटीस है, हम कैसे ले लेगा। कोर्ट का मामला है, हम क्या जबाब देगा। सब गण्ड गोल हो जायगा। तुम ऐसा करो, इसे लेकर कोर्ट आपस चले जाओ। वहाँ रिपोर्ट कर दो कि प्रेम रिटायर हो चुका है तथा डेरा खाली कर अपने घर चला गया।

चपरासी, "हुँनकर घर कत' छनि इएह कहि दीअ' ?

गांगुली बाबू, "ओरे बाबा, क्यों पागल के माफिक हमरा दिमाग खाता है। एकबार बता दिया कि हमको कुछ नही मालूम है। चपरासी ओहि नोटीस के देबाल पर साटि क' चल गेल। गांगुली बाबू कतबहुँ हल्ला–गुल्ला केलनि मुदा ओ चपरासी किछु नहि सुनलक। गांगुली बाबू गौर सँ नोटीस के देखलनि तँ पता लगलनि जे सी0 जी0 एम0 कोर्ट सँ नोटीस आयल अछि। चौबीस जूनक' प्रेमक कोर्ट मे पेशी अछि आ केश केनिहारि रानी

नामक केओ स्त्री अछि। ओ प्रेम के टेलीफोन केलनि मुदा प्रेम कत' छथि इ केओ नहि बुझए। तैं प्रेम ओ टेलीफोन नहि उठौलनि। हुँनका बुझल छलनि जँ कोनो आवश्यक गप्प हेतैक तँ गांगुली बाबू विजय सँ अवश्य सम्पर्क करताह आ सैह भेल। गांगुली बाबूक जखन प्रेम सँ गप्प नहि भेलनि तँ ओ विजय के टेलिफोन केलनि। विजय के सब स्थिति सँ अवगत करा देलनि। ओ दोसरे दिन आबिक' एकटा ओकील सँ सम्पर्क केलक। संयोगवश ओ ओकिल विजय केर संगीये छल। दुनू संगे–संगे आई0 एस0 सी0 कयने छल। ओकर नाम छल सुधाकर। सुधाकर गरीब घरक विद्यार्थी छल कहुनाक' बी0 ए0 केलक आ ओकर बाद एल0 एल0 बी0 क' क' ओहीठाम प्रैक्टीस कर' लागल। सब सँ पहिने सुधाकर केशक नकल बहार करबौलक। ओहि नकल केर अनुसार प्रेम पर जे आरोप लगाओल गेल छल ओ निम्न अछि :–

सेवा मे,

श्रीमान् मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी बोकारो

महाशय,

हम रानी, साकिन–बोकारो बिधबा, तीन बच्चाक माय शपथ पूर्वक सूचित क' रहल छी जे आइ हम प्रेम बाबूक कारण तीनू बच्चाक संग रने–वने बौआ रहल छी। आइ सँ पन्द्रह वर्ष पूर्व हम विधवा भ' गेलहुँ आ अपन जीवन–निर्वाह करबाक लेल घरे–घरे चौका–बर्तन के काज कर' लगलहुँ। ओही क्रम मे प्रेम बाबू हमरा चौका–बर्तन साफ करबाक लेल रखलनि आ सय टाका महीना मजदूरी देब गछलनि। उपर सँ जलखै–पानिपिआइ सेहो। हम दुनू सांझ आबिक' अपन काज कर' लगलहुँ। जखन मास खतम होइत छलैक तँ प्रेम बाबू हमरा एक सय टाका द' दैत छलाह। एक दिन हम काज खतम क' क' आपस जेबाक लेल ठाढ़ि रहीं ओ मासक' अन्तिम दिन छलैक। ओहि दिन हमरा दरमाहा भेटैत छल, तैं हम प्रतिक्षा मे रही। प्रेम बाबू हमरा भीतर बजौलनि आ हमरा हाथ मे दू सय टाका देलनि। हम ओकरा खोलि क' देखलहुँ तँ ओहि मे पचास रूपयाक चारिटा नोट छलैक। हमरा भेल जे ई धोखा सँ आबि गेल। हम ओहि सँ दू टा नोट प्रेम बाबू के आपस करैत बजलहुँ, "मालिक

ई वेशी अछि, एकरा राखि लीअ"। ओ बजलाह, "इहो तोही राखि ले। हमरा दिश सँ बक्सीस बुझिहैं"। ओहि काल हम हुँनकर मनक भाव नहि बुझि सकलहुँ। हमरा भेल जे हमरा काज सँ (साफ–सफाइ) मालिक खुश छथि, तैं बकसीस द' रहल छथि। हम दुनू सय टाका आँचरक खूँट मे बान्हि घर जेबाक लेल पाछाँ घुमलहुँ कि अचानक प्रेम बाबू हमरा पाछाँ सँ पकड़ि लेलनि। हम एकदम हड़बड़ा गेलहुँ। हम अपना भरि छोड़ेबाक लेल बड़ प्रयत्न केलहुँ मुदा पुरूष लग स्त्रीगणक की चलैत छैक। ओ दुनू हाथ सँ पकड़ि हमरा संग ओहने व्यवहार कर' लगलाह जेना पति–पत्निक संग होइत छैक। जखन हमर सब प्रयास बेकार भ' गेल तँ हम प्रार्थना करब शरू क' देलहुँ, "मालिक ऐना किएक करैत छी। केओ देखि लेत तँ हमरा तँ जे होयत से होयबे करत अहूँक बदनामी होयत। अहाँ कतेक पैघ लोक छी। एकर चर्चा कोलोनी मे सेहो होइत रहैत अछि। दुनू गोटे बदनाम भ' जायब"। ओ बजलाह, आइ केओ नहि देखत। सब केओ बाहर विवाह मे गेल अछि। काल्हि धरि आओत। हम कतेक दिन सँ एहि दिनक प्रतीक्षा क' रहल छलहुँ। घर आँगन मे बाढ़नि दैत काल हमरहुँ लागल छल जे घर मे केओ नहि अछि मुदा हम सोचलहुँ जे भ' सकैत अछि जे कतहुँ अगल–बगल मे कोनो पड़ोसी क' ओहिठाम गेल होथि। हम प्रेम बाबू कँ कहलियन्हि जे मालीक! अहाँ तँ पुरूष छी, केओ किछु नहि बाजत मुदा हमर की होयत। हम गरीब विधबा नारी जेकर आगू–पाछू केओ नहि, ओकर कि हेतैक। लोक तँ हमरा पर अगुंर उठाओत। हम ककर–ककर मुँह बन्न करब"। मुदा हुँनका पर वासना क' भूत एहेन सवार छल जे हमर ओ किछु नहि सुनलनि आ अपन मनमानी करैत रहलाह। हमरा देहक वस्त्र सब घिचिक हटा देलनि आ एतेक कसिक अपना बाहु–पाश मे जकड़ि लेलनि जे हम चू–चाँ तक नहि क' सकलहुँ। हम विवश भ' गेलहुँ आ निढ़ाल भ' क' पलंग पर खसि पड़लहुँ। फेर कतेक काल धरि ओ की की केलनि, हम किछु नहि बुझलहुँ। जखन हमरा होश भेल आ आँखि खुजल, तँ दिनक तीन बाजि रहल छलैक। हमरा देहक वस्त्र सब एम्हर–ओम्हर छिड़ियायल छल आ देह' क पोड़े–पोड़ दुखा रहल छल। उठबाक साहस नहि होइत छल। कहुँनाक' उठलहुँ आ अपना देहक वस्त्र

सब सरियेलहुँ आ चुपचाप बिना ककरहुँ किछु कहने अपन घर चल गेलहुँ। देह मे एतेक कमजोरी लागि रहल छल जे ओहि दिन फेर काज करबाक लेल नहि अयलहुँ आ किछु खा क' सूति रहलहुँ। दोसर दिन जखन काज करबाक लेल अयलहुँ तँ प्रेम बाबूक कनियाँ सेहो आबि गेल छलीह। हमरा मन भेल जे एकर चर्चा हुँनका सोझा करी, मुदा फेर सोचलहुँ कनियाँ की करथिन। दू–चारि टा कटु वचन बाजि देतीह। घर सँ थोरहि भगा देतीह। पति छथिन, हुँनकहि कमाई पर तँ घर चलैत छनि। वेशी सँ वेशी दू–चारि दिन बाजब–भूकब छोड़ि देतीह। दू–चारि दिनक बाद तँ सलाह भइये जेतनि। कदाचित जँ कोनो दोष मढ़ि क' हमरहि हटा देथि तँ हम गरीब, वेवश आ लाचार कत' जायब। जँ इ गप्प काने–कान पसरि गेल तँ हमरा दोसर केओ रखबो नहि करत। स्त्रीगण अपना पतिक इज्जति खूब करैत छथि। हुँनका उजोर चड़बाक इजाजति कखनहुँ नहि दैत छथि। ई सब गप्प सोचि पेटक खातिर मनक व्यथा के मनहि मे दबा लेलहुँ। मुदा प्रेम बाबूकँ एहि सँ संतोष नहि भेलनि। हुँनकर संकोचक आरि टुटि गेल छलनि। ओ इहो सोचने होयताह जे एखन धरि रानी किछु नहि बाजल, एकर मतलब ओहो एहि मे राजी अछि, मुदा हम तँ भविष्य के देखि विवश छलहुँ। करू तँ की करू आ प्रेम बाबू हमरा विवशताक नाजायज फायदा उठा रहल छलाह। ओ जखन तखन घर सून रहला पर हमरा दबोचि लैत छलाह आ अपन वासनाक भूख मेटा लैत छलाह। एकरा एवज मे प्रेम बाबू हमरा दरमाहाक अलावे सय दू सय टाका द' दैत छलाह। किछु दिनक बाद हमरा एहेन आभास होमय लागल जे हमरा पेट मे किछु गड़बड़ी भ' रहल अछि। एकटा नर्स सँ चुपचाप सम्पर्क कयलहुँ तँ ओ बाजल, अहाँक पेट मे बच्चा अछि''। ई सुनितहि हम हड़बड़ा गेलहुँ। हमरा जेना लागल जे धरती आ आकाश एके संगे नाचि रहल अछि। हमरा आँखिक सोंझा मे अन्हार भ' गेल। आब हमर पोल खुजि जायत। आब हम एत' कोना रहब। मौका पबितहि हम सब गप्प प्रेम बाबू कँ बजलहुँ। हम देखलहुँ जे हमर गप्प सुनि क' प्रेम बाबू सेहो घबरा गेलाह आ बड़ी काल धरि चुप रहलाह। हम पूछलियनि मालिक! आब की हेतैक। आब तँ सबटा भंडा फूटि जायत । ओ बजलाह

चिन्ता नहि कर, हम डाक्टर सँ गप्प करैत छी। एकरा नष्ट करा देल जेतैक''। मुदा हम ओहि काज सँ डेरा गेलहुँ। हमरहि टोल मे एकटा छौड़ी छलैक बुलकी। ओकरा विवाह सँ पहिनहि पेट मे बच्चा भ' गेलैक। बदनामी सँ बचबाक लेल माय–बाप ओकरा डाक्टरक ओहिठाम ल' गेल। ओहिठाम ओकरा नष्ट कराओल गेलैक मुदा ओहि क्रिया मे ओकरा देह सँ ततेक ने खुन बहरेलैक जे ओकर बाँचब कठिन भ' गेलैक। ओकर बाप अपना देहक चारि बोतल खून देलकै, तखन ओ ठीक भेल। बाप रे बाप! हमरा एतेक खून के देत। हमरा तँ आगा–पाछाँ केओ अछिओ नहि। नहि–नहि हम एहेन काज नहि करायब। तखन हम तीन मासक लेल बाहर चल गेलहुँ। ओतए एकटा दूरक सम्बन्धी रहैत छल। ओतए बच्चाक जन्म देलहुँ आ पुनः आपस अयलहुँ। ओहि मे जे खर्च भेल से प्रेम बाबू उठौलनि। एहि प्रकारे हम करीब पन्द्रह वर्ष सँ प्रेम बाबूक सेवा मे छीं। हुँनकर उपहार स्वरूप दूटा बेटी आ एकटा बेटा हमरा लग अछि। एकरा सभक भरण–पोषण लेल प्रेम बाबू हमरा एक हजार टाका माहबारी गछने छलाह। किछु दिन देबो केलनि मुदा अनायास छः मास सँ ओ हमरा बिना किछु कहने लापता छथि। हम डेरा पर सेहो कतेक बेर गेलहुँ तँ पता लागल, जे ओ डेरा छोड़ि देलनि। हम तीन बच्चाक संग एम्हर–ओम्हर भटकि रहल छी। हुँनका आफिस मे सेहो गेलहुँ तँ पता लागल जे ओ रिटायर भ' गेल छथि आ एहिठाम सँ अपना पैतृक गाम चल गेल छथि। हमरा इहो नहि बुझल अछि जे हुँनकर गाम कत' छनि। तँ हम न्यायक वास्ते सरकारक ओहिठाम फरियाद ल' क' आयल छी आ ई अपेक्षा राखैत छी जे सरकार एकर उचित न्याय करब। जाहि सँ हमर आ हमरा बच्चाक जीवन बाँचि सकत।

निवेदक–

रानी

बोकारो।

विजय (सांस छोड़ैत) एतेक पैघ साजिस.....। के क' सकैत अछि? पहिल गप्प तँ इ जे हमरा डेरा पर ''रानी'' नामक केओ नौकरानी काज नहि करैत छल। हमरा डेरा पर जे काज करैत छल ओकर नाम छलैक

पद्मा। ओ विवाहित छल आ ओकरा दूटा बच्चा छलैक। ओ अत्यन्त व्यवहार कुशल छल आ सब सँ हिल–मिलक' रहैत छल। ओकर पति एकटा सेठक ओहिठाम कपड़ा दुकान मे काज करैत छलैक। ओ दुनू प्राणी इमानदार छल। हमरा सभक पैसा टेबुलो पर राखल रहि जाइत छल मुदा ओ कहिओ नहि छूलक। अचानक ई रानी कत' सँ आबि गेल। एकर तँ नामो चर्चा कहिओ नहि सुनने छलहुँ आ हमर बाबूजी..... ओ तँ सीधा मुँह ककरहुँ सँ गप्पो नहि करैत छथि। हुँनका पर एतेक विभत्स आरोप, निश्चय केओ व्यक्ति पूवाग्रह सँ प्रेरित भ' क' करा रहल अछि। की ओकिल साहेब, अपनेक की मन्तव्य अछि ?

सुधाकर बजलाह, " देखू विजय, एहि केश मे कोनो दम नहि अछि। इ साफ बनाओल गेल अछि' जतेक ढंग सँ आवेदन कँ सजाओल गेल अछि, ओहि सँ स्पष्ट भ' रहल अछि, जे इ गढ़ल गेल अछि। तथापि आरोप–आरोप होईत छैक। यावत् एकरा विरोध मे तर्क प्रस्तुत नहि करब, तावत् आरोप मुक्त नहि होयब। एहि मे शिकायत कर्ता आ गवाह के तोरब आवश्यक छैक। कोर्टक समक्ष यावत ओ बयान नहि बदलत, तावत किछु भ' सकैत अछि। दोसर गप्प अहाँ बाजल छलहुँ, केओ पूवाग्रह सँ प्रेरित भ' इ सब करा रहल अछि, तैं तह मे गेला सँ ओहो स्पष्ट भ' जायत। जँ एकरा हल्का सँ लेबैक आ विपक्षीक गवाह गुजरि जायत तँ मुश्किलो मे पड़ि सकैत छी।

विजय, "कि अपने के एहेन नहि लागि रहल अछि। जकर कोनो नाम –चर्चा नहि, ओ हमरा बाबूजी पर हुँनका आचरणं केर विरूद्ध आरोप लगा रहल अछि। इएह घटना जँ अन्यत्र देखाओल गेल रहैत तँ कनेक कालक लेल मानि लितहुँ मुदा डेराक नौकरानीक रूप मे प्रस्तुत कयल गेल अछि, जे एकदम झूठ अछि।

सुधाकर, "बहस केर दौरान ओहो गप्प सामने आबि जायत, जखन गवाह टूटत तँ ओ सब किछु अपने भूत जकाँ बकब शरू क' देत। जे किछु नहिओ पूछबै, सेहो बाजत। तैं आवश्यकता छैक बहस के दौरान ओकरा पर चोट करबाक आ ओ सब हम क' लेब। अहाँ निश्चित रहुँ"।

विजय, "निश्चिंत कोना रहुँ। एकटा आर समस्या अछि" ?

सुधाकर, "हम अहाँक समस्या बुझि रहल छी। एहि दोकान मे केवल

समस्येक समाधान तँ होइत छैक। बाजू केहेन समस्या अछि" ?

विजय, "अहाँ की बुझैत छियैक" ?

सुधाकर, "इएह ने जे चाचाजी एहिठाम नहि छथि। हुँनका बदला मे हाजीरी के देत आ एकर पैरवी कोना हेतैक"।

विजय, " जी, अहाँ तँ सही मे बुझि रहल छलहुँ। हमहुँ इएह कह' चाहैत छलहुँ। ओ माय के संग तीर्थाटन पर गेल छथि। हमरा तँ इहो नहि बुझल अछि जे एखन कत' होयताह"।

सुधाकर, " बस एतबहि टा गप्प ने।

विजय, "जी" !

सुधाकर, " एकरहुँ समाधान भ' सकैत अछि। जँ बाबूजीक एवज मे अहाँ कोर्टक समक्ष उपस्थित होई।

विजय, "मुदा अभियुक्त तँ बाबूजी छथि। ई कोना सम्भव हेतैक"। एहि मे कोनो तरहक संकट तँ नहि आबि सकैत अछि"।

सुधाकर, "संकट किएक आओत। संकट तँ तखन आबैत छैक जखन केओ चोरा–नुका क' काज करैत अछि। कोर्ट के गुमराह करैत अछि। हम सब तँ जे किछु करब से कोर्टक अनुमति ल' क' करब"।

विजय, "एहेन प्रावधान छैक" ?

सुधाकर, "न्याय संहिता मे एहेन स्पष्ट कतहुँ नहि छैक, मुदा परिवेश उत्पन्न कयला सँ एहेन कतेक ठाम भेलैक अछि। ओ सब हम क' लेब। ई हमर काज अछि"।

विजय, "तखन हमरा कि कर' पड़त।

सुधाकर, "अहाँ के हाकीम केर समक्ष शपथ पत्र मे ई घोषणा कर' पड़त जे हमर बाबूजी तीर्थ करबाक लेल गेल छथि। ओ यावत् घुरिक' औताह तावत् हम हुँनका स्थान पर अदालत केर कार्यबाही मे सहयोग कर' चाहैत छी"।

विजय, "बस एतबहि" ?

सुधाकर, "बस एकरहि विस्तृत रूपे शपथ पत्र तैयार कर' पड़तैक आ कोर्टक समक्ष उपस्थित भ' एकरा स्वीकार कर' पड़त"।

विजय, "ठीक छैक! अहाँ शपथ पत्र तैयार करू"। हँ, अहाँक फीस कतेक भेल"।

सुधाकर, "अपनहुँ घर मे फीसक गप्प होइत छैक ? तखन हमर जे व्यवसाय अछि, ओहि मे सगुन स्वरूप किछु द' दीअ"।

विजय, "इ तँ बड़ थोड़ भेल"?

सुधाकर, " बहुत भेलैक। हम एहि सँ संतुष्ट छी। जखन कार्य सम्पन्न भ' जेतैक तखन जे इच्छा होयत से द' देब।

सुधाकर शपथ पत्र तैयार केलनि जे एहि तरहेँ छलैक।

श्रीमान,
मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी महोदय

हम विजय कुमार चौधरी पुत्र श्री प्रेम कुमार चौधरी, साकिन धनकाही, मधुबनी शपथ पूर्वक घोषणा क' रहल छी जे हमर बाबूजी बोकारो स्टील सीटी सँ दू वर्ष पूर्व रिटायर क' चुकल छथि। रिटायर भेलाक बाद ओ गामहि मे रहैत छथि। एक मास पूर्व ओ तीर्थाटन पर निकलि गेल छथि। ओ एखन कत' छथि से हमरा सब कँ बुझल नहि अछि। एहि बीच कोनो सूत्र सँ पता लागल जे हुँनका उपर रानी नामक महिला मुकदमा क' देने छनि। एहिठाम आबि क' पता लगौलहुँ तँ सत्य प्रतीत भेल। हमर श्रीमान सँ निवेदन, जे यावत् हमर बाबूजी तीर्थाटन सँ आपस नहि आबैत छथि, तावत् मुकदमाक कारबाई स्थगित राखल जाय, वा हुँनका गैरहाजीरी मे एकर पैरवी करबाक अधिकार हमरा देल जाय। जाहि सँ न्यायलय केर काज सुचारू रूप सँ सम्पादित भ' सकए। दोसर गप्प, ई मुकदमा एक साजिस के तहत कयल गेल अछि। रानी नामक कोनो महिला हमरा डेरा पर काज करितहि नहि छल आ हमर बाबूजी बत्तीस वर्ष एहिठाम कार्यरत रहलाह। ककरहुँ सँ कोनो वादो–विवाद नहि भेलनि। एहि शिकायत पत्र मे जे हुँनकर चरित्र कँ दर्शाओल गेल अछि,ओ हुँनका स्वभावक विपरीत अछि। इ शिकायत पत्र एकटा नीक लोक कँ कादो लगेबाक शिवा आर किछु नहि अछि। सर्म्पूण शिकायत पत्र मिथ्या अछि। तँ हमर निवेदन जे एहि केश कँ खारिज कयल जयबाक चाही।

विजय कुमार चौधरी

चौबीस जूनक' विजय अपना ओकिल सुधाकर केर संग अदालत गेलाह आ शपथ पत्र दाखिल केलनि। शपथ पत्र पर बहस सेहो भेल। पहिने तँ सरकारी ओकिल जे रानी के दिश सँ पैरवी करैत छलाहु बजलाह "विजय कोनो स्थिति मे पैरवी नहि क' सकैत छथि। प्रेम के हर हालत मे कोर्टक समक्ष उपस्थित होयब आवश्यक अछि। अन्यथा कोर्टक अवमानना मानल जायत"।

विजय केर दिश सँ सुधाकर बजलाह, "श्रीमान अवमाननाक प्रश्न तँ तखन ने उठत, जखन प्रेम जी के द्वारा सम्मन प्राप्त कयल जायत"। "पेस्कार बाबू सँ पता लागल जे हुँनका डेराक आगाँ मे सम्मन साटि देल गेल अछि'," सरकारी ओकिल बजलाह। सुधाकर बजलाह, "ककरहुँ दोसरक डेरा मे साटिक' जँ इ कहल जाय जे प्रेम बाबूक डेरा मे साटि देलहुँ तँ इ उचित गप्प नहि। कानूनक रक्षक जँ स्वंय ओकर निरादर करताह तँ अन्य सँ की अपेक्षा कयल जायत"।

सरकारी ओकिल, "श्रीमान कोर्ट मे प्रेमबाबूक बालक उपस्थित छथि। हुँनकहि सम्मन प्राप्त करा देल जाउ"।

सुधाकर, "श्रीमान कथमपि नहि! जखन कोर्ट कारबाइ मे प्रेम बाबूक एवज मे हुँनकर बेटा नहि ठाढ़ भ' सकैत अछि तँ हुँनकर ओ सम्मन किएक प्राप्त करताह। इ कोर्टक दायित्व थीक जे प्रेम बाबू जतए होथि, हुँनका ताकि क' सम्मन प्राप्त कराबए"। अन्ततः सरकारी ओकिल के सुधाकर केर दलील मानए पड़लनि आ ओ विरोध नहि केलनि। जज साहेब अपना अन्तरिम आदेश मे कहैत छथि, विजय केर शपथ पत्र मे दू टा पक्ष राखल गेल अछि। प्रथम पक्ष कँ अनुसार हुँनका ता धरि केश मे पैरवी करबाक, अनुमति देल जयबाक चाही, जा धरि हुँनकर पिता प्रेम कुमार चौधरी तीर्थाटन सँ आपस नहि आबि जाइत छथि, वा हुँनका आपस अयला धरि कारबाई स्थगित राखल जयबाक अनुरोध सेहो कयल गेल अछि। दुनू पक्षक ओकिल एहि पर अपन–अपन दलील पेश केलनि। अदालत एहि निष्कर्ष पर आयल जे अदालत केर लेल केश के स्थगित राखब उचित नहि होयत। तँ आवेदनक प्रथम पक्ष के स्वीकार करैत विजय के इ अनुमति देल जाइत अछि, जे ओ प्रेम कुमारक गैर हाजीरी मे अदालत के

सहयोग करथि। दोसर पक्ष में कहल गेल अछि जे प्रेम कुमार निर्दोष छथि। हिनका पर लगाओल गेल आरोप मिथ्या अछि। एकरा खारिज कयल जयबाक चाही। एहि सम्बन्ध मे बिना सुनबाई केर किछु कहब कठिन अछि। सुनबाई केर दौरान जँ इ आरोप मिथ्या साबित भ' जाइत अछि तँ निश्चय प्रेम कुमार आरोप मुक्त क' देल जेताह। सुनबाई सँ पूर्व एहि विषय पर कोनो निर्णय लेब उचित नहि। अगिला तारीख तीन जुलाई मुकर्रर करैत कोर्टक कारबाई स्थगित कयल जाइत अछि।

अगिला तारीख तीन जुलाइ क' इजलाशक एक कठघरा मे रानी आ दोसर मे विजय ठाढ़ भेल। दुनू पक्ष सँ बहस शरू भेल।

सरकारी ओकिल, "सरकार ! प्रेम कुमार पेशा सँ अभियंता एय्यास प्रवृतिक लोक छलाह। ओ रानी सनक गरीब विधबाक वेवशी आ मजबुरी क' फायदा उठौलनि। आ अन्त मे शहर सँ एना गायब भ' गेलाह, जेना गदहाक माथ सँ सिंग। आई हुँनकहि कारण रानी अपन तीन बच्चाक संग रने–वने छिछिया रहल अछि। ओकरा उचित न्याय भेटक चाही आ प्रेम कुमार कँ कठोर सँ कठोर दण्ड, जाहि सँ फेर केओ व्यक्ति एहेन काज नहि करथि।

सुधाकर, "सरकार एहि दलीलक हमहूँ समर्थन करैत छी। रानीकँ अवश्य न्याय भेटबाक चाही। वशर्ते कि ओकरा संग अन्याय भेल हो मुदा प्रेम कुमार कँ कठोर सँ कठोर दण्ड देल जाय, एकर हम विरोध करैत छी। यावत् आरोप सिद्ध नहि होइत अछि, तावत्"।

सरकारी ओकिल, "सरकार ! एहि सँ पैघ अन्याय कि हेतैक। हमरा लोकनि केवल भाषण दैत छी, नारी कँ उचित अधिकार भेटक चाही। ओ शक्तिस्वरूपा छथि ओ मातृशक्ति छथि। हुँनका आरक्षण द' क' समानता मे आनक चाही मुदा हम देखैत छी जे जतेक लोक भाषण दैत छथि। ओहि सँ वेशी अत्याचार, दुराचार आ बलात्कार नारीक संग भ' रहल अछि। ओ बेचारी तँ अपन आबरू बचाबक लेल किछु बाजि नहि सकैत अछि। आ दुष्कर्मी साक्ष्य गवाहक' अभाव मे बाँचि जाइत अछि। जँ केओ साहस क' क' न्याय लेल आगु बढ़ैत अछि, तँ ओकरा ततेक जलील कयल जाइत अछि, जे ओही डर सँ पुनः केओ आगु नहि आबैत अछि।

सुधाकर, " सरकार! आर किछु हो, मुदा सरकारी ओकिल भाषण खूब नीक दैत छथि। हिनका सनक लोकक स्थान एहि कोर्ट मे नहि भ' क' संसद भवन मे होयबाक चाही। जखन नारी के मातृ स्वरूपा कहैत छियैक आ इ परम सत्य सेहो अछि। माँ सदैव पूजनीय छथि वन्दनीय छथि। हुँनका समानता मे लाबक प्रयास की हुँनकर उत्थान होयत वा पतन? तँ इ सब विषय वस्तु राजनीतिज्ञेक लेल उचित छैक। एहि न्यायालय मे ओकर कोनो आवश्यकता नहि छैक। एहिठाम तँ केवल तथ्यक आधार पर दलील पेश कयल जयबाक चाही। दोसर गप्प डाउट आफ बेनीफीट ककरा भेटक चाही ई निर्णय तँ सरकार करताह। मुदा डाउटक स्थिति आओत तखन ने।

सरकारी ओकिल, " ई अहाँ की कहि रहल छी। एकर अधार अहाँ लग की अछि "।

सुधाकर, "हमरा लग एकर कोनो आधार नहि अछि। जे वस्तु अछिये नहि ओकर आधार की हेतैक"।

सरकारी ओकिल, "कि मतलब" ?

सुधाकर, "सरकार! एहि शिकायत पत्र के केवल देखला सँ प्रतीत होइत अछि जे ई मनगढ़न्त अछि, बनाओल गेल अछि फरेब कयल गेल अछि, एकरा सत्य सँ कोनो वास्ता नहि छैक या तँ ई ककरहुँ चालि अछि वा टाका ऐंठबाक सुनियोजित योजना"।

सरकारी ओकिल, " बहुत बढ़िया भाषण देब तँ केओ अहाँ सँ सिखए। भाई साहेब इ कोर्ट थिकैक। एहिठाम दलीलक अधार अभिलेख वा गवाह होइत छैक"।

सुधाकर, "इएह तँ हमहुँ कहि रहल छी। अपने शिकायत पत्रक संग घटनाक सम्बन्ध मे कोनो अभिलेख वा गवाहक कहाँ नाम देल अछि। तँ तँ एहेन प्रतीत भ' रहल अछि जे इ केश झूठ पर आधारित अछि"।

सरकारी ओकिल, "सरकार! हमर मोवक्किल जिनका भोजनो–वस्त्र पर आफत छनि ओ तथ्य अभिलेख कत' सँ जुटा पाओतीह। तँ हुँनका शिकायत पत्र पर विचार करबाक चाही। नहि कि व्यर्थ वाद–विवाद मे न्यायालय केर समय नष्ट करबाक चाही। सुधाकर जी जँ कोनो गवाह

कँ पेश कर' चाहथि तँ पेश क' सकैत छथि।
सुधाकर, "सरकार! हम कोनो गवाह के पेश नहि करब। हमरा लग एकर गवाह नहि अछि। गवाह तँ घटनाक साक्षी होइत अछि। जखन कोनो घटने नहि छैक तँ गवाह कथीक। सरकार हम रानी सँ जे शिकायत कर्ता छथि किछु पूछ' चाहैत छी" ?
जज साहेब, "अवश्य पुछिऔन"।
सुधाकर, "(रानी सँ) अहाँक नाम ?
रानी, "रानी"।
सुधाकर, "की करैत छी" ?
रानी, "एखन तँ रोड पर छी! माँगि–चाँगि क' गुजर क' रहल छी"।
सुधाकर, "एहि सँ पुर्व कि करैत छलहुँ"।
रानी, "एहि सँ पूर्व प्रेम बाबूक ओहिठाम चौका बर्तन करैत छलहुँ"।
सुधाकर, "ओतए अहाँके कतेक टाका भेटैत छल" ?
रानी, " सय टाका"।
सुधाकर, "ओहि सँ अहाँक गुजर भ' जाइत छल" ?
रानी, "आर दू–तीन ठाम काज करैत छलहुँ"।
सरकारी ओकिल, "सरकार सुधाकर जी हमरा मोवक्कील सँ फालतू प्रश्न पूछैत छथि। जकर एहि केश सँ कोनो मतलब नहि छैक। ओ हमरा मोवक्कील के उलझाव चाहैत छथि।
सुधाकर, "सरकार हम जे किछु पूछि रहल छी, ओकर मतलब एहि केश सँ छैक"। सरकारी ओकिल के डर होइत छनि जे कतहुँ असलियत ने प्रकट भ' जाय।
जज साहेब, "ठीक अछि, अहाँ पूछिऔक"।
सुधाकर, "हँ रानी तखन आर अहाँ की करैत छलहुँ"।
रानी, "दू–तीनटा आर घर मे काज करैत छलहुँ"।
सुधाकर, कोर्ट मे बैसल बच्चा दिश इशारा करैत। ई तीनू बच्चा अहींक थीक" ?
रानी, " जी"।
सुधाकर, " एकर पिता के अछि?

रानी, " एकर पिता प्रेम बाबू छथि"।
सुधाकर, "की प्रेम बाबूक संग अहाँक विवाह भेल छल" ?
रानी, "जी नहि विवाह तँ नहि भेल छल, मुदा.....
सुधाकर , " मुदा..... मुदा कि"?
रानी, "मुदा ओ सब किछु भेल जे पति–पत्नीक बीच विवाहक बाद होइत छैक"।
सुधाकर, "एकर किछु प्रमाण अछि?
रानी, "जी हँ, प्रमाण अछि, (हाथ सँ देखावैत) ओ तीनू बच्चा"।
सुधाकर, "ओ तँ ककरहुँ दोसरोक भ' सकैत अछि।
रानी, "भ' तँ सकैत अछि, मुदा दोसरक नहि थीक"।
सुधाकर, " ई कोन अधार पर कहि रहल छी। एकर कोनो प्रमाण अहाँ लग अछि"?
रानी, " कोनो बच्चाक पिता के छथि, एकर गवाह बच्चाक माये टा भ' सकैत अछि, दोसर केओ नहि। केओ गोटा साबित नहि क' सकैत छथि जे हुँनकर पिता के छथिन्ह।
सुधाकर, "मुदा अदालत कँ एकर प्रमाण चाही, आ एहि वैज्ञानिक युग मे सब किछु सम्भव अछि। अहाँ कँ पहिल बेर प्रेम बाबू कत' भेटल छलाह? होटल मे वा कोनहुँ पार्क मे।
रानी, " होटल आ पार्क मे किएक भेट हेताह। हम तँ दुनू सांझ हुँनका ओहिठाम चौका–बर्तन साफ करबाक लेल जाइतहि छलहुँ।
सुधाकर, "तखन तँ अहाँ हुँनका घरक लोक के चिन्हैत होयबनि"।
रानी , "जी हँ, सबके चिन्हैत छियनि"।
सुधाकर, "तखन तँ अहाँ हुँनकहुँ चिन्हैत हेबनि" (विजय दिश इशारा करैत बजलाह) ?
रानी, "अवश्य चिन्हैत छियनि"।
सुधाकर, "के छथि ओ"?
रानी, "ओ प्रेम बाबू क' बालक छथि"।
सुधाकर, "बड़का कि छोटका"?
रानी, "चुप रहि गेल, ओ सोच मे पड़ि गेल। ओकरा तँ जतेक घोंकाओल

गेल रहैक, ओ बाजि देलक। मुदा बड़का कि छोटका ई तँ ओकरा सिखाओल नहि गेल छलैक। ओ असमंजस मे पड़ि गेल''।

सुधाकर, '' की भेल कोन सोच मे पड़ि गेलहुँ। बाजू ने बड़का की छोटका''?

रानी, ''हड़बड़ाक' बाजि देलक बड़का''।

सुधाकर के जे शक छलैक ओ विश्वास मे बदलि गेलैक। ओकरा पकड़ मे आबि गेलैक, जे रानी भाड़ा पर आनल गेल अछि। ओ एकरा आर मजबूत करबाक लेल पुनः एकटा महिला दिश इशारा करैत पूछलनि, तखन तँ अहाँ हुँनकहुँ चिन्हैत हेबनि। बाजू तँ ओ के छथि''?

रानी, सोचलक के भ' सकैत अछि जे ओ प्रेम बाबूक कनियाँ होथि। ओ बाजल, ''ओ प्रेम बाबूक कनियाँ छथि। इ सुनिक ओ महिला तँ लजा गेलीह मुदा आर बैसल लोक हँसि देलनि।

वस्तुतः ओ गांगुली बाबूक कनियाँ छलीह आ सुधाकर एकरहि लेल हुँनका सँ अयबाक आग्रह कयने छलाह। रानीक उत्तर सँ सरकारी ओकिलक मुँह सेहो लोटकी सनक भ' गेलनि। हुँनकर सब गर्जना बेकार भ' गेलनि। रानी सब गुड़ गोबर क' देलकनि

सुधाकर, ''की, अहाँ रानी के जानैत छियैक (विजय सँ) ?

विजय, '' जी नहि''।

सुधाकर, '' ई अहाँक डेरा पर पन्द्रह वर्ष धरि काज केलनि''। अहाँ हिनका चिन्हैत नहि छियनि''?

विजय, ''ई हमरा डेरा मे कहिओ काज नहि केलक अछि। इ नाटक क' रहल अछि''।

सुधाकर, ''(पुनः रानी सँ) अपने प्रेम बाबू पर किएक केश कयल अछि। हुँनका सँ की अपेक्षा अछि'' ?

रानी, ''सरकार! ओ प्रतिमास एक हजार टाका देब' गछने छलाह। किछु दिन धरि देबो केलनि। मुदा छः मास सँ हुँनका एहिठाम नहि देखि रहल छी''।

सुधाकर, '' जँ अहाँ कँ प्रेम बाबू सब मास मे एक हजार टाका द' देथि, त' अहाँ केश उठा लेब''?

रानी, '' जी सरकार''।

सुधाकर, '' (जज साहेब सँ) सरकार ! ई केश प्रेम बाबूक केओ दुश्मन हुँनका फँसेबाक लेल वा बदनाम करबाक लेल केलक अछि। ओ रानी के' किछु टाकाक लोभ द' क' ओकरा मोहरा बनौलक अछिं रानीक द्वारा प्रस्तुत शिकायत पत्र एकदम असत्य अछि। ओ कहिओ प्रेम बाबूक ओहिठाम काज नहि केलक। जँ ओ हुँनका ओहिठाम काज कयने रहैत तँ हुँनका बेटा आ पत्नी के चिन्हबा मे धोखा नहि खाइत। विजय प्रेम बाबूक छोटका बेटा छथि, जकरा रानी बड़का बाजल छल, आ ओ महिला जकरा ओ प्रेम बाबूक कनियाँ बाजल छल, दरअसल ओ गांगुली बाबूक कनियाँ छथि। रानी विधवा नहि अछि। एकर पति शराबी आ जुआरी अछि। ओएह एकरा ई सब करबाक लेल विवश केलक। ओकर कहल नहि मानला पर एकरा संग मार–पीट सेहो करैत अछि। तैं एहि मे जतेक दोषी रानी अछि, ओहि सँ वेशी दोषी एकर पति आ ओकरहुँ सँ वेशी आर केओ..।

जज साहेब, ''आर केओ के एकरा स्पष्ट कयल जाउ।

सुधाकर, ''श्रीमान इ आर केओ एखन नहि समय अयला पर स्वतः स्पष्ट भ' जायत। एहि मे किछु गोटे पर्दाक पाछाँ सेहो छथि। एतेक तँ स्पष्ट भ' गेल जे रानी आ ओकर पति प्रेम बाबू के चिन्हैतो नहि छनिं ओकरा हुँनका सँ कि मतलब रहत। तखन तँ केओ ने केओ पर्दाक पाछाँ अवश्य अछि आ एकर खुलासा रानीक पति क' सकैत अछि। तैं ओकरा कठघरा मे बजाओल जाय।

जज साहेब, ''मुदा ई तँ आइ सम्भव नहि अछि? एकरा लेल दोसर दिन राखल जाय''।

सुधाकर, '' से किएक, आइ किएक सम्भव नहि अछि''?

सरकारी ओकिल, '' पहिने तँ ओकरा हाजिर होयबाक लेल सम्मन पठायब जरूरी छैक''।

सुधाकर, '' सरकार! सम्मन वा नोटीस ओकरा देल जाइत अछि, जकरा जानकारी नहि रहैत छैक। जे व्यक्ति अदालत मे उपस्थित अछि ओकरा, सम्मन पठेबाक कोन आवश्यकता छैक''। एकर आभास सुधाकर के भ' गेल छलैक जे रानीक पति कोर्ट परिसर मे बैसल अछि। बहस केर दौरान

रानी आ ओकर पति कतेको बेर इशारा सँ गप्प कयने छल''। सुधाकर केर गप्प सुनि रानीक पति कोर्ट सँ बहराय लागल। ओकरा बहराइत देखि सुधाकर गार्ड के इशारा केलक आ ओकरा पकड़ि लेलक। पुनः सुधाकर बाजल, '' सरकार ! इजलाशक सोझां रानीक पति के प्रस्तुत होयबाक आदेश देल जाउ।

जज साहेब, ''ठीक छै, आदेश देल जाइत अछि''।

तुरन्त दू टा प्रहरी रानीक पति कँ पकड़ि कठघरा मे ठाढ़ केलक।

सुधाकर बजलाह, ''सरकार ! ई सबटा आफतक जड़ि इएह थीक। एकरा पर मुकदमा चलाओल जाय। रानी तँ मारिक डरे इ सब कयलक। जँ रानी अपन गलती मानि लिए तँ ओकरा छोड़ि देल जाउ आ ओकरा पति पर मुकदमा चलाओल जाय। जाहि सँ इहो स्पष्ट भ' जायत जे पर्दा कँ पाछाँ के ठाढ़ छथि। रानी गरीब लोक छल। ओ तँ कहुँना किछु क' क' अपना बाल–बच्चाक पेट चला रहल छल। ओकरा टाकाक लोभ सेहो नहि छलैक। ओ तँ घरबलाक मारि–पीटक डरे इ सब किछु कयलक। ओ सब किछु स्पष्ट रूपे जज साहेब के सोझां गछि लेलक। जखन ओकरा पति पर जोर देल गेलैक तँ ओ बाजल, ''सरकार ! हम छी पियक्कर। हमरा एक दिन दारू पिया क' जानकी बाबू इ सब करबाक लेल कहलनि। ओ हमरा इ सब करबाक लेल दू हजार टाका सेहो देलनि आ काज भेला क' बाद दस हजार टाका देबाक लेल गछने छथि। हम गरीब लोक छी। हम टाकाक लोभ मे इ काज कयलहुँ। हमरा माफ क' देल जाउ''।

सुधाकर, (जज साहेब सँ) आब तँ स्वतः स्पष्ट भ' गेल जे प्रेम कुमार चौधरी पर लगाओल गेल आरोप निराधार आ झूठ पर अधारित अछि। तँ प्रेम कुमार चौधरी के बाइज्जत बरी कयल जाय। हमर जे अनुमान छल सैह भेल। आब एहि केश के एतहि खतम कयल जाय। किएक तँ एकरा जतेक छिलबै ओतेक छिलायत। हमरा जे बुझबाक छल से बुझि गेलहुँ''। जज साहेब केश के खरिज करैत प्रेम के बाइ–इज्जत बरी क' देलनि। सब केओ संतोष के साँस लेलनि आ अपना–अपना घर गेलाह। मुदा विजय केर चिन्ता नहि गेलैक। ओ जानैत छल जे विदुर जी क वैसार

जानकी बाबूक ओहिठाम होइत छलनि। जानकी बाबू किएक हमरा सब कँ अहित करताह। हुँनकर तँ हम सब किछु नहि बिगाड़ने छियनि। ओ तँ हमरा सब कँ चिन्हितो नहि छथि। एहि मे विदुर काकाक हाथ अछि की ? मुदा विदुर काका एना किएक करताह। ओ तँ बाबूजी क' नीक मित्र छथि। भ' सकैत अछि गाम मे रहलाक कारण दुनू गोटे मे किछु अन–बन भ' गेल हो, मुदा एकरहुँ चर्चा तँ माँ बाबूजी कहिओ नहि केलनि। विजय जतेक इ गुथ्थी के' सोझरेबाक प्रयास करैत छल। ओ ओतबहि आर उलझि रहल छलैक। ओ विचार कयलक जे एहि सम्बन्ध मे माँ सँ गप्प करत। राति के करीब नौ बजे ओ अपना माँ कँ टेलीफोन लगौलक। हाल–चाल पूछलाक बाद ओ माँ सँ पूछलक ''माँ, बाबूजी आ विदुर काका मे किछु भेल अछि कि''? मालती, किछु तँ नहि भेल अछि, मुदा इ गप्प तौं किएक पूछि रहल छह''। किछु भेलैक अछि की?

विजय, ''माँ विदुर काका ठीक लोक नहि बुझाइत छथि''।

मालती, '' एना किएक बाजैत छ'। तोरा बाबूजीक तँ ओ अभिन्न मित्र छथुन्ह। दिन राति एक पायर पर ठाढ़ रहैत छथि। हम सब जे किछु बाजैत छी, तुरन्त तैयार भेटैत अछि। हुँनका पर शक करबाक कोनो कारण नहि भ' सकैत अछि''।

विजय, '' माँ एकटा गप्प बुझल छौक ने, हाँथीक दाँत खयबाक आर आ देखेबाक आर होइत अछि। हमरा तँ दालि मे किछु कारी लागि रहल छौक। कहीं एहेन तँ नहि जे उपर सँ दोस्ती आ भीतर सँ कटारी....। हमरा तँ लागि रहल छौक जे गामक सब फँसाद मे कहुँ परोक्ष रूप मे ओकरहि ने हाथ होमए''।

मालती, ''आइ ई सब गप्प किएक बाजि रहल छह। हम सब तँ ओकरा बिसरबाक कोशीश क' रहल छी। आ तों एतेक दिनक बाद एकरा उखाड़ि रहल छह। किछु भेलैक अछि की? साफ–साफ बाजह ने।

विजय, ''जखन ओ जहरक' पुड़िया ल' क' बोकारो धरि आबि सकैत अछि, तखन तँ ओ किछु क' सकैत अछि''।

मालती, ''की भेलैक अछि बोकारो मे। तो एखन कत' छह?

विजय, ''हम एखन बोकारो मे छी। एहिठाम बड़ पैघ बबंडर भेल छलैक।

आब सब किछु ठीक–ठाक अछि। कोनो चिन्ताक गप्प नहि छैक।
मालती, "हम किछु नहि बुझैत छियह जे तों की कहि रहल छह' की भेलैक अछि से कनेक फरिछा क' तँ कहह"।
विजय, "फरीछा क' कहिऔक?
मालती, "हँ.....हँ.....कनेक फरिछा क' कहह।
विजय, "इ गप्प तोरा बुझल छलौक जे बाबूजी बोकारो मे दोसरो विवाह कयने छलाह"।
मालती, "विजय तँ भाँग खयने छह कि दारू पीने छह, जे अपना बाबूजी के विषय मे एहेन गप्प बाजैत छह। तूहूँ दुनू भाय तँ संगे रहलह कि तोरा अपना बाबूजीक चरित्र पर संदेह छह।
विजय, " सुन माँ, ने हम भांग खयने छी आ ने हम दारू पिने छी आ ने हमरा बाबूजीक चालि–चलन पर संदेह अछि। हमरा सब कँ बाबूजी बला स्वभाव जँ एकहुँ प्रतिशत भ' जायत तँ हम सब धन्य भ' जायब। मुदा हम तँ एखन ओएह गप्प बाजि रहल छी जे सौंसे बोकारो बाजि रहल अछि। हम तँ तोरा कहितहुँ नहि छलियौक मुदा तोही कहलँह जे साफ–साफ कहह। तँ कहैत छियौक।
मालती, "की बाजि रहल अछि सौसे बोकारो?
मालती, " बोकारो मे रानी नामक एकटा मौगी, बाबूजी पर केश केने छलैक, जे हमरा प्रेम बाबूक संग प्रेम मिलाप होइत छल। आ ओहि सँ तीनटा बच्चा सेहो भेल अछि। एकरा सभक भरण–पोषणक' खर्चा भेटबाक चाही।
मालती, " ई रानी के थीक आ कत' रहैत अछि"?
विजय, " से हम कि जानए गेलियैक। ई गप्प तँ तोही ने कहबें वा बाबूजी कहि सकैत छथि"।
मालती, "आब मजाक छोड़ह, की भेलैक से बाजह"।
विजय, "गांगुली बाबू हमरा टेलिफोन केलनि जे बाबूजीक नाम सँ कोर्टक एकटा सम्मन आयल अछि। कनेक आबिक पता लगा लिअ। हम बोकरो दोसरे दिन पहुँच गेलहुँ आ देवाल मे साटल सम्मन देखलहुँ। एकटा ओकिल केलहुँ। संयोगवश ओकिल हमरहि एकटा दोस्त छल, जे हमरहि

संगे पढ़ैत छल।
मालती, "कोन दोस्त ओकर नाम कि छलैक"?
विजय, " सुधाकर "।
मालती, "ओएह सुधाकर ने जे गोर दप–दप आ लम्बा कद–काठीक छल। तों सब ओकरा लम्बू कहिक' खोझाबैत छलह।
विजय, " हँ..... हँ..... ओएह सुधाकर"।
मालती, " सुधाकर ओकिल भ' गेल"?
विजय, " ओहो साधारण नहि, बड़ पैघ वकील। ओ अपना दलीलक' सोझां ककरहुँ नहि टिकए दैत अछि। आ बहस तँ एतेक सुन्नर करैत अछि जकर वर्णन नहि"।
मालती, " तखन आगू कि भेलैक से बाजह"।
विजय, " सुधाकर केर मदति सँ नकल बहार करबौलहुँ आ बाबूजी क' बदला हम शपथ पत्र द' क' कोर्ट मे उपस्थित भेलहुँ। केश तँ सही मे झूठ–मूठक छल। ओ दूइये तारीख मे खतम भ' गेल। बाबूजी बाइ–ईज्जत बरी भ' गेलाह, मुदा ओहि सँ बड़ पैघ रहस्य बहरायल।
मालती, "से की"?
विजय, " हमरा बुझाइत अछि जें एहि मे पर्दाक पाछाँ विदुर काका सेहो छथि"।
मालती, "विदुर जी तँ एहेन लोक नहि छथि। ओ किएक एहेन काज करताह। तोरा लग एकर कि आधार छह।
विजय, "कोर्ट मे जखन सब गवाह टुटि गेल तँ सब गप्प स्पष्ट भ' गेल। हमरा तँ बाबूजी बरी भ' गेलाह बस। हम केश कतेक लड़ैत रहब, तँ छोड़ि देलियैक मुदा रानी जे केश कयने छल, ओकर घर वला चर्चा केलक जानकी बाबूक। ओएह ई सब करौलक। जानकी बाबू सँ हमरा सब के तँ जानो पहचान नहि अछि। आ ओ विदुर काका क' दोस्त अछि। इ हमरा बुझल अछि तँ हमरा विदुर काका पर संदेह होइत अछि।
मालती, "एँ.....हम तँ ओकरा नीक लोक बुझैत छलहुँ। बोकरो जाइत छल, तँ ओकरा कतेक स्वागत–सत्यकार करैत छलहुँ। पाहुँन जकाँ सचार लगा क' भोजन कराबैत छलहुँ। ओकर इ किरदानी आब अबिहथि

कहिओ। सरधुये के सराधे क' देबनि।
प्रेम, " कि भेल मालती, एतेक राति मे ककर सराध करैत छियैक।
मालती, " अहीक परम मित्र विदुर क' .....।
प्रेम, "विदुरक..... ओकरा पर किएक तमसायल छी। एकटा ओएह तँ हमर दोस्त अछि"।
मालती, " दोस्त अछि, ओकरा सँ तँ दुश्मन नीक। एखन तँ खाली तमसायल छी, जँ सोझां आओत तँ मुँह नोचि लेबैक। गाम मे जे केलक से करबे केलक। बोकारो मे सेहो बदनाम करबाक लेल पहुँचि गेल"।
प्रेम, " की केलक बोकारो मे?
मालती, "आर कि करत, अहीं जे रानी नामक छौड़ीक संग रासलीला करैत छलहुँ, ओकर ढोल पिटि रहल अछि।
प्रेम, " कि बाजैत छी, बजबाक सहुलियत अछि की नहि।
मालती, "हम थोड़हि बाजैत छी, ई सब तँ अहाँक दोस्त विदुर बाजि रहल अछि। जकरा अहाँ अपन प्रेम प्रसंग सुनौने होयब"।
प्रेम, " कोन प्रेम–प्रसंगक गप्प अहाँ क' रहल छी"।
मालती, "विदुर क' दोस्त जानकी बाबू रानी नामक एकटा छौड़ी सँ केश करबौलक। अहाँक चरित्र पर दाग लगौलक। विजय पन्द्रह दिन सँ बोकारो मे अछि। अहाँक एवज मे ओ कोर्ट मे ठाढ़ भेल। बहस करबौलक आ केश खारिज करबौलक।
मणिकान्तजी, "प्रेम बाबू, अहाँ के जे नामकरण कयने हेताह ओ व्यक्ति अवश्य त्रिकालदर्शी हेताह।
प्रेम, " से किएक"?
मणिकान्त, " ओ अहाँक नाम प्रेम राखि क' इ साबित क' देलनि जे अहाँ वस्तुतः प्रेमक मूर्ति छी। अहाँकेँ कखनहुँ ककरो सँ प्रेम भ' सकैत अछि। चाहे ओ मालकिन होथि वा नौकरानी। मणिकान्तक गप्प सुनि प्रेम तँ लजा गेलाह आ मुड़ी निचाँ झुका लेलनि, मुदा सुलेखाकेँ नहि देखल गेलनि। ओ प्रेम के मन राखैक लेल एकटा खिस्सा कहि देलनि। ओ बजलीह, "कहुँ तँ कोना ओझाजी के लजा देलनि। अहाँकेँ घाव पर नोन छिटबा मे बड़ मजा आबैत अछि। आ हमहूँ जँ ओहि गप्प के खोलि दी जे ट्रेन मे

अहाँक संग भेल छल। ओ तँ संयोग नीक छल जे हम संगहि रही, नहि तँ ततेक पड़ैत जे गननाहरो थाकि जाइत।
मणिकान्त, "हँ.....हँ.....बाजु.....बाजु बहुत दिन भ' गेल सुनला। अहाँ के मुँहे सुनबा मे बड़ सुन्नर लागैत अछि।
सुलेखा, " छोड़ु जाय दीअ' फेर कहिओ। मुदा मालतीक आग्रह पर सुलेखा बजलीह, "एकबेर हम दुनू गोटे ट्रेन सँ आपस आबि रहल छलहुँ। बड़का बेटा पुतौह लग गेल छलहुँ। एक मास रहि क' आबि रहल छलहुँ। ट्रेन मे हिनका बगल मे एकटा युवती बैसल छलनि। ओना तँ ओ चारि बच्चाक माय छलीह, मुदा देखला सँ वा चेहरा–मोहरा सँ हुँनकर सही वयस केर भान नहि होइत छल। ओ एकदम नवयुवती सन लागैत छलीह। रातिक ग्यारह बाजि रहल छलैक। गाड़ी लखनउ स्टेशनक आस–पास छलैक। ओना तँ हमरा दुनू गोटे के आरक्षण छल मुदा कोनो रैलीक कारण ट्रेन मे काफी भीड़ छलैक। आरक्षण आ बगैर आरक्षण दुनू एक भ' गेल, जेना संगम पर गंगा आ यमुना। हिनकर एकटा आदत छलनि जे औंघायल मे दोसर क देह पर खसैत छलाह। ओहूँ दिन ओ औंघा क' ओहि युवतीक देह पर खसैत छलाह। तीन–चारि बेर तँ ओ हिनका सीधा केलक मुदा ओकरा बुझायल जे इ औंघीक' बहन्ना बना क' एना क' रहल छथि। ओ अपना पति सँ बाजल आ ओकर पति हल्ला करब शुरू केलक। राति वेशी भ' गेला के कारण हमरहुँ आँखि लागि गेल छल। हम देखलहुँ जे हुँनकहि ल' क' हल्ला भ' रहल छैक। हम तुरन्त बीच बचाव–कयलहुँ। आ हिनका दुनू क' बीच मे जा क' बैसि गेलहुँ। तखन सब केओ शान्त भेलाह। हम ओहि युवती के पूछलियनि "कि भेल छल, किएक एतेक शोर कयलहुँ। ट्रेन मे जखन लोक एकठाम सटिक' बैसैत अछि, तखन तँ औंघा क' खसब स्वभाविके ने अछि। ओ बाजल, "जँ खाली औंघा क' खसितथि, तखन कोन गप्प छलैक। ओ तँ हमरा ढ़ोढ़ी लग आंगुर सँ गुदगुदी सेहो लगाबैत छलाह। तँ हमरा बुझायल जे इ औंघायल नहि छथि। मात्र औंघीक' बहन्ना बनौने छथि।
मणिकान्त, "देखु–देखु इ झूठ गप्प अछि। हम गुदगुदी नहि लगाबैत छलियैक।

सुलेखा, (हँसैत) इ हम थोड़हि देखने छलहुँ। ओ जे कहलक से कहलहुँ अछि।

मणिकान्त, " ई आदत हमर नहि अछि। की मालती दाई, अहुँ तँ ट्रेन मे भेटल छलहुँ। की हम अहाँ के गुदगुदी लगौने छलहुँ।"

मालती, "अहाँ औंघायल कहाँ छलहुँ। औंघायल रहितहुँ तखन ने गुदगुदी लगबितहुँ।"

मणिकान्त, "जेकर कपार जड़ल हेतैक सैह ने अहाँके देखि क' औंघायत। एहि पर सब केओ हँसि देलनि।"

७

भोला बाबू धनकाही गामक सब सँ व्यवस्थित लोक छलाह। संगहि सज्जन सुशील आ मृदुभाषी सेहो। ककरहुँ दू टा बात सहि लैत छलाह। जँ गप्प असह्य वा पीड़ादायक होइत छलैक आ ओहि सँ मन मे कष्ट होइत छलनि तँ ओकरा न्यायार्थ भगवान भास्कर कँ सौंपि दैत छलाह। हुँनका भगवान पर अटूट विश्वास छलनि। ओ अपनहुँ अधिक समय पूजे–पाठ मे गमाबैत छलाह। ककरहुँ खिधांस ने करैत छलाह आ ने सुनैक प्रयास करैत छलाह।

एक बेरक घटना अछि :–

धनकाही मे एकटा व्यक्ति छलाह, फेकू राउत। ओ प्रचंड मूर्ख आ लंठई के दाबी सेहो राखैत छलाह। ओ चारि–पाँच टा महींस रखने छलाह आ हुँनकर काज केवल लोकक जजात् चरायब छलनि। ओ ककरहुँ नहि चितबै छलाह। जकर जखन मन भेल जजात चराबैत छलाह। डरे केओ बाजैत नहि छल। एक तरहें बुझू तँ गाम मे ओकर आतंक छल। एक बेर ओ राति मे भोला बाबूक दस कट्ठा गम्हरायल धान चरा लेलक। भोरे हकासल–पिआसल भोला बाबूक मैनेजर बिहारी आयल। ओ भोला बाबू के सब गप्प कहलक। हलांकि फेकू राउत के केओ गोटे खेत मे चराबैत

काल नहि देखने छलैक मुदा बिहारी के ई विश्वास छलैक जे फेकू राउत छोड़ि दोसर केओ इ काज नहि केलक अछि। भोला बाबू फेकू के बजौलनि आ पूछलनि, "फेकू, एहेन काज किएक करैत छह। हमर कतेक नुकसान भेल अछि, एकर अंदाज तोरा छहुँ ?"

फेकू, "भोला बाबू अपने हमरा खेत मे चराबैत देखने छी ?"

भोला बाबू, "नहि से तँ नहि देखने छी।"

फेकू, "तखन अहाँ कोना कहि सकैत छी, जे ई काज हमही कयने छी। केओ दोसरो तँ क' सकैत अछि?"

भोला बाबू, "हँ दोसरो क सकैत अछि, मुदा एतेक पैघ दुःसाहस तोरा छोड़ि दोसर नहि क' सकैत अछि।"

फेकू, "ई तँ झूठ–मूठ ककरहुँ बदनाम करब भेल। ई उचित गप्प नहि भेल आ अहाँ सनक लोक कँ इ शोभा नहि दैत अछि। अहाँ सब पैघ लोक छी, तँ ककरहुँ चोर बना देबैक।" भोला बाबू देखलनि जे बात बिगरि रहल अछि। ओ फेकू राउत सँ बजलाह, "ठीक छै फेकू हम गलती कयलहुँ, जे तोरा सँ पूछलहुँ। हम तँ नहि देखलियैक जे ई काज के केलक मुदा भगवान तँ अवश्य देखलनि। एकर इन्साफ ओएह करताह। फेकू राउत विजय मुस्कान दैत ओहिठाम सँ चल गेल आ भोला बाबू सेहो अपना पूजा–पाठ मे लागि गेलाह। आठ दिनक भीतर फेकू राउतक सब माल–जाल मरि गेल। कोना मरल ई बुझबा मे ककरहुँ नहि अयलैक। सबकँ विश्वास भ' गेलैक आ फेकू राउत सेहो मानलक, जे इ आर किछु नहि, भोला बाबूक श्राप थीक। ओकरा मन भेलैक जे आबहुँ भोला बाबूक पायर पकड़ि क माँफी माँगि ली मुदा ओकरा मन मे भरल अहंकार ओकरा रोकि देलकै आ ओ पश्चातापक आगि मे जड़ैत रहल। ओहि दिन सँ भोला बाबूक विश्वास भगवानक प्रति आर बढ़ि गेलनि। भोला बाबू चिक्कन गृहस्थ्य छलाह। हुँनकर सबटा खेती–बारी मैनेजर बिहारी देखैत छलनि। भोला बाबू अपना दरबज्जा पर सँ कतहुँ नहि जाइत छलाह। ओ केवल दू प्राणी छलाह। बाल–बच्चाक नाम पर मात्र दू टा बेटी छलनि। जकर विवाह–दान भ' गेल छलैक। ओ सब अपना–अपना सासुर चल गेल। जमाय एकटा इंजिनियर आ दोसर डाक्टर छलथिन्ह। खूब खर्च–बर्च क'

क' दुनू कन्यादान केलनि। बेटी सब सुख सँ जीवन–यापन करैत छलनि। ओहि गाम मे ओएह एकटा एहेन लोक छलाह जकरा दोसराक खुशी सँ खुशी आ तकलीफ सँ तकलीफ होइत छलैक। हुँनकर मैनेजर बिहारी दुनू प्राणी हुँनकहि ओहिठाम रहैत छल। बिहारीक बाप आ माय बच्चे मे मरि गेलैक। ओहि समय मे बिहारी करीब एगारह वर्षक छल। ओकर बाप जत' काज करैत छल ओत' केओ ओकरा मददगार नहि भेटलैक। तखन ओ भोला बाबूक ओहिठाम आयल। भोला बाबू अपन खर्च सँ ओकरा बापक श्राद्ध करा देलनि। माय तँ ओकर ओकरा बापेक सोझाँ मूइल छल। भोला बाबूक एहि एहसानक खातिर बापक श्राद्ध खतम होइतहि बिहारी आबिक चरबाहि कर' लागल आ धीरे–धीरे सबटा खेत–पथार चिन्हि गेल आ भोला बाबूक छत्र–छाया मे खेती बारी सेहो कराब' लागल। पाँच वर्ष पूर्व भोला बाबू बिहारीक विवाह सेहो करा देलनि। अपना तँ बिहारी के घर द्वारि छलैक नहि आ राखिओ क' की करैत। ओकरा तँ दिन राति भोला बाबूक ओहिठाम रहबाक छलैक। ओ घर द्वारि ल' क' की करैत। भोला बाबू अपनहि मालक घरक बगल मे खूब सुन्नर टटघर एकटा बनवा देलनि। जाहि मे दुनू प्राणी सुख पूर्वक रहैत छल। दू वर्ष पहिने बिहारी के एकटा बेटा सेहो भेलैक। बिहारीक कनियाँ सेहो आँगनक काज सम्हारि नेने छल। राति मे जखन भोला बाबू सूतबाक लेल जाइत छलाह तँ बिहारी हुँनकर सेवा करैत दिन भरिक हाल–चाल सुनाबैत छलनि। अपन खेती बारी सँ ल' क' गामक छोट सँ छोट आ पैघ सँ पैघ घटनाक जानकारी बिहारी दैत छलनि। ओहि क्रम मे हुँनका प्रेमक घटनाक जानकारी भेटल। प्रेमक संग जे श्रीधर ठाकुर आ विदुरक व्यवहार भेल ओ भोला बाबू कँ अत्यन्त पीड़ा पहुँचौलक। पूर्व मे प्रेमक पिता श्रीमंत चौधरी आ एखन प्रेम की गलती कयने छलाह। धनकाही गाम के आदर्श गाम बनाब' चाहैत छलाह। राम राज बनाब' चाहैत छलाह। सबके बराबर कर' चाहैत छलाह। गाम के जाति–पाति, धर्म–सम्प्रदाय सँ उपर उठयबाक प्रयास कयने छलाह। आई गाम मे एकटा बी०डी०ओ० तँ छथि। चाहे ओ रघुवीरे दास किएक ने छथि। गामक नाम तँ उच्च कयने छथि। किएक ने केओ ब्राह्मण बी०डी०ओ० भेलाह। इ देन तँ श्रीमंते चौधरीक अछि।

गामक लोक तरक्की करओ, इ वर्दास्त करब गामक लोकक लेल कठिन अछि। श्रीमंत चौधरी आ प्रेम जे प्रयास केलनि ओहि सँ गामक लोक कँ जे भेल हो, मुदा भोला बाबू कँ सब सँ वेशी खुशी भेल छलनि। गाम मे जे दबंग लोक छलाह, खासक' श्रीधर ठाकुर सनक लोक, जे लहना–तगादा लगाबैत छलाह, हुँनका सब के ई नहि देखल गेलनि आ देखलो जयतनि तँ कोना? जँ गामक सब लोक खुशहाल भ' जायत। सब अपना कमाई सँ नीक जकाँ गुजर क' लेत, तँ श्रीधर ठाकुर क ओहिठाम पाँच किलो धानक लेल नाक किए रगड़त। तखन श्रीधर ठाकुर वा अन्य लोक मे की फर्क रहतैक। तँ ई लोकनि षटयंत्र क' क' ने श्रीमंत चौधरी के सफल होब' देलनि आ ने प्रेम कुमार कँ। एहेन लोक बड़ चतुर–चालाक होइत अछि, ओकरा ओकरहि सन मिठ–मिठ गप्प कहि बहला–फुसला क' अपन काज सुतारि लैत अछि। जेना कि एहि प्रकरण मे श्रीधर ठाकुर विदुर कँ पटिऔने अछि। विदुर कोनो अधलाह लोक नहि अछि। ओ सामाजिक लोक अछि। समय पर ककरहुँ मदति करैत अछि मुदा ओकरा मे एकटा बड़ भारी कमी छैक। ओ जिद्दी स्वाभावक अछि आ जाहि वस्तुक लेल अपन जिद्द पकड़ि लैत अछि, ओकरा बिना हासिल कयने नहि छोड़ैत अछि। मुदा श्रीधर ठाकुर कँ अपना मतलब सँ मतलब रहैत छैक। ओकरा सँ ककरहुँ उपकारक आशा करब व्यर्थ होयत। ओकरा लेल दोसराक उपकार करब आ गोबर मे घी ढारब दुनू बराबर अछि। ओ सपनहुँ मे ककरहुँ उपकार नहि क' सकैत अछि। जहिना बबूरक गाछ सँ आमक आशा नहि कयल जा सकैत अछि, तहिना श्रीधर ठाकुर सँ ककरहुँ उत्थान मे सहयोगक अपेक्षा नहि कयल जा सकैत अछि। श्रीधर ठाकुर अपन काज सुतारबाक लेल गदहो के अपन बाप बना सकैत अछि। जेना कि एखन विदुर कँ बनौने अछि। हलांकि ओकर दुश्मन प्रेम आ विदुर दुनू छलैक। ओ प्रेम आ विदुर के एकठाम देखि पहिने तँ घबरा गेल मुदा जखन ओकरा विदुर सँ सब किछु ज्ञात भेलैक तँ ओ पहिने प्रेमक अंत करबाक निश्चय केलक आ एकरहि लेल विदुरक संग सटि गेल। मुदा ई मेल कतेक दिन धरि रहत कहि नहि सकैत छी। विच्छुक स्वभावे डंक मारब होइत छैक। ओ अपना के कतेक काल धरि रोकि सकैत अछि।

एहि ठकुर सोहाँती प्रेम सँ भोला बाबू अचम्भित छलाह। एहि लेल नहि जे इ दुनू मे प्रेम किएक छनि, बल्कि एहि लेल जे भ' सकैत अछि जे इ प्रेम एक दिन बारुद बनिक' नहि फूटि परए आ ओहि ज्वाला मे धनकाही जड़िक' सुड्डाह नहि भ' जाय। कारण श्रीधर ठाकुर बिना मतलबे वा बिना स्वार्थे ककरहुँ सँ दुश्मनीओ नहि करैत अछि, तँ दोस्ती कोना करत। आ विदुर अछि तँ तेज लोक मुदा जखन ओ जिद्दिया जाइत अछि तँ आगाँ–पाछाँ किछु नहि सोचैत अछि। एहि सँ नुकसान विदुरेक भ' सकैत छैक। श्रीधर ठाकुर तँ नुकसान देखि तुरंत पायरो पकड़ि सकैत अछि मुदा विदुर तँ से नहि करत। ओ टुटि जायत मुदा झुकत नहि। विदुर सनक लोक कँ रहब, गामक हित मे, समाज हित मे आवश्यक अछि। सौंसे गाम मे एहेन विदुरे अछि जे अनुचित गप्प पर ककरहुँ, कतहुँ ललकारि दैत अछि आ उचित गप्प पर ककरहुँ लेल ठाढ़ो भ' जाइत अछि। तँ श्रीधर ठाकुर ओकरा अपना मे मिलाक' तोड़बाक प्रयत्न क' रहल अछि। तँ भोला बाबू दुनू मे झगड़ा करबाक' अलग–अलग करबाक योजना मे लागि गेलाह। डोमू दासक एकटा घरारी छलैक। ओ करीब चारि कट्ठाक छलैक। ओकरा डोमू दास श्रीधर ठाकुरक एकटा फरीक, जाहि मे मात्र एकटा मसोमांत बाँचल छलीह, हुँनकहि सँ कीनने छल। ओना तँ डोमू दासक बेटा रघुबीर बी0डी0ओ0 भ' गेल छलैक। ओकरा आब टाका–पैसाक अभाव नहि छलैक मुदा ओ घरारी श्रीधर ठाकुर आ विदुरक घरक बीच मे रहलाक कारण गुँहनौर बनल छल। ओहि सँ किछु उपजा–बारी नहि आबैत छल। डोमू दास ओकरा कतेको बेर घेरबाक प्रयास केलक मुदा सब बेकार भ' गेलैक। तँ डोमू दास सेहो ओकरा हटेबा पर विचार क' रहल छल आ एहि सम्बन्ध मे ओकरा संग विदुरक गप्प सेहो भेल छलैक। विदुर जखन प्रेमक सम्पर्क मे गेल, तँ डोमू दास सँ सेहो ओकरा खूब गप्प–शप्प होमए लगलैक। गप्पे–शप्पे मे घरारीक दाम बीस हजार तय भ' गेलैक आ विदुर दू मासक समय ल' क टाकाक इन्तजाम मे लागि गेल। ओहि घरारी पर श्रीधर ठाकुरक नजरि सेहो छल आ से केवल हाले सँ नहि, करीब चालीस वर्ष सँ। ओकरा एहि गप्पक भनक लागि गेल जे विदुर आ डोमू दासक बीच भेल छलैक। ओ एहि प्रयास मे लागि गेल जे येन केन

प्रकारेण घरारी के हासिल कयल जाय। हलांकि डोमू दास बातक बड़ पक्का लोक छल। ओ दू हजार के कहए दू लाखो मे अपना बात सँ पलटि नहि सकैत छल मुदा भोला बाबूक योजनानुसार ओ मात्र बाइस हजार मे श्रीधर ठाकुर कँ घरारी लिखि देलक। डोमू दास के राति मे धमकी देब, जे श्रीधर ठाकुर दिऔने छलाह, इहो भोला बाबूक योजनाक एक अंग छल। इ गप्प सौंसे गाम जंगलक आगि जकाँ पसरि गेल। जखन विदुर गाम आयल तँ ओकरहुँ एकर भनक लागल। ओ एकरा सुनिश्चित करबाक लेल भोला बाबूक ओहिठाम गेल आ हुँनका सँ पूछलक, "की भोला कका इ उचित काज भेलैक?"

भोला बाबू तँ सब किछु जनितहि छलाह। ओकर सूत्रधारो तँ ओएह छलाह मुदा प्रत्यक्ष रूपँ नहि। ओ बजलाह, "की भेल बौआ ?"

विदुर, "अहाँकँ किछु नहि बुझल अछि ?"

भोला बाबू, "कोन मामिला मे पूछि रहल छी। जखन गप्प के बुझब, तखनहि ने किछु कहब।"

विदुर, "ओएह हमरहि घर लगहक घरारी, जकरा लेल हम डोमू दास सँ गप्प कयने छलहुँ आ लिखा लेलनि श्रीधर ठाकुर।"

भोला बाबू, "किछु भनक तँ हमरा अवश्य लागल मुदा स्पष्ट रूपँ किछु नहि बुझि सकलहुँ। हमहुँ तँ अहींके ताकैत छलहुँ। अहाँ आयब तँ सविस्तार बुझब। कहिआ भेलैक लिखा–पढ़ी ?"

विदुर, "इ तँ हमरहुँ नहि बुझल अछि जे लिखा–पढ़ी कहिआ भेलैक। हम तँ काल्हि आयले छी। डोमू दास सँ बीस हजार टाका मे गप्प भेल छल। हम टाकाक इन्तजाम मे बाहर गेल छलहुँ आ अयलहुँ तँ सब खेला खतम।"

भोला बाबू (आगि मे घी दैत), "इ सब तँ हमरा नहि बुझल छल, मुदा जँ इ गप्प सही छैक, तखन तँ डोमू दास आ श्रीधर ठाकुर दुनू गोटे बड़ पघ गलती केलनि अछि। जखन अहाँक संगे जरसीमन तय भ' गेल छलैक, तखन श्रीधर के ओहि मे नहि पड़बाक चाही। ओकर चालीस वर्षक लगाओल घात आई सफल भ' गेलैक।"

विदुर, "की मतलब! चालीस वर्षक घात....हम किछु बुझलहुँ नहि ?"

भोला बाबू, "ई बड़ पैघ खिस्सा छैक। कहिओ चैन सँ बैसब तँ कहब मुदा ओ तँ सब किछु अहींके पूछि क' करैत छलाह। ई काज बिनु पूछने किएक केलनि।"

विदुर, "ओ जे केलनि से केलनि मुदा ई सौदा हुनका बड़ महँग पड़तन्हि। जा धरि विदुर एहि धरती पर रहताह, ताधरि तँ ओ घरारी हासिल नहि क' सकैत छथि। ओकरा बादक तँ गप्प कहि नहि सकैत छी, के देखलक अछि। तावत् ओ घरारी जहिना गुँहनौर बनल अछि, तहिना बनल रहत।"

भोला बाबू, "तखन की सोचल अछि। आगूँ की करबाक विचार अछि।"

विदुर, "हम तँ सोचैत छी, जे पाँच गोटे कँ बैसाक' ओकरा मोलजिम कयल जाय।"

भोला बाबू " एहेन गलती नहि करब। एहि सँ एतेक होयत जे घरारी, अहाँक हाथ सँ बहार भ' जायत। औ बाबू मोलजिम तँ ओकरा कयल जाइत छैक, जेकरा मे विचार होइत छैक, विवेक होइत छैक आ जे नंगटे नहायत ओ गारत की।"

विदुर, "तखन की कयल जयबाक चाही।"

भोला बाबू, "हम तँ एहेन चाहब जे सांपो मरि जाय आ लाठिओ नहि टूटए। मुदा एखन अहाँ वेशी खौझायल छी। एहेन स्थिति मे कोनहुँ निर्णय करब उचित नहि। अहाँ एखन जाउ। स्नान भोजन करु आ खूब दिमाग के ठंढा राखि एहि विषय मे सोचू। तावत् हमहुँ एहि विषय मे सोचैत छी।"

दू दिनक बाद पुनः विदुर भोला बाबूक ओहिठाम अयलाह आ बजलाह की भोला कका, हमरा लेल किछु सोचलहुँ ?"

भोला बाबू, "हँ, बौआ! सोचलहुँ।"

विदुर, "की सोचलहुँ ?"

भोला बाबू, "ई घरारीक झगड़ा अहाँक श्रीधर ठाकुरक बीच कोनहुँ नव नहि अछि। पता नहि अहाँ के मन अछि वा नहि, मुदा आई जँ पंडित जी रहतथि तँ अहाँ के एहि घरारीक झंझटि मे नहि पड़ए दितथि।

विदुर, "से किएक, एहि मे एहेन कोन बात छैक।"

भोला बाबू, "आई सँ चालीस वर्ष पूर्व एहि घरारी पर श्रीधर ठाकुरक नजरि छलैक। ई घरारी छलैक श्रीधर ठाकुरक भाउज तारा देवीक। दुनू

दीअर–भाउज मे पटैत नहि छलैक आ तारा देवीकँ ओ घरारी बेचब आवश्यक छलनि। हुँनका ओ घरारीक एवज मे पाँच सय टाका देब गछलनि। मसोमात दू हजार टाका माँगैत छलथिन्ह। एहि पर दुनू मे बहुत कहा–सुनी भ' गेलनि। श्रीधर ठाकुर हुँनका ज़े–जे बात कहलनि, दीअर–भाउज मे ओहि सँ वेशी लोक मजाक मे कहैत अछि। मुदा जखन कोनो वस्तुक तनाव रहैत छैक तँ ओहिकाल नीको बात हृदय के बेधि दैत छैक। तँ तारा देवी एकदम बेरुख भ गेलीह, जे घरारी हम ककरहुँ द' सकैत छी मुदा श्रीधर ठाकुर के नहि देव। तारा देवी अहाँक बाबूजी सँ गप्प केलनि। अहाँक बाबू जी बिना मोल–भाव कयने दू हजार टाका देबाक लेल तैयार भ' गेलाह आ एक हजार टाका दओ देलनि। अहाँक बाबूजी एहि लेल घरारी लेबाक लेल तैयार भ' गेलाह। कारण एक बेर अहाँक बाबूजी आ श्रीधर ठाकुर मे कोनो बक–झक भेलनि कि श्रीधर ठाकुर चट द' ओहि घरारी कँ कॉट से घेरि देलनि। अहाँक बाबूजीक बाट बन्न भ' गेलनि। दू दिन तँ ओ सब घरे मे रहि गेलाह। तखन केओ जा' क' तारा देवी के कहलकनि। ओ आबि क' अपनहि सँ कांट हटौलनि। एहि लेल जखने तारा देवी बेचबाक प्रस्ताव देलनि, पंडित जी तुरंत मानि लेलनि मुदा भगवान के इ मंजूर नहि छलनि। जखन एकर पता श्रीधर ठाकुर के लागल तँ ओ प्रचार करबा देलक जे, जे केओ ई घरारी लेत, ओकरा भोग नहि होमए देबैक। पूरा खानदान के काटि क' राखि देबैक। ओहि समय मे श्रीधर ठाकुरक जेठका बेटा बड़ बदमास छल। ओना तँ ओहो कतेक ठाम कतेको बेर मारि खयलक मुदा ओकरा ओकर कोनो लाज नहि छलैक। ओकरा डरे गामक लोक सेहो ओकरा सँ परहेज करैत छलैक। तथापि श्रीधर ठाकुरक एहि प्रचार सँ पंडित जी पर कोनो असरि नहि भेल मुदा अहाँक माय पंडित जी कँ रोकि लेलनि। तखन पंडित जी मास्टर श्रीमंत चौधरीक ओहिठाम गेलाह। ओ सोचलनि जे जँ इ घरारी श्रीधर ठाकुर वा केओ दोसर लैत अछि तँ हमरा वा हमरा बाल–बच्चा के इ कहिओ नहि भ' सकैत अछि आ जँ मास्टर सेहेब ल' लैत छथि तँ हुँनका सँ बाद मे ल' लेब। कारण रास्ताक लेल इ आवश्यक अछि। श्रीमंत चौधरी अपना लेल तँ नहि तैयार भेलाह मुदा ओ डोमू दास के नाम सँ

रजिस्ट्री करबा देलनि। संगे इहो कहि देलनि जे जहिया पंडित जी कहथि, ओहिदिन हुँनका रजिस्ट्री क' देबाक छैक। एहि तरहँ ओ घरारी डोमू दास के रजिस्ट्री भ' गेल आ मास्टर सेहेब बजलाह जे एकर उपयोग अहाँ करू। ओ डोमू दासक तँ किछु नहि क' सकलाह। किएत तँ डोमू दास हरिजन छल। कनेको खरबराइत तँ तुरंत हरिजन थाना मे केश। मुदा अही कुन्नह सँ ओ मास्टर सेहेबक खिलाफ लिखा–पढ़ी केलक आ हुँनकर बदलीओ करा देलक। जकरा फेर रघुबीर दास सरियेलक आ मास्टर सेहेब राजनगरक बदला सीधे गामे आबि गेलाह। ओकरहि बदला ओ अहाँ सँ मिलि क' ल' रहल अछि। ई घरारी लेबाक पाछाँ एकर बड़ पैघ उद्येश्य छैक।"

विदुर, "की उद्येश्य छैक ?"

भोला बाबू, "ई घरारी लेलाक बाद अहाँ ओकरा वश मे रहबैक। ओ जे जे कहत, अहाँ के कर' पड़त। नहि तँ चारु कात कांट सँ घेरि देत, जेना पहिने घेरने छल आ अहाँक सस–बस सब बन्न क' देत।"

विदुर, "ई तँ ओकर भ्रम छैक। विदुर ककरहुँ बस मे रह' बला बेटा नहि अछि आ ओहो आँखि देखा क'?"

भोला बाबू, "ओ तँ सैह बुझैत अछि।"

विदुर, "ओ जे बुझैत हो से बुझओ। हुँनकहुँ अही बेर बुझा जेतनि जे ककरा सँ पाला पड़त छनि।"

भोला बाबू, "मुदा एकरा लेल किछु कागजी कारबाई आवश्यक अछि। ओ भेला सँ ओकर रजिस्ट्री गलत सिद्ध भ' जेतैक। आ अहाँक हाथ सब ठाम उपर रहत।"

विदुर, "एहेन भ' सकैत छैक। ओकरा लेल की कर' पड़तैक।"

भोला बाबू, "कयला सँ की नहि होइत छैक। सब काज धैर्य पूर्वक करु आ एकर भनक ककरहुँ नहि लगबाक चाही। जँ केओ बुझि जायत तँ दुश्मन सतर्क भ' जायत।"

विदुर, "तखन कोना की कर' पड़तैक, से ने कहुँ।"

भोला बाबू, "अहाँ तँ अपनहि बुधियार लोक छी, तखन हम की कहूँ। अहाँ हमरा दू–चारि दिनक समय दीअ'। हम पता लगबैत छी जे डोमू दास

कोन परिस्थित मे इ काज कयने अछि। ओ तँ टाकाक खातिर पलटि नहि सकैत अछि। अवश्य कोनो ने कोनो रूप मे ओकरा पर दबाब पड़ल हेतैक।"

विदुर, "से तँ हमरहुँ लागैत अछि। ओ एहेन लोक तँ नहि अछि। तखन अचानक किएक पलटि गेल।"

भोला बाबू, "अहूँ एहि विषय पर ककरहुँ संगे कोनो चर्चा नहि करब। जँ कतहुँ प्रसंग आबए तँ अनठा देब, सैह नीक। तीन–चारि दिनक बाद फेर दुनू गोटे एकत्र भेलाह। भोला बाबू, कहलनि "अहाँ डोमू दासक ओहिठाम जाऊ आ कहबैक जे हम टाकाक इन्तजाम तँ क लेलहुँ। रजिस्ट्री कहिआ करब, से बाजू।"

विदुर, "रजिस्ट्री तँ ओ श्रीधर ठाकुर कँ क' देलक। आब हमरा की करत ?"

भोला बाबू, "एहि सँ दू टा गप्प होयत। प्रथम तँ इ सुनिश्चित भ' जायत जे रजिस्ट्री भ' गेलैक। एखन तँ इ गप्प हवा मे छैक। भ' सकैत अछि जे इहो विरोधीक कोनो चालि हो। ओ अहाँक प्रतिक्रिया जनबाक लेल एहेन कयने हो। दोसर गप्प जँ डोमू दास बाजत जे रजिस्ट्री भ' गेलैक। एहि मे ओ अपन विवशता देखाओत तँ अहाँ चट' द' कहबैक जे एक वर्ष पाछु क' तारीख मे हमरा जड़बयना क' दीअ'।"

विदुर, "की डोमू दास जड़बयना करबाक लेल तैयार भ' जायत।"

भोला बाबू, "अहुँ मे एकटा राज छिपल छैक?"

विदुर, "से की, एहि मे कोन राज छैक।"

भोला बाबू, "डोमू दास वचनक पक्का लोक अछि। ओकरा संगे अवश्य किछु विवशता हेतैक। जँ ओ स्वेच्छा सँ रजिस्ट्री कयने होयत तँ अहाँ के जड़वयना नहि करत। मुदा जँ ओकरा रजिस्ट्री करबाक लेल दबाव पड़ल हेतैक तँ ओ अपना वचनक रक्षाक खातिर जड़वयना करबाक लेल तैयार भ' जायत।"

विदुर, "भोला कका, अहाँ तँ पुरिया मे राखै जोगरक लोक छी। हम तँ अहाँ के सोझ लोक बुझैत छलहुँ। एतेक गुढ़ गप्प अहाँ कतए नुकौने छलहुँ। हम तँ अहाँ लग मात्र अपन भड़ास निकालबाक उद्येश्य सँ आयल छलहुँ। मुदा अहाँ तँ एहेन रहस्योद्घाटन क देलहुँ, जकरा विषय मे कम सँ कम

हम तँ नहिये बुझैत छलहुँ। अहाँ तँ बैसल–बैसल दुश्मन के चारु नाल चित्त क' देलहुँ।"

भोला बाबू, "बैसल–बैसल, आठ दिन सँ हम एहि पाछाँ लागल छी आ एक कड़ी कँ दोसर कड़ी सँ जोड़ि रहल छी। तखन एहि निष्कर्ष पर अयलहुँ अछि।"

विदुर, "एतेक दूर धरि अहाँक सोच अछि। हम तँ कल्पनो नहि करैत छलहुँ।"

भोला बाबू (माँथक केश देखाबैत) तखन की एकरा रौद मे पकौने छियैक। आ दुनू गोटे हँसए लगलाह। फेर विदुर ओत' सँ चल गेलाह।

संध्याकाल जखन अन्हार भेलैक तँ विदुर प्रेमक ओहिठाम गेल। ओकरा बुझल छलैक जे एखन डोमू दास एसकरे प्रेमक दलान पर होयत। ओना तँ आब डोमू दास अपना समाजक बीच सरगनाक रूप मे मानल जाइत अछि। किएक तँ ओकर बेटा रघुवीर आब सी0ओ0 सँ बी0डी0ओ0 भ' गेलैक। जे केओ ओकरा काल्हि धरि रे डोमा कहैत छलैक, ओहो आब आदरक संग डोमू कका वा डोमू भैया कहैत छैक। डोमू दासक घरक सोझां मे एकटा विशाल पीपरक गाछ छलैक आ ओहि सँ सटल मंदिर जीर्ण–शीर्ण अवस्था मे छलैक। माँटिक घर उपर सँ फूसक चार आ ओहि मे बरसातक सबटा पानि घरे मे खसैत छल। ओहि मे कुम्हारक आबा मे पकाओल राजा सलहेसक प्रतिमा। रौंद–वसातक कारणे जगह–जगह सँ उड़ल रंग जेना अपन दुःखक खिस्सा कहि रहल हो। जखन डोमू दासक बेटा रघुबीर बी0डी0ओ0 भेल तँ सब सँ पहिने ओहि मंदिर के पक्का करौलक आ एतेक भव्य बनबौलक जे ओहि इलाका मे ओहेन सलहेसक मंदिर कतहुँ नहि छलैक। आ पीपरक गाछ के चारु कात खूब पैघ चबुतरा बनबौलक। जाहि पर तीन–चारि सय लोक बैसि क गप्प–शप्प क' सकैत अछि। ओहि मंदिर आ चबूतरा मे जतेक सामग्री लागल, जेना ईटा, सिमेंट, बालू, लोहा आदि रघुबीर देलनि आ मजदूरी सब गामक मजदूर मिलि क' केलक। सूर्यास्तक बाद सांझ मे सब मजदूर वर्गक लोक ओहिठाम जमा होइत अछि। सब आपस मे गप्प–शप्प करैत अछि। दिन भरिक दुःख–सुख बतियाबैत अछि। ओकर निराकरण सोचैत अछि आ साढ़े सात बाजैत

बाजैत सब भोजन करबाक लेल अपना घर चल जाइत अछि। ई चबूतरा छोट–छीन नियोजनालय केर काज सेहो करैत अछि। जतेक लोक के काल्हि मजदूरक काज हेतनि, ओहो ओही समय मे आबि अपन मजदूर छेकि लैत छथि। डोमू दास सेहो नित्य ओहि चबूतरा पर बैसैत अछि आ लगभग सात–साढ़े सात बजे भोजन कयलाक बाद प्रेमक दलान पर आबि क' आराम करैत छल। हलांकि प्रेम हुँनका कहि क नहि गेल छलनि आ ने एहि एवज मे हुँनका किछु दैत छलनि मुदा डोमू दास अपन कर्तव्यक' निर्वाह करैत छलाह। प्रेम तँ मात्र हुँनका घर–आँगन केर ताला–कुंजी द' क' गेल छलनि। ओ श्रीमंत चौधरीक ऋण सँ उऋण होयबाक लेल एतेक क' रहल अछि। आई जँ समाजक लोक ओकरा डोमू कका वा डोमू भैया कहैत छैक, तँ ओ श्रेय देनिहार आर केओ नहि श्रीमंत चौधरी छथि। ओकरा डोमू दास दुनू प्राणी यावत् जीयत बिसरि नहि सकैत अछि। रघुवीरके सी0ओ0 बनेबा मे श्रीमंत चौधरी के कतेक भोग भोगए पड़ल छनि से डोमू दास नीक जकां जानैत अछि। एक बेर डोमू दासक समाजक लोक डोमू दासक खूब घेरघार केलक। ओ सब बाजल जे अहाँ के आब की दिक्कत अछि। अपना दलान पर सुतू–बैसू। प्रेमक दलान पर सूतबाक लेल किएक जाइत छी। ओ अहाँके की दैत अछि मुदा डोमू दास ककरहुँ किछु नहि सुनलक। ओ सब डोमू दास के समाज सँ निकालबाक धमकी सेहो देलक मुदा डोमू दास के कोनो असरि नहि भेल। डोमू दास स्पष्ट रूपँ बाजल, "आई जखन हम छी, तखन ने समाज आ सब केओ मुदा जाहि दिन हम एहि गाम सँ उपटि क' जाइत छलहुँ आ जे व्यक्ति हमरा रखलनि, बसौलनि, एतेक सम्मान दिऔलनि, हुँनका हम कोना बिसरि जायब। जँ हम हुँनका बिसरब तँ भगवान हमरा नर्को मे जगह नहि देताह। तँ हम प्रेमक दरबज्जा नहि छोड़ि सकैत छी। एकरा लेल अहाँ सब हमरा समाज मे राखी वा छोड़ि दी, हमरा एकर कोनो परवाहि नहि अछि।" बाद मे ओकरा पता लागल जे इहो श्रीधरे ठाकुरक एकटा चालि छलैक। प्रेमक दलान पर कहिओ काल सुखिया सेहो रहैत छल। खासक' ओहि दिन अवश्य, जाहि दिन डोमू दासक मोन गड़बड़ रहैत छलैक। रघुबीर अपने तँ कनियाँ आ बच्चाक संग मधुबनी रहैत छल। एहिठाम प्रेमक

घर–आंगन आ ज्यादादक देखभाल करब डोमूदास पर छलैक। रघुबीरक इच्छा सेहो होइत छलैक, किछु दिन डोमू दास आ सुखिया के अपना संगे रखबाक, मुदा ओकर कर्त्तव्य परायणता देखि ओहो किछु नहि बाजैत छलैक। एक वेर समाजक किछु लोक रघुवीर के बाजल, रघुवीर बाबू अहाँ बी0डी0ओ0 थिकहुँ आ अहाँक बाबूजी दोसरक दूरा दरबज्जाक ओगरबाहि करैत छथि, इ अहाँ के नीक लागैत अछि। एहिपर रघुबीर उत्तर देलनि, "ओ हमर बाप छथि, हम हुँनकर बाप नहि छियनि। ओ जे किछु करैत छथि ओहि म मे हमर दखल देब उचित नहि। दोसर गप्प प्रेमक बाबूजी श्रीमंत चौधरी हमरहि लेल नहि पूरे धनकाहीक लेल भगवान छलाह। हुँनका ओहिठाम रहब आ मंदिर मे रहब दुनू बराबरि अछि।

भोला बाबू आ डोमू दास मे राति क' कहिओ काल गप्प–शप्प होइत छलनि, सेहो प्रेमेक ओहिठाम। कारण ओहि सँ एकान्त जगह आर दोसर नहि छलैक आ गामक एकोर सेहो छलैक। तँ ओम्हर वेशी लोकक आवर–जात नहि छलैक। भोला बाबू जखन जाइत छलाह तँ डोमू दास हुँनका बैसबाक लेल कुर्सी बहार क' क' दैत छलनि आ ओ अपने निचां मे हुँनका पायर लग बैसि जाइत छल। ओकरा कतबहुँ भोला बाबू कहैत छलाह जे अहाँ चौकी पर बैसू मुदा डोमू दास नहि मानैत छल। ओ बाजैत छल, "सरकार! अपने किएक कष्ट केलहुँ। हमरा बजा लितहुँ। बहुँत दिन भ' गेल अपनेक ओहिठामक चाह पीला। कम सँ कम एक कप चाहो तँ भेटैत। आ ताहि पर भोला बाबू कहैत छलाह, "एखन हम जाहि काजक लेल आयल छी, ओकरा लेल इ जगह सब सँ उपयुक्त अछि। रहल चाहक गप्प तँ एखन अहाँ के हमरा ओहिठामक चाह लीखल नहि अछि। एखन जँ अहाँ के चाह पीआयब तँ सब गुड़ गोबर भ' जायत। तँ पहिने एहि काज के खतम करु। तखन जतेक चाह पीबाक हो पिबैत रहब।"

ठीक रातिक आठ बजे डोमू दास चौकी पर बैसल तमाकुल चुना रहल छलाह। दलान पर एकटा डिबिया जरि रहल छलैक। पुरबा वसात सेहो बहि रहल छलैक। वसातक कारण डिबिया सोझां मे नहि राखि अढ़ मे रखने छलाह। जाहि सँ ओकरा पर वसातक पूर्ण असर तँ नहि होइत छलैक मुदा कखनहुँ क' भाउक मारैत हवाक संग डिबिया सेहो जेना

अटखेली करैत छलैक। ओहि अटखेलीक क्रम मे एक आकृति कँ देखि डोमू दास आवाज देलक, "के.....?"

विदुर, "हम छी विदुर। डोमू दास तँ स्वयं तीन दिन सँ विदुरेक प्रतीक्षा क' रहल छल मुदा ओ अनठा क' बाजल, "एतेक राति क'?" की बात छैक, अपने किएक कष्ट केलहुँ। अपने हमरा समाद दितहुँ हम आबि जइतहुँ। डोमू दास चौकी पर सँ उतरि क' कुर्सी बहार केलनि आ ओकरा अपना गमछा सँ झारि क' विदुर के बैसबाक आग्रह केलनि। विदुर बैसैत बजलाह, "जाहि काजे हम आयल छी, ओकरा लेल सब सँ नीक जगह इएह अछि। ओ डोमू दास कँ सेहो बैसबाक आग्रह केलनि। डोमू दास चौकी पर बैसि गेल।

डोमू दास, "विदुर बौआ! हम अहाँ सँ माँफी माँगैत छी। हम परिस्थितवश भासि गेलहुँ। हम अपना वचनक रक्षा नहि क' पओलहुँ। हमरा माँफ करू।"

विदुर, "की भेल, अहाँ एना किएक बाजैत छी। अहाँ तँ हमरा गछने छलहुँ। हम टाकाक इन्तजाम मे गेल छलहुँ। तखन फेर आई.....।"

डोमू दास, "विदुर बौआ! हम अहाँक सोझां लज्जित छी। हमरा अहाँक सोझां मुड़ी उठाबक साहस नहि होइत अछि। अहाँ तँ श्रीधर ठाकुर के जानैत छी। सांपक काटल लोक बाँचि सकैत अछि मुदा श्रीधर ठाकुरक काटल पानिओ नहि माँगि सकैत अछि। अहाँ जे किछु दिनक लेल बाहर चल गेलहुँ ओ ओकरहि फायदा उठौलक। हमरा वेवश क' देलक। हमरा अहांक चिंता नहि अछि मुदा हमरहुँ एहि बातक बड़ दुःख अछि जे हम पंडित जी के देल गेल वचनक' रक्षा नहि क' पओलहुँ।"

विदुर, "केहेन वचन आ कोन पंडित जी। हम किछु बुझलहुँ नहि।" ओना तँ विदुर के सब बात भोला बाबू पहिनहि बुझा देने छलाह, तथापि विदुर ओकर सत्यापन डोमू दासक मुँहे सेहो चाहैत छलाह। ओ एकरा विस्तार पूर्वक कहबाक आग्रह डोमू दास सँ केलनि। डोमू दास सेहो विस्तार पूर्वक, जेना–जेना भोला बाबू कहने छलथिन्ह, हूँ–बहूँ मिला देलनि। विदुर कँ भोला बाबूक गप्प पर एकदम विश्वास भ' गेलैक। एहि घटना मे किछु सत्यता सेहो छल आ किछु भोला बाबू आ डोमू दासक कारीगरी सेहो।

विदुर के मन मे श्रीधर ठाकुरक प्रति घृणाक भाव भरि गेल। दुनियाँ मे एहेन केओ नहि अछि जे आब विदुर आ श्रीधर ठाकुर के मिलान करा सकत। एहि सँ एकटा आर बात भेलैक। विदुरक मन मे जे प्रेमक प्रति भाव छलैक, ओहि मे बदलाव आव' लागल ओ प्रेमक प्रति नर्म होमए लागल। ओकरा विदित भेलैक जे पूर्वहुँ मे श्रीमंत चौधरी आ पंडित जी एक दोसराक प्रति प्रेम–भाव राखैत छलाह आ श्रीधर ठाकुर सब दिन सँ एहि दुनू परिवार के सताबैत आयल अछि आ हमरा प्रेमक झगड़ा मे ओहो हवा देने छल। आई बुझलहुँ जे ओ किएक हवा द' रहल छल।"

डोमू दास, "विदुर बौआ! एकटा गप्प कहुँ ?"

विदुर, "हँ....हँ.... अवश्य कहुँ।"

डोमू दास, "घरारीक लेल अहाँ हमरा कहने छलहुँ, आ कि हमहीं अहाँ के कहने छलहुँ ?"

विदुर, "नहि....नहि....से तँ अहीं हमरा कहने छलहुँ। हम तँ ओहि विषय मे सोचनहुँ नहि छलहुँ। जखन अहाँ कहलहुँ तखन हमरहुँ आँखि खूजल, जे इ हमरा लेल बड़ काजक चीज अछि।"

डोमू दास, "हमरा मन मे जँ कोनो गप्प रहैत तँ हम अहाँके किएक कहितहुँ। हमरहुँ मन मे तँ इएह छल जे घरारी अहाँ के द' क' पंडित जी कँ देल गेल वचनक रक्षा करी। हम सोचलहुँ जे आब तँ ओहि गप्पक चालीस–पैतालीस वर्ष बीति गेलैक। सब केओ ओहि घटना कँ बिसरि गेल होयताह आ हमहुँ तँ आब पाकल आम भेलहुँ, कखन टपकि जायब, के कहि सकैत अछि। तँ इ काज कए लेल जाय। मुदा हम नहि जनलहुँ जे श्रीधर ठाकुर एखन धरि एकरा बिसरल नहि छल। हम तँ कतहुँ एहि विषय मे किछु बजले नहि छलहुँ। पता नहि ओ कोना बुझि गेल। अहाँ कतहुँ एकर चर्चा कयने छलहुँ की?"

विदुर, "हँ.....टाकाक जोगार मे हम एक दू ठाम बाजल छलहुँ। मुदा ओकरा सँ तँ किछु नहि बाजल छलहुँ ?"

डोमू दास, "बस...बस....हम बुझि गेलहुँ। अहाँ जत' एकर चर्च कयने होयब, ओही मे सँ केओ जा' क' ओकरा बाजल होयत। ओ तँ कतेक दिन सँ एहि ताक मे छल। जँ अहाँ बाहर नहि जइतहुँ, तँ इ सब थोड़हि

होइत।" एहि सँ विदुर खूब प्रभावित भेल। ओ लोकनि जे सोचने छलाह, सैह भेलैक।

विदुर, "ठीक छै, डोमू दास जी! जे होयबाक छलैक, से तँ भ' गेलैक। आब की होयतैक।" विदुरक मुँह सँ 'डोमू दासजी' सुनि क' डोमू दासक करेज सूप सनक चौड़ा भ' गेल। आई धरि ओ रे डोमा छोड़िक दोसर शब्दक प्रयोग नहि कयने छल। जखन कि दुनूक वयस मे दूनाक फर्क छलैक। उँट जखन पहाड़क निचां आबैत छैक, तखन ओकरा सही औकाति बुझा जाइत छैक। किछु ओहने स्थिति एखन विदुरक छलैक। डोमू दास बाजल, "बौआ! आब की भ' सकैत अछि। हमर तँ हाथे कटि गेल। हम अहाँ लग आ दुनू पंडित जी लग लज्जित छी। ओ दुनू गोटे स्वर्ग सँ हमरा देखि रहल छथि आ छीः छीः करैत छथि। मुदा हम तँ विवश छी। पता नहि ओ कोन मनहूँस घड़ी छल, जे हमरा दुरमतिया घेरि लेलक।"

विदुर, "अहाँ जँ चाहब तँ एखनहुँ किछु नहि भेलैक अछि। एखनहुँ बहुत किछु कयल जा सकैत अछि आ जँ नहि चाहब तखन तँ कोनो गप्पे नहि।"

डोमू दास (आश्यर्च सँ), "की कहल, हमरा चाहने बहुत किछु भ' सकैत छैक। से कोना भ' सकैत छैक ? की अहाँ हमरा गप्प सँ पलटैक लेल कहैत छी?"

विदुर, "नहि.....नहि.... हम अहाँ के ओ सब किछु कर' क' लेल नहि कहैत छी। अहाँ रजिस्ट्री क' देलियैक तँ क' देलियैक ओहि सँ हमरा कोनो मतलब नहि, मुदा अहाँक एकटा दस्तखत सँ हम बाजी मारि सकैत छी।"

डोमू दास, "एकटा किएक, हमरा जतेक कहब आ जत कहब हम दस्तखत क' देव मुदा ओहि सँ हमरा उपर तँ कोनो कारबाई नहि होयत। एहेन नहि जे हम गरीब लोक पिसा जाई। अहाँ सबकँ तँ बहुत बाट देखल अछि। कोम्हरहुँ सँ बहार भ' जायब।"

विदुर, "एहेन कोनो गप्प नहि छैक। केवल एकटा छोट–छीन नाटक करबाक आवयकता छैक बस।"

डोमू दास, "विदुर बौआ! ई नाटक बला गप्प हमरा बुझबा मे नहि आयल। केहेन नाटक हमरा सँ करायब ? ओहि नाटक मे कोनो खतरो छैक ?"

विदुर, "साल भरि पूर्वक तारीख मे हमरा नाम सँ जड़वयाना क' दीअ'।"

डोमू दास (गप्प के अनठाबैत आ अपना के बुरिबक साबित करैत), "ई कोना हेतैक। जखन रजिस्ट्री भ' गेलैक, तखन जड़वयना कोना होयत। एहि बुढ़ारी मे हमरा थाना–कचहरी दौड़ायब की?"

विदुर, "अहाँ के किछु नहि होयत आ कतहुँ नहि दौड़' पड़त।"

डोमू दास, "विदुर बौआ! एहि गाम मे तँ हमरा बुझने एकेटा नीक लोक छथि, भोला बाबू। हम कनेक हुँनका सँ पूछि लैत छी। तखन हम अहाँ के कोनो गप्प कहब। नहि तँ हम फेर झूट्ठा बनि जायब। दू–चारि दिन हमरहुँ तँ सोचबाक अवसर दीअ'।" विदुर सोचलक जे ई सब काज तँ प्रेमे सँ कराओल जा सकैत अछि, जोर जबरदस्ती सँ नहि। तँ डोमू दास कँ दू–चारि दिनक समय देल जा सकैत अछि आ जखन ओ भोला बाबू सँ पूछत, तँ भोला बाबू तँ हमरहि पक्ष मे बजताह। इहो नीके गप्प भेल। चारि–पाँच दिनक बाद विदुर पुनः डोमू दास सँ भेट केलक। डोमू दास बाजल, "हँ...बौआ, आऊ, बैसू, भोला बाबू सँ गप्प भ' गेल। ओ बजलाह, जे विदुर कँ मदति कर' चाहैत छियनि? हम कहलनि, "अवश्य कर चाहैत छियनि। जँ से नहि करबाक रहैत तँ अहाँक ओहिठाम किएक अबितहुँ। तखन ओ कहलनि, जे विदुर कँ मदति कयने बड़ पुण्य होयत। जँ विदुर कँ जड़वयना नहि क' देबनि तँ श्रीधर ठाकुर हुनका घर सँ बहरायबाक बाट बन्न क' देतनि। तँ अहाँ कहुँ जे पछाति तारीख मे जड़वयना कोना भ' सकैत अछि।

विदुर, "एकर चिंता अहाँ जुनि करु। हम सब स्टाम्प पेपर पछाति तारीख बला बहार करबा लैत छी। अहाँ कँ केवल एकटा दस्तखत कर' पड़त।"

डोमू दास, "एकटा किएक, हमरा जयटा कहब हम दस्तखत क' देव। हमरहुँ मोन मे तँ संतोष होयत।"

विदुर पेशकार के पटिया क' कोर्ट सँ पिछाति तारीखक स्टाम्प पेपर बहार करबौलनि आ ओहि पर पेशकार सेहेब सँ जड़वयना लिखा क' डोमू दासक दस्तखत ल' लेलनि। एहि कार्य मे किछु अडंड खर्च सेहो भेलनि मुदा विदुर ओकर परवाहि नहि करैत छथि। ओ दुश्मन कँ नकेल पहिराबक लेल डंड–अडंड किछु नहि बुझैत छथि। सब काज भ' गेलाक उत्तर विदुर भोला बाबूक सलाह पर चुप–चाप सूति रहलाह। एम्हर

घरारीक हालत बड़ भयानक भ' गेल छलैक। अकठ आ कांट–कुश सँ घरारी भरि गेल छलैक। राति मे सांप–कीडाक डर सेहो होइत छलैक। करीब तीन वर्ष श्रीधर ठाकुरक रजिस्ट्रीक भ' गेल। ककरहुँ सुगबुगाइत नहि देखि एक दिन श्रीधर ठाकुर चारिटा जन के घरारी साफ करबाक लेल पठौलनि। चारि बाजैत–बाजैत सबटा कांट–कुश आ जंगल–झार साफ भ' गेल। जखन जन सब दिन भरिक काटल–खोटल जाड़नि ल' क' विदा भेल छल कि विदुर पहुँचलाह आ गरजि क' जन सब के पूछलनि, तोरा सबके इ जंगल साफ करबाक लेल के पठौने छौक?"

जन सब, "मालिक।"

विदुर, "कोन मालिक?"

जन, "श्रीधर बाबू।"

विदुर, "श्रीधर ठाकुरक बापक जमीन थिकैक की ? भाग एहिठाम सँ, नहि तँ सभक चरसा टानि लेबौक।" विदुर सब जनक कोदारि छिट्टा छिनि क' राखि लेलनि आ सबकँ भगा देलनि। सब ओहिठाम सँ जान बचा क' लत्ते–पत्ते पड़ायल। ओहो सब तँ विदुरक स्वभाव सँ परिचिते छल। जँ ओकरा सबके कनेको भनक रहितैक, जे एहिमे विदुरक हाथ छैक। तँ ओ सब अयबे नहि करैत। ओ सब जा' क' श्रीधर ठाकुर कँ सब गप्प बाजल। श्रीधर ठाकुर चकित रहि गेलाह। ओ सोचैत छथि जे एकर मतलब ई आगि एखन धरि मिझायल नहि अछि। एहि सँ धुआँ उठिये रहल छल, जकरा हम देखि नहि पओलहुँ। आब तँ युक्ति सँ काज निकाल' पड़त। विदुर सँ जितब कठिन अवश्य अछि मुदा मुश्किल नहि। ओ अपना छोटका बेटा कँ विदुरक ओहिठाम पठौलनि। विदुर ओकरा सँ गप्पो नहि केलनि। ओ बाजल, "विदुर भैया! कनेक बाबूजी बजौने छथि, कोनो काज छनि।"

मुदा विदुर ओकरा हँ–हुँ किछु नहि कहलनि। ओ घुरिक अपना दलान पर चल गेल। ओ श्रीधर ठाकुर के सब गप्प कहलनि। तखन श्रीधर ठाकुर स्वयं संध्याकाल विदुरक ओहिठाम गेलाह आ पूछलनि, "विदुर जी, किएक एतेक तमसायल छी। जँ कोनो कष्ट छल तँ हमरा कहितहुँ आ जन मजदूरक संग एना केने तँ अपनहि बेज्जती भेल ने।"

विदुर अपना दलान पर बैसल रहल। ने श्रीधर ठाकुर के बैसबाक

लेल कहलक आ ने हुँनका कोनो गप्पक उत्तर देलक। श्रीधर ठाकुर के बुझा गेलनि जे विदुर के एखन बड़ वेशी तामस छैक। वेशी बजला पर भ' सकैत अछि जे उखड़ि जाय आ अनाप–शनाप बाजए। तैं उचित इएह जे एखन चुप–चाप चलि दी। एकरा दोसर ढंग सँ लेब' पड़त। ओ तँ एकरा हल्का मे नेने छलाह जे काज भ' गेलाक उत्तर सब गप्प अपनहिं ठंढा जेतैक। मुदा स्थिति तँ ज्वालामुखी सँ वेशी भयाबह लागि रहल छल। ओ विदुरक तामस सँ नीक जकाँ अवगत छलाह। तैं कहुना काज निकालबाक जोगार ताकि रहल छलाह। आई जँ विदुरक जगह केओ दोसर रहैत आ श्रीधर ठाकुरक सामान घेरने रहैत तँ आई ओकर की हालत भेल रहैत, केओ अनुमानो नहि क' सकैत छल मुदा विदुर लग' हुँनकहुँ अकिल भूतिया जाइत छलनि। पहिने तँ ओ चाहलनि जे एम्हर–ओम्हर सँ विदुर के मना क' काज निकालि ली, आ अही क्रम मे ओ भोला बाबूक भेट केलनि। भोला बाबू आग्रह पूर्वक बैसौलनि आ अयबाक प्रयोजन पुछलनि। श्रीधर ठाकुर बजलाह, "कनेक विदुर के बुझा–सुझा दितियैक, आपस मे झंझट कयला सँ की फायदा। आब तँ जे होयबाक छलैक से भ' गेलैक।"

भोला बाबू, "औ जी! जमीन लेलहुँ अहाँ, आ कि जमीन लेताह विदुर जी। एहि मे हमरा जुनि सानू। हम छी सोझ लोक, हम एहि छः–पाँच मे नहि रहैत छी। ओहुना प्रेमक विवादक दिन सँ विदुर हमरा पर खौझायले रहैत अछि। अहाँ अपने तँ पाकिये रहल छी, हमरा सभ के किएक पकाब' चाहि रहल छी। भोला बाबू कोना विदुर के मना करितथि। ओ तँ हुँनकहि पेशल भूत छल। ओ तँ चाहिए रहल छलाह जे दुनू मे नीक जकाँ होई। तखनहि गाम आ गामक लोक चैनक निंन सूतत। जखन श्रीधर ठाकुर सब उपाय सँ थाकि गेलाह, तखन पंचक शरण मे गेलाह। हारने हरिनाम, आई धरि ओ गाम मे ककरहुँ चितबै नहि छलाह। आई परिस्थिति वश हुँनकहि पाँच गोटे के बजाबए पड़लनि। उचित पंचैती करब पंचोक विवशता छल। किएक तँ एक दिश धधरा तँ दोसर दिश खाइध। केओ ककरहुँ सँ उनैस नहि। पंच लोकनि अयलाह। दुनू पक्षक लोक बजाओल गेलाह। विशेष रूप सँ विदुर, भोला बाबू आ डोमू दास सेहो बजाओल गेलाह। ई पंचैती गामक स्कूल पर भ' रहल छल आ पंच सब अगल–बगल केर गामक

छलाह। दुनू पक्षक वयान दर्ज कयल गेल। तदनुरूप कागजक माँग भेल। विदुर जड़वयनाक कागज आ श्रीधर ठाकुर केवाला जमा केलनि। पंच लोकनि सब कागज कँ उनटा–पुनटा क' देखलनि आ बजलाह, "की औ श्रीधर बाबू, अहाँक केवाला सँ पहिने तँ विदुर के जड़वयना छनि। सामाजिकता मे जड़वयना करौनिहारक प्रथम अधिकार होइत छैक। बिना ओकरा सहमति के दोसर केओ व्यक्ति रजिस्ट्री नहि करा सकैत अछि। दोसर गप्प अहाँ सँ वेशी ओहि घरारीक आवश्यकता विदुर जी कँ छनि। अहाँक रजिस्ट्री करौने हुँनकर बाट बन्न भ' गेलनि। एकर अनुमति कोनो कानूनो नहि दैत अछि, आ ई मानवताक खिलाफ सेहो भेल।

श्रीधर ठाकुर "जड़वयना बला गप्प तँ हमरा बुझल नहि छल, आ ने डोमू दास बाजल छलाह। दोसर गप्प जड़वयना तँ पछाति तारीख मे रजिस्ट्री भेलाक बादो कराओल जा सकैत अछि, केवल हमरा मोलजिम करबाक लेल"।

पंच, "हँ, कराओल तँ जा' सकैत अछि आ लोक करबितहुँ अछि मुदा कागज तँ कागज होइत अछि। की अहाँ एकरा साबित क' सकैत छी, जे इ जड़वयना केवालाक बाद भेल अछि।"

श्रीधर ठाकुर, " ई साबित करब तँ कठिन अछि। तखन डोमू दास सँ पूछल जा सकैत अछि, जे ई कहिआ भेलैक।"

पंच, "की औ डोमू दास! अपने हिनका जड़वयना बला गप्प नहि बाजल छलहुँ। इ जड़वयना कहिआ भेलैक।"

डोमू दास, "सरकार! ई घरारी आई सँ चालीस वर्ष पूर्व हम किनने छलहुँ मुदा ई हमरा लेल ओतेक उपयोगी नहि भेल, जतेक ई विदुरक लेल उपयोगी छलनि। संयोगवश एक दिन हमरा विदुर जी सँ गप्प–शप्प भेल आ हुँनका हमही कहलियनि जे विदुर बौआ, ओ घरारी हमरा सँ किएक नहि लिखा लैत छी। हमहूँ आब बुढ़ भेलहुँ पता नहि कखन की होयत आ ओकर बाद धिया–पूता की करत। विदुर जी तैयार भ' गेलाह आ बीस हजार मे गप्प फाइनल भ' गेल। ओ हमरा दू हजार टाका सेहो द' देलनि आ तारीख तँ हमरा मन नहि अछि मुदा आई सँ करीब चारि साल पूर्व हम हिनका जड़वयना क' देलियनि। इहो ओकर बाद टाकाक जोगार मे लागि

गेलाह।"

पंच, "ई जड़वयना बला गप्प श्रीधर बाबू के नहि कहलियनि ?"

डोमू दास, "जी नहि, हुँनका हम ई गप्प नहि कहलियनि, आ कहबो करितियनि कोना? रजिस्ट्री करबा सँ एक दिन पूर्व राति मे दू गोटे हमर कंठ दाबि हमरा रजिस्ट्री करबाक लेल विवश क' देलक। ओ सब बाजल जे इ हाथ तखनहि हटत जखन अहाँ काल्हि भोरे रजिस्ट्री आफीस जा' क' श्रीधर बाबू के ओ घरारी रजिस्ट्री क' दियनि जे विदुरकेँ कर' बला छी आ हमरा सिरमा मे बाइस हजार टाका सेहो राखि देलक। हम तँ डरहि पसेना सँ तर–वतर भ' गेलहुँ। प्राण बचाबक लेल गछि लेलहुँ आ प्रातःकाल जा' क' रजिस्ट्री क देलियनि। आब अहीं सब कहूँ जे हम की करितहुँ।" डोमू दासक बयान सँ भोला बाबू अत्यन्त खुश छलाह। ओ तँ डोमू दास के जतेक पढ़ौने छलाह, डोमू दास तँ ओहुँ सँ बढ़िक' काज कयलक।

श्रीधर ठाकुर, "इ एकदम झूठ गप्प अछि। हमरा पर गलत आरोप लगाओल जा रहल अछि। सब केओ मिलि क' हमरा खिलाफ षटयंत्र रचने अछि।"

डोमू दास, "तँ अहीं कहुँ सत्य की अछि। हमरा अहाँक बीच जमीन लेबा–देबाक विषय मे किछु गप्प भेल ?"

श्रीधर ठाकुर, "नहि, से तँ नहि भेल अछि।"

डोमू दास, "तखन की हम राति मे सपना देखने छलहुँ आ भोरे जा क अहाँ के रजिस्ट्री क' देलहुँ।"

श्रीधर ठाकुर, "हमर समदिया जे गेल छल। जकरा मार्फत गप्प भेल। ओएह हमरा बाजल, जे काल्हि भोरे रजिस्ट्री होयत। डोमू दास तैयार अछि।"

डोमू दास, "ओ अहाँक समदिया छल कि लठैत। कनेक ओकरा बजाउ तँ।"

श्रीधर ठाकुर, "ओ तँ कतहुँ बाहर गेल अछि।"

डोमू दास, "तखन ई गप्प स्पष्ट कोना होयत, जे ओ हमरा संग की, की केलक आ हम रजिस्ट्री करबाक लेल कोना विवश भ' गेलहुँ।"

पंच, "अहाँ हमरा सब कँ बजा लेलहुँ आ गवाह के बाहर पठा देलहुँ। ई तँ अहाँ हमरहुँ सबके दूरि केलहुँ। एहि बीच मे विदुर किछु

बजबाक प्रयास केने छलाह। पंच हुँनका इशारा सँ बैसबाक लेल कहने छलथिन्ह तँ एकटा पंच बजलाह, "की हौ, विदुर! तों किछु बाज' चाहैत छलह?"

विदुर, "देखू, हम तँ एकेटा गप्प कहब। आई धरि गाम मे वा समाज मे जे सामंजस्य बनल आबि रहल अछि, ओ बनल रहए। समाजक काज होइत छैक एक दोसराक पूरक बनिक रहबाक। नहि कि एक दोसराक उजाड़बाक। जे केओ गोटे ककरहुँ उजाड़बाक प्रयास करैत छथि, ककरहुँ बाट बन्न करबाक प्रयास करैत छथि। ओ समाजक दुश्मन छथि। हमरा ओहि घरारीक नितांत आवश्यकता अछि। ओकरा बिना हमरा घर सँ बहरायब कठिन अछि। ककरहुँ बाट बन्न करबाक प्रावधान कोनो कानून मे नहि अछि। हम डोमू दास सँ गप्प केलहुँ। हम नहि बल्कि डोमूए दास हमरा कहलनि, "विदुर बौआ! अहाँक घर लग जे हमर जमीन अछि, से हमरा सँ अहाँ लिखा लीअ आ जे उचित जरसीमन होई से हमरा द' दीअ'। दुनू गोटेक बीच ओकर जरसीमन बीस हजार तय भेल आ हम दू हजार टाका द' क' जड़वयना करौलहुँ। शेष टाकाक जोगाड़ मे बोकारो चल गेलहुँ। जड़वयना सेहो हम कराबैक पक्ष मे नहि छलहुँ। मुदा डोमू दास कहलनि, बौआ हम आब बुढ़–सूढ़ भेलहुँ। हमरा सभक कोन ठेकान। तँ एकटा कागज तँ बनि जायत। ई अहुँक लेल नीक रहत आ हरमहुँ लेल। हमरा बोकारो मे किछु समय लागि गेल। जखन गाम अयलहुँ तँ आहि रे बाप, "ने मुसबे, ने नंगरिये। पता लागल जे श्रीधर ठाकुर बाइस हजार टाका द' क' रजिस्ट्री करा' क' निश्चिंत छथि। पहिने तँ हमरा डोमू दास पर बड़ तामस भेल जे दू हजार टाकाक लेल हुँनकर नेति डोलि गेल। हम जा' क' डोमू दास के बड़ फज्जहित केलियनि आ ओ चुपचाप सुनैत रहलाह। जखन हमर सबटा भड़ास बहार भ' गेल, तखन ओ जे किछु कहलनि, से सुनि क' हमरहुँ ऑखि डबडबा गेल। हम हुँनका सँ माँफी मँगलहुँ। ओ हमरा बापक वयस केर छथि, मुदा डोमू दास समुद्र जकां शान्त रहलाह आ कहलनि, बौआ धोखा मे इ सब अहिना होइत छैक। हमरा अहाँक गप्प सँ कनेको तकलीफ नहि अछि। हँ एहि बातक हमरहुँ तकलीफ अछि जे आई धरि हम झूट्ठा नहि बनल छलहुँ

से आई हम झूट्ठा बनि गेलहुँ। हम एतेक विवश भ' गेलहुँ जे अपना वचनक' रक्षा नहि क' सकलहुँ। एखन तँ (पंच दिश) अपनहुँ सब आयल छी। जा' क' देखू जँ ओकर आवश्यकता कनेको श्रीधर बाबू कँ होनि तँ अपने हुँनकहि पक्ष मे फैसला द' दिऔन। नहि जँ ओकर आवश्यकता हुँनका सँ वेशी हमरा होमए तँ निर्णय हमरा पक्ष मे होयबाक चाही। अन्यथा जे केओ रावण बनिक हमरा समाज कँ छिन्न–भिन्न करबाक प्रयास करताह, ओहो चैन सँ नहि रहताह। आब हमर समाज ओहि रावण बध के लेल तैयार अछि।"

पंच, "ठीक छै विदुर जी! हम सब अहाँक भावना के बुझैत छी। हमहुँ सब तँ ओकरहि लेल आयल छी। सामाजिकताक रक्षे तँ हमरा सभक उद्येश्य अछि। की औ श्रीधर बाबू! आब तँ अहूँ के सब गप्पक जानकारी भ' गेल। आब की कहैत छी।"

श्रीधर ठाकुर, "हम की कहब। निर्णय तँ अहाँ सबकँ करबाक अछि। जकरा जत' जे मन होइत छैक, से तँ करितहि अछि। आई हमरा बेर मे सबके मिरचाई लागि गेल छैक। किएक तँ एहिगाम मे सब सँ वेशी मरखाह लोक तँ हमही छी ने? हमरा तँ अहाँ सभ रावण बना देलहुँ। आब बध करब बाँकी अछि। ओहो कइये लीअ'।"

पंच, "छोडू ने ओहि गप्प कँ। आब ई कहूँ जे ओ जमीन अहाँ विदुर कँ आपस करैत छियनि।"

श्रीधर ठाकुर, "से कोना होयत। की हम आपसे करबाक धेय सँ रजिस्ट्री करौलहुँ। जहाँ धरि विदुरक रास्ताक गप्प छैक तँ ओ ओहि बाटे आबि–जा सकैत छथि। हम हुँनका कहिओ नहि रोकबनि।"

पंच, "की अहाँ विदुर कँ एहि मे सँ आधा द' सकैत छियनि।"

श्रीधर ठाकुर, "जी नहि।"

पंच, "की रास्ताक लेल दस धूर द' सकैत छियनि।"

श्रीधर ठाकुर, "लिखा–पढ़ी क' क' हम एको धूर नहि देबनि। तखन हुँनका अयबा–जयबाक लेल हम मनो नहि करबनि।"

पंच, "एहि जमीनक प्रथम अधिकारी विदुर छथि। किएक तँ ओ जड़वयना करौने छथि आ दू हजार अग्रिम सेहो द' चुकल छलाह। तँ अपने के चाही जे

पूरा जमीन विदुर के आपस क' दियनि। जँ पूरा नहि तँ कम सँ कम आधा अवश्य द' दिऔन। किएक तँ हुँनकर घर सँ बहरेबाक बाट ओएह छनि।"

श्रीधर ठाकुर, "ई घरारी हमरहि वंशक छी आ कोनो कारण वश हमरा हाथ सँ निकलि गेल छल। हम पुनः ओकरा हासिल कयलहुँ। तँ हम ओहि मे सँ ककरहुँ किछु नहि देब।"

पंच, "ई तँ कोनो गप्प नहि भेल। ई तँ ओएह भेल जे पंचक बात माँथ पर मुदा खुट्टा ओतहि गारब। श्रीधर बाबू अहीं पंचकँ बजौने छियनि आ अहीं पंचैती सँ भागि रहल छी।"

श्रीधर ठाकुर, "जखन उचित पंचैती नहि हेतैक, तखन तँ सैह ने कर' पड़त।"

पंच, "आ उचित तँ तैखन ने हेतैक, जखन सब नियम, कायदा, कानून के ताख पर राखि अहाँक मोन, मोताबिक निर्णय कयल जाय।"

श्रीधर ठाकुर, " से तँ हम नहि कहैत छी। हम टाका द' क' रजिस्ट्री करौने छी, एहि सँ पैघ साक्ष्य आर की भ' सकैत अछि। अपने लोकनि ओहि पर तँ विचार नहि क' रहल छी।"

पंच, "अवश्य करितहुँ रजिस्ट्री पर विचार मुदा तखन, जखन ओहि रजिस्ट्री सँ एक वर्ष पहिने जड़वयना नहि कयल रहैत। जड़वयना मे देल गेल समय एक मास शेष छलैक। जँ अपने एक मास आर ठहरि जइतहुँ तँ सम्भवतः निर्णय अहींक पक्ष मे होइत मदुा अपने तँ बीचहि मे कूदि समाजिक मर्यादा कँ तार–तार क' देलहुँ। एहि सँ समाज मे ककरहुँ कोनो महत्व नहि रहि जायत।"

श्रीधर ठाकुर, "ई तँ हमरा बुझल नहि छल आ ने केओ हमरा एहि विषय मे किछु कहलक। जँ हमरा पता रहैत तँ हम अवश्य एक मास ठहरि जइतहुँ।"

पंच, "से जे हो, ई तँ अहाँक काज छल। पूर्ण रूपेण जाँच–पड़ताल कयलाक बादे ने काज करेबाक चाही।"

श्रीधर ठाकुर, "तखन जे इच्छा हो से कयल जाऊ। हमरा जे बुझबाक छल से हम बुझि गेलहुँ। हम अपने लोकनि सँ जे न्यायक अपेक्षा करैत छलहुँ, से हमर मूर्खता छल।"

पंच, "न्याय तँ हम सब अवश्य करब मुदा ओ अहाँक पक्ष मे होयत की नहि, कहि नहि सकैत छी।"

एहि तरहँ श्रीधर ठाकुर पंचैती सँ भागि पड़ेलाह। ओ पंचक कोनहुँ सुझाव के मानबाक लेल तैयार नहि छलाह। अंत मे पंच लोकनि मिलि क पंचनामा तैयार केलनि, जे एहि तरहँ छल–

श्रीधर ठाकुर आ विदुर जीक बीच एकटा घरारीक झंझट चलि रहल अछि। ओहि घरारीक फिलहाल मालिक डोमू दास वल्द मोती दास साकिन धनकाही छलाह। डोमू दास सँ श्रीधर ठाकुर ओ घरारी रजिस्ट्री करौलनि मदा एक वर्ष पूर्व ओकर जड़वयना विदुर जी करौने छलाह। जकर एखन धरि मियाद पूरल नहि छलैक। जड़वयनाक शर्त्तक अनुसार विदुर जी समय सँ एक मास पूर्वहि टाकाक इन्तजाम क' क' डोमू दास लग गेलाह मुदा ओहि सँ पूर्वहि श्रीधर ठाकुर बल पूर्वक डोमू दास सँ रजिस्ट्री करौलनि। जकर गवाह सेहो अछि। एहेन सम्भावना प्रतीत भ' रहल अछि जे डोमू दास दलित वर्गक लोक छथि, तँ एहि तरहक दबाब बनाओल गेल होयत। हलांकि न्यायक दृष्टि मैं जड़वयनाक ओतेक महत्व नहि अछि मुदा सामाजिकता मे एकर मान्यता अछि। लोक के राति–विराति टाकाक खगता होइत छैक। की ओ राति मे जा' क' रजिस्ट्री करत। इ तँ सम्भव नहि छैक मुदा जड़वयना कखनहुँ क' क' अपन काज चला लैत अछि। ककरहुँ माई–बापक श्राद्ध, बेटा–बेटीक विवाह पैघ बिमारी मे टाका प्राप्त करबाक एकटा साधन जड़वयना सेहो अछि। अपना जमीनक जड़वयना क' क' लोक टाका ल' लैत अछि। दोसर गप्प ककरहुँ घर सँ बहरायबाक बाट कँ बन्न नहि कयल जा सकैत छैक। यदि ककरहुँ मरौसी जमीन छैक, तैओ ओकरा बाट बन्न करबाक अधिकार नहि छैक। एहि घरारी पर श्रीधर ठाकुरक अधिकार भेला सँ विदुरक बाट बन्न भ' जाइत छनि। एहि आधार पर जँ पूर्ण नहि तँ आंशिक रूपँ सेहो विदुर जी घरारीक हकदार छथि। पंचैतीक क्रम मे श्रीधर ठाकुर सँ आग्रह कयल गेल जे ओ घरारीक किछु अंश विदुर कँ देथि, जाहि सँ हुनकर बाट बन्न नहि होनि। मुदा श्रीधर ठाकुर एक इंच जमीन छोड़बाक लेल तैयार नहि भेलाह। दुनू पक्षक गवाहक बयान, प्रस्तुत साक्ष्य आ सब परिवेश पर विचार करैत पंच लोकनि इ निर्णय लैत छथि जे घरारीक आवश्यकता श्रीधर ठाकुर सँ वेशी विदुर जी के छनि आ जड़वयनाक आधार पर

हकदार सेहो। तँ हर हालत मे घरारी विदुर के भेटक चाही। श्रीधर ठाकुर ओकरा एवज मे बाइस हजार टाका वा जतए चाहथि, विदुर सँ ओतेक जमीन ल' सकैत छथि। सामाजिक व्यवस्था के जिवन्त राखक लेल इ निर्णय उचित आ आवश्यक सेहो अछि। नहि तँ सब छिन्न–भिन्न भ' जायत। गाम–घर मे ककरहुँ केओ मदति नहि करत। एहि निर्णय सँ सब पंच आ गामक प्रमुख लोक जे पंचायत काल उपस्थित छलाह, सहमत छथि।

सब पंच
(हस्ताक्षर)

ओहि पंचनामा पर सब पंच आ गामक प्रमुख लोक जे उपस्थित छलाह, दस्तखत केलनि। केवल श्रीधर ठाकुर बिना दस्तखत कयनहि चलि गेलाह। एकरा विरोध मे श्रीधर ठाकुर अदालत चल गेलाह। जड़वयना के तँ नजरि अंदाज क' देल जाइत छलैक मुदा विदुरक बाट बन्न भ' जेबाक कारण जज सेहेब सेहो असमंजस मे पड़ि जाइत छलाह आ निर्णय विदुरेक पक्ष मे करैत छलाह। एहि तरहँ श्रीधर ठाकुर तीन ठाम सँ केश हारि गेलाह। एखन चारिभठाम अपील कयने छथि। श्रीधर ठाकुर के पैरवी मे लाखो टाका बुका गेल। टाका तँ विदुरक सेहो खर्च होइत छल, मुदा ओकर खर्च कम होइत छलैक। एतेक टाका मे तँ कतेक घरारी कीनल जा सकैत छल मुदा अड्डी तँ अड्डी होइत छैक। केओ घरारी छोड़बाक लेल तैयार नहि। विदुरक लेल ओ पंचनामा ब्रह्मात्रक काज क' रहल छलैक। ओकरहि आधार पर ओकर स्वामित्व सेहो ओहि घरारी पर छलैक। एहि तरहँ दस वर्ष सँ श्रीधर ठाकुर आ विदुरक बीच घमासान चलि रहल अछि आ ओकरहि प्रभावे धनकाहीक लोक चैनक सांस ल' रहल अछि।

८

एतेक भेलाक बादो प्रेमक दुर्भाग्य एखन धरि ओकर पछोर नहि छोड़लक अछि। बेचारा घर द्वारि सभक त्याग क' एकान्त बास क' रहल अछि। एहेन एकान्त जतए केओ अपन नहि छैक। अपना लोक सँ दूर, समाज सँ दूर जेना चारू चरण पतियाक प्रायश्चित्त क' रहल हो। तथापि ओ बेर–बेर कोनो ने कोनहुँ उलझन में फँसि जाइत अछि आ भगवानक कृपा सँ उबरियो जाइत अछि। बनावटी प्रेम–प्रसंग सँ उबरल वर्षो भरि नहि भेल छलैक, कि ओ महाघोटाला में फँसि गेल। एक करोड़क घोटाला छलैक। ओकरा रिटायर भेलाक बाद स्टोरक सत्यापन कयल गेल। ओहि सत्यापन मे एक करोड़क सामग्री गायब पाओल गेल। ओकर वर्त्तमान प्रभारी मि0 खन्ना सँ पूछ–ताछ कयल गेल। ओ कोनो कागज प्रस्तुत नहि क' सकलाह। ओ प्रेम सँ ओहि सामग्रीक प्रभार नेने छलाह मुदा जखन हुँनका सँ पूछल गेल तँ ओ सीधे गाय गीर गेलाह आ बजलाह जे प्रेम सँ हमरा इ सामग्री प्रभार मे नहि भेटल अछि। विभाग द्वारा जाँच पदाधिकारी नियुक्त कयल गेल आ जाँच कार्य शुरु भ' गेल। एहि क्रम मे प्रेम बाबू आ मि0 खन्नाक अलावे आर लोक के बजाओल गेल। सबके उपस्थित होयबाक नोटिस देल गेल। जाँचक क्रम मे प्रेम बाबू जे प्रभार पत्र दाखिल केलनि, मि0 खन्ना ओकरा फर्जी करार क' देलनि। कयल गेल दस्तखत सँ ओ मुकरि गेलाह। कएटा स्टाफ सेहो हुँनका पक्ष मे बाजल जे इ मि0 खन्नाक दस्तखत नहि छियनि। सबटा छार–भार प्रेमक उपर खसि पड़ल। एहि तरहँ प्रेमक पाशा उनटि गेल रहए। ओकर बाँचब कठिन भ' गेल। एकहुँ गोटे प्रेमक पक्ष मे नजरि नहि आबैत छलाह। ओम्हर डोमू दास आ भोला बाबू क योजना सफल भ' गेल। हुँनका दुनू पर विदुर के पूर्ण विश्वास भ' गेलैक। हुँनकहि कारण तँ विदुर घर लगहक

घरारी हासिल करबा मे श्रीधर ठाकुर के पानि पिआ देलक। हुँनका दुनूक गप्प–शप्प सँ विदुर कँ विश्वास भ' गेलैक जे प्रेम निर्दोष अछि। ओ हमरा संगे जानि बुझिक' कोनो बहन्ना नहि कयने छल। जँ हमरा प्रति ओकरा मन मे कोनो खोट रहितैक तँ एखन धरि ओ चुप नहि रहैत। किछु ने किछु अवश्य कयने रहैत वा कतहुँ ने कतहुँ एहि विषय मे ककरहुँ सँ किछु गप्प अवश्य बाजैत मुदा से सब तँ नहि कयलक। ओ प्रेमक दिश सँ विकार रहित भ' गेल। ओकरा अपना कृत्य पर बड़ पश्चाताप भेलैक। ओ निश्चय केलक जे प्रेमक मदति करत आ जतेक ओकर टाका डूबल छलैक, सब आपस कराओत। ओ सोचितहि छल जे प्रेम सँ कोना भेट होयत। किएक तँ प्रेम कत' अछि, ई ककरहुँ नहि बुझल छलैक। ओ प्रेम सँ भेंट करबाक लेल सोचितहि छल कि एक दिन जानकी बाबूक टेलीफोन आयल। जानकी बाबू बजलाह, गुरुजी! अहाँ सँ जे दुश्मनी क' क' रहत। ओकरा तँ भगवानो नहि मदति करैत छथि।

विदुर, "से की, की भेलैक अछि ?"

जानकी बाबू, "अहाँक एकटा दुश्मन बड़ पैघ घोटाला मे फँसि गेल अछि"। एहि सँ ओकरा भगवानो नहि बचा सकैत छथि। आफीसक सब केओ हुँनका विरोधे मे अछि"।

विदुर, "अहाँ ककर गप्प क' रहल छी" ?

जानकी बाबू, "अहींक दुश्मन, प्रेमक"।

विदुर, "जानकी बाबू, प्रेम हमर दुश्मन नहि, दोस्त अछि। आ सेहो एहेन, जेहेन दोसर केओ नहि भ' सकैत अछि। तँ हमरा एहि घटना सँ खुशी नहि, दुःख भ' रहल अछि"।

जानकी बाबू, "मुदा अपने तँ.....।

विदुर, "हँ, हम गलती पर छलहुँ। हम ओकरा बुझि नहि सकलहुँ। हमरहि कारण ओ रने–वने भटकि रहल अछि। हम ओकर प्रायश्चित्त करब"।

जानकी बाबू, "हम क्षमा चाहैत छी। हमरा टेलीफोन नहि करबाक चाही"।

विदुर, "नहि–नहि, इ तँ नीक कयल जे टेलीफोन कयल। हँ एकटा काज

आर करू'' ?

जानकी बाबू, ''से की'' ?

विदुर, ''कोनो एकटा नीक ओकीलक जोगार करु। टाकाक चिंता नहि करब। जतेक टाका लगतैक, हम वहन करब। हमरहुँ लेल प्रायश्चित्त करबाक एहि सँ सुन्नर मौका नहि भेटत। हमहुँ शीघ्र आबि रहल छी। कागज–पत्र जे आवश्यक होई, बहार करबा लेब''।

जानकी बाबू, ''वेश! हम सब इन्तजाम क' क' राखब। अपने अबिऔक आ एतेक कहि जानकी बाबू टेलीफोन राखि देलनि आ गुरुजीक आज्ञानुसार इन्तजाम मे लागि गेलाह। विदुर जानकी बाबूक ओहिठाम पहुँचलाह। जानकी बाबू बोकारो मे नीक हस्ती बला लोक छलाह। दु–चारिटा उच्च श्रेणीक व्यवसायी मे हुँनकहुँ नाम आबैत छलनि। शुरु–शुरु मे तँ जानकी बाबू बड़ घाटा मे चलि रहल छलाह। कर्ज सँ डूबल छलाह। मुदा विदुरक शरण मे आबैत देरी हुँनकर भाग्योदय भ' गेल आ ओ दस वर्ष मे कत' सँ कत' पहुँचि गेलाह। तँ विदुरक प्रति हुँनका अटूट श्रद्धा छलनि। विदुरक इशारा पर ओ आगि मे कूदि सकैत छलाह। ओ तँ विदुर कँ एहि लेल सूचना देलनि जे विदुर ई सुनिक' खुश हेताह। विदुर केशक पैरवीक भार जानकी बाबू पर द' देलनि। ई विदुरक परीक्षा आ प्रतिष्ठा दुनूक घड़ी छल। जँ प्रेमकँ आ ओकरा परिवार कँ विदुरक प्रति कनेको घृणा हेतैक तँ एहि कार्य सँ धोआ सकैत अछि। आ विदुर कँ सेहो एहि सँ संतोष हेतैक। ओकरहूँ प्रायश्चित्त भ' जेतैक। प्रेम सेहो मालतीक संग बोकारो आबि गेलाह। हुँनकर दुनू बालक संजय आ विजय सेहो पहुँचि गेलाह। विजय पहिनहि सँ बसुंधरा होटल मे दू टा कोठली ल' ने ने छल। ओना तँ ओ सब गांगुली बाबूक ओहिठाम रहि सकैत छल मुदा छोट–छीन डेरा मे एतेक लोक कँ रहब उचित नहि छलैक। तीन दिन तँ ओ सब बसुंधरा होटल मे रहलाह मुदा चारिम दिन गांगुली बाबूक अतिशय अनुरोध पर सब केओ हुँनकहि डेरा मे चल गेलाह। गांगुली बाबू हुँनका सब स्थिति सँ अवगत कराबैत बजलाह, ''इहाँ तो बहुत बड़ा गण्डगोल हो गया है।

आफीस का सब कर्मचारी बड़ा साहेब के डर से खन्ना का साथ दे रहा है। हमको भी बहुत दबाब दिया गया, लेकिन हम उसको नही माना। मि0 खन्ना स्टोर सत्यापन मे पकड़ा गया। ओ बड़ा साहेब को दो लाख देकर अपना मन माफिक कमीटी बनबा लिया है और सब कुछ आपके उपर डाल दिया है''।

प्रेम, ''तखन आब कोना की हेतैक ? अहाँ सँ की सहयोग भेटत। ओना अहूँके देखार होयब उचित नहि। किएक तँ अहाँके एहिठाम रहबाक अछि आ सेहेबक वीपरीत गेला सँ ओ अहूँक अनिष्ट क' सकैत अछि''।

गांगुली बाबू, ''सो तो है। हम उपर से आपका कोई मदद नही करेगा। मुदा भीतर से सब जानकारी देता रहेगा''।

प्रेम, ''तखन अहाँ हमरा सभ कँ अपना डेरा पर किएक बजौलहुँ। ओहि सँ अहाँ पर ओ सब शक क' सकैत अछि''।

गांगुली बाबू, ''अगर हम आपको डेरा पर नही रखता तो आप से कुछ भी बात नही कर सकता था। मेरे उपर सभी का निगाह है। इसीलिये उनलोगों के मर्जी के मोताबिक ही हमने आपको अपने डेरा पर रखा है। यहाँ पर हम आपको सब कुछ बता सकता है, मुदा बाहर आपके साथ कही नही जाने सकता है''।

प्रेम, ''ई तँ हम बड़ फेर मे पड़ि गेलहुँ। पता नहि भगवान कतेक हमर परीक्षा लेताह''।

गांगुली बाबू, ''अपना धैर्य बनाकर रखना है। भगवान जरूर मदद करेगा। कोनो बात का चिंता नही करेगा''।

प्रेम, ''हँ! आब तँ केवल भगवानेक भरोष अछि। जखन ओ सब कागजो के झूठ बना देलक। तखन हम कओ की सकैत छी''।

एहिबेर विजय कँ ओ ओकिल नहि भेट भेल। पता नहि ओ बाहर चल गेल छल। एकटा दोसर ओकिल केलक जे ओतेक तेज नहि छल आ दोसर रूप मे इहो कहि सकैत छी जे ओहो परोक्ष रूपँ ओकरहि सभक मदति करैत छल। प्रेमक प्रभार–पत्र के झूठ करार क' देल गेल। ओहि

पर मि0 खन्नाक कयल दस्तखत सँ मि0 खन्ना स्वयं उनटि गेलाह। ओ बजलाह, "ई हमरा दस्तखत सनक अछि तँ अवश्य मुदा ई हमर कयल नहि अछि। ओ जे जाँच अधिकारीक समक्ष दस्तखत केलनि से ओहि सँ भिन्न छलैक। बूझू जे सब किछु पहिनहि सँ तय छलैक। ई जाँच तँ केवल खानापूरी क रहल छलैक। जाँच अधिकारी एहि निष्कर्ष पर अयलाह जे एहि घोटालाक पूर्ण दोषी प्रेम बाबू छथि आ एकर हर्जाना प्रेम बाबू कँ चुकायब अछि। अचानक घटना क्रम मे एकटा नव मोड़ आबि गेलैक। एकटा अजनबी ओकील जाँच अधिकारीक समक्ष प्रस्तुत भेलाह आ हुँनका सँ बजलाह, "श्रीमान एतेक जल्दी निष्कर्ष पर आयब उचित नहि। एहि मे बहुँत पक्ष एहेन अछि जाहि पर विचार नहि कयल गेल अछि। हमरा दस मिनट केर समय देल जाऊ। हम प्रतिवादीक पक्ष मे किछु तथ्य राख' चाहैत छी। जाहि सँ एकटा निर्दोष बाँचि जायत आ दोषी स्वतः सामने आबि जायत। जाँच अधिकारी किछु बजितथि, ताहि सँ पूर्व मि0 खन्नाक वकील दत्ता साहेब गरजि उठलाह, "श्रीमान् ई के छथि आ अचानक बीच मे कत' सँ आबि गेलाह। हिनका एहि केश मे पैरवीक अधिकार के देलक। ई तँ न्याय प्रणालीक मर्यादाक हनन भेल। ओ अजनबी अपन परिचय पत्र आ वकालतनामा जाँच अधिकारी दिश बढ़ा देलनि। जाँच अधिकारी वकालतनामा राखि लेलनि आ परिचय पत्र आपस करैत बजलाह, "मि0 नायक, अहाँ के मि0 प्रेम चौधरीक दिश सँ बहस करबाक अनुमति देल जाइत अछि। ओना तँ जाँच अधिकारीक समक्ष वकालतनामा देव काफी छल मुदा ओहि सँ सब भन–भन करैत। एहि योजनाक पूर्ण जानकारी मि0 नायक के जानकी बाबू द' देने छलाह' तँ परिचय पत्र देखायब आवश्यक छलैक आ सैह देखि क' जाँच अधिकारी सकपका गेलाह। मि0 नायक बजलाह, "श्रीमान् सब सँ पहिने हम एहि मामिला सँ संबंधित एफ0 आई0 आर0 क प्रति चाहैत छी आ ओ प्रभार–पत्र जाहि पर मि0 खन्नाक ओ मि0 प्रेमक दस्तखत छनि"।

जाँच अधिकारी प्रभार–पत्रक प्रति मि0 नायक कँ दैत बजलाह,

"एहि केश मे तँ एखन धरि एफ0 आई0 आर0 भेले नहि अछि"।

मि0 नायक, "तखन अपने जाँच कोन आधर पर क' रहल छी। कोनहुँ गवन केर मामिला मे सब सँ पहिने एफ0 आई0 आर0 कयल जाइत अछि। जँ से नहि भेल अछि तखन तँ इ उपर सँ निचा धरि जतेक लोक छथि, सभक साजिश अछि। जँ हुँनका सभक मन मे खोट नहि छनि तँ एफ0 आई0 आर0 किएक नहि भेल। की मि0 दत्ता के ई गप्प नहि बुझल छनि। आकि ओहो एहि मे शागिर्द छथि। तँ हमर विरोध कयने छलाह की"।

मि0 दत्ता, "नहि–नहि से बात नहि छलैक। हम अहाँ के नहि चिन्हि सकलहुँ। तावत् तँ कानो–कान मि0 दत्ता सेहो बुझि गेलाह जे मि0 नायक सुप्रीमकोर्ट सँ आयल छथि। हुँनका अवितहि सभक बोलती बन्न भ' गेल।

पुनः मि0 नायक बजलाह, "एहि मे हमर किछु सलाह अछि। सब सँ पहिने एफ0 आई0 आर0 कयल जाय। प्रभार–पत्र पर कयल मि0 खन्नाक दस्तखत कँ एक्सपर्ट सँ जाँच कराओल जाय। जँ ओ दस्तखत गलत अछि, तखन तँ कोनो गप्प नहि, मुदा जँ सही अछि तँ मि0 खन्ना पर झूठ बजबाक आरोप मे कारबाई कयल जाय आ पूरे अभियोजन केर खर्च हुँनका सँ ओसूल कयल जाय। जा धरि ई जाँच कार्य सम्पन्न नहि होइत अछि, ता धरि मि0 खन्ना के मुअत्तल राखल जयबाक चाही। जाहि सँ ई जाँच कार्य प्रभावित नहि भ' सकए।

मि0 दत्ता, "मि0 नायक, हम अहाँक विचार सँ सहमत नहि छी। जखन मि0 खन्ना पर कोनो आरोप नहि अछि तँ हुँनका–मुअत्तल किएक कयल जायत"।

मि0 नायक, "ई तँ अहाँ कँ ने लागैत अछि मुदा जँ अहूँ छाती पर हाथ राखि सोचबैक तँ बुझि पड़त जे सम्पूर्ण प्रकरण मे केवल मि0 खन्ना छथि"?

मि0 दत्ता, "ई अहाँ कोन आधर पर कहि रहल छी। बिना आधरे किछु बाजब अहाँ सनक लोक के शोभा नहि दैत अछि। एहि सँ न्याय प्रणालीक बदनामी होइत छैक"।

मि0 नायक, "मि0 खन्ना! हम जतेक पढ़ि नेने छी। ओकरा पढ़ै मे अहाँके जीवन बीत जायत। तैओ सफल भ' सकब की नहि, कहि नहि सकैत छी"। अहाँ के पता अछि जे हम केवल पाँच वर्ष धरि मि0 दारूबालक जूताक पालीस कयने छी। दारूबाला बड़ नामी ओकिल छलाह। ओ जखन कोर्ट मे ठाढ़ भ' क' बाजब शुरु करैत छलाह तँ बड़का–बड़का के होश उड़ि जाइत छलैक। हुँनका विपक्ष मे केओ ठाढ़ नहि होमए चाहैत छलाह। हुँनकर नामे सुनि क' एहिठाम सबकेँ ठक मुड़ी लागि गेलैक।

जाँच अधिकारी, " हम तँ शुरुवे मे ई प्रश्न उठौने छलहुँ मुदा मि0 दत्ता बजलाह जे एकर कोनो आवश्यकता नहि छैक। ई तँ विभागीय मामिला छैक आ बचाब पक्ष सँ सेहो केओ किछु नहि बजलाह। तखन हमही की क' सकैत छी" ?

मि0 नायक, "ओ जँ ओहि जोगरक रहितथि तँ हमरा दिल्ली सँ आब' पड़ैत। जहाँ धरि मामिला केर प्रश्न छैक तँ मामिला मामिला होइत छैक। ओ चाहे विभागीय होई वा किछु आर। मि0 खन्नाक खेमा मे उदासी पसरि गेल। ओ सभ तँ सब केँ मिला क' रखने छल। जाँच अधिकारी सेहो ओकरहि पक्ष मे जाइत, जँ मि0 नायक सही समय पर नहि अबितथि । दोसर दिश प्रेमक खेमा मे अनायास आशाक किरण फूटि गेल। जत' प्रेम केँ बचबाक कोनहुँ आशा नहि छलैक। ओत' मि0 नायक पुरे पाशा केँ पलटि देलनि। ओ सब ई देखि अचम्भित छल जे ई व्यक्ति के थीक आ एहिठाम कोना आबि गेल। प्रेम केँ तँ लागि रहल छलैक जे मि0 नायक केँ स्वयं नारायण पठौने छथि। किएक तँ एहेन चमत्कार तँ नारायणे क' सकैत छथि वा हुनके आर्शीवाद सँ भ' सकैत अछि। ओ सोचि रहल अछि जे आखिर मि0 नायक केँ के बजौने अछि। दिल्ली सँ ओकरा अयबा–जयबा के कम सँ कम बीस हजार टाका खर्च भेल हेतैक। एहिठाम एहेन के व्यक्ति अछि जे प्रेम केँ बचाबक लेल अपना टेट सँ बीस हजार टाका खर्च करत। विजय के अपना ओकील पर तरस आबैत छलैक। ओकर मित्र जकरा ओ पहिने रखने छल ओ बाहर चल गेल छलैक। तँ ओकरा विवश

भ' क' गोबर गणेश केँ राख' पड़लैक मुदा नायक आबि क ओकर काज क' गेल। ओ (विजय) चाहलक जे मि0 नायक सँ किछु गप्प करी मुदा मि0 नायक अपन दलील खतम क' बिजलीक गतिये बाहर भेलाह आ कार मे बैसि आँखिक ओझल भ' गेलाह। विजय केर लेल इ रहस्ये रहि गेल जे मि0 नायक कत' सँ आयल आ कत' चल गेल। जाँच अधिकारी अपन अंतरिम आदेश देलनि जे शीघ्र एहि घटनाक सम्बन्ध मे एफ0 आई0 आर0 कयल जाय। मि0 खन्नाक दस्तखत केर जाँच एक्सपर्ट सँ कराओल जाय। यावत् जाँच कार्य चलत ता घरि मि0 खन्ना केँ मुअत्तल राखल जाय। तीनू शर्त्तक पालन भेलाक बाद पुनः एकर जाँच कार्य शुरु कयल जायत।

मि0 दत्ता, "श्रीमान् मि0 खन्ना तँ निर्दोष छथि। हुँनका मुअत्तल करब उचित नहि अछि। एक निर्दोष के सजा देब उचित होयत की" ?

जाँच अधिकारी, "एहि जाँचक लेल एतेक आवश्यक अछि। मि0 खन्ना दोषी छथि वा निर्दोष, ई एखन कहल नहि जा सकैत अछि मुदा अभियुक्त अवश्य छथि। तँ हिनका प्रभावहीन करबाक लेल ई आवश्यक अछि। दोसर गप्प मुअत्तल कोनो सजा नहि भेलैक"।

राति मे मि0 नायक केर ट्रेन छलनि। ओ निलांचल एक्सप्रेस सँ दुनू दिशक टिकट पहिने सँ कटौने छलाह ट्रेनक समय सँ करीब तीन घंटा पूर्व भोजन कक्ष मे विदुर, मि0 नायक आ जानकी बाबू गप्प क' रहल छलाह। जखन जानकी बाबू मि0 नायक केँ टेलीपफोन कयने छलाह, तँ मि0 नायक अयबा मे अपन असमर्थता व्यक्त कयने छलाह मुदा विदुरक नाम सुनितहि ओ अपन सब कार्यक्रम स्थगित करैत अयबाक आश्वासन देलनि। ओ बजलाह हम गुरुजी सँ भेट करबाक लेल आ आशीर्वाद लेबाक लेल अवश्य आयब। हलांकि गाड़ी लेट रहलाक कारण ओ दू घंटा विलम्ब सँ पहुँचलाह। तैओ ओ समय पर आबि अपन काज क' गेलाह। जानकी बाबू हुँनका ठहरबाक लेल होटल बुक कराबैत छलाह मुदा मि0 नायक बजलाह, जानकी भैया सब दिन तँ होटले मे रहैत छी। एकहुँ दिन तँ

अपना घरक स्वाद लेब' दीअ'। की अहाँक कुटिया मे ओतेक जगह नहि छैक। जत' हम दू घंटा आराम क' सकी''।

जानकी बाबू, ''हँ...हँ....से किएक ने रहतैक। हम तँ अहाँक सुविधाक लेल सोचैत छलहुँ। ई तँ हमरहुँ सौभाग्य होयत जे अहाँ हमरा कुटिया के पवित्र करब''।

मि0 नायक, ''जानकी भैया! एना भिजाक' जूता नहि मारु। हम ओएह नायक छी जे आई सँ पन्द्रह–बीस वर्ष पूर्व छलहुँ। हँ कनेक व्यस्तता अवश्य बढ़ि गेल अछि। तँ अपन स्मर्थता व्यक्त कयने छलहुँ। एकरा अन्यथा नहि लेब''।

जानकी बाबू, ''अहाँ सब आब बड़ पैछ लोक भ' गेल छी। अपने समय देलहुँ हमरा लेल इएह बहुत। हमरा गुरुजी जे भार देने छलाह ओ पूर्ण कयल''।

मि0 नायक, ''हँ...पैछ लोक तँ अवश्य भ' गेलहुँ मुदा ओतेक पैछ नहि जतेक पैछ अहाँ छी। आखिर हमहूँ तँ अहींक अनुजवत छी। दुनू गोटे के एक–दोसरक सब घाट तँ देखले अछि। हमहुँ तँ ओही माँटि–पानिक छी''।

एहि तरहँ मि0 नायक जानकी बाबूक ओहिठाम अयलाह आ सब वृतान्त सुनि वकालतनामा लेलनि। वकालतनामा पर पहिने सँ प्रेमक हू–बहूँ दस्तखत विदुर क' देने छलाह।

विदुर, ''नायकजी! केशक रूख केहेन छैक। की हमर मित्र बाँचि तँ जायत'' ?

मि0 नायक, ''गुरुदेव! केश तँ अन्तिम चरण मे छलैक। अहाँक मित्र कौकश केर चंगुल मे परि गेल छलाह। ओ सब तँ अही फेर मे छल जे गोल–गपट क' क' सब किछु हिनकहि माँथ थोपि दी। जाँच अधिकारी तँ ओकरहि सभक मेलक अछि। हिनकर वकीलो सम्भवतः सैह अछि। ओ केवल उपस्थित भेल। कोनो दलीलो नहि पेश केलक। जेना कि हमरा जाँच अधिकारी स्वयं बजलाह। तखन आब चिंताक गप्प नहि अछि। हम ओकरा उपर सँ उतारि क' निचां क' देल अछि। तहकीकात नया सिरा

सँ कयल जायत। इ प्रेमक पक्ष मे जायत।

विदुर, ''ई चमत्कार कोना भ' गेलैक'' ?

मि0 नायक, ''ई चमत्कार केवल हमरा परिचय–पत्र पर भेलैक''।

विदुर, ''तखन आगू की हेतैक'' ?

मि0 नायक, ''तखन एहि मे जानकी भाई के कनेक सजग रह' पड़तनि''।

जानकी बाबू, ''हम..... हम की करब एहि मे'' ?

मि0 नायक, ''अहाँ एना किएक चौंकैत छी। सब किछु तँ अहीं करबै। ओना हमरा विश्वास अछि जे इ मामिला अही ठाम खतम भ' जायत, आगु नहि बढ़त''।

विदुर, ''आगु नहि बढ़त, से कोना'' ?

मि0 नायक, ''हमर परिचय पत्र देखितहि जाँच अधिकारी चौंकि गेल। ओकरा इ आशा नहि छलैक जे एहि मे बाहरोक ओकिल आबि सकैत अछि आ सेहो दिल्ली सँ। ओकरा बुझबा मे आबि गेलैक जे आब नीपा–पोती नहि चलत। ओकर नियुक्ति विभाग दिश सँ केवल नीपा–पोतीक लेल कयल गेल छल। एहेन दर्जनो केशक ओ जाँच केलक आ निर्दोषक माँथ सब दोष मढ़ि देलक। मुदा हमरा देखितहि ओकरा सभक सब योजना विफल भ' गेलैक। जँ हम ओहिठाम पहुँचबा मे पाँच मिनटक देरी करितहुँ, तँ ओ अपन निर्णय सुना दैत आ अहाँक मित्र पर घोटालाक पूर्ण राशिक लेल जिम्मेवारी द' दैत।

विदुर, ''जँ अहाँ पाँच मिनटक देरी करितहुँ, तखन तँ अनर्थ भ' जाइत। प्रेम जिनगी भरि जेल मे सड़ैत रहैत। इ तँ अहाँ हमरा उपर बड़ पैघ उपकार कयल अछि''।

मि0 नायक, ''अहाँ बेकारक चिंता किएक करैत छी। जँ निर्णय भ' जाइत तँ हमरा उच्च न्यायालय मे अपील कर' पड़ैत आर की। किछु समय वेशी लागैत सैह ने''।

विदुर, ''तखन आब की हेतैक''?

मि0 नायक, ''हमरा बुझने ओ सब आब अपनहि मे एम्हर–ओम्हर करत आ

प्रेमजी के आब बकसि देत। जँ से नहि करत तँ काल्हि ओकरा एफ0 आई0 आर0 करबाक छैक। जँ ओ एफ0 आई0 आर0 करत तँ जानकी भाई हमरा ओकर नकल ल' क' फैक्स क' देताह। हम ओतहि सँ ओकर जबाब पठा देबनि आ जानकी भाई ओ ल' क' जाँच अधिकारी के द' देथिन''।

विदुर, ''एतेक तँ अवश्य करताह, अहाँक जानकी भाई। की औ.... जानकी बाबू''।

जानकी बाबू, ''हँ.....हँ..... एहि मे हमरा की लागत''।

मि0 नायक, ''लागत तँ किछु नहि, मुदा तत्पर रह' पड़त''।

भोजन समाप्त भेल। विदुर एकटा लिफाफ नायक जी क आगु बढ़ौलनि। नायक जी बाजि उठलाह, गुरुदेव! ई अपने की क' रहल छियैक? ओना हमरा सभक तँ इएह रेबाज अछि। कोनो दरमाहा तँ भेटैत अछि नहि। तथापि कत' की करक चाही, एतेक ज्ञान अछि। अहाँक संग एहेन व्यवहार उचित नहि। एतेक लज्जित जुनि करूँ।

विदुर, ''किछु तँ नहि क' रहल छी। मात्र पानक डंटी ल' क' उपस्थित छी। हमरा मे एतेक सामर्थ कत' जे अहाँक उचित फीस द' सकी''।

नायक, ''गुरुदेव! जँ हम अपनेक दर्शन करबाक लेल आयब तँ की अयबा–जयबा मे खर्च नहि हेतैक आ से हम अपने सँ लेब। इ उचित हेतैक की ? अपने तँ हमरा ततेक द' देने छी जे जिनगी भरि खाइत रहब, तैओ नहि सधत। ई कार्य हमर थीक। एकरा हमरा अपना ढंग सँ कर' देल जाऊ। एहि मे अपने किछु नहि बजबैक''।

विदुर, ''हम गरीब ब्राह्मण अहाँ के की द' सकैत छी। केवल आशीर्वाद द' सकैत छी। एहि सँ वेशी हमरा लग किछु अछियो तँ नहि''।

मि0 नायक, ''बस.....बस.... केवल आशीर्वादे टा दीअ'। एहि सँ वेशी हमरा किछु नहि चाही''।

विदुर, ''हमहूँ सब तँ अहीं सब पर आशा लगौने छी। हमरा तँ ध्यानो नहि छल जे कहिआ आ कत' भेट भेल छलहुँ। ई तँ जानकी बाबू मोन

पाड़लनि, तखन मोन पड़ल। भेटो तँ बहुत दिनक बाद भेल अछि''।

मि0 नायक, ''हमरा मन अछि गुरुदेव! हमरा लेल तँ ओ भेट अविष्मरणीय अछि। ओही दिन तँ हमरा भाग्यक कपाट खुजल छल। हम ओहि दिन के कोना बिसरि सकैत छी''।

विदुर, ''हम किछु बुझलहुँ नहि ? अहाँ की कह' चाहैत छी'' ?

मि0 नायक, ''हमरा अहाँक पहिल भेट आई सँ पन्द्रह वर्ष पूर्व भेल छल। जखन हम बोकारोक गली–कूची मे बौआइत–टौआइत छलहुँ। अपनेक देल इ तांत्रिक लाकेट धारण क' हम दिल्लीक लेल विदा भेलहुँ। ओहिठाम हमर एकटा दूरक सम्बन्धी रहैत छलाह। हुँनकहि भरोषे हम विदा भेलहुँ। संयोगवश जाहि ट्रेन सँ हम सफर करैत छलहुँ, ओही ट्रेन सँ मि0 दारुबाला सेहो दिल्ली जा रहल छलाह। दुनू गोटे अगले–बगल मे बैसल छलहुँ। इहो एकटा संयोगे छल। आन दिन मि0 दारुबाला वातानुकूलित डिब्बा मे सफर करैत छलाह। ओहि दिन वातानुकूलित डिब्बा खाली नहि रहलाक कारण ओ स्लीपर डिब्बा मे बैसल छलाह। हम हुँनका सामान्य यात्री बुझैत छलहुँ। ओ बुजुर्ग छलाह आ हम जुआन। तँ हुँनका आग्रह पर हम बाट मे एक–दू ठाम ट्रेन सँ उतरि क' जल आनि देने छलियनि। तावत हमरा ई नहि बुझल छल जे मि0 दारुबाला दिल्ली सुप्रीम कोर्टक नामी–गिरामी ओकील छथि। ओ हमरा व्यवहार आ गप्प–शप्प सँ बड़ प्रभावित भेलाह आ पूछलनि, अहाँ कत जा रहल छी'' ?

नायक, ''श्रीमान्! हम दिल्ली जा रहल छी''।

मि0 दारुबाला, ''दिल्ली तँ सब केओ जा रहल अछि। दिल्ली मे वा दिल्ली सँ आगु कत' धरि जायब'' ?

नायक, ''एखन धरि नहि सोचलहुँ अछि''।

मि0 दारुबाला, ''की मतलब! आब कखन सोचब। प्लेटफार्म पर गेलाक बाद की'' ?

नायक, ''जी श्रीमान्! प्लेटफार्म पर गेलाक बादे सोचब। किएक तँ हम पहिल बेर दिल्ली जा रहल छी। दिल्ली हमरा लेल अनचिन्हार जगह

अछि। गाड़ी चारि घंटा लेट छैक। जे व्यक्ति हमरा पता देने छलाह ओ तँ आफीसक पता देने छथि आब आफीस तँ खुजल हेतैक नहि। तखन तँ प्लेटफार्मे पर ने सोचल जयतैक''।

मि0 दारुबाला, ''आर केओ परिचित नहि छथि'' ?

नायक, ''हँ दू–चारि गोटे परिचित छथि, मुदा ककरहुँ डेराक पता नहि बुझल अछि''।

मि0 दारुबाला, ''तखन तँ अहाँके काल्हि दस बजे घरि प्रतीक्षा कर' पड़त। एतेक काल धरि अहाँ कत' रहब'' ?

नायक, ''एतेक काल धरि प्लेटफार्म वा प्रतीक्षालय मे समय गमा लेब''।

मि0 दारुबाला, ''एहिठाम तँ अहाँ के बड़ दिक्कत होयत। भरि राति मच्छर तंग करत आ ओहि सँ बाँचब तँ आर0पी0एफ0 केर सिपाही जोंक जकाँ ध' लेत''।

नायक, ''एकर अलाबे दोसर कोनो उपायो तँ नहि अछि''।

मि0 दारुबाला, ''उपाय तँ छैक, जँ अहाँ चाही, तखन''।

नायक, ''की उपाय छैक'' ?

मि0 दारुबाला, ''हमरा संगे चलु, राति गमा लेब। पुनः भोरे जत' जेबाक इच्छा हो चल जायब''।

नायक, ''नहि.....नहि.....श्रीमान्! एहेन गप्प नहि छैक। ट्रेनक गप्प किछु आर होइत छैक। हम अपनेक डेरा जा' क' अपने पर बोझ नहि बन' चाहैत छी''।

दारुबाला, ''एहिमे बोझक कोन गप्प छैक। बोझ तँ तखन ने होइत जखन अहाँ जबरदस्ती हमरा ओहिठाम अबितहुँ। जखन हमही आग्रह क' रहल छी, तखन बोझ कथीक''।

मि0 दारुबाला जबरदस्ती हमर हाथ पकड़ि क' विदा भ' गेलाह। स्टेशन सँ बाहर गेलहुँ तँ देखैत छी खूब सुन्नर कारक संग एकटा ड्राइवर मि0 दारुबालाक स्वागत मे ठाढ़ अछि। ओ मि0 दारुबाला के देखितहि कारक गेट खोलि देलक। दारुबाला ओहि मे जा' क' बैसि गेलाह आ

बगल मे हमरहुँ बैसा लेलनि। ड्राइवर कार स्टार्ट क' क' विदा भेल।

दारुबाला, ''मि0 नायक जी, अहाँ दिल्ली नौकरी करबाक ख्याल सँ आयल छी, आ कि व्यवसाय करबाक ख्याल सँ'' ?

नायक, ''जी नौकरी करबाक ख्याल सँ''।

मि0 दारुबाला, ''कतेक पढ़ल–लिखल छी'' ?

नायक, ''अही बेर एम0 ए0 एल0 एलबी0 कयलहुँ अछि''।

मि0 दारुबाला, ''कत' सँ'' ?

नायक, ''जी बोकारो सँ''।

मि0 दारुबाला, ''अहाँ हमरा जानैत छी'' ?

नायक, ''जी नहि, श्रीमान्''।

मि0 दारुबाला, ''हमर नाम अछि 'रामलाल शंकर प्रसाद दारुबाला' आ हम दिल्ली सुप्रीम कोर्ट मे प्रेक्टिस करैत छी''।

नायक, ''जी श्रीमान् नाम तँ सुनल छल। आई साक्षात दर्शन करबाक सौभाग्य प्राप्त भेल। आई हम धन्य भ' गेलहुँ। ;नायक चट द' दारुबालाक पायर छुबि क' प्रणाम कयलक''।

दारुबाला, ''हाँ.....हाँ..... ई की करैत छी'' ?

नायक, ''अपना भगवानक' चरण रज मस्तक सँ लगा रहल छी''।

नायक केर एहि व्यवहार सँ मि0 दारुबाला आर प्रभावित भेलाह। हुँनका ई शिष्टाचार बड़ नीक लगलनि। ओ बजलाह 'भगवानक चरण रज.....?

नायक, ''जी श्रीमान् हम जाहि व्यवसाय मे पायर राखि चुकल छी, ओकर भगवान तँ अपनहि सब ने छी। तँ अपने हमर भगवान, इष्ट भेलहुँ''।

ई सुनि मि0 दारुबाला खिलखिला क' हँसि पड़लाह आ नायक केर पीठ सेहो थप–थपौलनि। ओ नायक केर उत्तर सँ बड़ खुश भेलाह आ मने मन बजलाह, ई बालक एहि पेशा मे एक दिन बहुँत उँचाई पर जायत। एकर जबाब देबाक तौर–तरीका बड़ सुन्नर छलैक। आ से मि0 दारुबालाक हृदय के छू गेल। नायक गप्प तँ करैत छल मि0 दारुबालाक संग, मुदा ओकर नजरि कारक खिड़की सँ बाहर दिल्लीक सौंदर्य आ

अट्टालिका देखि रहल छल। एतेक विशाल शहर आ ओहि मे एतेक पैघ–पैघ घर दुआरि नायक पहिले बेर देखने छल। ओ मन मे सोचलक जे जँ मि0 दारुबाला अपना सँगे नहि अनितथि तँ एहिठाम भूतिआइओ सकैत छलहुँ। अचानक गाड़ी एकटा आलीशान बंगला लग ठाढ़ भेल। नायक बुझि नहि सकल जे गाड़ी किएक रुकि गेल। ओकर विचारधाराक शृंखला टुटि गेलैक आ देखलक जे एक गोटे गाड़ीक हार्नक आबाज सुनि आबि क' गेट खोलि देलक। ड्राइवर गाड़ीक संग गेटक भीतर प्रवेश केलक आ एकटा बंगलाक ओसाराक सोझां ठाढ़ भेल। बंगला कोनो राजा–महाराजक बंगला सँ कम नहि लागैत छल। ओहि मे सब साधन उपलब्ध छलैक। नौकर–चाकर, रंग–बिरंगक फुल, पैघ–पैघ बनल पिंजरा मँ रंग–बिरही चिरई–चुनमुनी, जकरा संग मि0 दारुबाला खाली समय मे अपन मनोरंजन करैत छलाह। हम एक बेर बंगला के देखैत छलहुँ आ एक बेर मि0 दारुबाला कँ। जिनका देखला सँ एकदम नहि बुझाइत छल जे ई व्यक्ति एतेक पैघ लोक भ' सकैत छथि आ एहि बँगलाक स्वामी भ' सकैत छथि। मि0 दारुबाला एकदम साधरण व्यक्ति लागि रहल छलाह। हमरा तँ लागल जे हम स्वर्ग मे पहुँचि गेल छी मुदा ई स्वर्ग कते कालक, मात्र राति भरिक। तावत् मि0 दारुबालाक कनियाँ श्रीमती माया देवी आ पुत्री सुश्री कामिनी आबि गेलीह। दुनू देखबा–सुनबा मे कोनहुँ अप्सरा सँ कम नहि लागैत छलीह। ओ सब विहुँसैत मि0 दारुबालाक स्वागत करबाक लेल आगु बढ़लीह मुदा हमरा देखितहि ठमकि गेलीह। स्वाभाविक छैक सभ्य समाज मे अपरिचित कँ देखि ककरहुँ संकोच भ' सकैत छैक। ई देखिक' मि0 दारुबाला बजलाह, "कोनो संकोच करबाक आवश्यकता नहि छैक। ई हमर शिष्य छथि"।

माया, "मुदा आई सँ पहिने तँ हिनका नहि देखने छलियनि। आ ने अहाँ कहिओ चर्चा कयलहुँ"।

मि0 दारुबाला, "हमरहुँ हिनका सँ पहिले बेर भेट भेल अछि, आ सेहो ट्रेने मे। ई पहिल वेर दिल्ली आयल छथि"।

माया, "पहिले वेर भेट भेलाह, तखन शिष्य कोना भ' गेलाह" ?

मि0 दारुबाला, "ओहिना, जेना एकलब्य द्रोणाचार्यक शिष्य भेल रहथि। ई हमरा चिन्हैत नहि छलाह। केवल नाम सुनने छलाह आ इष्ट मानि लेलनि"।

माया, "ई छथि के, से ने कहूँ" ?

मि0 दारुबाला, "ई दिल्ली आयल छथि नौकरीक जोगाड़ मे। एम0 ए0 एल0 एलबी0 केने छथि। ट्रेन मे दुनू गोटे के अगले–बगल सीट छल। भरि बाट हमर खूब सेवा केलनि। हमरा जखन जाहि वस्तुक जरूरत होइत छल, ई ट्रेन सँ उतरि क' आनैत छलाह आ एखन कहैत छलाह जे हम प्लेटफार्म पर रहि क' राति गमा लेब। हम कहलियनि, औ जी, जखन रातिये गमयबाक अछि तँ प्लेटफार्म पर किएक, चलु हमरहि डेरा पर गमा लेब। जखन बीस घंटा हम सब संगे बितौलहुँ तँ आठ–दस घंटा आर सही, मुदा ई नहि मानैत छलाह। हम जबरदस्ती अनने छियनि"।

माया, "नीक कयल। एहिठाम जे किछु कन–साग बनल छैक से खा लेताह आ राति भरि आराम करताह। कम सँ कम दिल्लीक मच्छर सँ तँ बचताह। एहिठामक मच्छरो तँ लागैत छैक जे किछु आँखि देखने छैक। सौंसे देह चकता क' दैत छैक"।

मि0 दारुबाला, "सैह तँ हमहुँ कहलियनि, आ जँ मच्छर सँ बाँचि जायब तँ आर0पी0एफ0 केर सिपाही.....

माया हँसैत बजलीह, "ओहो सरधुआ सिपाही जेना पछिला जनम के दिल्लीक मच्छरे होयत। एना कतहुँ लोक केलक अछि। ओकरा सभक हाकिम नहि किछु कहैत छैक की" ?

मि0 दारुबाला, "की करतैक, सभक तँ एके पेट रहैत छैक"।

मि0 दारुबाला सभक परिचय करौलनि। ई हमर एक मात्र कनियाँ श्रीमती माया देवी छथि। नायक दुनू हाथ जोरि हुँनकर अभिवादन केलनि। पुनः बजलाह, ई हमर एक मात्र पुत्री सुश्री कामिनी छथि। नायक मुड़ी हिलाक' कामिनीक सेहो अभिवादन कयलक आ कामिनी सेहो हाथ

जोरि नायक केर अभिवादन स्वीकार केलनि। सब केओ भीतर गेलाह आ हाथ–मुँह धो क' कपड़ा बदललनि तावत् भोजन करबाक लेल बजाहटि आबि गेल। सब केओ एके टेबुल के घेरि क' बैसल छलाह। ओहिठाम मात्र एकटा टेबुल कुर्सी खाली छलैक, जाहि पर मि0 दारुबालाक आदेश पर नायक बैसि गेलाह। हुँनका कनेक अनसोहांतो लगलनि जे पुरुष आ स्त्रीगण एक सँग बैसि क' कोना खायत। ई सब ओ कहिओ देखनहुँ नहि छलाह। ई सब शहरे मे सम्भवो छैक। भोजन तँ एतेक विलक्षण आ एतेक प्रकारक छलैक जे नायक के तँ मने उज–गुजा गेलैक जे कि खाई, की नहि। ओ एकटा थारी मे दूटा पुरी, तरकारी, भूजिया, एक करौछ खीर आ दू टा मिठाई लेलक। एक दिश ओकरा लाजो होइत छलैक जे वेशी कोना खायब आ दोसर दिश इहो होइत छलैक जे राति भरि भूखल कोना रहब। आब तँ काल्हिये जा क' किछु भेटत मुदा मि0 दारुबाला बीच–बीच मे ओकरा टोकैत रहलनि। लजाइत किएक छी, ई लीअ, ओ खाऊ। अरे अहाँ सब तँ एखन जुआन–जहान छी आ गामक परिवेश सँ आयल छी। एखन तँ पाचन शक्ति ठीके–ठाक होयत। एहिठाम रहलाक बाद दिन–राति चाहे पर रह' पड़त। तखन पाचन शक्ति केहेन रहत, कहि नहि सकैत छी। ओ आग्रह पूर्वक खोआबैत रहलाह आ हम खाइत रहलहुँ। एतेक सुन्नर आ स्वादिष्ट भोजन हम अपना जीवन मे पहिल बेर कयने छलहुँ आ करितहुँ कोना। जतेक सामग्री ओहिठाम छलैक ओ हमरा सभक लेल दुर्लभ छल। हम तँ सभक नामो नहि जानैत छलहुँ। भोजन पूर्ण रुपे कयल। हमरा बुझायल जे जतेक भोजन हम एसकर केलहुँ, ओतेक ओ तीनू गोटे मिलियो क नहि कयने होयताह। किएक तँ ओ सब एहेन भोजन नित्य करैत छलाह आ हमरा लेल तँ इ सब सपना छल। काल्हि सँ तँ ओएह होटलक पनिछक्का दालि आ अध किच्चू टकटक करैत आलुक फांक। सुतबाक लेल जे कोठली भेटल, सेहो अद्भुत सुन्नर छलैक। देवाल पर रंग–बिरंगक चित्रकारी आ ओछाइन तँ जेना मखमल केर गद्या होइक। जा' क' सूति रहलहुँ। बाटक झमारल, भरल पेट आ गद्येदार

ओछाइन, चट द' निंन पड़ि गेलहुँ। जखन निंन टूटल तँ छः बाजैत छलैक। हम तँ नित्य भोरे पाँच बजे उठि जाइत छलहुँ मुदा आई थकानक आ देरी सँ सुतलाक कारण छः बाजि गेल। हड़बड़ा क' उठलहुँ। बाथरूम कोठली सँ सटल छलैक। सब क्रिया सँ निवृत्त भेलहुँ तँ देखैत छी जे टेबुल पर गरम–गरम चाह राखल अछि आ टेबुल पर आजुक अखबार सेहो। हमरा बड़ आश्चर्य लागल। एतेक खातिर तँ ककरहुँ सासुरो मे नहि होइत हेतैक। हम अजनबी तकर जँ एतेक खातिर होइत अछि तँ जे हिनका सँ जुड़ल लोक छथि, हुँनकर कतेक मान–दान होइत होयत। मि0 दारुबाला बहुत उच्च कोटिक लोक छथि। हम चाहक कप खतम क' क' अखबार पढ़ब शुरु केलहुँ कि एक गोटे आबि क' बजलाह, साहेब जी बजा रहल छथि। हम गेलहुँ तँ देखैत छी जे सब गोटे टेबुलक चारु कात बैसल छथि। ओहिना जेना राति मे बैसल छलाह। सब हमरहि प्रतीक्षा क' रहल छलाह। सभक आगाँ जलखै परसल छलनि। मि0 दारुबाला हमरा बैसबाक आग्रह केलनि आ संगे जलखै करबाक सेहो।

हम कहलियनि, "श्रीमान्, हमरा तँ एतेक सबेरे जलखै करबाक आदत नहि अछि। वास्तव मे राति एतेक खा लेलहुँ जे एखन धरि नीक जकां पचलो नहि छल। हम बजलहुँ, एखन अपने सब जलखै क' लीअ। हम बाद मे क' लेब"।

मि0 दारुबाला, "अहाँ चुपचाप जतबहि इच्छा हो, जलखै क' लीअ। किएक तँ भोजन दू बजे सँ पहिने नहि भेटत"।

नायक, "मुदा श्रीमान्, हमरा तँ दस बजे जयबाक अछि" ?

मि0 दारुबाला, "आ जँ हम अहीठाम सँ अहाँ के कोनो जोगार लगा दी, तँ कत' जायब" ?

नायक, "तखन तँ बड़ कृपा होयत"।

मि0 दारुबाला, "अहाँ चुप–चाप जतबहि इच्छा हो, जलखै क' लीअ आ नौ बजे हमरा चेम्बर मे चल आऊ। किछु ओही सब सम्बन्ध मे आवश्यक गप्प करबाक अछि। यावत् एहिठाम छी, एहिठामक नियम तँ मानिह टा

पड़त। हम नियमक बड़ पक्का लोक छी आ जखन चल जायब, तखन जे मन होयत से करब''।

सब केओ जलखै क' क' अपना–अपना कोठली मे चल गेलाह आ हमहुँ अपना कोठली मे जत आराम करबाक लेल जगह भेटल छल, चल एलहुँ। टेबुल पर तीन–चारि तरहक अखबार राखल छलैक। हम ओही मे उलझि गेलहुँ। ठीक नौ बजे मि0 दारुबालाक चेम्बर मे पहुँचलहुँ। चेम्बर देखि हम अचम्भित भ' गेलहुँ। एकटा पैछ सनक टेबुल, जकरा चारु कात करीब बीस टा कुर्सी लागल। ओहि कुर्सी पर एखन चारि–पाँच टा लोक सम्भवतः मि0 दारुबालाक सहायक ओकिल छलाह। देबाल सँ सटल चारु कात आलमीरा आ ओहि मे हजारो किताब राखल छलैक। एक–एकटा किताबक दाम पाँच सय छः सय टका छलैक। हमरा पहुँचतहि मि0 दारुबाला जे ककरहुँ सँ टेलीफोन पर गप्प करैत छलाह, एक वेर हमरा दिश आ दोसर वेर घड़ी पर नजरि देलनि आ हाथक इशारा सँ बैसबाक लेल आग्रह केलनि। शायद इहो हमर एकटा परीक्षे छल आ बुझायल जे हम ओहि मे पास भ' गेलहुँ।

९

राति मे जखन भोजन केलाक बाद नायक आ कामिनी अपना–अपना शयन कक्ष मे चल गेलीह आ डाइनिंग हॉल मे केवल माया आ मि0 दारुबाला बचि गेलाह तँ माया मि0 दारुबाला सँ पूछलनि, ''एकटा गप्प पूछू''?

मि0 दारुबाला, ''एकेटा किएक, जै टा मन हो से पूछू। ओहि मे किछु लागैत छैक की''?

माया, ''ई जे विद्यार्थी अहाँक संग आयल अछि, से के थीक। ई केहेन लोक अछि आ कतेक पढ़ल–लिखल अछि''?

मि0 दारुबाला, ''से किएक, ओ केहेन लोक अछि, ताहि सँ हमरा कोन मतलब। हँ नीक पढ़ल–लिखल अवश्य अछि। एम0 ए0 एल0 एलबी0 कयने अछि। बच्चा संस्कारी लागि रहल अछि। नौकरी करत तँ नीक आफीसर बनि सकैत अछि। आ जँ प्रेक्टिस करत तँ वकीलो बनि सकैत अछि मुदा ताहि सँ अहाँ के की। ओ तँ राति भरिक लेल एहिठाम आयल अछि, भोरे एत' सँ चल जायत''।

माया, ''तँ तँ कहैत छी। काल्हि ओकरा रोकि क' नीक जकाँ जाँचि–परिख लितहुँ। जँ सब तरहेँ ठीक बुझाइत तँ, अपना कामिनीक लेल.... एहि सँ नीक आर के भ सकैत अछि''।

मि0 दारुबाला, ''ऐँ..... हम तँ इ सब सोचबे नहि कयलहुँ। हम ओकरा संग ट्रेन मे बीस घंटा बितौलहुँ। कतेक तरहक गप्प–शप्प भेल। पढ़ाई–लिखाई सँ ल' क' समाज परिवार सब गप्प भेल मुदा ई नहि सोचि सकलहुँ जे कामिनिक लेल केहेन रहतैक आ अहाँ दसे मिनट मे पकड़ि लेलहुँ। तँ ने लोक कहैत अछि जे स्त्रीगणक नजरि बड़ तेज आ पारखी होइत अछि। पुरुष बिना स्त्रीक' पूर्ण नहि मानल जाइत अछि''।

माया, ''हम अहाँ के की कहलहु आ अहाँ गप्प के उड़ा क' कत' ल' गेलहुँ। हरदम गप्पे–शप्प मे कोनो बात के उड़ा दैत छी। कखनहुँ तँ गम्भीर भ' क' सोचु। जँ सब तरहेँ ठीक–ठाक बुझायत तँ अनेरे किएक कतौ बौआयब''।

मि0 दारुबाला, ''श्रीमती जी, अहाँक इ आरोप उचित नहि जे हम कोनो गप्प के गम्भीरता तँ नहि लैत छी। आखिर हम एतेक पैछ ओकिल कोना भेलहुँ''।

माया, ''इएह तँ अहाँ मे बिमारी अछि। शुरु भ' गेलहुँ ओकिलक भाषा मे।

कखनहुँ तँ ओहि कुर्सी सँ निचां उतरु''।

मि0 दारुबाला, ''अहाँ केहेन लोक छी यै। लोक अपना घरबला के उपर चढ़ाबैत अछि आ अहाँ हमरा निचां उतारि रहल छी''।

माया, ''हम अहाँ के निचां उतारि रहल छी'' ?

मि0 दारुबाला, ''तखन की क' रहल छी''?

माया, ''अहाँक चश्माक फ्रेम जे धूमिल भ' गेल अछि, ओकरा बदलबाक लेल कहि रहल छी''।

मि0 दारुबाला, ''अच्छे! ई तँ अहाँ नहि पुछलहुँ जे हम जत' गेल छलहुँ, ओहिठाम की भेलैक''।

माया, ''ओ तँ हमरा अहाँक आव–भाव सँ बुझा गेल।

मि0 दारुबाला, ''बुझा गेल! की बुझा गेल''?

माया, ''इएह जे ओ अहाँके पसिन्न नहि पड़ल''।

मि0 दारुबाला, ''से कोना, अहाँ समुद्री पढ़ने छियैक की ? जे बिना कहने दोसरक मनक गप्प बुझि जाइत छियैक''।

माया, ''हम किछु नहि पढ़ने छियैक, मुदा हम दिन–राति मि0 दारुबाला सनक नामी ओकिल संग तँ रहैत छी। ओकर कनेको असरि तँ हमरहुँ पर पड़त। जैखन अहाँ ओहि विषय मे किछु चर्चा नहि केलहुँ। हमहुँ तैखन ओकरा छेड़ब उचित नहि बुझलहुँ''।

मि0 दारुबाला, ''हँ, से सैह! घर–आँगन, पर–परिवार तँ बड़ सुन्नर छैक मुदा वर ओतेक चुह–चुह नहि लागल। पढ़ल–लिखल तँ छलैक मुदा कहुना–कहुना बला। ओकरा भीतर मे अपन कोनो प्रखरता हमरा नहि बुझायल। हमरा तँ एहेन ने लोक चाही, जे हमरा व्यवसाय के आगु बढ़ावए, तकर अभाव बुझना गेल''।

माया, ''आ ई केहेन बुझाइत अछि''?

मि0 दारुबाला, ''एखन धरि तँ ठीके बुझा रहल अछि। काल्हि हम अपना चश्मा सँ देखैत छी, तखन कहब। एकटा गप्प जे लोक कहैत अछि भगवान जे करैत छथि से नीके करैत छथि, एकदम सही कहैत अछि''?

माया, ''से की''?

मि0 दारुबाला, ''जखन हमरा घुरती वेर ए0सी0 मे टिकट नहि भेल तँ हम सोचलहुँ जे स्लीपर मे कोना जायब। मुदा स्लीपर मे अयला सँ एतेक तँ भेल जे नायक सँ भेट भ' गेल। भरि बाट ओ हमर ततेक ध्यान रखलक, जकर वर्णन नहि। जखन एक अपरिचितक संग ओकर एहेन व्यवहार छैक, तँ परिचितक संग केहेन हेतैक। आब एहि सँ वेशी भगवानक की कृपा भ' सकैत अछि। हम जकरा ताकक लेल गेल छलहुँ, ओ स्वतः हमरा झोरी मे आबि गेल। एखन थाकल ठेहिआयल छी, आराम कर' दीअ'। काल्हि एकरहि पर सोचल जयतैक। आब अहूँ आराम करु। राति बहुत भ' रहल छैक''।

माया, ''मुदा काल्हि भोरे तँ ओ चल जायत''।

मि0 दारुबाला, ''चल कोना जायत आ सेहो बिना दारुबालाक आज्ञा कैं। हम ओकर इष्ट छियैक आ इष्ट कैं केओ रुष्ट नहि करैत अछि। हम जतेक काल धरि रोकबै ओ कतहुँ नहि जा सकैत अछि। दारुबालाक जटा मे फँसब आसान छैक बहरायब नहि''।

माया, ''से की जादू क' देने छियैक''?

मि0 दारुबाला, ''हम दुनू एकहि विषयक विद्यार्थी ने छी। तँ एक–दोसरक मनक गप्प बुझैत छी। सौंसे बाट तँ हम दुनू अपरिचित छलहुँ आ अपरिचित रहिक' लोक एक–दोसराक विषय मे वेशी जानकारी प्राप्त करैत अछि। जखन ट्रेन सँ उतरलाक बाद कार मे बैसिक' डेरा आबैत छलहुँ, तखन हम अपन परिचय देलियैक। हमर परिचय सुनितहि ओ हमर दुनू पायर पकड़ि लेलक आ बाजल अहाँ हमर भगवान छी। हम अहाँक बहुत नाम सुनने छलहुँ मदा आई दरशन भेल। हम धन्य भ' गेलहुँ। तखन अहीं कहूँ ओ हमर बात कोना काटि सकैत अछि''।

माया, ''नहि तखन तँ अहाँक बात नहि काटत आ विद्यार्थी संस्कारी सेहो लागैत अछि। जँ सब तरहँ नीक होइक तँ कामिनिक लेल हमरा बुझने उपयुक्त वर हेतैक''।

मि0 दारुबाला, "देखु, भगवानक की इच्छा छनि। प्रातःकाल ठीक नौ बजे नायक मि0 दारुबालाक चेम्बर मे पहुँचि गेलाह। मि0 दारुबाला जे ककरहुँ सँ टेलीफोन पर गप्प करैत छलाह, गप्प खतम होइतहि बजलाह नायक जी, शर्त्तक अनुसार हमरा चाहैत छल जे अहाँ के भोरे विदा करब, मुदा एहिठामक लेल अहाँ अजनबी छी। कत' जायब, कोना जायब, की करब, नहि करब, इ सब किछु सोचि हम ई जानए चाहैत छलहुँ जे अहाँक भावी योजना की अछि। जँ हमरा सँ भ' सकत त' हमहूँ मदति करब, अन्यथा विदा क' देब। तैं पहिने अहाँ इ कहू जे की अभिष्ट ल' क' दिल्ली आयल छी"।

नायक, "श्रीमान्! हम बेरोजगार छी। इएह सोचि क' दिल्ली अयलहुँ जे, कोनो काज भेटि जायत तँ करब। मुदा जखन सँ अपनेक दर्शन भेल अछि, हमर मने बदलि गेल अछि। आब अपनेक जे आदेश हेतैक, हम सैह करब"।

मि0 दारुबाला, "देखु मि0 नायक, अहाँ जे पढ़ाई पढ़ने छी, ताहि मे दू टा बात भ' सकैत अछि। पहिल तँ इ जे कतहुँ कोनो फार्म मे विधिज्ञ सलाहकार के रूप मे काज करी। ओहि मे हम अहाँके लगा सकैत छी। कएटा सी0एम0डी0 हमर जान–पहचानक लोक छथि। एखन नया मे छः हजार टाका देत। धीरे–धीरे अनुभव बढ़ला पर दरमाहा बढ़ियो सकैत अछि"।

नायक, "आ दोसर श्रीमान्"?

मि0 दारुबाला, "आ दोसर इएह जे हम क' रहल छी। प्राइवेट प्रेक्टिस क' सकैत छी। ओहि सँ एकटा आर फायदा भ' सकैत अछि"?

नायक, "की फायदा भ' सकैत अछि"?

मि0 दारुबाला, "पन्द्रह वर्षक अनुभव भेला सँ जज मे बहाली भ' सकैत अछि। ओकरा लेल परीक्षा होइत छैक। ओकरहि आधर पर चयन कयल जाइत छैक। मुदा जकर प्रेक्टिस जमि जाइत छैक, ओ जजक नौकरी मे नहि जाइत अछि"। सब सँ पैघ गप्प ई जे अहाँक अभिरूचि कोन दिश अछि"।

नायक, "एखन अभिरुचि केर कोनो प्रश्न नहि उठैत छैक। हम तँ अपनेक

उपर छोड़ि देने छी। अपनेक जे आदेश हेतैक हमरा शिरोधर्य अछि"।

मि0 दारुबाला, "ओ तँ ठीक अछि मुदा जेकरा जाहि कार्य दिश रुचि रहैत छैक, ओकरा ओहि मे विशेष मन लागैत छैक आ ओ काज ओ व्यक्ति यत्न पूर्वक करैत अछि। रुचि नहि रहला सँ काज दिन कट्टन होइत छैक। तैं कोनो निर्णय लेबा सँ पूर्व अभिरुचि बुझब आवश्यक अछि"।

नायक, "हमर इच्छा तँ ओकील बनबाक अछि"।

मि0 दारुबाला, "हमहूँ सैह चाहैत छलहुँ। ई अहाँ हमरहि मनक बात बाजल छी। एहि मे एहेन व्यवस्था छैक जे दू वर्ष धरि कोनो बरिष्ठ ओकीलक संग ओकर जूनियर बनि क' काज कर' पड़ैत छैक। ओकर बाद स्वतंत्र रूपैं काज क' सकैत अछि। अहुँके एकटा सिनियर के चयन करबाक अछि"।

नायक, "हम तँ एहिठाम किनकहुँ नहि चिन्हैत छियन्हि। केवल अपनहिटा के चिन्हैत छी"।

मि0 दारुबाला, "ठीक छै अहाँ चिन्ता नहि करु। हम जकरा कहि देबैक ओएह अहाँके अपना जुनियर मे राखि लेत"।

नायक, "की अपनेक संरक्षण मे इ सब नहि भ' सकैत छैक"।

मि0 दारुबाला, "किएक नहि भ' सकैत छैक। भ' तँ सकैत छैक, मुदा ओहि मे किछु शर्त्त अछि"।

नायक, "जी शर्त्त.....केहेन शर्त्त"?

मि0 दारुबाला, "शर्त्त इएह जे अहाँ के अहीठाम रह' पड़त। एहिठाम जे किछु रुखल–सूखल भेटत, ओही पर गुजर कर' पड़त आ एहिठामक जे कायदा–कानून छैक, ओ मानब अहाँक बाध्यता होयत"।

नायक, "श्रीमान्! अपनेक ई उपकार हम जिनगी भरि बिसरि नहि सकैत छी। हम जा घरि जिअब, अहाँक पूजा करब। ठीक ओहिना जेना लोक अपना इष्टक, भगवानक करैत अछि"।

मि0 दारुबाला, "ई कोन उपकार भेलैक। इ तँ ऋण सधायब भेल। हमरहुँ तँ केओ एहेन अवसर देलक आ हमहुँ अहाँ के द' रहल छी"।

नायक, "आब एहि सँ बेशी की भ' सकैत छैक। अपने तँ हमरा धरती पर सँ उठा क' सरंग मे पहुँचा देलहुँ, नाली सँ उठा क' राजभवन मे पहुँचा देलहुँ"।

मि0 दारुबाला देखलनि जे नायक अत्यधिक भावुक भ' रहल छथि, ओ गप्प के बदलि देलनि आ किछु आर तँ हुँनका जानकारी लेबाक छल। ओ पुनः पूछलनि, "अहॉक परिवार मे आर के सब छथि"?

नायक, "माँ, बाबूजी आ हम सात भाई–बहिन छी"।

मि0 दारुबाला, "ओ सब की करैत छथि"?

नायक, "हमर बाबू जी हाई स्कूल मे शिक्षक छथि। हमरा सँ पैघ दू टा भाय बी0ए0 पास क' क' किछु व्यवसाय गामहि पर करैत छथि, आ दू टा छोट भाय एखन पढ़िये रहल अछि। बहिन दुनू सेहो छोटे अछि, ओहो सब पढ़ि रहल अछि आ माँ घरक काज मे व्यस्त रहैत छथि।

मि0 दारुबाला के जेहने परिवारक प्रतीक्षा छल, से भेटि गेल। मध्यमवर्गीय वा जे जेड़गर परिवार होयत, सैह ने घर जमाय रहत। तँ नायक के कहलनि, "अहाँक आजुक साक्षात्कार खतम होइत अछि। आई अहाँ घुमु–फिरू, दिल्ली देखू। ड्राइवर के हम संग क' दैत छी आ अहाँक संग कामिनि सेहो रहतीह। ओ अहाँके सब प्रमुख जगह के बारे मे बाटे मे बुझाबैत जेतीह। काल्हि ठीक नौ बजे सँ अहाँक काज शुरु होयत"।

नायक बाहर निकलि क' बरामदा मे बैसि गेलाह आ ओहिठाम राखल अखबार के उनटाव–पुनटाब' लगलाह। फेर कामिनिक बजाहटि भेल।

मि0 दारुबाला, "कामिनि! अहाँ बी0 ए0 एल0 एलबी तँ क' लेलहुँ"।

कामिनि, "जी"।

दारुबाला, "आगाँ की विचार अछि"?

कामिनि, "जे अपने नीक बुझी"।

दारुबाला, "हम जे कहब से भ' सकैत अछि, अहाँ के नीक नहि लागए, रुचिगर नहि लागए। ओ अहाँ के थोपल बुझाबए। अहाँ के जाहि कार्य मे

रुचि होयत से काज करबा मे खूब मन लागत। तँ उचित इएह जे अहाँ अपन रुचि प्रकट करु। अहाँक जे इच्छा हो वेझिझक बाजू। तखन हम अपन निर्णय वा विचार व्यक्त करब"।

कामिनि, "हमर तँ इच्छा अछि जे वकालत करी आ कानूनक एक सँ एक ओझरायल गुत्थी के सोझराबी। असहाय लोक के न्याय दियेबा मे मदति करी। अन्यायी कोनो स्थिति मे नहि बाँचक चाही आ निर्दोष के उचित न्याय भेटओ"।

दारुबाला, "की एहि लेल जे अहाँ हमर बेटी छी"?

कामिनि, "किछु अहू लेल जे हम अहाँक बेटी छी। हमरा आगू बढ़ाब' मे अहाँक मदति भेटत आ दोसर एहि लेल जे एकटा इएह विद्या अछि जत' अहाँ स्वतंत्र छी। अहाँ स्वतंत्र रूपँ अपन काज क' सकैत छी, अपन विचार राखि सकैत छी"।

मि0 दारुबाला, "कि अन्यत्र इ स्वतंत्रता नहि छैक"?

कामिनि, "जी नहि । प्रशासन के ल' लेल जाउ। एकटा अधिकारी ओएह करत जे ओकर उपरक अधिकारी क' निर्देश हेतैक। ओ चाहिओ क' ओ सब किछु नहि क' सकैत अछि, जे ओ करए चाहैत अछि आ जे बड़का अधिकारी अछि ओ मंत्रीक कहल नहि करत तँ तुरत तबादला भ' जेतैक। पता नहि कोन–कोन कारबाई भ' जेतैक। हम तँ देखने छी एकटा मुख्य सचिव के जे तमाकुल चुना क' मुख्यमंत्री के खोआबैत छलाह। ओ अधिकारी की निष्पक्ष निर्णय ल' सकैत छथि"।

दारुबाला, "ओकरा लेल तँ कठिन मेहनति कर' पड़त। तखन जा क' ओ उँचाई भेटत। एहि गप्प कँ खास क अदालति मे बिसरि जायब जे अहाँ मि0 दारुबालाक बेटी छी। भ' सकैत अछि जे कौखन हमरहि अहाँक बीच बहस शुरु भ' जायत। ओहि काल मे संकोच नहि करब आ ने करबाक चाही"।

कामिनि, "जी! हमरा स्वीकार अछि"।

दारुबाला, "ठीक छै, अहाँ एखन जाऊ आ गाड़ी सँ नायक जी कँ कनेक

दिल्ली घुरा दिऔन। ओ एहिठामक लेल नव लोक छथि। सब प्रमुख जगह देखा देबनि। काल्हि नौ बजे मे अहाँ दुनू गोटे के वकालत करबाक लेल इन्टरब्यू लेल जायत। ओहि मे पास क' जायब, तखन अगिला कार्यक्रम तय कयल जेतैक''।

कामिनि, ''दुनू गोटा के''?

दारुबाला, ''दुनू गोटे, अहाँ आर मि0 नायक''।

कामिनि, ''मुदा मि0 नायक तँ केवल राति भरिक लेल आयल छलाह। अपनहि तँ बाजल छलहुँ''।

दारुबाला, ''अवश्य बाजल छलहुँ जे मि0 नायक केवल राति भरिक लेल आयल छथि आ इहो बाजल छलहुँ जे ओ आबए नहि चाहैत छलाह मुदा हम जबरदस्ती अनने छलियनि। ओहो हमरहि मातहत वकालत करबाक इच्छा प्रकट केलनि। काल्हि जँ ओ साक्षात्कार मे पास भ' गेलाह तँ दू वर्ष धरि हमर सहायक केर रूप मे काज करताह। तत्पश्चात् स्वतंत्र रूपे काज क' सकैत छथि। एहि मे अहाँके कोनो आपत्ति अछि की''?

कामिनि, ''जी नहि, एहि मे हमरा आपत्ति किएक होयत। ई तँ अहाँक कार्यक्षेत्र आ अधिकार थीक। अहाँ जे उचित बूझब सैह ने करब''।

दारुबाला, ''हम सोचि रहल छलहुँ जे जँ दुनू गोटे एक संगे हमरा सानिध्य मे काज करितहुँ तँ प्रतियोगिताक भावना बनल रहैत। व्यक्ति के आगू बढ़बाक लेल आ ओकर चहुमुखी विकासक लेल ई आवश्यक अछि। हँ! एहिमे इर्ष्याक भावना नहि होयबाक चाही। ओहि सँ पतन होइत छैक।''

कामिनि, ''से तँ होइत छैक''।

दारुबाला, ''ठीक छै, आब अहाँ जा सकैत छी। काल्हि प्रातः नौ बजे हाजिरी देब नहि बिसरब''।

कामिनी, ''बिसरब कोना, पहिल पेशी जे अछि। आ दुनू बाप बेटी खिलखिलाक हँसि देलनि। कामिनि आ नायक ड्राइवरक संग गाड़ी ल' क' घुम' चलि गेलीह। ओहि काल चेम्बर एकदम खाली छल। सब केओ

चल गेल छलाह। माया मि0 दारुबाला के पूछलनि, की देखल केहेन छैक, आहार–व्यवहार, बात–विचार, शील–स्वभाव, पढ़ाई–लिखाई आ गप्प–शप्प''।

दारुबाला, ''सुनु.....! ओकर पढ़ाई–लिखाई, शील–स्वभाव, आचार–विचार आदि सँ तँ हम बाटे मे परिचित भ' गेल छलहुँ। तखन ट्रेन मे हम ओकर उद्येश्य (भ्यू) नहि पूछि पओलहुँ आ ओकर परिवारक विवरण सेहो नहि ल' सकलहुँ। कारण हमरा ओतेक पूछ–पाछ करबाक कोन प्रयोजन छल। जाहि दृष्टि मे अहाँ देखल से हमरा मन मे एकदम नहि आयल। ओकर विद्वता सँ हम अति प्रसन्न छी। ओ आगू जा' क' बहुँत किछु करत, जँ ओकरा सही मार्ग दर्शन भेटतैक तँ। ओकर इच्छा वकालत करबाक छैक आ कामिनि सेहो वकालते करब पसन्द करैत अछि। घरहुँ मे खूब झमटगर अछि। ओकर हमरा सभक संग रहने ओकरा माय–बाप के सेहो नहि अखरतैक। हमरहुँ सब के एहि विद्या के आगू बढ़ौनिहार भेटि जायत। काल्हि सँ ओकरा सभक ट्रेनिंग शुरु होयतैक''।

माया, ''तखन त' भ'ए' गेलैक, आर की चाही। हमरा तँ ओकरा देखितहि जँचि गेल आ तँ अहाँके गहराई मे जेबाक लेल कहलहुँ। घर बैसल वर भेटि गेल। एहि सँ पैघ भगवानक कृपा आर की भ' सकैत अछि। गुण रहब आवश्यक छै, से तँ छैहे। जखन गुण रहतैक तँ धन अपने आप भ' जेतैक। धनक हमरा कोन कमी अछि, सब तँ ओकरहि हेतैक''।

दारुबाला, ''एखन तँ अहाँ अपना दिश सँ ने कहि रहल छी। ओम्हर सँ की जबाब आओत तखन ने''।

माया, ''जे भगवान एतेक केलनि से आगुओ ठीके रखताह''।

दारुबाला, ''मुदा श्रीमती जी! ई हमर आ अहाँ बला जवाना नहि थिकैक, जे माय–बाप, वर–कनियाँ कँ जाहि खूँटा सँ बान्हि देलक ओ जिवन भरि ओही खुँटा मे बाँन्हल रहत। की मजाल जे चू तक करत। की! अहाँक बेटी से मानत''।

माया, ''इ भार हमरा पर छोड़ि दीअ'। बेटी के हम मना लेब। एखन

ओकरा सब के एहि विषय के किछु कहबा–सुनबाक काज नहि छैक। समय अयला पर सब किछु अपनहि भ' जेतैक''।

दारुबाला, ''बस.....बस.....अहाँ ओकरहि पर ध्यान राखू। अहाँ मि0 नायक केर चिंता जुनि करु। मि0 नायक कैं तँ हम आगि मे कुदबाक लेल कहबैक, तँ ओ कूदि जायत। आखिर गुरु आ शिष्यक सम्बन्ध छैक। एकरा मामूली नहि बूझिऔक''।

माया, ''से की हम दुनू माय–बेटी एहेन बेकहल छी''?

दारुबाला, ''बेकहल नहि छी, अति बुधियारि छी। जखन भगवानक ओहिठाम अकिलक बँटबारा होइत छलैक तँ अहीं दुनू माय–बेटी आगु मे ठाढ़ि छलहुँ आ हम छलहुँ सबहक पाछाँ''।

माया, ''से तँ ठीके छलहुँ। हम ई कहैत छलहुँ जे दुनूके एक संग कतहुँ–कतहुँ जयबाक अवसर देबैक। जाहि सँ दुनू के एक दोसर के प्रति आकर्षण हेतैक। अहाँ लग रहने तँ इ सम्भव नहि हेतैक''।

दारुबाला, ''अही लेल ने दुनू के घुमबाक लेल पठौने छियैक। दुनू मे मेल–जोल बढ़ेबाक लेल एहि सँ पैघ अवसर की हेतैक। मुदा कामिनीक झुकाव तँ राजेश दिश अछि। तकर की हेतैक''।

माया, ''राजेशक चालि–चलन हमरा नीक नहि बुझाइत अछि। ओकर प्रवृत्ति किछु आर छैक। ओ जखन एखनहि बिगरल अछि तँ आगू ओकर–सुधरबाक अपेक्षा करब व्यर्थ अछि''।

दारुबाला, ''आई–काल्हि पश्चिमी सभ्यताक असर हमरहुँ देश मे आबि गेल अछि। उच्च वर्गक समाज एहि मे वेशी लिप्त अछि। ओ एकरा अपन शान बुझैत अछि''।

माया, ''रह' दिऔ। जकरा नीक लागैत छैक से लागौ। हमरा तँ ओ सब फुटलीओ आँखिये नहि सोहाइत अछि। ई विदेश नहि ने छियैक। ओहिठाम तँ ककरहुँ संगे केओ रहि लैत अछि। एहेन केओ पुरुष वा स्त्री नहि होयत जे अपनहि जीवनकाल मे कम सँ कम दस बेर अपन जीवन संगी बदलने नहि होयत। मुदा हमरा ओहिठाम इ सभ नहि भ' सकैत अछि। एहिठाम

सभके अपना–अपना घरबालीक संग मनोरंजन करबाक अधिकार देल गेल अछि आ ओकरा संगे कैबरे डांस करब, की उचित छैक, छी:''।

दारुबाला, ''अहाँक विचार तँ बड़ नीक अछि मुदा आगुक परिपेक्ष्य मे उपयोगी नहि। दुनियाँ कत' सँ कत' चल गेल आ अहाँ एखन धरि ओतहि बैसल छी उन्नीसम सताब्दी मे''।

माया, ''तखन अधलाह किएक लागैत अछि, बिनु विवाहे तीन बच्चाक माय बनब। इएह तँ एक्कीसम सदीक उपलब्धि अछि। सही मे लोक आगु बढ़ल अछि''।

दारुबाला, ''भगवान कृष्णो तँ राश रचाबैत छलाह आ सेहो दू–चारि गोटेक संग नहि, सोलह हजार एक सय आठक संग''।

माया, ''भगवान श्रीकृष्ण जे राश लीला करैत छलाह, ओहि मे कृष्णक प्रति समर्पण केर भाव छलैक। ओ जकरा संग राश रचाबैत छलाह, ओकरा संग दोसर केओ राश नहि रचाबैत छल। ओ तँ जरूरत पड़ला पर ककरहुँ वस्त्रो बढ़ा दैत छलाह। दोसर मे ई सामर्थ छैक। कृष्ण एकटा छलाह आ गोपी हजार मुदा आई गोपी एकटा रहैत अछि आ गोपाल हजार''।

दारुबाला, 'हम तँ बुझैत छलहुँ, अहाँ सँ जीतब कठिन अछि। एहि तरहँ नायक आ कामिनिक वकालती शिक्षा प्रारम्भ भेल। दुनू एक सँ बढ़ि क' एक तर्क दैत छल जे सुनिक' मि0 दारुबाला सेहो अचंम्भित भ' जाइत छलाह। खासक नायक केर तर्क सँ मि0 दारुबाला वेशी प्रभावित होइत छलाह। चूकि कामिनि हुँनकर बेटी छलनि आ ओ ओही परिवेश मे बढ़ल–पलल छलीह। हुँनका एहेन माहौल भेटल छलनि। तँ हुँनकर तर्क स्वाभाविक छल मुदा नायक तँ गाम–घरक रहनिहार छल। ओकरा एहि तरहक वातावरण नहि भेटल छलैक। ओकर तर्क ओकरा दिमागक उपज छलैक। ओहि सँ ओकर प्रतिभा परिलक्षित होइत छलैक। मि0 दारुबाला कैं एके मास मे बुझा गेलनि जे ई दुनू शिष्य हमरा नाम कैं आगू बढ़ाओत। दू वर्षक कठिन मेहनतिक बाद मि0 नायक आ कामिनि तपाओल सोना जकाँ निखरि उठलीह। अदालत मे सब दिश हुँनकहि दुनूक नाम गुंजैत

छल। हुँनका तर्कक सोझां विपक्षी वकील निरुत्तर भ' जाइत छलाह। मि0 दारुबाला आब अपने बहस नहि करैत छलाह। केवल दुनूक बहस सुनैत छलाह आ जत' जरूरत होइत छलैक, इशारा क' दैत छलाह। मुदा हुँनकहुँ एहेन अवसर आब यदा–कदा भेटैत छलनि। कामिनि प्रत्येक शनि क' रात्रि आठ बजे नियमित रूपँ क्लब जाइत छलीह आ ग्यारह–बाहर बजे धरि आपस आबैत छलीह। ई क्रम हुनका कालेजहि काल सँ चलि रहल छलनि। हुँनकहि कालेजक एकटा सहपाठी राजेश कँ ओ चाहैत छलीह आ ओकरहि संग डान्स करैत छलीह। माया के पहिने सँ राजेशक चालि–चलन पर संदेह छलनि। राजेश कतेको बेर कामिनिक संग डेरा पर सेहो आयल छल। ओकरा संग गप्प–शप्प सँ माया खुश नहि छलीह। ओ कामिनि के बहुत तरहँ घुमा–फिराक राजेशक संग छोड़बाक लेल बजलीह मुदा कामिनि अपना जिद्द पर अड़ल रहलीह। माया क्लब मे मि0 नायक कँ ल जेबाक लेल सेहो कतेको बेर आग्रह कयलनि मुदा कामिनि कँ इ पसिन्न नहि छलनि। ओ नहि चाहैत छलीह जे मि0 नायक हुँनका प्राइवेट जीवन मे हस्तक्षेप करथि। ओ नहि चाहैत छलीह जे राजेश आ कामिनिक कार्य–कलाप कँ मि0 नायक देखथि। दुनू एके सँग वकालत जे करैत छलीह। ओहू दिन कामिनि मि0 नायक के अपना संगे ल' जेबाक लेल तैयार नहि छलीह मुदा माया क' तामस देखि ओ किछु बाजि नहि सकलीह। मायाक ओदश पर मि0 नायक कामिनिक संग गेलाह आ क्लबक एक कोन मे चुपचाप बैसि गेलाह। मि0 नायक कोल्ड ड्रींक पीब' लगलाह। कामिनि कँ मि0 नायक के आयब नीक नहि लागल छलैक। किएक तँ कामिनि अनमयस्क जकाँ गाड़ी मे बैसल छलीह। एकहुँ बेर ओ नायक केर संग गप्प–शप्प नहि केलनि। जखन कि आन घड़ी बुल–बुल जकां चहकैत रहैत छलीह। दोसर कँ बजबाक अवसरो नहि दैत छलीह। तथापि दुनू गोटे माँ जीक आज्ञाक पालन क' रहल छलाह आ मि0 नायक तँ एकरा गुरु माताक आज्ञा बुझैत छलाह। हुँनका एहिठाम मान–अपमान किछु नहि बुझेलनि। ओ चुपचाप गुरुदेव आ गुरुमाताक आज्ञाक अनुशरण

करैत अपना साधना मे लीन छलाह। हुँनकहुँ कामिनिक प्रति कोनो आकर्षण नहि छलनि। ओ कामिनि कँ गुरुकुलक सहपाठीक दृष्टि सँ देखैत छलाह। हठात् हुँनकर नजरि कामिनि पर पड़ल। कामिनिक संग डान्स करैत–करैत हुँनकर प्रेमी राजेश अपनहुँ शराब पीलक आ कामिनि के सेहो पीयेबाक कोशिश केलक मुदा कामिनि शराब नहि पीलनि। ओ डान्स करैत–करैत कामिनि कँ भरि पाँज क' पकड़ि लेलक आ आगू किछु करबाक प्रयत्न क' रहल छल। ओकर आभास होइतहि कामिनि राजेशक बाहु–पाश सँ मुक्त होयबाक लेल छटपटा उठलीह। ओ तँ राजेश कँ सब किछु देबाक लेल तैयार छलीह, मुदा एना सार्वजनिक रूपँ नहि, एकान्त मे आ सेहो पाणिग्रहण केर बाद। मुदा राजेश कँ आभाष भ' गेलैक जे कामिनि हमरा हाथ सँ निकलि रहल अछि। ओ दिन–राति मि0 नायक केर संगे रहैत अछि। ओ कामिनि सँ वेशी मि0 दारुबालाक सम्पत्ति सँ प्रेम करैत छल आ ओकरहि लेल कामिनि कँ हथियाब' चाहैत छल। ओ कामिनिकँ सरेआम बदनाम करबाक प्रयास कयलक। जाहि सँ ओकरा ब्लैकमेल कयल जा सकैत छलैक। कामिनि के अपन आबरु पर खतरा बुझेलैक। ओ राजेशक व्यवहार सँ खिन्न भ' गेल। ओकरा मन भेलैक जे राजेशक मुँह पर कसिक' एक चमेटा दी मुदा ओकर हाथ तँ पहिनहि सँ कसि क' पकड़ने छलैक। ओ अपना बचावक लेल हल्ला केलक बचाऊ. ...बचाऊ..... केओ एहि पापी सँ बचाऊ.....। एतेक काल तँ मि0 नायक के लागल जे ई सब आपस मे प्रेमालाप क' रहल छथि, मुदा जखन कामिनिक मुँह सँ बचाऊ.....बचाऊ....सुनलक, ओ कामिनि कँ बचेबाक लेल आगू बढ़ल। मि0 नायक कँ देखितहि राजेश कँ लागल जे ओ दुनूक बीच देवाल बनल छथि। हुँनकहि कारण कामिनि आना–कानी क' रहल अछि। एहि सँ पूर्व तँ दुनू उनमुक्त भ' प्रेमालाप करैत छल। आई किएक एना क' रहल अछि। सम्भवतः ई मि0 नायक केर प्रभाव भ' सकैत अछि। ओ कामिनि के छोड़ि एक जोरदार घूसा मि0 नायक केर कनपट्टी मे देलक। मि0 नायक एहि प्रहार सँ अनभिज्ञ छलाह। ओ अपना के सम्हारि नहि सकलाह

आ धड़ाम द' खसि पड़लाह। हुँनकर माथ कोनो ठोस वस्तु सँ टकरायल आ माँथ सँ छड़–छड़ शोणित बह' लागल। माँथ सँ शोणित बहैत देखि मि0 नायक केर तामस बेकाबू भ गेलनि। ओ जेबी सँ रुमाल बहार क' माँथ मे बन्हलनि। मि0 नायक कँ धारासायी होइतहि राजेश कामिनि के घिचि क' एकटा कोठली मे ल' गेल। ओकर देहक सब वस्त्र फाड़ि देलक आ कोठलीक केबाड़ बन्न करबाक कोशिश क' रहल छल कि मि0 नायक एक घूसा ओकरा कनपट्टी मे देलनि। ओ चारुनाल चित्त भ' गेल। उपर सँ दू–चारि घूसा आर देलनि। राजेश के पुनः उठबाक हिम्मत नहि भेलैक। नायक अपन कोट कामिनि दिश बढ़ा देलनि। जाहि सँ ओ अपन देह झाँपि सकथि। दुनू गोटे गाड़ी मे बैसि डेरा अयलाह। डेरा अबितहि माया कामिनि के नायक केर कोट पहिरने देखि अचंम्भित भेलीह। ओ पहिने बेटी के पूछलनि, कामिनि की भेल अछि"। मुदा कामिनि किछु नहि बजलीह ओ मुड़ी झुकौने भीतर चल गेलीह। अचानक मायाक ध्यान नायक केर माँथ मे बान्हल रुमाल पर गेल, जे शोणित सँ भीजल छल। ओ बजलीह, "अहाँक माँथ सँ शोणित बहैत अछि, से किएक"?

नायक बाजल, "जी, माँ जी, कोनो खास गप्प नहि छैक। गाड़ी मे बैस' काल कनेक कम झुकल रही, से चोट लागि गेल।

माया बजलीह, "नायक जी, अहाँ के झूठो नहि बाज' आबैत अछि। चलु मानि गेलहुँ जे अहाँके गाड़ी मे चोट लागि गेल, मुदा अहाँक कोट कामिनि लग कोना पहुँचि गेल"?

नायक, "जी, आबैत काल बाट मे कामिनि बजलीह, जे हुँनका ठंढा लागि रहल छनि। तँ हम अपन कोट हुँनका द' देलियनि"।

माया, "मि0 नायक, हमहुँ अही लोक मे रहैत छी। अहाँ सब जँ ओकील छी, तँ हमहुँ दिन–राति ओकीलेक संग रहैत छी"।

नायक सेहो मुड़ी झुका क' सब किछु सुनि लेलनि, किछु बजलाह नहि। हुँनका उत्तर सँ कामिनि के बड़ संतोष भेलनि। हुँनका तँ होइत छलनि जे नायक सब किछु खोलि क' माँ जी लग वा बाबूजी लग बाजि देताह मुदा

ओ जाहि ढंग सँ सफाई देलनि, कामिनि ओकर कल्पनो नहि कयने हेतीह। माया तँ सब किछु बुझि गेलीह। एकटा नारी, नारीक व्यथा के नीक जकाँ बुझि सकैत अछि। हुँनका पर नायक केर झांपनक कोनो असरि नहि भेल। हुँनका तँ पहनहि सँ एकर आशंका छलनि। तँ ओ बेर–बेर नायक कँ कामिनिक संग जयबाक लेल आग्रह करैत छलीह। माया के एके बातक खुशी भेलनि जे हुँनकर काज बिना कोनो प्रयासे कँ भ' गेलनि। ओ नहि चाहैत छलीह जे कामिनि राजेशक संग रहए, से स्वतः भ' गेल।

एहि घटना सँ कामिनि क' हृदय परिवर्त्तन सेहो भेल। ओकरा अन्तःकरण मे नायक क' प्रति प्रेमक अंकुर प्रस्फुटित भेल। ओकर आकर्षण नायक दिश बढ' लागल। नायक कँ ओकहिओ एहि रूप मे नहि देखने छल, जाहि रूप मे आई देखि रहल छल। ओ तँ राजेश क' प्रेम मे आन्हर भ' गेल छल। ओकर वास्तविकता ओकरा देखबा मे नहि आबैत छलैक। ओकरा बास्तबिकता सँ केवल माया देवी परिचित छलीह, जे बेर–बेर बेटी के अगाह करैत छलीह, हुँनका सम्हारक कोशिश करैत छलीह। तखन भगवान जे करैत छथि से नीके करैत छथि। जँ आई इ घटना नहि घटैत तँ आगु अहूँ सँ पैघ दुर्घटना घटि सकैत छल आ जँ ओहिदिन कामिनिक संग नायक नहि रहितथि तँ भ' सकैत छल जे कामिनि ककरहुँ मुँहो देखेबाक जोगरक नहि रहि जइतथि। कामिनि सोचैत अछि, नायक दिन–राति हमरा संगे रहैत छथि। ओ कतेक नीक लोक छथि। घर सँ कचहरी धरि एकहि संगे जाइत–आबैत छलीह। कोनो–कोनो दिन तँ ड्राइवर रहितहुँ नहि छल। ड्राइवर के नहि रहला पर कौखन कामिनि तँ कौखन नायक कार ड्राइव करैत छलाह। कतेको वेर बाबूजी दुनू गोटे के बाहर पठौलनि। एकहि होटल केर एकहि कोठली मे राति गमौलहु। हँ विछावन अलग–अलग रहैत छल। हम तँ एकर विरोध कयलहुँ आ नायक सेहो एहि पक्ष मे नहि छलाह जे एक कोठली मे रात्रि विश्राम करी, मुदा बाबूजीक स्पष्ट आदेश छलनि जे फुटे–फुटे रहला सँ भ' सकैत अछि, ककरहुँ संगे कोनो घटना घटित भ' जाय। ओहि स्थिति मे एक–दोसरक

मदति कोना करब। तैं एकहि कोठली मे रहबाक अछि। बाबूजीक आदेश नायक केर लेल सुप्रीम कोर्टक आदेश सँ कम नहि छल आ हमहूँ ओकरा मानवाक लेल विवश रही। कारण जाहि पेशा मे हम सब छी, ओहि मे दुश्मनोक कमी नहि रहैत छैक। पता नहि कखन की भ' जायत। एहि लेल दुनू गोटे एक कोठली मे रहैत छलहुँ। हम तँ कहिओ नायक केर बारे मे सोचितहुँ नहि छलहुँ, मुदा नायक सेहो कहिओ किछु नहि बाजल। ओ चाहैत तँ हमरा संग बहुत किछु क' सकैत छल आ ओहिठाम ओकरा छोड़ि हमर रक्षा के करैत। जेना कि माँ जी बाजैत छथि, जे तोहर सूतब नीक नहि छौक। सूतल मे देह पर सँ कपड़ा ससरि जाइत छौक आ तू किछु नहि बुझैत छेंह। भ' सकैत अछि इ स्थिति हमरा संग ओतहुँ भेल हो, मुदा हम अछिंजल बनल रहि गेलहुँ। नायक मनुक्ख नहि भगवान थीक। हम कतेको बेर ओकर अनादर सेहो कयल मुदा ओ ध्यान नहि देलक, ओकर भलमनसाहत देखू। दोसर दिश राजेश के लीअ। जकरा हम अपन जीवन संगी बनाब' चाहैत छलहुँ। अपन सर्वस्व ओकरा पर निछावर कर' चाहैत छलहुँ। ओ सब किछु देब' चाहैत छलहुँ, जे ओकरा चाही, मुदा ओ एहेन सांप बहरायत, सपनहुँ मे नहि सोचि सकैत छलहुँ। ओ सरेआम हमरा नांगट कर' चाहैत छल। ओ चाहैत छल हमर अश्लील फोटो खिंचि जीवन भरि हमरा ब्लैकमेल करैत रहए। ओकरा हमरा सँ नहि, हमरा पिताक धन सँ प्रेम छलैक। ई तँ नीक भेल जे हमरा एतेक जल्दी ओकर वास्तबिकता बुझा गेल, नहि तँ हमर जीवन नरक बनि जाइत। हम कतहुँ के नहि रहि जइतहुँ। ओ तँ भगवानक कृपा बुझू जे माँ जी जबरदस्ती हमरा संग नायक कैं लगा देलनि। हम तँ ओहिठाम नायक कैं लओ नहि जाय चाहैत छलहुँ, मुदा आई जे हम छी तँ केवल नायक केर बदौलति। नायक पूज्य अछि आ आई सँ हम ओकर पूजा करब। ओ हमरा अपन जीवन संगीक रूप मे स्वीकार करए वा नहि, मुदा हम जीवन भरि क' लेल ओकर बनि जायब। जीवन भरि ओकरहि पूजा करब, ककरहुँ आर के नहि। इएह गुन–धुन करैत ओ अपन कपड़ा बदलबाक विचार क'

रहल छलीह। देह पर सँ नायक जी बला कोट उतारि क' ओकरा करेजा सँ सटा क' चूमि लेलनि आ नीक जकाँ चौपेति क' राखि देलनि। ओ अयनाक सोझां ठाढ़ि भेल अपन देह निहारि रहल छलीह, तावत् कोठली मे माया पहुँचि गेलीह। एकर आभास होइतहि कामिनि दुनू हाथ सँ अपन उघार अंग के झँपबाक असफल प्रयास केलनि। हुँनकर स्थिति देखि माया सन्न रहि गेलीह, मुदा कओ की सकैत छलीह। हुँनका तँ पहिनहि सँ एकर आभास छलनि। तथापि ओ अनठा क' बजलीह, कामिनि बेटा.....की ई सब नायक केर कारण.....। कामिनि बीचहि मे हुँनका मुँह पर हाथ राखि देलनि आ कोरा मे मुँह नुकाबैत, सिसकैत सिसकैत बजलीह, नहि माँ नायक जी तँ भगवानक दोसर रूप छथि। हम हुँनका देरी सँ चिन्हलहुँ, ई तकरहि फल थीक। हुँनकहि कारण तँ आई हमर आ हमरा परिवारक इज्जति बाँचल अछि। राजेश पापी अछि, ओ आबारा आ बदचलन अछि। ओकरा हमरा सँ नहि, बाबूजीक धन सँ प्रेम छैक। जँ आई हमरा संगे नायक जी नहि रहितथि, तँ राजेश हमरा बर्बाद क' दैत। हमरहि कारण नायक जी क' कपाड़ फूटल अछि। हुँनका माँथ सँ बहुत राश शोणित बहरायल अछि, मुदा ओ उफ तक नहि केलनि"।

माया, "तखन ताकैत की छी, जल्दी सँ कपड़ा बदलि अपन प्रायश्चित्त क' ने लीअ"।

कामिनि, "प्रायश्चित्त..... से कोना"?

माया, "नायक केर घावक उपचार क' क' "।

कामिनि, "हमरा हुँनका सोझां जयबा मे असोकर्ज बुझा रहल अछि। हमरा हिम्मत नहि भ' रहल अछि। ओ की सोचताह"।

माया, "इएह उचित अवसर अछि। जाहि सँ ओहो सोचबाक लेल विवश भ' जेताह आ जे किछु सोचताह से नीके सोचताह"।

कामिनि, "हमर डेग आगू नहि बढ़ैत अछि। हुँनका सोझां जयबा मे, जेना लागैत अछि जे पायर मे कोनो भारी वस्तु बान्हल हो"।

माया, "ठीक छै, तों तैयार होअ। हमहुँ चलैत छी"।

कामिनि कपड़ा बदलि साड़ी पहिरि हाथ मे ट्रे नेने नायक केर कोठली मे प्रवेश केलनि। ट्रे मे प्रथम उपचारक सामग्री यथा रुई, डिटॉल आ किछु टेबलेट छलैक। नायक कँ माँथक दर्द सँ निंन नहि होइत छलनि। ओ एम्हर सँ ओम्हर करवट फेरैत छलाह। कोठली अन्हार छलैक। कामिनि ट्रे के टेबुल पर राखि स्वीच औन केलनि। कोठली प्रकाश सँ जगमगा उठल।

नायक, "(अकचकाइत) के.... "?

कामिनि, "हम कामिनि...."।

नायक, "एतेक राति मे एहिठाम किएक अयलहुँ "?

कामिनि, "अहाँक दर्द हमरा सँ बर्दास्त नहि भेल। तँ किछु दवाई ल' क' आयल छी" ?

नायक, "दर्द हमरा अछि आ बर्दास्त अहाँ कँ नहि भेल। ई कोना भ' सकैत अछि। जकरा दर्द छैक ओ तँ बर्दास्त क' रहल अछि"।

कामिनि, "मुदा ई दर्द तँ हमरहि कारण भेल अछि। तँ एकर उपचारो हमरहि करक' चाही"।

नायक, "ई दर्द अहाँक कारण भेल अछि से अहाँ कोना बुझैत छी। ओत' ककरहुँ संगे एहेन घटना होइतैक तँ हम इएह करितहु। ई हमर स्वभाव अछि। दोसर गप्प अहाँ तँ ओकील छी, डाक्टर कहिआ सँ भ' गेलहुँ"।

कामिनि, "हम डाक्टर नहि छी। हमर घरेलु डाक्टर डा0 कमलेश छथि। ओ जखन आबैत छथि तँ किछु प्रथम उपचारक सामग्री द' जाइत छथि।

नायक, "अहाँ के पता अछि, कतेक बाजि रहल छैक। घरक जँ केओ नौकर–चाकर जागि जायत तँ ओ की सोचत"।

माया, "(कोठली मे प्रवेश करैत) केओ किछु नहि सोचत। अहाँ आई ततेक पैघ हमर उपकार कयल अछि, जे एकर बदला हम कहिओ नहि चुका सकैत छी। अहाँके तँ एतबहुँ होश नहि अछि जे अपना पायरक जूता–मौजा बहार करितहुँ। एहिठाम अहाँक चिंता हम नहि करब तँ के करत। अहाँ चुप–चाप आराम करु आ कामिनि के घाव साफ कर' दिऔ। कामिनि जँ

घाव वेशी गहींर बुझाबए तँ डा0 कमलेश सँ टेलीफोन पर गप्प क' लेब"।

कामिनि, "पापा सूति रहलाह की जागल छथि "?

माया, "कनेक घड़ी दिश ताकह ने, कतेक बाजि रहल छैक। पापा एक घंटा पहिनहि सुतलथुन्ह अछि"।

कामिनि घड़ी देखलक। साढ़े बारह बाजि रहल छलैक। आन दिन तँ ओ दस बजे आबि जाइत छल, मुदा दारुबाला कामिनिक देरीओ भेला सँ निश्चित छलाह। हुँनका बुझल छलनि जे कामिनिक संग मि0 नायक छथि। तँ कोनो अनिष्टक आशंका नहि छलनि। माया तँ अपना कोठली मे आबि गेलीह। ओहिठाम मि0 नायक आ कामिनि बचि गेलीह। कामिनि सब सँ पहिने नायक केर पायरक जूता–मौजा खोलि क' कात केलनि। ओकर बाद माथक रुमाल के खोललनि। रुई मे डिटौल लगा क' घाव के पोछब शुरु केलनि। घाव पोछैत काल नायक के दर्द सेहो होइत छलनि आ कामिनिक हाथक सुखद स्पर्श सेहो नीक लागैत छलनि। एहि क्रम मे कामिनि अपना देहक पूर्ण भार नायक पर द' देने छलीह। ओना तँ नायक अपन आँखि बन्न कयने छलाह मुदा कौखन चोर दृष्टिमँ कामिनि के देखि लैत छलाह। आई हुँनका कामिनि एतेक सुन्नरि लागि रहल छलनि, जकर ओ वर्णन नहि क' सकैत छलाह। लाल रंगक वोर्डर बला उज्जर दप–दप साड़ी आ ताहि पर लाल रंगक ब्लाउज जेना साक्षात स्वर्गलोक सँ कोनो अप्सरा उतरि आयल हो। आई सँ पहिने ओ कहिओ कामिनि के साड़ी मे देखनहुँ नहि छलाह। हुँनकर आँखिक निंन उड़ि गेल। ओ कामिनिक रूप पर मुगध छलाह। मुदा व्यक्त करबा मे गुरु देवक ध्यान आबि जाइत छलनि। ओ तँ मात्र ओकर रक्षक छलाह। जखन नायक के कामिनिक स्पर्श बर्दास्त सँ बाहर भ' गेल तँ ओ बजलाह, "कामिनि! अहाँ एखन जाऊ। भोर मे देखल जेतैक। राति बहुत भ' गेलैक। अहुँ के आराम करबाक चाही"।

कामिनि, "चोट एखन अछि आ उपचार भोर मे हेतैक। अहाँ एखन दबाई खा' लीअ। भिनसर तक बहुत आराम भ' जायत"।

नायक, "(टेबलेट खाइत) ठीक छै, आब अहाँ जाऊ"।

कामिनि, "हम कोनो दूधपीबा बच्चा तँ नहि छी, जे अहाँ जैह कहब, हम सैह करब"।

नायक, "की मतलब! अहाँ की कह' चाहैत छी। हम किछु बुझलहुँ नहि"?

कामिनि, "हम इएह कह' चाहैत छी, जे हमरा की करबाक चाही आ की नहि से हम बुझैत छी। एहि मे अपनेक निर्देशक आवश्यकता नहि छैक"।

नायक, "से तँ हम देखि चुकल छी, जे अहाँक निर्णय कतेक सटीक होइत अछि"।

कामिनि, "ई तँ हमरा संग धोखा भेल अछि, विश्वासघात भेल अछि, आ एहेन तँ ककरहुँ संग भ' सकैत छैक। ककरहुँ मांथ पर तँ नहि लिखल रहैत छैक, जे ओ केहेन लोक अछि"।

नायक, "तँ ने लोक के सतर्क रहबाक चाही। जँ मांथ पर लिखल रहितैक, तखन तँ सब पढ़ि लैत। कहबीओ छैक, सतर्कता गेल आ दुर्घटना भेल"।

कामिनि नायक केर संग गप्पो करैत छलीह आ धीरे–धीरे हुँनकर मांथ सेहो सहलाबैत छलीह आ तावत् सहलाबैत रहलीह यावत् नायक फोफ काटब नहि शुरु केलनि। कामिनि उठि क' घड़ी दिश तकलनि। तीन बाजि रहल छलैक। ओहो अही कोठली मे सोफा पर सूति रहलीह। बीच मे माया सेहो ओहि कोठली मे आयल छलीह। ओ कामिनि के सूतल देखलनि मुदा उठौलनि नहि, एक मंद मुस्कानक संग अपना कोठली मे चल गेलीह। भोरे जखन नायक केर निंन टूटलनि तँ ओ सोफा पर कामिनि के सूतल देखलनि। ओएह कामिनि जे राति राजेशक आगोश मे छटपटा रहल छलीह। जकरा कारण नायक केर कपाड़ फूटल छलनि। एखन बेसुध भेल सोफा पर पड़ल छथि। हुँनकर हाथक स्पर्श नायक के मन पड़लनि। कतेक सुखद एहसास भेल छलनि। नायक कतेक काल धरि कामिनि के निहारैत रहलाह। अचानक घड़ी दिश ध्यान गेलनि। आठ बाजि रहल छलैक। ओहि दिन रवि छलैक आ रविक' कोनो मुअकिल कैं नहि बजाओल जाइत अछि। दिन भरि सब आपस मे गप्प–शप्प आ

मनोरंजन करैत छथि, मुदा नायक के मि0 दारुबालाक संग चेम्बर मे नौ बजे किछु आवश्यक परामर्श करबाक छलनि। ओ जल्दी–जल्दी तैयार होमए लगलाह। एहि घटना सँ नायक आ कामिनिक बीच एक दोसराक प्रति आकर्षण बढ़ए लागल। ओ चाहैत छलीह जे एकर प्रस्ताव नायक दिश सँ आबए आ नायक संग विवशता छलनि। मने–मने तँ ओहो चाहैत छलाह, मुदा जाहि थारी मे खाइत छलाह, ओहि मे छेद कोना करताह। कामिनिक आव–भाव सँ माया के आभास भ' गेलनि जे ओकर झुकाव नायक दिश भ' रहल अछि। तखनहि तँ ओ ओहि राति मे नायक केर कोठली मे सोफा पर सूतल छलीह आ बेर–बेर नायक के कोठली मे जा' क' ओकर देख–रेख करैत छथि। जहाँ धरि नायक केर प्रश्न अछि, ओ तँ जखन मि0 दारुबाला आदेश करथिन, ओ ओहि सँ पड़ा नहि सकैत छथि। मि0 दारुबाला आ माया दुनू आपस मे विचार केलनि आ पूर्ण घटना सँ मि0 दारुबाला के अवगत करौलनि। तद्नुसार मि0 दारुबाला नायक के बजौलनि आ पूछलनि, "मि0 नायक आब तँ अहाँक उद्येश्य पूर्ण भ' गेल"।

नायक, "जी गुरुदेव! अपनेक चरणक कृपा सँ हमर उद्येश्य पूर्ण भ' गेल। हम अपनेक आभारी छी आ जीवन पर्यन्त रहब"।

मि0 दारुबाला, "की हमरा गुरु दक्षिणाक रूप मे किछु द' सकैत छी"?

नायक, "अवश्य गुरुदेव! हमरा लग जे किछु अछि, से अपनहि केर छी। हम तँ अपनेक सोझां निमित्त मात्र छी। अपने आदेश करिऔक"।

मि0 दारुबाला, "एखन तँ एकरा थाती राखल जाऊ। हमरा जखन इच्छा होयत, हम ल' लेब। हँ, एकटा गप्प मन राखब। विवाह कतहुँ हड़बड़ा क' नहि करब। ओहि सँ पूर्व कनेक हमरहुँ संग विमर्श क' लेब, जँ हमरा अपन गुरुदेव बुझैत छी तँ"।

नायक, "जँ अहाँक आदेश होई तँ हम कहिओ विवाह नहि करब"।

मि0 दारुबाला, "नहि.....नहि.....एहेन आदेश हम नहि देब। हम अपना अनुभव केर आधर पर किछु सलाह देब' चाहैत छी"।

नायक, "गुरुदेव! अपने आदेश करु"।

मि0 दारुबाला, "एखन तँ हम बस एतबहि कहब जे अहाँ कोनो लाँ ग्रेजुएट सँ विवाह करब, जे अहाँक पेशा मे सेहो अहाँक मदति करतीह"।

नायक, "मुदा हम तँ चाहैत छी जे हमर घरबाली घर मे रहिक' गृहस्थ्य धर्मक पालन करथि"।

मि0 दारुबाला, "बिल्कुल ठीक सोच अछि अहाँ केर मुदा जँ लाँ ग्रेजुएट रहतीह तँ अहाँक अनुपस्थित मे कोर्ट जा क' कम सँ कम तारीख तँ ल' सकैत छथि। आजुक समय मे इ आवश्यक छैक जे केओ भरोषे मंद लोक भेटए। हमर एकटा मित्र एक मासक छुट्टी ल' क' गाम चल गेलाह आ एकटा परिचित के केश मे पैरवी करबाक भार द' क' गेलाह। जखन ओ आपस अयलाह तँ सब केश हाथ सँ निकलि गेल रहनि। ओ परिचित व्यक्ति सब मोअकिल के हड़का क' अपना पक्ष मे क' लेलनि। तँ हम अहाँके इ आग्रह कयल अछि। ओना अहाँ के जे नीक लागए सैह करु। एकरा लेल हम अहाँके विवश नहि करब"।

नायक, बुझि रहल छल जे घुमा–फिरा क गुरुदेव कामिनिक गप्प तँ नहि क' रहलाह अछि। खैर हम हुँनकहि छी आ हुँनकर जे आदेश हेतैक से कयल जेतैक।

ओ बजलाह, "तखन गुरुदेव हमरा की आज्ञा छैक"?

दारुबाला, "आब तँ अहाँ सब तरहँ समर्थ छी। नीक प्रेक्टिस क' रहल छी। आब हम अहाँ के गुरुकुल सँ मुक्त करैत छी। आब अहाँ अपन डेरा अलग क' सकैत छी। कोनो हड़बड़ी नहि छैक। चैन सँ डेरा ताकू आ अनुकूल भेटि जायत तँ हमरहुँ देखा देब। एकटा गप्प आर....."

नायक, "की...."।

दारुबाला, "कामिनिक माय कँ अहाँ सँ बड़ लगाव भ' गेल छनि। ओ नहि चाहैत छथि जे अहाँ एहिठाम सँ जाई, मुदा हम अहाँक गुरु सेहो छी। हम नहि चाहब जे कोनो गप्प अहाँके बोझ सनक लागए। तँ हम चाहैत छी जे अहाँ आब अपना इच्छा सँ अपना मनोनुकूल जीवन व्यतीत करी। माया जँ किछु पूछथि, तँ कोनो बहन्ना बना लेब। हुँनका एकर भनक नहि लाग

क' चाही जे ई गप्प अहाँके हम कहलहुँ अछि। जँ ओ बुझि जयतीह तँ एहि घर मे हमरहि रहब मुश्किल भ' जायत"।

नायक, "जी! हम ककरहुँ किछु नहि बुझ' देब"।

आब नायक जी डेराक तक्काहेरी कर' लगलाह आ कनेक देरी सँ डेरा आबए लगलाह। माया कँ तँ इ नाटक बुझले छलनि। ओएह तँ एकर सूत्राधर छलीह। ओ तँ कामिनि कँ तरपाब' चाहैत छलीह। नायक जतेक देरी सँ औताह, कामिनि ओतबहि छट–पट करत आ ओतबहि ओ नायक केर लग पहुँचत। एक दिन राति मे भोजन करैत काल माया पूछलथिन्ह, नायक जी, आई–काल्हि डेरा आयबा मे देरी भ' जाइत अछि। की कोनो क्लब मे जाइत छी की ?

नायक, "जी नहि माँ जी, क्लब मे तँ नहि जाइत छी, मुदा सोचि रहल छी जे आब एकटा छोट–छीन अपन डेरा ल' ली"।

दारुबाला, "से की, एहिठाम कोनो दिक्कत होइत अछि की"?

नायक, "जी नहि श्रीमान्! ई तँ स्वर्ग थिकैक। एहिठाम दिक्कत कोना भ' सकैत अछि। माँ–पापा आबै बला छथि, तँ चाहैत छी जे....."।

माया, "जरूर, हमरा लोकनिक व्यवहार सँ कष्ट भेल–हेतनि। की ओकिल सेहेब, अहाँ किछु कहिलयनि अछि की? अहाँक तँ आदत अछि, ककरहुँ किछु कहि देबाक। घरो मे कचहरीयेक माहौल बनौने रहैत छी"।

नायक, "जी नहि, श्रीमान् तँ हमर इष्ट छथि। ओ किछु नहि कहलनि अछि आ जँ किछु कहबो करताह तँ हमरा लेल वरदाने होयत"। नायक केर ई गप्प सुनिक' दारुबाला आ माया गद्–गद् भ' गेलीह मुदा कामिनि भरि मोन खयबो नहि केलक। ओ डेरा खाली करबाक गप्पे सुनि नायक केर कमीक अनुभव कर' लागल। जखन कि नायक एखन घर छोड़बो नहि कयलक अछि। ओ माँ जी लग बाजल, माँ जी नायक जी के घर छोड़बा सँ मना करिऔन। हम हुँनका बिना नहि रहि सकैत छी"।

माया, "बेटी, हम हुँनका कोना मना करिऔन। हुँनकर माँ–पापा आब बला छथि। हुँनका लेल तँ नायक कँ किछु ने किछु इन्तजाम तँ करहिटा

पड़तनि"।

कामिनि, "एतेक पैघ हमर घर अछि। की एहि मे नायक केर माँ–पापा नहि रहि सकैत छथि"?

माया, "अवश्य रहि सकैत छथि। मुदा ओ रहताह की नहि, ई तँ ओएह ने कहि सकैत छथि। भ' सकैत अछि जे ओ हमरा सभक ओहिठाम रहब नहि पसिन्न करैत होथि। तँ ने नायक एतेक परेशान अछि। कतेक राति धरि डेरा ताकैत अछि आ मन लायक भेटि नहि रहल छैक"।

कामिनि, "माँ जी एहेन किछु उपाय करु जे नायक एहिठाम सँ नहि जाथि"।

माया, "से किएक ? नायक सँ प्रेम भ' गेल अछि की"?

कामिनि, "जी"।

माया, "एकर एहसास नायक कँ छनि"?

कामिनि, "कहि नहि सकैत छी"?

माया, "की ओ अहाँ सँ प्रेम करैत छथि"?

कामिनि, "सेहो नहि कहि सकैत छी"।

माया, "तखन कोना भेल। ई तँ एकतरफा प्रेम भेल। जँ नायक सेहो अहाँ सँ प्रेम करैत होयताह, तखन ने। जँ नायक ककरहुँ दोसर सँ प्रेम करैत होयताह, तखन तँ अहाँ के ओ स्थान प्राप्त नहि होयत, जकर अहाँ कल्पना करैत छी। की एहि विषय मे नायक सँ चर्चा केलहुँ अछि"।

कामिनि, "जी नहि, हम कोना करब। हमरा लाज होइत अछि"।

माया, "तखन की हम करबै ? ई तँ अही कँ कर' पड़त। ओ अहाँ सँ प्रेम करैत अछि की नहि, से बूझब तँ आवश्यक अछि। नायक केर संग गप्प–शप्प मे किछु आभास नहि भेटैत अछि की"?

कामिनि, "नहि एहि तरहक ओ कोनो गप्पे नहि करैत छथि। ओ तँ केवल कानूनी दाव–पेंच पर गप्प करैत छथि"।

माया, "एहि मे अहीं के आगू बढ़' पड़त। किएक तँ ओ अहाँक बाबूजीक धोखे कहिओ मुँह नहि खोलत। कहिओ काल अपनहि सँ गाड़ी

ड्राइव क' क' ल' जाऊ आ गप्पक लार–चार करु। देखु ओ की कहैत अछि। एक दिन कामिनिक प्रस्ताव पर कामिनि आ नायक दुनू घुमबाक विचार केलनि। कामिनि जानि–बुझि क ड्राइवर के छुट्टी द' देने छलीह। ओ अपनहि सँ गाड़ी ड्राइव करैत छलीह। ओ नायक जी सँ पूछलनि, नायक जी! एकटा गप्प पूछू ?

नायक, "अवश्य पूछू। एहि मे अनुमति लेबाक की आवश्यकता छैक। एखन अदालत मे तँ छी नहि"।

कामिनि, "आब तँ हम सब अपना पायर पर ठाढ़ भ' गेलहुँ। आब घर बसेबाक सम्बन्ध मे अहाँक की ख्याल अछि"।

नायक, "ओही लेल ने डेरा अलग करबाक विचार क' रहल छी। पहिने व्यवस्थित भ' क' रहब। तखन ने ई सब सोचब"।

कामिनि, "की अहाँ ककरहुँ सँ प्रेम करैत छी"?

नायक, "अवश्य करैत छी आ जे ककरहुँ सँ प्रेम नहि करैत अछि, ओ मनुक्ख नहि अछि। नायक केर शब्द कामिनि के बाण सनक लागल। ओकरा पुनः पूछबाक हिम्मत नहि होइत छलैक मुदा पूछब आवश्यक छलैक। एकरहि लेल तँ ओ खास क घर स बहरायल छल। ओ हिम्मत बटोरि क पुनः पूछलक, ककरा सँ"?

नायक, "ओना तँ हमरा बहुत लोक सँ प्रेम अछि। खास क' अपना गुरुदेव सँ, अपना पेशा सँ, गुरु माँ सँ आर हुँनका बेटी सँ"।कामिनि के संतोष भेलनि। ओ तँ किछु आर बुझैत छलीह"।

कामिनि, "की अहाँ के विवाह करबाक ख्याल सँ ककरहुँ सँ प्रेम अछि"?

नायक, "जी नहि, हम एखन एहि विषय मे किछु नहि सोचलहुँ अछि। मुदा आई अचानक ई गप्प अहाँ हमरा सँ किएक पूछि रहल छी"।

कामिनि, "एहि लेल जे हमरा अहाँ सँ प्रेम भ' गेल अछि"।

नायक, "एहेन जुलूम किएक क' रहल छी। आब तँ हमरा जल्दीये अहाँ ओहिठाम सँ भाग' पड़त"।

कामिनि, "सँ किएक"।

नायक, "एहि लेल जे हम जँ अहाँक संग प्रेम करब तँ इ गुरुदेवक संग विश्वासघात होयत आ लोको सब बाजत जे नायक जाहि थारी मे खेलक, ओकरहि मे छेद क' देलक"।

कामिनि, "तखन की हमर प्रेम अपूर्ण रहत। की हम अहू जोगरक नहि छी। की हमरा एतबहुँ अधिकार नहि अछि"।

नायक, "कामिनि जी, एतेक अधीर जुनि होउ। प्रेम तँ भावनात्मक होइत अछि। ओकरा कोनो सम्बन्ध मे किएक बान्हैत छी। प्रेमक व्यापकता के विवाहक तराजू पर किएक जोखैत छी। की हम सब जाहि तरहँ एखन रहि रहल छी, ओ प्रेम नहि अछि"?

कामिनि, "प्रेम तँ ओहो अछि मुदा दुनू मे अन्तर छैक"।

नायक, "की अंतर छैक"?

कामिनि, "हम अहाँ के कोना बुझाबू। हमरा किछु बुझबा मे नहि आबि रहल अछि। स्पष्ट रूपे कहबा मे संकोच भ' रहल अछि। हम अहाँक संग विवाह कर चाहैत छी"।

नायक, "विवाह तँ हमर माय–बाप करौताह। ई तँ हुँनका पर निर्भर करैत अछि जे ओ ककरा सँ करौताह। ई अधिकार हमरा गुरुदेव कँ सेहो छनि। जँ गुरुदेव चाहता तँ भ' सकैत अछि"।

कामिनि, "जँ गुरुदेव नहि चाहथि, तखन....

नायक, "तखन तँ नहि भ' सकैत अछि"।

कामिनि, "की हमरा सबके एतबहुँ अधिकार नहि अछि जे अपन नीक–बेजाय सोचि सकी"।

नायक, "अवश्य अछि, हमरा सबके ओ अधिकार अछि मुदा की ओकर अधिकार शून्य भ' जेतैक जे पोसि–पालि क' एतेक टा बनौने अछि। की अहीक लेल जे पैघ भ' क' जे मन हो से करू"।

कामिनि सँ नायक सेहो प्रेम करैत छल। एहि प्रेमक एहसास तँ ओकरा ओही दिन भ गेलैक। जाहि दिन कामिनि ओकरा घाव पर पट्टी

करैत छलीह। ओ स्पर्श ओकरा सुखद केर संग सम्पूर्ण देह के झकझोरि देने छलैक। ओ बेकाबू भ गेल छल। जँ कामिनि गुरुदेवक बेटी नहि रहितथि, तँ नायक ओही दिन सब आरि–धूर के तोड़ि देने रहैत। ओ गुरुदेवक मर्यादाक खातिर कोनो तरहँ अपना के संयमित क' सकबा मे सफल भेल। ओकरा गुरुदेवक गप्प–शप्प सँ इहो आभास भ' गेलैक जे ओकर जीवन संगी कामिनिये हेतीह। सम्भवतः गुरुदेव गुरु दक्षिणा मे ओएह चाहैत छथि, तँ एहि मे नुकसाने की।

१०

आई कामिनिक जन्मदिन थिकैक। ओहि अवसर पर मि० दारुबालाक ओहिठाम करीब दू सय गोटे आमंत्रित छथि। एक सँ एक ओकील आ औफीसर आमंत्रित छथि। रंग–बिरंगक पकवान तैयार भ' रहल अछि। नायक के तँ एक सेकेन्डक फुर्सति नहि अछि। ओ सब व्यवस्था मे लागल अछि। संध्याकाल सब आमंत्रित पाहुन आयब शुरु क' देलनि आ मि० दारुबाला स्वयं ठाढ़ भ' सभक स्वागत क' रहलाह अछि। सम्भवतः मि० दारुबाला कामिनिक जन्मदिन पर एहेन उपहार देव' चाहैत छलाह, जकर कल्पना कामिनि के सेहो नहि छलैक। ओ ओकरा अचंम्भित कर' चाहैत छलाह। तँ आई सबसँ बेशी माया खुश छलीह। ई हुँनकहि विजय भेल। सब अतिथि आबि गेलाह। आब कार्यक्रम शुरु कयल जायत। अचानक मि० दारुबालाक छाती मे दर्द उठल। ओ छाती पकड़ि ओहीठाम सोफा पर बैसि गेलाह। तीन–तीन टा डाँक्टर बजाओल गेल मुदा दारुबालाक स्वास्थ्य मे कोनो सुधार नहि भेल। ओ अतिथि सबकँ भोजन करबाक

इशारा केलनि। मुदा एहेन स्थिति मे भोजन के करैत। किछु लोक भोजन केलक, किछु नहि केलक। वेशी लोक तँ मि0 दारुबाला के घेरिक बैसल छलाह। माया, कामिनि सेहो ओहीठाम छलीह आ नायक तँ डाक्टरक पाछाँ पागल भ' गेल छल। दारुबाला के अपना एहसास भ' गेलनि जे ओ नहि बचताह। ओ नायक आ कामिनि कँ अपना लग मे बजौलनि। दुनू के आँखि सँ दहो–बहो नोर बहि रहल छल। दारुबाला दुनू के सांन्तवना दैत बजलाह, "अहाँ सब किएक कनैत छी। इ तँ विधिक विधान अछि। एहिठाम स' सब केओ एक दिन जायत। जे एहि रहस्य के नहि बुझैत अछि वा बुझिओ क' अनठाबैत अछि, ओ परम मूर्ख अछि। हम अपना जीवन मे बहुत किछु कयलहुँ आ बहुत किछु पाओलहुँ। मुदा एकटा काज नहि क' सकलहुँ। तँ अहाँ दुनू सँ कहैत छी जे ओहि कार्य मे माया के मदति करबनि। दारुबाला कामिनिक हाथ नायक केर हाथ मे दैत बजलाह, "नायक अहाँ के हम जहिया सँ परिचय भेल, बेटा जकां मानल अछि। अहूँ हमरा गुरुवत मानैत छी। अहाँक ओहिठाम हमर गुरुदक्षिणा बाँकी अछि। बिना गुरु दक्षिणा प्रदान कयने ककरहुँ मुक्ति नहि होइत छैक। तँ हम अहाँके एकटा भार दैत छी। कामिनिक रक्षाक भार अहाँक उपर अछि। हिनका भार्याक रूप मे स्वीकार क गुरुदक्षिणा सँ मुक्त होउ"।

नायक, "(कनैत–कनैत)" गुरुदेव! अपनेक सब आदेश कँ हम माथ चढ़ाक राखब। हम ओकर पालन अवश्य करब। हम जे किछु छी से अहीक चरणक कृपा अछि। हम एकरा कोना बिसरि सकैत छी। अपने तँ हमरा रोड पर सँ उठाक' महल मे बैसा देलहुँ। एकटा टलहा सिक्का के अहाँ रुपैया बना क' बाजार मे घुमा देलहुँ"।

दारुबाला, "हमर जीवन आब थोड़ काल अछि। अहाँ आ कामिनि हमर जे अपूर्ण कार्य अछि, तकरा मिलिक पूर्ण करब"।

नायक, "अहाँके किछु नहि होयत श्रीमान्। अहाँ एना भसिआयल जकाँ गप्प किएक करैत छी"।

दारुबाला, "हम चाहैत छलहुँ जे अपनहि हाथे कन्यादान करितहुँ। एक हाथे बेटीक डोली विदा करितहुँ आ दोसर हाथे पुतौहक डोली के स्वागत करितहुँ, से नहि भेल। तँ इ भार हम अहाँ पर द' रहल छी। कन्यादान माया करतीह, तैखन हमरा चैन भेटत"।

नायक, "अपने किएक चिंता करैत छी। सब ठीक भ' जेतैक। अहाँके किछु नहि होयत"।

दारुबाला, "हमरा आब कोनो चिंता नहि अछि। हम अपन चिंता अहाँके द' क' चिंता मुक्त भ' गेलहुँ। आब हम चैन सँ अपन प्राण त्यागि सकैत छी। माया के हमर कमी नहि महसूस होमए देबनि। ओकर बाद मि0 दारुबालाक वाक् बन्न भ' गेलनि ओ केवल आँखि सँ टक–टक सबके देखि रहल छलाह। अचानक एक जोरक हिचकी सँ मि0 दारुबाला सदाक लेल सूति रहलाह। माया आ कामिनि तँ कानैत–कानैत अपस्यांत भ' गेलीह। नायक के सेहो बड़ पैघ अवघात भेलनि। नायक कँ जतेक सहायता मि0 दारुबाला कयने छलाह, आई–काल्हि तँ ककरहुँ केओ नहि करैत अछि। नायक एहि कष्ट के भीतरे–भीतर महसूस करैत छलाह आ उपर सँ माया आ कामिनि के सांत्वना दैत छलाह, हुँनका सब के ढाढस बन्हाबैत छलाह। आई नायक कँ एतेक उँचाई देनिहार मात्र मि0 दारुबाला छलाह। नायक जखन कोर्ट मे ठाढ़ होइत छलाह तँ विपक्षी वकील के पसेना छुट' लागैत छलैक। मि0 दारुबाला नायक केर लेल भगवान छलाह। ओ नित्य स्नान क' हुँनका फोटो पर फूलक माला द' क' पूजा करैत छलाह आ से देखि माया आ कामिनि सेहो द्रवित भ' जाइत छलीह। मि0 दारुबाला कँ अपार धन छलनि। हुँनका मरणोपरान्त हुँनकर सर–सम्बन्धीक रूप मे कतेको लोक अयलाह। सब मि0 दारुबाला के मुखाग्नि करबाक लेल अपन–अपन दावा पेश कर' लगलाह। माया तँ चाहैत छलीह जे सब काज–क्रिया मि0 नायक करथि। किएक तँ दारुबाला बाजैत छलाह जे मि0 नायक हमर बेटा छथि। भलेही हिनकर जन्म हमरा खानदान मे नहि भेल मुदा भगवान तँ पठा देलनि अहीक लेल आ हम तँ हुँनका बेटे जकां बुझलहुँ। हमर सब

किछु ओएह करताह। बेटा नहि भेल तँ की भेलैक। बेटाक अर्थ भेल जे बेटा जकां रहए। माधव बाबू के चारिटा बेटा छलनि। चारू कँ पढ़ाब–लिखाब मे माधव बाबू दुनू प्राणी कोनो कसरि नहि रखलनि। बेटा सब सेहो नीक पद पर काज करैत छथिन। मुदा माधव बाबूक खोज–पुछारि केओ नहि करैत छनि। बेचारे के चारि वर्ष भ' गेलनि विधुर भेला। टाका–पाइक कोनो अभाव नहि छनि। अपनहुँ पेंशन भेटैत छनि आ खेतो–पथारक उपजा बारी आबैत छनि। मुदा सेवा केनिहार केओ नहि छनि। एकटा नौकरानी छनि जे घर–द्वारि साफ–सफाई करैत भोजन बना क' चल जाइत छनि। सात कोठलीक घर मे एकसरि पड़ल रहैत छथि। केओ गप्पो केनिहार नहि भेटैत छनि आ पोता–पोतीक दुलार करबाक लेल बेलल्ला रहैत छथि। एहेन बेटा कोन काजक। एहि सँ तँ निपुत्रे रही से नीक। तँ मायाक झुकाव नायक दिश छलनि मुदा हुँनकर सम्बन्धी सब एकदम अड़ल छलनि। ओ सब नायक के बाहरी लोक घोषित क' देलनि आ कामिनि तँ मात्र तीने दिनक' अधिकारी छथि। धर्म शास्त्रक अनुसार काज नहि कयने दारुबाला कँ मुक्ति नहि भेटतनि। ओ सब माया के एकसरि बुझि क' दबाब बना रहल छलाह आ माया चुप–चाप सुनि रहल छलीह। ककरहु गप्पक किछु उत्तर नहि दैत छलीह। जखन माया के बर्दास्त नहि भेलनि, तँ बजलीह, "अहाँ सब अपना कँ हमर सम्बन्धी कहि रहल छी मुदा हम तँ अहाँ मे सँ ककरहुँ नहि चिन्हैत छी। यावत मि0 दारुबाला जिबैत छलाह। अहाँ सब तँ कहिओ हमरा ओहिठाम नहि अयलहुँ। आई हुँनका मरणोपरान्त अहाँ सब कत' स टपकि पड़लहुँ। मुदा ओ सब अपन दावा छोड़िये नहि रहल छल। तखन नायक अपना चेम्बर मे गेलाह आ कामिनि कँ टेलीपफोन केलनि, "कामिनि"?

कामिनि, "जी"।

नायक, "एहेन करु...माँ जी कँ कहिअनु जे ओ स्वयं बाबूजीक मुखाग्नि करबाक लेल तैयार होथि। एहि झंझट मे कतेक काल धरि लाश के घर मे राखब। लाश कँ वेशी काल रखला सँ ओहि सँ दुर्गंध आबैत छैक। अहाँ

बाबू जी क श्पेशल ड्रावर खोलि क' देखू जे ओहि मे कोनो दिशा–निर्देश अछि वा नहि"?

कामिनि, "माँ जी एहेन करू, बाबूजीक मुखाग्नि करबाक लेल अहाँ स्वयं तैयार होउ"।

माया, "से कोना हेतैक"?

कामिनि, "से किएक नहि हेतैक। ओ अहाँक पति छलाह। आन जँ किछु करत, कोना करत ताहि सँ नीक जे अहाँ अपनहि सब किछु करु। हम ने तीन दिनक अधिकारी छी मुदा अहाँ तँ दसो दिनक अधिकारी छी"। (आँखिक इशारा सेहो कयलनि जे ई नायक केर योजना छनि)।

माया बजलीह, "अहाँ सब चलबाक लेल तैयार होऊ। घरबाली होयबाक नाते पहिल अधिकार हमर अछि। हम अपनहि हाथे हुँनकर सब क्रिया–कर्म करब"।

माया कँ एतेक बाजैत सब सम्बन्धी धीरे–धीरे ओहिठाम सँ ससरि गेल। मात्र मि0 दारुबालाक किछु मित्र आ परोषी ओहिठाम बचि गेलाह। कामिनि मि0 दारुबालाक स्पेशल ड्रावर खोललनि। इ ड्रावर मि0 दारुबाला के छोड़ि प्रथम बेर केओ खोलने छल। एहि मे किछु गुप्त कागजात राखल छलैक, से इशारा मि0 दारुबाला स्वयं नायक के केने छलाह। ओही आधार पर नायक कामिनि के बाजल छलाह। कामिनि ओहि ड्रावर सँ एकटा हरियर रंगक फाइल बाहर केलनि। ओ उपर सँ सील कयल छलैक। सम्भवतः ओएह मि0 दारुबालाक वसीयत छलनि। ओहि पर निर्देश अंकित छलैक जे एकर सील माया खोलतीह आ हमर मित्र पाँच गोटे के समक्ष ओकरा पढ़ताह। मित्रक नाम श्रीधरन छलनि आ ओहो मि0 दारुबालाक समकक्ष वकील छलाह। ओ फाइल ल' क' कामिनि माया केर हाथ मे देलनि।

माया बजलीह, "ई की थीक"?

कामिनि, "सम्भवतः बाबूजीक वसीयत"।

माया, "एकर एखन कोन प्रयोजन छैक? एखन तँ जे सामने अछि से ने

आवश्यक अछि"?

कामिनि, "भ' सकैत अछि जे एहि मे ओकरहुँ दिशा निर्देश कयल गेल हो"।

माया, "एकरा पढ़िक' देखिऔक"।

कामिनि, "पहिने अहाँ एकरा खोलि दिऔक। अहाँक छोड़ि दोसर नहि खोलि सकैत अछि। अहाँ एकरा खोलि दिऔक आ श्रीधरन काका पढ़िक सुना देताह"।

माया ओकरा खोलि क' श्रीधरन जी क' हाथ मे द' देलनि।

श्रीधरन जी ओकरा पढ़ब शुरु केलनि; यथा –

सगा–सम्बन्धीक नाम पर हमरा ककरहुँ सँ कोनो लगाब नहि अछि। हमर बचपन बहुँत कष्ट मे बीतल अछि। तँ हम ककरहुँ कष्ट मे देखैत छियैक तँ हमरा नहि रहल जाइत अछि। हम ओहि व्यक्तिक मदति क' दैत छियैक। हमरा जखन ट्रेन मे पहिल वेर नायक सँ भेट भेल तँ हम ओकरा व्यवहार सँ अति प्रसन्न भेलहुँ आ महसूस केलहुँ जे एहि व्यक्ति के हमरा मदति केर आवश्यकता छैक। तँ हम बरजोरी ओकरा मात्र राति भरिक लेल अपना डेरा पर ल' गेलहुँ। ओकर स्वाभिमान देखू जे ओ किन्नहुँ हमरा डेरा पर जाइक लेल तैयार नहि होइत छल। हमरा ओकर स्वाभिमान बड़ नीक लागल आ प्रभावित सेहो कयलक। कारण हम अपनहुँ तँ अही स्वभावक छलहुँ आ एकरहि कारण हम अपन सब सम्बन्धी कँ छोड़ि देलहुँ। हमर माय आ बाबूजी बचपने मे स्वर्गीय भ' गेलाह। ओहि समय मे हमर वयस मात्र सात वर्षक छल। हमर पिती...पितिआइन वा अन्य सब हमरा सँ बेगारी कराबैत छल आ भरिपेट खयबाक लेल सेहो नहि दैत छल। एक राति हम चुपचाप भागि क' दिल्ली आबि गेलहुँ आ एक सज्जन केर ओहिठाम रहिक' हुँनकर घरक काज–धंधा कर' लगलहुँ। ओ हमरा खाली समय मे पढ़ाव–लिखाब लगलाह आ किछु दिनक बाद हमर नाम एकटा स्कूल मे सेहो लिखा देलनि। हम हुँनकहि संरक्षण मे एम0ए0एल0एल0बी0 केलहुँ मुदा हुँनकर सेवा पूर्वहि जकाँ करैत रहलहुँ।

ओ बहुत मना करथि मुदा हम नहि मानलहुँ। ओ व्यक्ति दिल्ली हाईकोर्ट मे जज छलाह आ तँ हमरा प्रेक्टिस लेल सुप्रीम कोर्ट पठा देलनि। ओ हमरा अही शर्त्त पर पढ़ौलनि–लिखौलनि जे हमर नाम गुप्त राखल जाय। एक तरहँ ओ हमरा शपथ देने छलाह। तँ हम हुँनकर नाम नहि कहि सकैत छी। बुझू जे स्वयं भगवान शिव हमर मदति कयने छलाह। नायक हमरा जीवन मे अयलाह तँ अनायास मुदा हमरा बहुँत किछु देलनि। हमरा प्रतिष्ठाक रक्षा केलनि हमरा पुत्र सुख देलनि आ सेहो एतेक जतेक सम्भवतः जँ रहैत तँ अपनहुँ पुत्र नहि दैत। हम हुँनका लेल जे किछु कयलहुँ, ओ हमर कर्त्तव्य छल आ से कयला सँ हम पितृ ऋण सँ उऋण भ' गेलहुँ। आब जँ नायक के कोनो आपत्ति नहि होनि तँ हमरा दुनू प्राणीक सब क्रिया–कर्म अन्तिम संस्कार सँ श्राद्ध घरि मि0 नायक करथि। ओ जँ नहि तैयार होथि, तँ विकल्प ताकल जाय मुदा हमर एकहुँटा सम्बन्धीक नाम पर केओ नहि आबए वा ककरहुँ नहि बजाओल जाय। ओना हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे नायक हमर प्रार्थना नहि टारताह। मि0 नायक आ कामिनि शीघ्र प्रणय सूत्र मे बन्हा जाथि। कन्यादान माया अपनहि हाथ सँ करथि। हमर जतेक सम्पत्ति अछि, ओकर उपयोग करबाक अधिकार मि0 नायक आ कामिनि के हेतनि मुदा ओकरा बेचबाक अधिकार ककरहुँ नहि होयत। हमर अन्तिम संस्कार अपनहि हाता मे कयल जायबाक चाही, जाहि सँ स्मृति चिन्हक रूप मे सब दिन रहि सकी। माया यावत् जिवैत रहती, चाँदनी चौक बाजारक किराया प्राप्त करतीह। हुँनका बाद ओकर उपयोग नायक आ कामिनि क' सकैत छथि। करोलबाग बला घरक दुकान सँ जे किराया भेटत, ओकर उपयोग गरीब आ मेधावी छात्र क' पढ़ाई पर कयल जयबाक चाही।

"मि0 दारुबाला"

मि0 दारुबालाक सब क्रिया–कर्म हुँनका वसीयत केर मुताबिक भेल। एक वर्षक बाद हुँनकहि समाधि स्थल पर पंडित कँ बजाक बिना

बाजा–गाजाक नायक आ कामिनिक विवाह भेल। करीब दू सय गोटे ओहि मे आयल छलाह। नायक केर माँ–बाबूजी आ एकटा छोटकी बहिन सेहो आयल छलीह। ओ सब कामिनिकेँ देखि अति प्रसन्न भेलीह। हुँनका सबकेँ तँ इ सपना बुझाइत छलनि। नायक एतेक पैघ घरक जमाय कोना भ' गेल। हुँनका सबके तँ इहो पता नहि छलनि जे नायक एतेक पैघ ओकील। आ जखन माया सब गप्प हुँनका सविस्तार सुनौलनि तँ नायक अछि केर पिता भवानी शंकर के अपना पुत्र पर बहुत गर्व भेलनि। मायाक तँ इच्छा छलनि जे आर किछु लोक के बजाओल जाइत आ कनेक धूम–धाम सँ विवाह होइत मुदा नायक एकर विरोध कयलनि, आ कामिनि सेहो नायक केर समर्थन केलनि। नायक बजलाह, एहि विवाह मे हमरा कोनो खुशी नहि अछि। हम तँ मात्र औपचारिकताक निर्वाह क' रहल छी"।

माया, "तँ की अहाँ एहि विवाह सँ खुश नहि छी"?

नायक, "एहेन गप्प नहि छैक। हमरा खुशी तखन होइत जखन आई गुरुदेव स्वयं हमरा आशीर्वाद दितथि। आई जखन हमरा माँथ पर हमरा भगवानक हाथ नहि अछि, तँ हमरा खुशी कोना होयत। हम तँ केवल हुँनका इच्छाक पूर्ति क' रहल छी"।

माया, "की अहाँ संग जबरदस्ती कयल गेल अछि"?

नायक, "हँ, माँजी, हमरा संगे जबरदस्ती कयल गेल अछि। हम सपनहुँ मे नहि सोचैत छलहुँ, जे कामिनि हमर जीवन संगी हेतीह। हमर ओकाति की छल। हम सब आई पाँच वर्ष सँ एके छत के निचाँ रहि रहल छलहुँ मुदा ई भाव हमरा मन मे कहिओ नहि आयल। हम तँ अपना के कामिनिक बौडी गार्ड बुझैत छलहुँ आ सैह बुझि अपन कर्तव्यक निर्वाह करैत छलहुँ। एक बेर कामिनि हमरा लग विवाहक प्रस्ताव रखने छलीह। हम स्पष्ट कहने छलियनि, जे जँ हमरा गुरुदेवक कृपा होयत, तखनहि भ' सकैत अछि, अन्यथा नहि। पता नहि एहि गप्प सँ कामिनि कँ दुःख सेहो भेल हेतनि मुदा हम ओकर कनेको परवाहि नहि कयलहुँ। ओ तँ जखन गुरुदेव अन्तिम क्षण मे हमरा दुनूक हाथ पकड़ा देलनि, तखन हम बुझलहुँ

जे कामिनिक निर्माण ब्रह्मा हमरहि लेल कयने छलाह। हम आ कामिनि जीवन–संगी बनि सकैत छी। ओहि सँ पूर्व तँ इ गप्प हमरा लेल सपना सनक छल आ गुरु–पुत्रीक विषय मे किछु सोचब सेहो पाप छल"।

एतेक सुनौलाक बाद नायक जी विदुरजी सँ बजलाह, "आब कहूँ गुरुदेव! एतेक पैघ आशीर्वाद प्राप्त भेलाक बाद हम अपने के कोना बिसरि सकैत छी। आई नायक जे किछु छथि ओ गुरुदेवक बदौलति छथि। तँ अपने जखन आवश्यकता महसूस करब (हाथ मे कार्ड दैत) केवल फोन घुमा देव। हम तँ चाहब जे अपने एक बेर दिल्ली अबिऔक। घुमिओ–फिरिओ लेब आ हमरा कुटी के सेहो पवित्र क' देव"।

विदुर, "हँ....हँ..... अवश्य आयब, कनेक एहि सब सँ तँ फुर्सति होमए दीअ'"।

नायक, "ई सब कोनो केस थिकैक। ई सब तँ हम ओतहि सँ चुटकी बजाबैत खतम क' देव। हम तँ केवल अहाँक नाम सुनि क' आ दर्शनक लेल चल अयलहुँ। एतेक छोट–छीन केस मे हम अपने कतहुँ नहि जाइत छी। जँ आवश्यक बुझना जाइत अछि तँ जूनियर के पठा दैत छियैक"।

विदुर, "ठीक छै, कहुँना एकरा सरिया दिऔक"।

नायक, "एकरा तँ सरिआयले बुझू। हमरा देखितहि ओ सब थरथरा गेल। सभक सिट्टी–पिट्टी बन्न भ' गेलैक। से तँ अपने के पता लगले होयत। ई केस एकदम झूठ पर आधारित छैक। जैखन प्राथमिकी नहि भेलैक, हमरा तँ तखनहि संदेह भेल। हम अपना दिश सँ आग्रह क देलियैक अछि, प्राथमिकी करबाक लेल आ दस्तखत जाँच करेबाक लेल, मुदा हम निश्चित रूपे कहि सकैत छी, जे इ सब किछु नहि करत। ई सब मात्र प्रेमजी सँ किछु ठकबाक लेल साजिश रचने छल। जँ हम नहि आबितहुँ तँ प्रेम फेर मे पड़ि सकैत छलाह, मुदा हमरा देखितहि ओकरा सबकेँ अपन ओकाति बुझबा मे आबि गेलैक। ओ सब आब प्रेमक किछु नहि बिगारि सकैत अछि। हँ....दस....बीस बेर बोकारो बजा क' परेशान क' सकैत अछि, मुदा ओकरहुँ संम्भावना कमे बुझू"।

नायक कँ ट्रेनक समय भ' गेल छलनि। ओ विदा भ' गेलाह।

ओकर बाद विदुर आ जानकी बाबू प्रेमक डेरा पर गेलाह। सब गोटे एक दोसराक हाल–चाल बुझलनि। प्रेम तँ विदुर सँ एना ने लेपटा गेलाह, जेना राम–भरत सँ लेपटायल रहथि।

प्रेम बजलाह, "कहुँ तँ अहाँ कत' चल गेलहुँ। कतेक दिनक बाद भेटलहुँ अछि"।

विदुर, "अहूँ तँ गाम छोड़िये देलहुँ। हम जखन अयलहुँ तँ पता लागल। मन मे बड़ दुःख भेल। कत' छी आइ–काल्हि"?

प्रेम, "एखन गुप्त वास क' रहल छी। बैंक हमरा पर केस क' देने अछि। जँ बुझि जायत तँ पकड़ि लेत"।

विदुर, "ओ सब बात खतम भ' गेलैक। हम गाम अयलहुँ तँ हमरा पता लागल। सब सार के फज्जहति कयल आ सब सँ टाका जमा करौलहुँ जे बाँकी छैक, सेहो भ' जेतैक। आब अहाँ गाम चल आऊ"।

प्रेम, "ठीक छै, सोचैत छी। विदुर भाई ओ ओकिल जे हमरा दिश सँ कयने छलहुँ, तकर फीस कतेक लागल"?

विदुर, "से किएक"?

प्रेम, "हम अहाँ के द' दितहुँ। एखन तँ अहाँ अपनहि दिश सँ ने देने हेबनि"।

विदुर, "से की, हमर किछु फर्ज नहि बनैत अछि की ? हमरा एतबहुँ अधिकार नहि अछि"।

प्रेम, "सबटा अधिकार तँ अहींक अछि। अहीं सभक बलबूता पर तँ हम टिकल छी। बरना एतेक पैघ धक्का लगलाक बाद ठाढ़ नहि रहितहुँ। अहाँ सब हमर बड़ उपकार कयल अछि। हम तँ ओहिना एहि बोझ सँ दबल जाइत छी"।

विदुर, "ओ ओकील साहेब सुप्रीम कोर्ट सँ आयल छलाह। हुँनकर फीस कम सँ कम पचास हजार होयबाक चाही। मुदा ओ हमर शिष्य छथि, तँ आबि गेलाह। हम किछु हुँनका लिफाफ मे देमए चाहलहुँ मुदा ओ स्वीकार नहि केलनि। की औ जानकी बाबू, ई तँ अहाँक सोझांक गप्प थिकैक ने"?

जानकी बाबू, "जी हँ, से तँ हम देखबे कयलहुँ अछि आ इहो आश्वासन देलनि जे एहि केस मे हमरा दोबारा नहि आबए पड़त। जँ आबए पड़त तँ हम अपना खर्च सँ आयब"।

प्रेम, "आब' नहि पड़त, तकर की मतलब। एखन तँ केस शुरुवे भेल अछि"।

विदुर, "दिल्लीक ओकील एतेक जे फीस लैत छैक, जँ ओ दुबारा वा तिबारा आओत तँ मोवकिल के भट्ठीये बैसि जायत। ओ सब तँ एके बेर मे सब काज करबाक' चल जाइत अछि। दोसर गप्प अहाँ तँ प्रभार द' देने छियैक"?

प्रेम, "जी हम तँ रिटायर होयबा सँ तीन दिन पूर्वहि प्रभार मि0 खन्ना कँ द' देने छियनि"।

विदुर, "मुदा ओ कहैत छथि जे इ दस्तखत हमर नहि छी। जखन जाँच हेतैक तँ के पकड़ायत? तँ एहि मे ने कोनो जाँच होयत आ ने प्राथमिकी। हँ किछु दिन अहाँके तारीख पर आब' पड़त। हम ओकरहुँ लेल इन्तजाम क' देल अछि जे अहाँ के तारीख पर नहि आब' पड़त। सब तारीख मे ओकील सेहेब जानकी बाबूक देख–रेख मे हाजरी द' देताह। किछु दिनक बाद केस स्वतः खतम भ' जायत। ई गप्प हमरा सँ नायक जी बजलाह अछि"।

प्रेम, "कोन नायक जी"?

विदुर, "अरे ओएह ओकील जे दिल्ली सँ आयल छलाह"।

प्रेम, "आयल छलाह, मतलब ओ चलो गेलाह की"?

विदुर, "हँ हँ ओ तँ चल गेलाह। ओ सब वेशी काल कतहुँ ठहरताह तँ आर काज बेथूत नहि हेतनि"?

प्रेम, "कम सँ कम हमरहुँ तँ हुँनका सँ दरशन करबितहुँ"।

विदुर, "देखल जेतैक, कहिओ ने कहिओ दरशन भ' जायत। प्रेम आ विदुर के गप्प सुनि विजय के बड़ आश्चर्य भ' रहल छलैक। ओकरा ई बुझबा मे नहि आबि रहल छलैक जे विदुर कका आई एतेक मेहरबान कोना भेल

छथि। काल्हि तँ ओ बाबूजी के रानी प्रकरण मे फँसेबाक पुरकस प्रयास केलनि आ आई बचाब' मे लागल छथि। तखन एकटा बात अवश्य छैक, जे विदुर कका दिल्ली सँ ओकील नहि बजबितथि, तँ हमरा सभक उपर विपत्तिक पहाड़ अवश्य टुटि पड़ैत। हम सब केस हारि जइतहुँ केस तँ हारिये गेल छलहुँ जँ ओ दस मिनट केर बाद आबितथि, मुदा ओ आबितहि तेहेन मोड़ द' देलनि, जे सब केओ हक्का–बक्का रहि गेल। सभक' मनसूबा धरले रहि गेलैक। खैर जे होअ, मुदा एहि मे विदुर ककाक भूमिका प्रसंशनीय अछि। तखन रानी प्रकरण मे एना किएक। इएह जानकीबाबू ओहि पृष्ट भूमि मे छलाह। जे विदुर ककाक परम हितैषी छथि। आ कि ओ हमर भ्रम छल। नहि....नहि भ्रम नहि भ' सकैत अछि मुदा एहि रहस्यक गाँठ कोना फूजत। चलु विदुरे कका सँ पूछैत छियनि।

विजय बजलाह, "कका जी! एकटा गप्प पूछू"।

विदुर, "बौआ! एकटा किएक जैटा मन हो से पूछू। हम इहो बुझैत छी, जे अहाँ की पूछब"?

विजय, "हम की पूछब, से कोना जनैत छी? कहूँ तँ हम की पूछब"?

विदुर, "बौआ! लोक बाहर रहि क' कमाइत अछि आ विदुर एम्हर सँ ओम्हर छिछियाइत छथि, एकर किछु तँ मतलब हेतैक। अहाँ हमरा सँ रानीक प्रसंग मे पूछ' चाहैत छी"।

विजय, "किछु दोसरो गप्प तँ भ' सकैत अछि"।

विदुर, "अवश्य भ' सकैत अछि, मुदा एखन अहाँक मोन मे दोसर प्रसंग नहि अछि"?

विजय, "से कोना कहि सकैत छी"।

विदुर, "एहिलेल जे एखन हमरा संग मे जानकी बाबू छथि, आ रानी प्रकरण मे जानकी बाबूक नाम आयल छलनि। जानकी बाबू हमर अभिन्न मित्र मे सँ छथि। हम दुनू गोटे जँ आवश्यकता हेतैक तँ अपना कनियाँ के छोड़ि सकैत छी मुदा एक दोसर मित्र के नहि छोड़ब। एखनहुँ नायक जी सँ इएह गप्प कयने छलाह। हमरा तँ ध्यानो नहि छल, जे ओ कहिआ

हमर शिष्य बनल आ ओ एतेक पैघ ओकील भ' गेल, ई तँ ककरहुँ नहि बुझल छलैक। जानकी बाबू कँ एतेक बुझल छलनि जे ओ दिल्ली मे ओकालत करैत अछि। किएक तँ ओकरहुँ घर अहीठाम छैक। तखन तँ जे भेलेक से नीके भेलैक"।

विजय, "जी अहाँ ठीक बुझलहुँ। हमरा मन मे कतेक काल सँ इ प्रश्न घुरिया रहल छल। हम तँ एहि दुविधा मे छलहुँ जे पूछियनि की नहि पूछियनि। कका जी की सोचताह"।

विदुर, "देखू मन मे जखन कोनो प्रश्न उत्पन्न हो, तँ ओकर समाधान अवश्य होयबाक चाही। जतेक काल धरि ओकर समाधान नहि होइत अछि, ओ कैंसर घाव जकां बढ़ैत अछि। ओहि मे तरह–तरह केर विकार भरैत अछि आ जखन ओ फूटैत अछि तँ भयंकर बिस्फोट होइत अछि। समाधान भ' गेला सँ ओ ओतहि खतम भ' जाइत अछि। ककरहुँ मोन के कोनो विकार नहि रहि जाइत अछि। तँ समय पर समाधान होयबाक चाही। बुद्धिमान के एहि मे संकोच नहि करबाक चाही"।

विजय, "रानीक माध्यम सँ अहाँ छः मास पूर्व बाबूजी के फँसेबा मे कोनहुँ कसरि बाँकी नहि रखलहुँ आर आई एहि घोटाला सँ बचेबाक लेल अहाँ अपना बूता पर दिल्ली सुप्रीम कोर्ट सँ एतेक पैघ ओकील आनल, जकर एक दिनक फीस पचास हजार टाका छैक। एकर की प्रयोजन ? बाबूजी जतेक फँसथि अहाँ के ओतेक नीक लागक' चाही, खुशी होयबाक चाही मुदा अहाँ से नहि केलहुँ। इ दू मुँहाधार किएक"?

विदुर, "(शांत चित्त सँ) एतबहि, की आर किछु"?

विजय, "बस, एतबहि"।

विदुर, "विजय, एकटा गप्प कहुँ। रानी प्रकरण मे अहाँ हमरा कत' पाओल अछि। अहाँ ई कोन आधर पर कहि सकैत छी, जे ओहि मे हमर हाथ अछि"।

विजय, "जानकी बाबू तँ प्रत्यक्ष रूपँ छलाह। हमरा सबकँ जानकी बाबू सँ कोनो विवाद नहि छल आ अहाँ के जानकी बाबू सँ नीक सम्पर्क अछि।

एहि आधर पर हम कहलहुँ अछि। एकरा अन्यथा नहि लेब''।

विदुर, ''जँ अन्यथा लितहुँ तँ अहाँ सँ बहस किएक करितहुँ। बहस सँ एक तरहक मंथन होइत छैक। मंथन सँ विष आ अमृत दुनू बहराइत छैक। ओहि सँ मनक विकार दूर भ' जाइत छैक। एहि जीवन मे सब सँ पैघ बिमारी छैक 'शंका'। ओ शंका बहस सँ दूर भ' जाइत छैक। बहस सँ ओएह भागैत अछि, जकरा मन मे कोनो खोट रहैत छैक। लोक कँ अपन निंदा सुनवाक चाही। जाहि सँ ओ दुर्गुण सँ बाँचि सकथि। अहूँ के जँ एकर समाधान नहि क' देव तँ ई घाव बनले रहि जायत आ ई घाव एतेक खराब होइत छैक जे पुस्त–दर–पुस्त चलैत छैक''।

प्रेम, ''छोड़ु ने विदुर भाई जी, अहूँ धिया–पूताक गप्प मे उलझि गेलहुँ। ई सब अहिना बाजैत अछि''।

विदुर, ''नहि...नहि, ककरहुँ उत्सुकता के दबेबाक नहि चाही। ओहि सँ बच्चा कुंठित भ' जाइत छैक। तहिना हिनका जे किछु शंका वा जिज्ञासा छनि, ओकर समाधान होयबाक चाही। भ' सकैत अछि, हिनका केओ कहने हेतनि जे विदुर एहेन छथि तँ विदुर ओहेन छथि। हुँनका सँ बॉचिक' रहब। एहेन भ' सकैत छैक''।

विजय, ''नहि...नहि हमरा केओ किछु नहि कहलक अछि। हम केवल जानकी बाबूक उपस्थिति ल'क' एहेन अनुमान लगौलहुँ। आर कोनहु बात नहि छैक''।

विदुर, ''ई कहूँ जे जानकी बाबू हमर मित्र छथि''।

विजय, ''जी''।

विदुर, ''आ प्रेम सेहो हमर मित्र छथि''?

विजय, ''जी''।

विदुर, ''की प्रेम वा जानकी बाबू जे कोनो काज करताह, ओहि मे हमर सहमति आवश्यक छैक''?

विजय, ''ई कोनो जरूरी नहि छैक''।

विदुर, ''हम बुझैत छी, जे अहाँक प्रश्नक उत्तर अहाँ के भेटि गेल। मुदा

अहाँके तखन संतोष होयत वा अहाँक शंकाक समाधन तखन होयत, जखन ई बुझब जे आखिर ओहि मे किनकर हाथ छनि। के जानकी बाबू के ई सब करबाक लेल उकसेलनि। ई जिज्ञासा होयब स्वाभाविक छैक। किएक तँ जानकी बाबू के प्रत्यक्ष रूपँ अहाँ सँ कोन बैर छनि, जे ई सब करताह। तखन तँ केओ ने केओ पर्दाक पाछु अछि अवश्य''।

विजय, ''जी''।

विदुर, ''अहाँ दू भाई छी''।

विजय, ''जी''।

विदुर, ''दुनू भाई के कहिओ काल वादो–विवाद होइत अछि''?

विजय, ''हँ, कोनो–कोनो विषय पर होइत अछि''।

विदुर, ''मानि लीअ अहाँ दुनू भाय मे झगड़ा भ' गेल आ केओ तेसर आबि क' अहाँक भाय के मारलक। की अहाँ चुप भेल बैसल रहब''?

विजय, चुप भ' क' कोना बैसब। हमरा झगड़ा भेल ई तँ आपसी गप्प भेल। दोसराक मामला मे चुप कियेक रहब''।

विदुर, ''हम बुझैत छी जे अहाँक प्रश्नक उत्तर अहाँ कँ भेटि गेल''।

विजय, ''ई तँ अपने मजाक मे गप्प के उड़ा देलियैक''।

विदुर, ''आब सुनू जे सही अछि। अपनहि गामक श्रीधर ठाकुर जिनका संग हमरा भयंकर केसा–केसी चलि रहल अछि, हमरा बदनाम करबाक खातिर आ प्रेम सँ बप्पा–बैरीक ओलि सधेबाक ख्याल सँ जानकी बाबू कँ दस हजार टाका देलनि आ ई सब करौलनि। जखन जानकी बाबू पूछलनि, ''अहाँ के थिकहुँ। हम तँ अहाँकँ चिन्हैत नहि छी आ हम ई सब काज नहि करैत छी, तँ बुझल अछि जे श्रीध्र ठाकुर हुँनका की कहलनि''?

विजय, ''की''।

विदुर, ''श्रीधर ठाकुर कहलनि, जे हम तँ मात्र दूत छी। ई काज तँ विदुरक छियनि। हमरा ओएह पठौने छथि। हमहुँ तँ अहाँ के नहि चिन्हैत छलहुँ। तखन अहाँक ओहिठाम कोना आबि गेलहुँ''।

जानकी बाबू पुनः हुँनका सँ पूछलनि, ''विदुर बाबूक कोनो चिट्टी–पत्री,

किछु तँ देने होयताह"। ताहिपर श्रीधर ठाकुर बजलाह, "हमरा किछु नहि देलनि अछि। हम कहबो केलियनि जे एकटा चिट्ठी द' दीअ', तँ बजलाह, "जाउ ने, हमर नामे काफी अछि। ओही आधार पर जानकी बाबू एहि व्यूहक रचना केलनि। हमरा यावत् एकर भनक लागल, तावत् तँ बड़ देरी भ' गेल छलैक। हम जानकी बाबू के बड़ फज्जहति केलियनि। तँ हमरा संगे जानकी बाबू सेहो आयल छथि। केवल प्रेम सँ माँफी मंगबाक लेल।

जानकी बाबू, "जी, प्रेम बाबू! हमरा सँ बड़ पैघ गलती भ' गेल। हमरा क्षमा कयल जाऊ आ एतेक बाजैत ओ प्रेमक पायर पकड़' लगलाह। प्रेम तुरंत हुँनकर दुनू हाथ पकड़ि ....हाँ...हाँ....ई की करैत छी। कोनो बात नहि, गलती आदमीये सँ ने होइत छैक आ आई जे अपने सब हमर उपकार कयल अछि, ई सबटा के झांपि देलक"।

विजय, "विदुर कका, श्रीधर ठाकुरकँ हमरा सबसँ की बप्पा–बैरी छनि"।

विदुर, "ई गप्प तँ प्रेम के बुझल हेतनि। जँ नहि बुझल छनि तँ डोमू दास सँ पूछि लिऔक। एखन हमरा आ श्रीधर ठाकुर के भरि मन लड़' दीअ'। तखन आब आज्ञा दीअ'। इ कहि विदुर आ जानकी बाबू जयबाक लेल विदा भेलाह"।

गांगुली बाबू बजलाह, "ओरे बाबा रात को कहाँ जायगा। इहाँ मानुष नहि रहता है क्या ? खाबर–दाबर कर के जायगा"।

विदुर, "खाना–पीना तँ हम सब ओकिल साहेबक संग कयल अछि। आब भूखो नहि अछि। तखन प्रेमजी अहाँ जल्दी गाम आबू। हम गामक माहौल सब सरिया देने छी"।

प्रेम, "एखन हम एहि विषय मे किछु नहि कहब। एखन तँ किछु अनुष्ठान शेष अछि, ओकरा पूर्ण करब। ओकर बादे किछु विचार करब"।

गांगुली बाबू खांटी बंगाली छथि आ बंगाली बिना माछे भोजन नहि करैत अछि। विदुर के माँछक गंध आबैत छलनि आ इच्छा सेहो होइत छलनि मुदा जानकी बाबूक कारण ओ अपना इच्छा शक्तिक दमन

केलनि। जानकी बाबू माड़वाड़ी छलाह आ माड़वाड़ी के एहि सब सँ परहेज रहैत छैक मुदा ओ एहि अवसर पर गांगुली बाबू के चुटकी अवश्य लेलनि। ओ बजलाह, "गांगुली बाबू! अहाँ तँ बंगाली छी आ बंगालीक ओहिठाम खास क' माछ, मांस गनिक पीस बनैत छैक। जँ हम सब खा लेब तँ अहाँ सब तँ भुखले रहि जायब"।

गांगुली बाबू, "विदुर बाबा! हम सब बंगाली सही है, मुदा न्योता तो बिहारी बाबू को दिया है। इसिलिये इन्तजाम उसी हिसाब से किया गया है"।

विदुर जी आ जानकी बाबू सब के अभिवादन करैत विदा भ' गेलाह।

११

बनारस अर्थात् काशी विश्वनाथक मंदिर सँ प्रसिद्ध अछि। बाबा विश्वनाथ द्वादस ज्योतिर्लिंग मे सँ एक छथि। ओत' पतित पावनी गंगा सेहो उत्तरवाहिनी छथि। महान संत तुलसीदासजी महाराज ओतहि रामायणक' रचना कयलनि। आ ओतहि अपना जीवनक अंतिम सांस अस्सीघाट पर लेलनि। हिन्दुक महत्वपूर्ण तीर्थ मे बनारस केर सेहो गिनती अछि। विदुरक एकटा अंतरंग लोक बाबा विश्वनाथक पूजा करक लेल बनारस गेल। ओ करीब दस दिन तक खूब प्रेम सँ बाबाक पूजा–अर्चना कयलक। एक दिन मंदिर मे ओकर भेंट प्रेम सँ भ' गेलैक। प्रेम अपना भीतरक उभरल प्रेम के रोकि नहि सकल। ओ रंजन सँ गप्प–शप्प केलक। रंजन के सेहो एहेन कोनो उम्मेद नहि छलैक जे एत' प्रेम सँ भेट होयत। ओकरा इ गप्प बुझल छलैक, जे प्रेम कतहुँ तीर्थाटन मे गेल छथि। मुदा एतहि भेट भ' जयताह, ई कल्पना नहि छलैक। दुनू के खूब आत्मीय

ढंग सँ गप्प–शप्प भेलैक। प्रेम विदुरक सम्बन्ध मे वेशी पूछारि कयलक। विदुर कत' छथि, कोना छथि, बहुत दिन सँ भेट नहि भेल अछि, आदि। रंजन सेहो प्रेम सँ बहुत तरहँ घुमा–फिराक' गप्प केलक मुदा कतहुँ ओकरा विदुरक खिधांशक आभास नहि भेलैक। रंजन पूछबो कयलक जे अपने एहिठाम कत आ कतेक दिन सँ छी, तँ प्रेम बाजल, "हम एहिठाम करीब पाँच–छः दिन सँ छी आ एकटा छोट–छीन कोठली होटल मे नेने छी। एक–दू दिनक बाद पुनः हरिद्वार चल जायब। ओहिठाम एकटा अनुष्ठान चलि रहल अछि"।

रंजन, प्रेम बाबू, अहाँ गाम किएक छोड़ि देने छी?

प्रेम, गाम किएक छोड़ब। गाम मे घर अछि, द्वारि अछि, खेती–पथारी अछि,

सब किछु तँ अछिये।

रंजन, "तैओ तँ कतेक दिन सँ गाम नहि गेलहुँ अछि"।

प्रेम, "सब दिन नौकरी केलहुँ, बाहर रहलहुँ आ नौकरी मे तँ बुझितहि छी जे छुट्टीक अभाव रहैत छैक। ओहि समय मे कतहुँ घुमलहुँ–फिरलहुँ नहि। तँ आब चैन सँ तीर्थक भ्रमण क' रहल छी"।

रंजन, "ई तँ उत्तम काज क' रहल छी। घर गृहस्थी मे लागि जायब, तखन फेर पलखति थोड़हि होयत"।

प्रेम, "तँ सोचने छी जे सब तीर्थ–बर्थ करैत तखन गाम पकड़ब"।

रंजन, "नीके सोचने छी। आर कतेक दिन लागत एहि सब मे"?

प्रेम, "दू–चारि मास तँ लागिये सकैत अछि"।

रंजन, "हँ....हँ.. से ने किएक लागत"।

रंजन बहुँत घुमा–फिराक गप्प केलक मुदा ओकरा इ भाँज नहि लगलैक जे प्रेम एत' कतेक दिन सँ छथि आ ओकरा ताहि सँ विशेष मतलबो नहि छलैक। ओ तँ मात्र ई बुझ' चाहैत छल जे विदुरक प्रति प्रेमक मन मे की भाव छैक। ओकरा तँ सब किछु बुझले छलैक, जे प्रेम किएक गाम सँ पड़ायल छल। प्रेमक गप्प सँ रंजन के बुझा गेलैक जे प्रेमक मन मे

विदुरक प्रति कोनो दुराव नहि छैक। ओ एखनहुँ ओकरा सँ ओतबहि प्रेम करैत अछि, जतेक पहिने करैत छल वा इ कहि सकैत छी जे प्रेम सोझ लोक अछि। ओ विदुरक कूट–नीति नहि बुझि सकल। ओहि घटना मे विदुर संलिप्त छलाह, से एखन धरि प्रेम के बुझवा मे नहि अयलैक। इएह तँ विदुरक कूट–नीति अछि। ओ गाम गेल आ सब किछु ओहिना विदुर कँ कहलक। रंजनक गप्प सुनि विदुर के लागल जे ओ कतहुँ गलती कयलक अछि। प्रेम जानि–बुझि क' वा ओकरा सँ तंग आबिक' वा ओकरा परेशान करबाक खातिर ओकर उपेक्षा नहि कयने छल। वास्तव मे ओकर इ विवशता छलैक। जँ ओ जानि बुझि क' करैत तँ ओकर बादो तँ करैत मुदा से तँ नहि कयलक। विदुर अपना कृत्य पर पश्चाताप केलक आ प्रतिज्ञा केलक, जा धरि प्रेम के गाम ल' क' नहि आयब आ ओकर प्रतिष्ठा पुनः नहि दियाअब, ता धरि चैन सँ नहि रहब। ओ एहि फिराक मे लागि गेल जे प्रेम के कोना क' आनल जाय। ओकरा रंजन बाजल छलैक जे ओ हरिद्वार चल गेल होयताह। प्रेम गाम मे आबिक' नीक जकां रहए, इएह विदुरक प्रायश्चित्त होयत। गाम मे जतेक लोक प्रेम सँ वा प्रेमक जमानत पर बैंक सँ टाका नेने छल सब कँ विदुर परचारि देलक। प्रेमक जतेक टाका छैक, सब केओ दस दिनक भीतर इन्तजाम क' क' राखू आ प्रेम आबैत अछि तँ ओकरा पहुँचा देबाक छैक। सब केओ विदुरक एक आवाज पर टाकाक इन्तजाम में लागि गेल। पहिनहुँ ककरहुँ विदुरक विरोध करबाक साहस नहि छलैक मुदा जहिया सँ विदुर श्रीधर ठाकुर सँ भिड़ल अछि, गाम मे ओकर दबदबा आर बढ़ि गेलैक अछि। कहबीओ छैक, बड़की विआहने छोटकी सारि"।

एक दिन जानकी बाबू बोकारो सँ विदुर के टेलीफोन केलनि, "गुरुजी! एकटा गप्प बुझल अछि की नहि"?

विदुर, "कोन गप्प....हमरा तँ किछु बुझल नहि अछि"।

जानकी बाबू, "अहाँक दुश्मन बहुँत पैघ झंझट मे फँसि गेल अछि"।

विदुर, "के अछि हमर दुश्मन। अहाँ ककरा विषय मे कहि रहल छी"?

जानकी बाबू, "ओएह प्रेम बाबूक सम्बन्ध मे"।

विदुर, "की भेलैक अछि प्रेमक संगे" ?

जानकी बाबू, "कम्पनी मे करोड़ो टाकाक मालक हेरा–फेरी भेलेक अछि। ताहि मे हिनकहुँ नाम छनि। बल्कि सबटा गाज हिनकहि पर खस' बला अछि"।

विदुर, "प्रेम तँ एहेन लोक नहि अछि। जरूर कतौ ने कतौ ओकरा संग फरेब भेलैक अछि। ओकरा कोना क' एहि सँ बचाओल जा सकैत अछि?"

जानकी बाबू, "अहाँके खुशी होयबाक चाही। बिना प्रयासे अहाँक दुश्मन धरासायी भ' रहल अछि। फेर ओकरा बचाबक विचार इ कत' सँ आबि गेल। ओ तँ अहॉक दुश्मन थीक ने"।

विदुर, "एखन ई विचार करब उचित नहि जे ओ हमर के थीक। एखन ओकरा बचाबक प्रयत्न कयल जाय। ई हमर प्रतिष्ठाक प्रश्न अछि। जँ ओकरा किछु भ' जेतैक तँ हमर मन कहिओ हमरा माँफ नहि करत.."।

जानकी बाबू, "गुरुजी! आई अहाँ के की भ' गेल अछि। किछु दिन पूर्व तँ अहाँ ओकरा लेल...."

विदुर, "छोडुने ओहि गप्प के। एखन जतबा कहैत छी, ओहि पर ध्यान देल जाऊ। कोनो नीक ओकील के तैयार करु। टाकाक चिंता अहाँ नहि करब। एहि मे जतेक टाका लागत से हम देव। एकर भनक ककरहुँ नहि लागक' चाही। सब काज एकदम चुपचाप होयबाक चाही"।

जानकी बाबू के किछु बुझबा मे नहि आयल जे विदुर की क' रहल छथि। ओ काल्हि किछु आ आई किछु बाजि रहल छथि। तथापि गुरुजीक ओदशक पालन होयबाक चाही। ओ जे करैत छथि से ओएह बुझथु। जानकी बाबू एकटा ओकील के जानैत छलाह। मि0 नायक जे दिल्ली मे प्रेक्टिस करैत छलाह। एखन ओ कतेक पैघ ओकील छथि आ कतेक फीस छनि, ई सब किछु नहि बुझल छलनि। चूकि मि0 नायक बोकारोक रहनिहार छलाह आ हुँनकर इ घोषणा छलनि, जे एहिठाम ककरहुँ कोनो आवश्यकता हेतैक आ हम पलखति मे रहब तँ अवश्य

आयब। तँ जानकी बाबू टेलीफोन पर हुँनका सँ सम्पर्क केलनि। ओ सोचलनि जे केहनो हेतैक तँ एहिठाम सँ नीके हेतैक आ दिल्लीक सोचियेक' एहिठामक विपक्षी धकमका जायत आ सैह भेल।

जानकी बाबू, "हेलो.... नायक जी! की हाल–चाल। हम जानकी बाजि रहल छी, बोकारो सँ"।

नायक, "हेलो.....जानकी भाई जी। सब ठीक–ठाक अछि। कहुँ, आई एतेक दिनक बाद कोना मोन पड़लहुँ अछि"।

जानकी बाबू, "अहाँ थोड़हि मोन पड़लहुँ अछि। मोन तँ पड़ल अछि अहाँक गुण। जकर चर्चा बोकारोक गली–गली मे भ' रहल अछि। की, अहाँ फुरसति मे छी"?

नायक, "भाई जी! फुरसति कत'। तखन जँ वेशी बेगरता हेतैक तँ समय निकालल जा सकैत छैक"।

जानकी बाबू, "अहीठाम बोकारो मे अहाँक जरूरत महसूस क' रहल छी"।

नायक, "काज ककर छैक। अहाँक वा ककरहुँ दोसरक.."

जानकी बाबू, "ओना तँ इ काज गुरुजीक एकटा मित्रक छनि, मुदा गुरुजी एकरा अपन प्रतिष्ठाक प्रश्न बना नेने छथि। तँ कहल जे हमरहि बुझू"।

नायक, "के गुरुजी! धनकाही बला गुरुजी, जे अपनेक ओहिठाम वेशी काल आबैत छथि" ?

जानकी बाबू, "हँ....हँ...ओएह"।

नायक, "तखन तँ ई आब अहूँक काज नहि रहल, हमर खास काज भ' गेल। गुरुजी रहताह की नहि" ?

जानकी बाबू, "हँ...हँ....गुरुजी सेहो रहताह"।

नायक, "हम गुप्त रूपँ आयब आ अहींक ओहिठाम ठहरब। किएक तँ हम बड़ मुश्किल सँ समय बहार कयल अछि। ओही दिन आपस सेहो भ' जायब। हम जतेक काल रहब केवल अहाँ सँ आ गुरुजी सँ गप्प करब। ककरहुँ एकर भनक नहि लागक' चाही"।

जानकी बाबू, "अहाँ कोन ट्रेन सँ आयब आ हमरा दिश सँ कोन इन्तजामक अपेक्षा करैत छी, से बाजू"।

नायक, "अहॉ कँ कोनो इन्तजाम करबाक आवश्यकता नहि अछि। हमरा अहाँक घर देखल अछि। हम समय सँ पूर्व पहुँचि जायब। खाली केसक कागज–पत्र आ ओकालत नामा तैयार राखब। गप्प–शप्पक क्रम मे विदुर कँ पता लागल जे कोना नायक जमीन पर सँ आकाश मे पहुँचि गेल। ई चमत्कार केवल विदुरक देल लॉकेट सँ भेलैक अछि। एहेन एहेन लॉकेट तँ विदुर हजारो लोक कँ देने छलाह। ओ तँ एकर व्यवसाये करैत छथि। बहुतो के फायदा भेलैक, बहुतो के नहिओ भेलैक मुदा मि0 नायक के एतेक फायदा भेलैक, जकर अनुमान केओ नहि लगा सकैत छल। ई तँ मात्र संयोग छलैक जे जाहि गाड़ी सँ मि0 नायक लॉकेट बान्हिक' दिल्लीक यात्रा क' रहल छलाह। ओही गाड़ी सँ सुप्रीम कोर्टक' विख्यात बैरिष्टर मि0 दारुबाला सेहो दिल्लीक' सफर क' रहल छलाह। मि0 दारुबाला मि0 नायक केर व्यवहार सँ आ व्यक्तित्व सँ बड़ प्रभावित भेलाह आ ओकरा अपना डेरा पर ल' गेलाह आ ओकरा अपनहि सानिध्य मे राखि ओकरा पर अत्यधिक कृपा केलनि। एतेक गप्प तँ जानकी बाबू कँ सेहो नहि बुझल छलनि, तँ विदुर कँ कत' सँ बुझल रहितनि। मि0 नायक केर अयला सँ प्रेमक' केस कमजोर पड़ि गेल। ओकर विरोधी सब हताश भ' गेल। ओकर पाशा पलटि गेलैक। ओ सब तँ चाहैत छलैक जे कहुँना प्रेम के फँसा क' मि0 खन्ना कँ बचाबी। मि0 खन्ना करोड़ो रुपयाक सामग्री बेचि देने छलैक। ओकरा फर्जी रूपँ निर्गमन देखौने छलैक। तँ एफ0आई0आर0 भेला सँ मि0 खन्ना फॅसैत छल आ ओ सब एकरहि कारण एफ0आई0आर0 नहि केलक। मि0 नायक कँ जे आशंका छलैक सैह भेलैक। ने एफ0आई0आर0 कयल गेल आ ने दस्तखत केर जाँच। जाँच कार्य के ने चालु राखल गेल आ ने बंद कयल गेल। जाँच अधिकारी के एक दोसर कार्य मे एतेक ने व्यस्त करा देल गेल जे ओ एहि व्यस्तताक कारण जॉच कार्य नहि क' सकलाह। ओहि मे शिथिलता आबि गेलैक।

प्रेम पर विभाग कोनो कारबाई नहि क' सकल। घुमा–फिराक कहि सकैत छी जे अघोषित रूपँ प्रेम ओहि मामिला सँ बरी भ' गेलाह।

प्रातःकाल जखन विदुर आ जानकी बाबू प्रेम सँ भेट करबाक लेल गांगुली बाबू ओहिठाम गेलाह, तँ प्रेम आ मालती नहि छलीह। विजय सँ पता लागल जे ओ लोकनि अपन तीर्थयात्रा बिचहि मे छोड़ि क' चल आयल छलाह। ओकरहि पूर्ण करबाक लेल पुनः गेल छथि। जगहक सम्बन्ध मे विजय कहलनि जे हमरा एहि सम्बन्ध मे किछु नहि कहलनि, आ हम सब बाबूजी सँ वेशी प्रश्न करितहुँ नहि छियनि। विदुर के ई बुझबा मे भांगठ नहि रहलनि जे प्रेम के असीम कष्ट छैक। तखनहि तँ आ बिना ककरहुँ कहने ओ गाम छोड़ि देलक। ओ तँ ओएह अछि जे एखन धरि ठाढ़ अछि। दोसर रहैत तँ एतेक काल या तँ स्वयं आत्महत्या क' लैत वा हर्ट फेल क' जइतैक। जकर जीवन भरिक कमाई एक क्षण मे लुटि जाई आ सेहो ओकरहि द्वारा जकर ओ कल्याण कर चाहैत अछि। ओकर हालत की भ' सकैत अछि इ तँ केओ भुक्त भोगीये कहि सकैत अछि। प्रेमक केवल कमाइये टा नहि बुड़लैक। ओकर सपना सेहो चूर–चूर भ' गेलैक। ओ की सोचि क' गाम आयल छल। ओकर तँ आशाक दीप सेहो मिझा गेलैक। एतेक भेलाक बाद जँ ओ ठाढ़ अछि तँ ई कम नहि कहल जाय। आ एतेक होयबाक कारणो तँ हमहीं छी। मात्र एतबहि लेल जे एक सांझ हमरा ओ अपना डेरा पर नहि रखलक। हम कतेक नीच छी, कतेक स्वार्थी छी। हमर ओ किछु धारने तँ नहि छल। ओ महान लोक अछि। हमरा विषय मे तँ लोक ओकरा कहनहि हेतैक, मुदा ओ ककरहुँ गप्पक विश्वास नहि केलक। एहि तरहँ काल्हि धरि जे विदुर प्रेम के उजाड़' पर लागल छलाह, आई ओकरा बसाबक लेल व्यग्र छथि। ओना तँ ओ प्रेम के गाम चलबाक लेल बोकारो मे सेहो आग्रह कयने छलाह। मुदा प्रेम ओकरा बहान्ना बना क' टारि देलक। विदुरो तँ विदुरे छल। ओहो अपन जिद्य पूरा कयने बिना कोना मानि जायत। ओ दू गोटे सँ बनारस गेल। ई तँ ओकरा पता छलैक जे प्रेम बनारस मे अछि मुदा बनारस मे कत' अछि ई पता नहि

छलैक। रंजन सेहो पूछने छलैक तँ प्रेम होटल मे कत' अछि ई पता नहि देने छलैक। विदुर एकटा होटल मे ठहरि गेल आ बेरा–बेरी विश्वनाथ मंदिर मे प्रेमक प्रतीक्षा कर लागल। तीन दिन बीति गेलैक, मुदा प्रेम सँ भेट नहि भेलैक। विदुर निराश भ' गेल। ओकरा मन मे भेलैक जे भ' सकैत अछि प्रेम घुमबाक लेल कतहुँ अन्यत्र चल गेल हो। ओ बाबा विश्वनाथक स्मरण केलक, हे बाबा विश्वनाथ जँ प्रेम बनारस मे अछि तँ हमरा भेट करबा दीअ'। हम बड़ पैघ उपकार बुझब। लोक कहैत अछि जे अहाँक दरबार सँ केओ खाली हाथ नहि जाइत अछि। अहाँ तँ अवढ़रदानी छी, आशुतोष छी। हमरहुँ पर कृपा कयल जाउ'। अचानक विदुरक नजरि बाबा मंदिर दिश गेल। ओ देखलक जे मंदिर सँ प्रेम आ मालती बहराय रहल अछि। मालतीक हाथ मे फुलडाली आ प्रेमक हाथ मे लोटा छलैक। दुनू पूजा क' क' बहराय रहल छल। बगल मे एकटा बुढ़ा आ बुढ़ी सेहो छलीह। जेकरा संगे मालती गप्प क' रहल छलीह। विदुर हुँनका दुनू के नहि चिन्हलक आ चिन्हबे कोना करैत। ओ मणिकान्त जी आ सुलेखा जी छलीह, जकरा विदुर कहिओ देखनहुँ नहि छलैक। विदुर तेजी सँ आगु बढ़लाह आ सोर केलनि, "औ प्रेम बाबू...."। पहिने तँ प्रेम के बुझायल जे केओ ककरहुँ दोसर कँ सोर करैत अछि। मुदा आवाज चिन्हल बुझाइत छलैक। ओ अखियासलक तँ लगलैक जे इ तँ विदुरक आवाज लागैत अछि। ओ पलटि क' देखलक तँ देखैत अछि जे विदुर तेजी सँ ओकरहि दिश बढ़ि रहल छैक। ओ तँ हक्का–बक्का रहि गेल, तथापि पूछलक, विदुर भाई! अहाँ एहिठाम! कोन्हर आयल छी? मुँह किएक सुखायल लागैत अछि"?

विदुर, "अहीं सँ भेट करबाक लेल आयल छी। चारि दिन सँ हम आ रंजन दिन–राति अहाँ के ताकि रहल छी। आई बाबा विश्वनाथक कृपा सँ अहाँ सँ भेट भेल। हम तँ निरास भ' गेल छलहुँ"।

प्रेम, "से किएक ? आठ दिन पूर्व तँ भेट भेल छलहुँ। एहेन कोन प्रयोजन आबि गेल"।

विदुर, "चलु मंदिरक बाहर कतौ बैसि क' गप्प–शप्प करब। भोरहि सँ ठाढ़ भेल–भेल थाकि सेहो गेल छी। (मणिकांत बाबू दिश इशारा करैत) ई सब के छथि" ?

प्रेम, "ई मणिकांत बाबू छथि। हमर साढु वा पैघ भाय जे बुझी आ ओ हिनकर धर्मपत्नी सुलेखा दीदी। मणिकांत भैया, इ हमर (विदुरक दिश इशारा करैत) ग्रामीण मित्र, हितैषी आ समांग जे बुझी से छथि। हिनकर नाम विदुर भेलनि"।

मणिकांत, (जोर सँ ठहाका लगाबैत) "ओ....इएह छथि विदुरजी, हिनका सम्बन्ध मे तँ बराबरि चर्चा होइत रहैत अछि। आई हमर सौभाग्य जे दरशनक अवसर भेटल। ओना विदुरक सम्बन्ध मे प्रेम तँ किछु नहि बाजैत छलाह, मुदा मालती सब किछु मणिकांत बाबू के कहि देने छलीह आ सेहो जखन बोकारो सँ टेलीफोन पर विजय केर संग गप्प भेलनि तखन। से प्रेम के होइत छलनि जे मणि बाबू तँ स्पष्टबादी छथि, कतहुँ सब गप्प खोलि नहि देथि, जे मालतीक मुँहे सुनने रहथि आ विदुर कँ सेहो लागल जे हमरा परोक्ष मे हमर चर्चा एहिठाम होइत अछि, तँ अवश्य हमर खिधंश भेल होयत, मुदा मणिकांत बाबू तँ अपनहि फेरल लोक छलाह। एहि युग मे जे केओ अपना घरबाली के अपना बस मे क' लेत, ओकरा सँ यमराजो डेराइत छथि। एहि कार्य मे मणिकांत बाबू निपुण छलाह आ शिक्षको तँ मनोविज्ञानक छलाह। सभक' मनक गप्प अपना तर्कक आधार पर निकालि लैत छलाह। हुँनकर कनियाँ सेहो एम०ए० पास छलनि मुदा कहिओ इ दावा नहि पेश केलनि जे हम अहाँ सँ वेशी बुझैत छी। जखन कि हमर कनियाँ अगूंठा छाप होइतहुँ सब गप्प मे बाजि देतीह, "अहाँके बुझ' नहि आबैत अछि। हमरा मे विवेक अछि, चुपचाप सुनि लैत छी, बर्दास्त क लैत छी। मुदा ओहीठाम जँ केओ अविवेकी रहैत तँ ठनि जाइत आ कान–कपाड़ फोरि दैत। मणिकांत बाबू दुनू प्राणीक बीच जे सामंजस्य देखल ओ विरले देखबा मे आवैत अछि। ई सब गप्प–शप्प करैत सब केओ बाहर आबि गेलाह। विदुर एकटा दोकान मे बैसबाक आग्रह केलनि"।

मणिकांत बाबू बजलाह, "एत' किएक गप्प करब। एहिठाम घर नहि छैक की। मात्र दस मिनट मे डेरा पहुँचि जायब। ओतहि गप्प–शप्प हेतैक। प्रेम आ मालती विदुर कँ डेरा पर नहि ल' जाय चाहैत छलाह आ ने विदुर स्वयं जाय चाहैत छलाह मुदा मणिकांत बाबू तँ विचित्र लोक छथि। ओ नहि मानलनि आ सबकँ ल' क' डेरा पर चल गेलाह। ओहिठाम चाह आयल आ ओकर बाद गप्प–शप्प शुरु भेल।

प्रेम, "विदुर भाई! तखन अहाँ की कहैत छलहुँ"।

विदुर, "हम कहैत छलहुँ जे अहाँक अपूर्ण काज आब हम पूर्ण करब। मात्र अहाँक बैचारिक सहयोग चाही आर किछु नहि"।

प्रेम, "एकटा गप्प कहुँ! आई धरि केओ मुर्दा के जिऔने अछि"।

विदुर, "नहि से तँ नहि जिऔने अछि मुदा से अहाँ किएक पूछल अछि"।

प्रेम, "एहि लेल जे ओ प्रेम जे किछु दिन पूर्व धनकाही मे छल आब नहि अछि। आब जँ अछियो, तँ मात्र ओकर अस्थि–पंजर। आब ओकरा सँ किछु अपेक्षा करब व्यर्थ अछि"।

विदुर, "ओ तँ हम ने बुझबै, अहाँ मात्र चलु तँ"।

प्रेम, "विदुर भाई, जहिना शीशा टुटि क' बिखरि जाइत अछि। ओकरा जोड़ब कठिने नहि असम्भव छैक, तहिना टूटल दिल के जोड़ल नहि जा सकैत छैक"।

विदुर, "ई अहॉक किताब मे हेतैक। विदुरक किताब मे असम्भव नामक कोनो शब्दे नहि छैक। औ कयला सँ की नहि होइत छैक। हम बुझैत छी, अहाँ ओकर उपकार कर गेलियै मुदा नालीक कीड़ा नालिये मे नीक लागैत छैक। ओकरा जँ गंगाजल मे द' देबैक, तँ ओ मरि जायत। ओएह स्थिति गामक किछु लोकक होइत छैक। आ मात्र किछु लोकक कारण पूरा समाज, पूरा गाम उपेक्षित रहए, ई उचित नहि। एकरा लेल ओकरा सभक दिश सँ हम घट्टी मानैत छी, पायर पकड़ैत छी"।

प्रेम, "अहाँ कहैत तँ छी मुदा हमर मोन नहि मानैत अछि। ई तँ ओएह ने भेल जे जकरा लेल चोरि कयल सैह कहलक चोरबा"?

विदुर, "जेकरा जतेक बुद्धि रहतैक, ओतबहि ने कहत। जँ एकर सुधार नहि हेतैक तँ आई एकटा प्रेम फँसलाह, काल्हि दोसर फँसताह आ परसू तेसर....तँ एहि मे हमर मदति करू। की औ मणि बाबू...."।

मणिबाबू, "एहि मे हमर बाजब उचित नहि होयत। कारण हम तँ एहि विषय मे किछु जानैत नहि छी। जँ हम जानैत रहितहुँ तँ अवश्य अपन मन्तव्य दितहुँ। तखन तँ जैखन जगलहुँ, तैखन भोर तँ अहाँक आग्रह हमरा नीक लागल। समाज सुधार करब आ कुकुर बधिया करब दुनू समान अछि आ लोक कहैत अछि जे कुकुर बधिया करब तँ कटबे करत, तँ ई सब कोनो माने नहि राखैत अछि। ककरहुँ कारण अपना सिद्धान्तक बलि देव, सेहो तँ उचित नहि अछि। मणिबाबूक गप्प सँ विदुर बड़ उत्साहित भेलाह। मुदा प्रेमक उपर एकर कोनो खास असरि नहि भेल। गाम जयबाक इच्छा तँ मालती कँ सेहो होइत छलनि मुदा वेशी दिनक लेल नहि, मात्र दू–चारि दिनक लेल। बहुत दिन भ' गेल छलनि घर–द्वारि छोड़ला। मन मे होइत छलनि, अन्न–पानिक की हाल होयत। ओना तँ सब किछु डोमू दास करितहि होयत तथापि की केलक की, नहि एकरहुँ तँ जानकारी होयबाक चाही। ओ मणि बाबू के इशारा केलनि। मणिबाबू हुँनकर इशारा बुझि गेलाह जे मालती गाम जाय चाहैत छथि। जतेक त्याग कोनो पुरुष क सकैत अछि, से कोनो स्त्रीगण नहि क सकैत अछि। हलांकि दान–पुण्य पुरुषक अपेक्षा वेशी स्त्रीगण करैत छथि, मुदा त्याग नहि क' सकैत छथि। इएह अंतर छलनि दुनू मे। प्रेम अपन प्रतिष्ठा देखैत छलाह आ मालती अपन सम्पत्ति। मालतीक इशारा पर मणि बाबू पुनः बजलाह, "प्रेम बाबू, अहाँ लोकनि कँ एक घंटा सँ वेशी भ' गेल। दुनू गोटे समर्थन क' रहल छी मुदा परिणाम किछु नहि बहरायल। जँ अन्यथा नहि ली, तँ हम किछु बाजी"?

प्रेम, "बाजू ने.....की बाज' चाहैत छी"।

मणिबाबू, "जननी जन्मभूमिश्च.....। जन्मभूमि सँ पैघ किछु नहि होइत छैक। आर अहाँके विदुर जी सनक मित्र एतेक आग्रह क' रहल छथि,

अहाँके मानि जयबाक चाही। अहाँक ग्रामीण अहाँक संग राजनीति केलनि, तँ ओकर जबाबो राजनीतिये सँ देल जयबाक चाही। भागि पड़ेला सँ तँ ओकर मनसूबा आर बढ़ि जयतैक। ओ तँ अपना उद्येश्य मे तैखन सफल भ गेल, जैखन अहाँ भागि पड़ेलहुँ। ओ तँ इएह चाहैत छल। खैर ओहिठाम ओएह आवश्यक छलैक मुदा एखन जे विदुर कहि रहल छथि, से हमरा बड़ समचिन लागल। अहाँ अपना गाम सँ, परिजन सँ, समाज सँ कतेक दिन कटल रहब आ ओहि सँ हुनकर की बिगरतै। बिगरबो तँ अहींक करत। जमीन–जथा केर की होयत। तँ एखन अहाँके विदुरजीक बात मानि लेबाक चाही। विदुरक हठ सँ मणिबाबू के लागल जे रानी प्रकरण मे जेना की मालती बाजल छलीह, विदुरक हाथ नहि भ' सकैत छैक, आ जँ होयबो करतैक तँ कतहुँ ने कतहुँ भ्रमवश वा संवाद हीनताक कारण। मणि बाबूक गप्प सँ विदुरक छाती आर चौड़ा भ' गेलैक। मणि बाबू घुमा–फिराक ओकरहि समर्थन केलनि।

प्रेम, "ठीक छै, हम एखन किछु नहि कहब, सोचबाक समय दीअ'"।

विदुर, "ठीक छै अपने अवश्य सोचिऔ, मुदा काल्हि हमरा संग जयबाक अछि। विदुर एहिठाम सँ खाली हाथ नहि जयताह। जँ अहाँक उत्तर 'नहि' मे होयत तँ काल्हि सँ डेराक बाहर विदुरक धरना शुरु..."।

मणि बाबू, "नहि....नहि.....एकर आवश्यकता नहि पड़तैक। हिनका कनेक मन स्थिर क' क' सोचए दिऔन्ह"।

विदुर होटल विदा भेलाह तँ मणि बाबू बजलाह, "एखन तँ भोजनक वेर अछि। बिना भोजन कयने जँ अपने चल जायब, तँ इ केहेन गप्प हेतेक"।

विदुर, "हम जाहि उद्येश्य सँ आयल छी, ओएह पूर्ण भ' जायत, तँ हम अपनेक उपकृत रहब आ बूझब जे भोजन क' लेलहुँ। एखन हमरहुँ भोजन बनल हेतैक। एक गोटे कँ कहिक आयल छियनि"।

मणिकांत, "जेहेन बाबाक इच्छा...। एहिठाम सँ केओ आई धरि खाली हाथ नहि गेल अछि। हम उम्मेद करैत छी, अपनहुँ खाली हाथ नहि जायब"।

विदुरकँ गेलाक बाद सब केओ बैसिक विचार–विमर्श केलनि। आ तय भेल जे प्रेमकँ मालतीक संग गाम जयबाक चाही। अपना घर सँ, गाम सँ कटिक' अहाँ ओहि व्यक्तिक की क' लेबैक जकरा खातिर अहाँ गाम छोड़ने छी।

मणिबाबू, "प्रेम जी, अहाँ गाम अवश्य जाउ। एतेक दिन तँ हम स्वार्थवश नहि कहैत छलहुँ"।

प्रेम, "स्वार्थवश..... एहि मे अहाँक स्वार्थ कत' सँ आबि गेल"।

मणिकान्त, "हमर स्वार्थ इएह जे अहाँक गाम गेला सँ हम सब ओना रहि सकब, जेना रहैत आयल छी। की अहाँ आ मालतीक बिना हमर आ सुलेखा कँ मन लगतनि। जाहि तरहँ सांझ आ भोर ठहाका पर ठहाका उड़ैत छल। घर–आंगन खल–खल हँसैत छल। अहाँक पायर देला सँ एहि घरक ओएह हाल छलैक जे वसन्तक अयला सँ उपवन केर होइत छैक। तथापि हम अपना खातिर आब अहाँके नहि रोकब"।

प्रेम, "अहाँ की बुझैत छी। अहाँ आ सुलेखा दीदीक बिना हम एको क्षण रहि सकैत छी। जे स्नेह हमरा दुनू गोटे कँ अहाँ दुनू गोटे सँ भेटल अछि, दोसर के द' सकैत अछि। हम तँ गाम सँ मूइल आयल छलहुँ। अपनेक कारण जिअब सिखलहुँ। जिवन कोना जियल जाइत छैक, अपनहि सँ सिखलहुँ। हम तँ गाम जायब मुदा हमर प्राण एतहि टांगल रहत। अहाँ सब तँ हमरा तखन सहारा देलहुँ, जखन हम डूबि रहल छलहुँ। हमर इच्छा एखनहुँ नहि भ' रहल अछि। केवल अपनेक आदेश पर हम जा रहल छी"।

मणिकांत, "हम अहाँक मनक भाव बुझैत छी। रोगी के कडु दबाई पीबा मे कतेक अकथाइन लागैत छैक मुदा ओहि सँ ओकरा फायदा होइत छैक, ओकर रोग नष्ट होइत छैक। तँ दबाई कडु होइतहुँ लोक पीबैत अछि। किछु दिन अहाँकँ अनसोहाँत जकाँ अवश्य लागत मुदा धीरे–धीरे सब सामान्य भ' जायत"।

प्रेम, "अहाँक लग तँ सब प्रश्नक उत्तर रखले रहैत अछि। किएक तँ अहाँ

मनोविज्ञानक प्रोफेसर जे छी, आ सब केओ ठहाका लगा देलनि"।

प्रातःकाल विदुरक संग प्रेम आ मालती धनकाही जयबाक लेल विदा भेलीह। मणिकांत आ सुलेखा अश्रुपूरित नयन सँ दुनू के विदा केलनि। मालती के तँ लागैत छलनि जेना नैहर सँ सासुर जा रहल होथि। सद्यः गप्पो सैह छलैक। मालती तँ सासुर जाए रहल छलीह आ सुलेखा सँ पैघ बहिनिक रूप मे जे स्नेह भेटल छलनि से प्रायः स्त्रीगण के नैहरे मे भेटैत छैक। हुनका आँखिक नोर सुखाइते नहि छलनि। दोसर दिश सुलेखा के सेहो लागि रहल छलनि जे बेटी के विदा क' रहल होथि। मणि बाबू बजलाह, "प्रेम जी, जखन मन नहि लागए, तँ ई किरायाक घर मन राखब आ एहि बुढ़ा–बुढ़ीक ध्यान सेहो राखब। बीच–बीच मे जँ आबि जायब तँ हमरा सब पर कृपा होयत।

मालती बजलीह, "ओझा जी! आन दिन आबि सकब की नहि, कहि नहि सकैत छी मुदा गर्मी छुट्टी मे अवश्य आयब। जखन बच्चा सब आओत। ककरहुँ देखिओ तँ नहि सकलहुँ"।

मणिबाबू, "गर्मी छुट्टी मे तँ ई घर किरायाक लेल खाली नहि रहैत छैक। ओहि समय मे तँ मकान मालिक आ मकान मालकिन स्वयं आविक रहैत छथि। मणिकान्त बाबूक हास्य–व्यंग सबके हँसबाक लेल विवश क' देलक आ कनेक काल पहिने जे वातावरण छलैक से बदलि गेलैक।

मालती, "ओझा जी, दीदीक संग एकाध बेर धनकाही अयबाक कष्ट करितहुँ, तँ हमहुँ सब धन्य भ' जइतहुँ। अवश्य..... अवश्य, मणिकांत बाबू बजलाह। सब केओ स्टेशन अयलाह। अमृतसर–जयनगर ट्रेन मे आरक्षण छलनि। ओना तँ ओहिठाम गाड़ीक समय नौ बजे छल मुदा गाड़ी अपना समय सँ तीन घंटा लेट छलैक। सब केओ प्लेटफार्म पर बैसि ट्रेनक बाट ताकि रहल छलाह। राति होयबाक कारण स्टेशन पर ने ओतेक चहल–पहल छल आ ने भीड़–भाड़। दू–चारिटा खोमचा बला चिनिया बदाम आ चाह घुमि–घुमिक' बेचि रहल छल। ठीक बारह बजे गाड़ी आयल। विदुर रंजन प्रेम आ मालती गाड़ी मे चढ़ि गेलीह आ अपन स्थान पकड़ि लेलनि।

मणिकांत आ सुलेखा अपलक नयन सँ ता धरि प्रेम आ मालती के देखैत रहलीह जा धरि गाड़ी आँखि सँ ओझल नहि भ' गेल। मणिकांत बाबू सोचि रहल छथि, लोक मे आ चिरई–चुनमुनी मे की फर्क अछि। दुनूक स्वभाव तँ एके अछि। ओहो घुरि–फिरिक सांझ मे अपना खोंता में चल जाइत अछि। आ लोको थाकि–हारि क' वौआ–टौआ क' अपना घर चल जाइत अछि। आई हुँनकर घर–आंगन प्रेम आ मालतीक बिना सून लागि रहल छनि। हुँनका दुनू के अपनहि घर आई घर नहि श्मशान लागि रहल छनि। प्रेम आ मालती हुँनकर के छलनि, केओ तँ नहि। तखन एतेक दर्द किएक, एतेक लगाव किएक? इएह दुनियाँ थिकैक। नहि केओ रहितहुँ ओ चारुक बीच मे जे भावनात्मक सम्बन्ध भ' गेल, एहेन बहुत कम ठाम देखल गेल अछि। एतेक कष्ट तँ कहिओ सुलेखा के अपनहुँ बेटीक' विदाई पर नहि भेल छलनि। स्त्रीगण के रमणी सेहो कहल जाइत अछि। रमणीक अर्थ भेलैक, रमण केनिहारि, विचरण केनिहारि वा रमि जायब। गाम आबितहि मालती दुइये–चारि दिन मे अपन घरेलु जिनगी मे रमि गेलीह। कत' धान रखतीह, कत' चाउर रखतीह आदि मे व्यस्त भ' गेलीह। कोन खेत मे की भेल' आ कोन खेत मे की होयत से डोमू दास सँ हिसाब–किताब लेब' लगलीह आ डोमूदास मूर्ख होइतहुँ सबटा कंठस्थ रखने छलैक। कतहुँ कोनो हिसाब–किताब मे गड़बड़ी नहि। मुदा प्रेम वेशी एकांत चाहैत छलाह। अपना आंगन–दलान सँ उठि क' कतहुँ नहि जाइत छलाह। जे केओ आबैत छल ओकरा सँ जरूरते भरि गप्प, वेशी आहे–माहे मे नहि रहैत छलाह। हलांकि प्रेमक सब बाँकी बकिऔता आपस भ' गेल छल। जतेक लोक बैंकक लोन नेने छलैक सब सधा देलक। गाम सुधारक काज पूर्ववत चालु भेल मुदा ओकर बागडोर प्रेम नहि विदुर अपना हाथ मे लेलनि। प्रेमक हँसी–ठहाका तँ बनारसे मे रहि गेल। ओहिठाम मणिबाबू मुँह मे हाथ द' क' हँसाबैत छलाह। एहिठाम ओहेन लोको नहि छल। प्रेम के ककरहुँ दुःख–सुख सँ कोनो मतलब नहि छलनि। सब सँ अलग–थलग भ' क' रहैत छलाह, जेना वास्तव मे ओएह 'अनठिया कुकुर' होथि।

●

अनठिया कुकुर

जन्म	: 2 जनवरी 1950
जन्म स्थान	: मरुआ बलिया (मातृक)
पिता	: स्व0 वैद्यनाथ मिश्र
	सरल–चित्त, साधु–स्वभाव, उदारमना एवं धर्मपरायण
माय	: स्वर्गीया श्रीमती गेसाउनि देवी करुणामयी, सहृदया एवं धर्मपरायणा
ग्राम एवं पत्रालय	: उपरदाहा, थाना–बहेड़ा, जिला– दरभंगा
शिक्षा	: स्नातक कला, संगीत प्रभाकर ।
वृत्ति	: लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड ।
रुचि	: शास्त्रीय एवं लोकगीत–गीतकार सामाजिक कुरीति आ राजनीति पर व्यंग्य कथा आ कविताक माध्यमे (मैथिली में)
प्रकाशित पोथी	: विधाता (गीत एवं कविता संग्रह) गामघर – (कथा संग्रह) सुजाता – उपन्यास महारानी कैकेयी (शोध) गुंदरीक लाल (उपन्यास)
उपाधि	: "कवि शिरोमणी" (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार) "अंग प्रदेश–साहित्य–साधना सम्मान" राजा राम मोहन राय स्मृति मंच, भागलपुर "मैथिली परिग्रह" (उधाडीह, अजगैबीनाथ धाम, सुलतानगंज, भागलपुर। वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" सम्मान – 2010 मिथिला परिषद, भागलपुर